Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ABLAHITKARAK 1912 G.K.V.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

074487

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered No. 363 A.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
COMPILED

अबलाहितकारक

079487
RT-072

जनवरी १९१२ ई० [अङ्क १

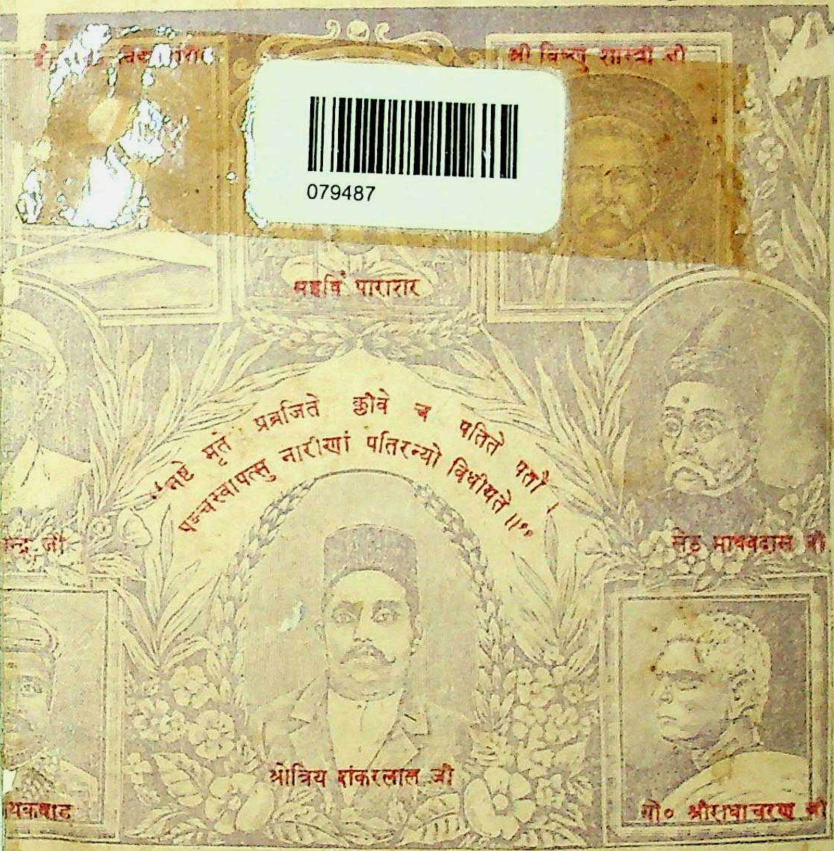

079487

पराशरवंशोत्पन्न श्रोत्रिय शंकरलाल शर्मा द्वारा संस्थापित

तदात्मज

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

द्वारा सम्पादित और प्रकाशित।

[।=)] [वार्षिक मूल्य २)]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

विषय	लेखक	
(१) श्रोत्रिय शंकरलाल जी का (चित्र)		
(२) मातृ-भूमि (कविता)	[जगदीश प्रसाद	
(३) सम्पादकीय वक्तव्य		
(४) जीवन चरित्र श्रोत्रिय शंकरलाल जी	[जोती स्वरूप मैनेजर राजा लंढौरा	
(५) विधवा-विलाप स्वर्गीय श्रोत्रिय शंकरलाल जी की मृत्यु पर	[राधे	
(६) सहानुभूति पत्र	[पण्डित बुलाकीराम विद्यासागार	
(७) श्रोत्रिय शंकरलाल जी के स्मारक में कविता	[पीताम्बरलाल वैश्य	
(८) पारिवारिक दृश्य	[सम्पादक	१८
(९) हिन्दुओं की शारीरिक अवनति	[देशोपकारक से उद्धृत	२[illegible]
(१०) रूपवती	[सम्पादक	२[illegible]
(११) ब्रह्मचर्य्य	[एक यति	३[illegible]
(१२) समाचार		३[illegible]

बाल-विधवा विवाह प्रचारिणी सभा

जो सज्जन अपनी बाल-विधवा कन्या का पुनर्विवाह करना चाहते हैं या जो विधवाएं स्वयं अपने जीवन के सुधार के लिये विवाह कराना चाहती हैं उनके लिये समान वर ढूंढ़ कर शास्त्रानुकूल विवाह करा देती है। बाल-विधवा विवाह के विरोधियों से हम हर समय शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं। पत्र व्यवहार इस पते पर होना चाहिये—

पता—राय साहब ठाकुर मुरारीलाल बी० ए०
मंत्री बा० वि० वि० सभा कानपुर।

पता—श्रोत्रिय जगदीशदत्त,
बिजनौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥"

—भगवान् पराशरः

श्रीपराशरगोत्रोत्पन्न विधवा-विवाह-प्रचारक
स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल।

सुदर्शन प्रेस, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

ज्ञान मुक्तिः
पुस्तक सं०........
आगत सं० ....
तिथि० ....
गुरुकुल पुस्तकालय कांगड़ी.

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रिय शंकरलाल शर्म्मणा
स्थापित

अबला हित कारक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलः क्रियाः॥१॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥ मनुः

म अङ्क] जनवरी सन् १९१२ [नवम वर्ष

मातृ भूमि

(१)

हे मातृ भूमि ! यह आज दशा तुम्हारी ।
क्यों होरही अकथनीय विषाद कारी ॥
जाता रहा किधर वैभवदृश्य तेरा ।
ऐश्वर्य्य तेज बल पुंज रहा घनेरा ॥

(२)

योगी वशिष्ठ; मुनिव्यास पुराणवक्ता ।
विख्यात पाणिनि, पतंजलि भाष्यकर्ता ॥
श्रीशंकर प्रभृति वैदिकधर्म त्राता ।
स्वामी समान हित चिन्तक ज्ञान दाता ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

श्री रामचन्द्र भूप कहां गमाये ।
नीतिज्ञ कृष्णसम भी रहनें न पाये ॥
वीराग्रणी अचल अर्जुन शस्त्रधारी ।
हा ! ना रहे प्रबल भीमगदा प्रहारी ॥

(४)

राणा प्रताप जिन शत्रु सभी तपाये ।
छोड़ा न धर्म निजकष्ट अनेक पाये ॥
थे शक्त शक्रसम जो जगमें कहाते ।
हा ! शोक आज वे एक न दृष्टिआते ॥

(५)

हैं दीन आज हम भारत के भिखारी ।
काला, गुलाम, खल, चोर उपाधि धारी ।
जो पालते बहु प्रकार विदेश नाना ।
वे अन्न बिन मुख तक रहे बिगाना ॥

(६)

जो थी समृद्ध सब भांति प्रजा तुम्हारी ।
है दीन आज सब भांति महादुखारी ॥
हे देवि ! मातृवसुधे ! शुभदृष्टि कीजे ।
होवें समृद्ध तव पुत्र विवेक दीजे ॥

(७)

पावें अनन्त सुख तेज बढ़े हमारा ।
जावे न पाप पथ पैर कभी हमारा ॥
हों सब शीलव्रतपालक ब्रह्मचारी ।
मातः ! करो सकल दूर विथा हमारी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८)

हैं धन्य वे मनुज रत्न परोपकारी।
जो मातृ भूमि हितकारक प्रेमधारी॥
मिथ्याय मान वश भीरु कलङ्क लेवें।
सच्चे सपूत जननीहित प्राणदेवें॥

जगदीश प्रसाद शर्म्मा
(सद्धर्म प्रचारक से उद्धृत)

सम्पादकीय वक्तव्य

परम पिता परमात्मा को प्रणाम करते हुए ज्यूंही यह
अपने नवम वर्ष में पग रखता है तब ही शोकजलरूप में
हर आनें लगताहै क्योंकी इस वर्ष यह अपने जन्म दाता
पादक श्री १०८ सम्पादक श्रोत्रिय शंकरलालजी की वैकुंठ
लिये विदाई कर चुकाहै।

अब उनकी पवित्र मूर्ति संसार में नहीहै तथा अब उस
साहपुंज का दर्शन इस संसारमें न होगा अतः यह अपने
म दाता पितास्वरूप सम्पादक का प्रतिविम्ब लेकर आ
ी सेवा में उपस्थित होताहै।

प्रिय पठक ! बार २ क्षमा प्रार्थना करनेसे स्वयं लज्जित
किन्तु अभीतक कई अनिवार्य्य कारणोंसे हम विवश थे
शाहै अब शीघ्र स्थायी प्रबन्धहोने पर विलम्ब न होगा
ठक गण क्षमा करें।

यह देखकर अत्यन्त दुःख होताहै कि जिस आर्य्य समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने संसार में शान्ति स्थापना का बीड़ा उठायाहै उसमे समय परस्पर अविश्वास और ईर्षा का बाजार गरम पंजाब में महाशय धर्मपालजीका इन्द्र लाला मुन्शीराम उन के पुत्रों के द्रोह से आद्योपान्त भरा रहताहै तथा सं प्रान्त मे फरुखाबाद आर्य्यसमाज का भारत सुदशा प्रवर्त मथुरा गुरुकुल जानेंकी बातोंके सिवाय और लेख बहुत होतेहैं। न जानें कबतक यह ईर्षाग्नि आर्य्यसमाजके म कार्य्यको हानी पहूंचाएगी।

दारानगर गंज जि० बिजनौर में पहिले राजा ताज की तरफ से संस्कृत पाठशालाथी अब वहां न कोई पं है और न किसी प्रकार का प्रबन्धहै इमारत तक गिरने यह शोचनीय दशा देखकर अत्यन्त दुःख होताहै अब उनकीउत्तराधिकार श्रीमतीरानी हीरादेवीका इसओर ध्या दिलातेहैं आशा है रानी साहिबसात्विक दान का परि देंगी।

सहयोगी प्रकाशसे यहमालूम होनेपर अत्यन्त आश्च हुआ कि महाशय धर्मपालजी ने लायल गजट के सम्पा सरदार अमर सिंहजी से १००) रु० वेदोंकी मट्टी खराब की प्रतिज्ञा करके लिये। महाशय धर्मपाल जी के वे कहां है कि मैं शान्ति के लिये वैदिक धर्म ग्रहण करत इसकी रसीद लायल गजट में छपी भीहै। ऐसे शान्ति महानुभावों से हिन्दू समाजों को सावधान होना चाहि

धर्मपालजी तो क्या वेदों की मिट्टी खराब करेंगे संस्कृत भाषा में पत्र भी नही लिख सके जब योरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलर मैकडौनल आदि विद्वान् सिरमारकर वैठरहे।

मिस्टर वसु के विवाह विल का प्रायः समस्त जातियां
य कर रही हैं यह कौन नहीं जानता कि इस बिल के
होने से वैदिक विवाह को हानि और हिन्दू रमणियों
को कष्ट होगा उसके स्मरण मात्र से रोमांच होता है ।
कि इनकी स्वतन्त्रता से इनका विवाह न होनेके कारण
जो भारत वर्ष में कष्ट हो रहा है वह किसी से छिपा
है सहस्रों दुराचारी पुरुष रातदिन वेश्याओं के यहां
करतेहैं इसदशामें इनकी गृहणीको कितनाकष्टहोताहै !
इस समय इनको यह तो संतोष होता है कि हमारी
ति तो इसकी मालिक होगी पति सुख नहीं तो पुत्र सुख
ही । इस शास्त्र बिरुद्ध बिलके पास होने पर चिड़िया
पांच में चौथाई का हिस्सा मिलेगा ।

मानलो एक उच्चवंशीय रईस किसी भंगन या ईसाई
पर मोहित होगया और उसके गृहिणी भीहै तब यदि
अपने प्रेम में उसके विवाह की रजिस्टरी करादेवे और
णी के भी सन्तान न हो और केवल भंगिन के ही हो
उस बेचारी अबला की क्या दशा होगी उसके कष्ट का
वार ही नहीं रहेगा ।

इस बिल के पास होने से हिन्दू जाति की संख्या भी
होजानी संभव है क्योंकि ईसाई या मुसलमान स्त्री से
किसी का विवाह रजिस्टरी होगया और वह फिर भी
ई या मुसलमान हीरही और पति दो चार अल्पवयस्क
को छोड़ स्वर्गगामी हुआ तब उसकी सन्तान माता
ली जाने के कारण उसही धर्म की रहेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हायर हिन्दुओं की वह सम्पत्तिजो उन्होंने अपने वहा अपनी धर्म रक्षा और सन्तान के लिये एक की थी और जिसको गौरक्षक भोगते उस सम्पत्ति का बिल के कारण गौहिंतकों के पास जाना सम्भव है। प्र पुरुष विचार सक्ता है इस बिलसे किस जाति को हानि होगी।

और इस शास्त्र विरुद्ध बिल के पास हो जानेसे श्रम व्यवस्था बिल्कुल नष्टहो जाएगीहम अपनी धर्म सरकार का इस और विशेष ध्यान दिलाते हैं।

क्या अच्छा होता यदि मिस्टर वसु इस बिलकी बाल विवाह प्रति बन्धक बिलका प्रस्ताव करते।

सिक्के में भ्रमवष हाथी की जगह जो सुअर का मालूम होता है उस पर मुसलमानों ने गवर्मेन्ट से प्रा की कि यह हमारे धर्म विरुद्धहै जिसको धर्मरक्षक गवर्न ने सहर्ष स्वीकार कर आगे ढलने की बन्दी करदं अफ़वा यह भीहै कि जो रुपये ऐसे ढल चुकेहैं वह भी जायंगे। हम अपनी न्यायशीला गवर्नमेन्ट का इस ध्यान दिलाते हैं इस बार सिक्के पर हिन्दी भी अं होनी चाहिये।

यह देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ कि हमारे शा प्रिय महाराज गायकवाड़पर जो "टाईम्स" आदि ने दरबार के समय दोष लगायाथा वह वास्तव में राज पूर्ण हृदय से महाराज की गलती थी उनकी क्षमा प्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीकार हुई ।

वास्तव में महाराज राजभक्त और शान्तिप्रिय भारत
के रत्न हैं "किसीने ठीक कहा है" मारते का हात पकड़ा
जाता है कहते की जबान नहीं पकड़ी जाती सो टाईम्स
आदि की जबान को कौन रोकसक्ता था ।

इस बारकी कांग्रेस नाम धारी सभा और सामाजिक
रिषद् में अवैध(unconstitutional) कार्य्यों की अच्छी
नरही । इनसभाओं के नेता वेही अंग्रेजी छदां हैं जो
तरों को प्रायः मूर्ख समझतेहैं । जिन लोगोंने द्वितीय हि-
न्दी साहित्य परिषद्के विद्वान् तथा बहुजनमान्य सभापति
की अश्राव्य शब्दों से निन्दाकी थी और उनके कार्य्य को
वैध कहकर फिर कभी हिन्दी के प्राचीन विद्वान् को स
भापतिन बनाने की सलाह दी थी, उन्हें अपनीइन
भाओं की कारवाई पर विचारकर लज्जित होना चाहिये ।

अब समाजिक परिषद्का एक उदाहरण लीजिये ! पहिले
दिन की बैठकमें मिस्टर वसु के बिलका समर्थन करने के
उद्देश्य से एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया । पंजाब के
पण्डित रामभज दत्त चौधरीने इसका विरोधकिया । और
मध्यप्रदेश के मिस्टर सुधोलकरने उनके विषय में एक ऐसा
व्यक्तिगत आक्षेप किया जिसका सभापतियों की उप
स्थिति में कहाजाना कदापि उचित नहीं था । पण्डितराम
भज दत्त चौधरी नें बहुत चाहा कि इसका उत्तरदें पर मिस्टर
० चौधरीने उनको कहने की अनुमति नहीं दी न किस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधोलकर से इसका प्रत्याहार ही कराया। कैसी उत्तम कार्यवाही है। यदि मिष्टर सुधोलकर का उक्त कथन असभ्य नहीं था तो उसका उत्तर देना भी अयोग्य नहीं होसकता था। पर यदि उनका कथन अयोग्य था तब उसका प्रत्याहार भी आवश्यक था। मिष्टर ए० चौधरीकी यह कारवाही संतोष जनक नहीं कही जासक्ती

(बाबू ज्योति स्वरूप मैनेजर रयास्त लंढोरा द्वारा लिखित)

वैकुंठवासी श्रोत्रिय शंकरलाल शर्म्मा प्रधान बाल विधवा प्रचारिणी सभा संयुक्त प्रांत का जीवन ॥

सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।
परिवर्तनि संसारे मृतः कोवा न जायते ॥

अर्थ-वह ही उत्पन्न हुआ है जिस से बंशकी उन्नतिहो परिवर्तन शील संसार में कौन पैदा नहीं होता और कौन नहीं मरता ॥

विनश्वर संसार में असंख्य मनुष्य आवागमन के चक्र में जन्म लेते और मरण को प्राप्त होते हैं कोई काल चक्र से नहीं बचता।

केवल उस ही महात्मा का नाम काल स्रोत के मध्य खड़ा रहता है जो अपने जीवन में देश या जाति की कोई स्थायी सेवा करे।

आज हम ऐसेही अबलाहितैषी ब्रह्मकुल दीपक श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मा सम्पादक अबलाहितकारक व प्रधानबाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा का कर्मयोग पूरित बिमल चरित्र लिखकर यह दिखलाते हैं कि निस्वार्थ पुरुष अपने कर्म योगबलसे क्या नहीं कर सक्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोत्रियजी की पवित्र जीवनी में यह लोकोक्ति अक्षर २ त्य सिद्ध होती है कि दूरं व्यवसायीनाम्।

श्रोत्रिय जी के पितामह श्रोत्रिय नारायणदत्त शर्म्मा ीढ़ों में प्रतिष्ठित श्रोत्रिय कुटुम्ब में बिजनौर के रईस एवं वि थे आप के तीन पुत्र थे जिनमें श्रोत्रिय छंगामल शर्म्मा येष्ठथे श्रोत्रिय बिहारीलाल शर्म्मा मध्यम और श्रोत्रिय ज़ारीलालजी छोटे थे

श्रोत्रिय महात्मा के ज्येष्ठ पितृव्य (ताऊ श्रोत्रिय ंगामल शर्म्मा बड़े दानी और परमदयालु थे आपने बीसों र्धन कन्याओं के विवाह अपने धन से कराए। आप की ाजभक्तीसेप्रसन्नहो ब्रिटिश गर्वन्मेन्टने आपकोएक लाखकी म्पति के तीन ग्राम तथा खिलत दिए।

ापकी अनेक दयापूर्ण कथाओं में से दो एक पाठकों के दर्शदनार्थ लीखते हैं क्यों कि इन घटनाओं से श्रोत्रिय ी के जीवन का बहुत कुछ सम्बन्ध है।

एकबार बिजनौरमें बड़ी आगलगी और एक मुह-ला भस्म होगया उस मुहल्ले के रहने वाले निर्धन ुरुष श्रोत्रिय छंगामलजी के पास आये और प्रार्थना ी आपने प्रार्थना सुनते ही नौकरोंको साथ कर दिया े जाओ और सब को यथेष्ठ लकड़ी दो जो अत्यन्त र्धन हैं उन्हें १०) रु० दो इसमे श्रोत्रिय छंगामलजी ा बहुत रुपया व्यय हुआ।

एक दफा आप कहीं से आरहे थे रास्ते में एक बु-ढ़ियाको शीतसे पीड़ित देखा आपसे रहान गया औरोंके ना करते हुए भी अपनी नवीन चादर उसको उढ़ा दी ाप के कई सन्तान हुईं किन्तु एक कन्या ही जीवित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही । सम्बत् १६२६ विक्रमी में आपने संसार त्याग किया ।

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मा ने सम्बत् १६२७ विक्र फाल्गुन को श्रोत्रिय हजारीलाल वकील के यहां ज लिया आपके ७ भ्राताओं की अल्पायु में मृत्यु होने कारण किसी प्रकार का आनन्द नहीं मनाया गया। की गति बड़ी बिचित्र है जिस पिता के सात पुत्रों अल्पायु में संसार को त्यागा उस पिता ने अपने है हार पुत्रका कुछ दिन लालन पालन भी न किया ३ मास के अल्पायु पुत्र को छोड़ वैकुंठ यात्रा की।

पिता की वैकुंठ यात्रा के पश्चात् श्रोत्रिय जी पालन और ग्रामादि का प्रबन्ध आपकी माता श्री राधादेवीने बड़ी चतुरता से किया । आपकी माता प्रबन्धकर्त्री एवं बिदुषी थी रात दिन ईश्वर भजन लवलीन रहतीं और छोटे२ बच्चों को महाभारत वाल्मीकादि की मनोहर कथाएं सुनाती थीं। यद्यपि प प्रतिष्ठित धनाढ्य और सात पुत्रों के बाद जी रहने के कारण लाडले थे तथापि आपकी माता प्र काल उठाकर इनके अध्यन स्थानको इनसे साफ करा थी और अपने साथ पूजा करातथीं ।

श्रोत्रियजीने प्राथमिक शिक्षा अपनी मातासे प्रा की थी । इनके ताऊ श्रोत्रिय छंगामलजी की कीर्ति कुटुम्बीय पुरुष वर्णन किया करतेथे यहांतककी अब वृद्ध पुरुष कथारूप में वर्णन किया करते हैं ।

श्रोत्रिय शङ्करलालजी में अपनेताऊ श्रोत्रिय छं मलजीकेसे विशेष गुण बाल्यावस्थाही से पाये जाते जब आप स्कूल में पढते थे तब निर्धन विद्यार्थियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने चाटके पैसों से पुस्तकादि की सहायता देतेथे।

आपका विवाह अमरोहे जि० मुरादाबादमें वैष्णव कुटुम्ब में हुआ था।

प्रथम आप बिजनौर पढ़तेरहे बाद जबआप इन्ट्रेन्श क्लास में इलाहाबाद पढ़ते थे तब आयु केवल १६ वर्ष कि थी इस अवसर पर आपकी पूज्यमाता ने विनश्वर शरीर का त्याग किया इस कारण समस्त गृहस्थ भार आपके ऊपर आपड़ा इसलियेकहीं स्कूलादिमें शिक्षानहीं पा सकतेथे घरपर एक ग्रेजुवेट अध्यापक रखकर अंग्रेजी भाषा में पूर्ण योग्यता प्राप्त की। जब आपको दुर्भाग्य वश इलाहाबाद छोड़ना पड़ा तब अपने घर से ही अपने निर्धन साथियों को खर्च भेजते रहे।

आपका यह स्वभाव था कि किसीका दुराचार नहीं देख सक्ते थे पहिले जिस प्रकार होता मैत्री के तौर पर समझाते यदि नहीं मानता तब जिस प्रकार उचित होता उस काम के छुटाने की चेष्टा करते थे।

सन् १८६४ ई० में बिजनौर एक यवन हेडमास्टर आया अत्यन्त दुराचारी देख पहिले कई बार पत्रादि द्वारा मैत्री के तौर पर समझाया जब वह किसी प्रकार नहीं माना तब लफटेन्टगवनर को शिकायत लिखी जिसका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि उसका बिजनौर से तबादला होगया।

इस तरह कईबार चुंगी आदि में ऐसा ही हुआ।

आपको पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के जीवन चरित्र में विधवा विवाह प्रचार और विधवा विवाह एक्टप ढ़ विधवा विवाहका शौकउत्पन्न हुआ। पहिलेईश्वर चन्द्र कृत विधवा विवाह विषयक पुस्तकें मंगाई बंगला में होनें के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण आपका मनोरथ शीघ्रपूर्ण नहीं हुआ इस से आप उत्साह हीन नहीं हुए किन्तु द्विगुण उत्साह होगया उसही दिनसे बंगला पढ़ना शुरुकिया शीघ्रही इसमें निपुण होगए

फिर आपने विधवा विवाह के कारण संस्कृत पढ़ना शुरुकिया घर को छोड़ ग्राम में एक विद्वान् को लेकर चलेगा वहां व्याकरण न्याय और धर्म शास्त्र पढ़ा। जिस प्रकारआपको पढ़नें का शौक था ऐसे ही आपके गुरुको पढ़ानेंका भी शौक था जब दिनमें घर के कामों से फुरसत नहीं मिलतीथी तवरात्रि को बारह बजेसे दो तिन बजे तक पढ़ते थे।

श्रोत्रिय जीने थोड़ेही दिनोंमे असाधारण योग्यता प्राप्त की जिस से बड़े २ विद्वान् चकित होते थे।

जब आपग्राम से आए बिजनौर में बड़ी भारी अग्नि लगी कई एक मुहल्ले भस्महोगए वहां के रहने वाले निर्धनों ने पूर्वजों का गुण गानकर आपसे सहायता की प्रार्थना की श्रोत्रियजीसे आर्तनाद न सुनागया तत्क्षणही सबको अत्यन्त धैर्य दिया और प्रार्थना स्वीकार की।

एक नौकरको सबके लिये यथेष्ट लकड़ी देनेकेलिये भेजा एकको खादर से श्रीरड पूले लेनेंको भेजा वहां से कई गाड़ी फूंस आया और गरीवों को दियागया जिनके घर बिलकुल ही जलगएथे अपने छप्पर जोकि पशुआदियोंके लियेथेदेदिये

एकबार मैं श्रोत्रियजीके साथ दारानगर गंज गंगा स्नान को गया गंज में श्रोत्रिय महाशय गाड़ी से उतर गए और कहा मैं आताहूँ उतरते ही कई घरों में चलेगए मै अत्यन्त आश्चर्य युक्तथा यह कहां चलेगए इनसे तो किसी प्रकारका परिचय नहीआनेपर मैनें बहुत पूछा पर कुछ नहीं बताया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैंने अत्यन्त शपथ दिलाई और कहा मुझे २०) रु० देना तब कहा कि खर्च होगए मुझे फिरऔर भी आश्चर्य हुआतब मैं और भी ज्यादा शपथादि दिलाकर कहने लगा तब कहा मै यहां दश बिधवाओं को वजीफा देता हूँ।

एकवार सनातन धर्मसभामें पण्डित गोकुलचंद शास्त्री गंगा स्नान से पापोंका नाश कह व्याख्यान देरहे थे अकस्मा त आप भी वहा पहूंचगए और शास्त्रार्थ को चैलेंज दिया (१००) न्यायालयमें जमा किये गए अन्त में आपने विजय प्राप्त की इस शास्त्रार्थ में महामहोपाध्याय पण्डित शिव कुमार जी भी मध्यस्थ थे।

इस प्रकार आपने अनेक विषयों पर कितनेही पण्डितो से विजय प्राप्त की।

आपको अष्टादस स्मृति इस प्रकार यादथीं चाहै जिस ऋषिकी किसी बिषय पर सम्मति पूछलो जिस प्रकार संस्कृत साहित्य के अगाध विद्वान्थे ऐसेही कानून और ज्योतिष के भी पण्डित थे आप संस्कृत अंग्रेजी और फारसी केअला वा मराठी बंगला गुजराती और पंजाबी में पूर्ण योग्यता रखतेथे किन्तु अभ्यास नहोने से वार्ता नहीं करसक्ते थे।

आपको धनाड्य और विद्वान् होते हुए भी किसी प्रकार का अभिमान न था यहांतक गौआदिकी सेवकों के होतेहुए भी सेवा करनें मे किसी प्रकार का संकोच नहीं करते थे। जैसे आप निराभिमान एवं विद्वान् थे इसही प्रकार आपदृढ़ प्रतिज्ञ और धर्मात्मा थे। (शेषफिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवा विलाप

स्वर्गीय

श्रोत्रिय शंकरलाल जी की

मृत्युपर

कहां है वह हमारा, बन्धु प्यारा ।
कहां है वह, अनाथों का सहारा ॥
कहां है सोहीशंकर, बन्धु अपना ।
हुआ जिसका दरश, अब हाय सपना ॥
किसे अब है पड़ी, जो धन लगावे ।
कौन है ऐसा जो, अपना तन खपावे ॥
समय देकर करे, उपकार परका ।
हमारे हित तजे, सब काम घरका ॥
सुखों को छोड़ कर, फिरता फिरेगा ।
हमारे शोक हां, नित्य अनुसरेगा ॥
विधाता ने किसे, जग से उठाया ।
क्यों अनाथिनीयों के, उपर वज्र ढाया ॥
तु है अबला बहिन, या मृत्यु दुष्टा ।
आकारण जो हुई, तू हमसे रुष्टा ॥
सहायक को हमारे ले उड़ी है ।
यह छलिनी प्राण के पीछे पड़ी है ॥
बरन् अब व्यर्थ है, रोना हमारा ।
धरें ढाढस, बनेगा काम हमारा ॥
सुपुत्र उनका बड़ा ही, साहसी है ।
दुखों से जो हमारे, नित दुःखी है ॥
रहे चिरंजीव अब, पक्का बचन का ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय में हो उजारा, ज्ञान धनका।
(राधे)

सत्यसनातनधर्म कलकत्ता से उद्धृत

पंजाब भूषण पण्डित बुलाकीराम शास्त्री विद्यासागर प्रोफेसर म्यो कालेज अजमेर का सहानुभूति पत्र।

श्रीमन् आयुष्मान् महाभाग! चिरंजीव आपका मुद्रित पढ़कर श्री श्रोत्रिय जी की अकाल मृत्युका दुखदायी समाचार से बड़ा शोक हुआ क्या किया जाय दैवगति बड़ी विचित्र है काल अमिल है यद्यपि श्री श्रोत्रिय जी के कई विचार स्वतन्त्र थे तथापि उनकी दृढ़ता कार्यज्ञता तत्परता आदि गुणों के कारण मुझे उनसे दिली प्रेमथा और वे मुझ से दया और प्रेमभाव से ही वार्त्ता किया करते थे। अच्छा भगवान् आपको चिरंजीव करें और धैर्य देवें और ऐसा करे कि आप उनके पवित्र कर्तव्य के पूर्तिकी त्रुटि पूर्ण कर सकें। यह ही आप के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकाशित करता हूं। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति और कुटुम्ब को धैर्य दे। यही प्रार्थना है कि आप मेरी सहानुभूति स्वीकार कीजियेगा और श्रोत्रिय जी की भांति प्रेम मय दयाभाव बनाये रखियेगा॥

भवदीय
बुलाकीराम विद्यासागर

(लाला पीताम्बर लाल वैश्य सहसवान लिखित)
वैकुंठवासी पं० श्रोत्रिय शंकरलाल के स्मारक में

दोहा।

जननी जने तो फेर जन श्री श्रोत्रिय जी सा बीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवों की विपत में प्रबल बंधा गए धीर ॥ १ ॥
महा कठिन ये काम था जानेथा संसार ।
शूरबीर ने ले लिया सब निज ऊपर भार ॥ २ ॥
पुनः अक्षतयोनि विवाह का बीरा लिया उठाय ।
प्रबल शक्ति और शूरता गये श्रीमान् दिखाय ॥ ३ ॥
तन मन धन सत पुरुष का होता है पर हेत ।
मान इसी सिद्धान्त को जीत लिया रण खेत ॥ ४ ॥

भजन करताली धुनि ।

महा शोक हुआ भारी है सुन हाल बीर शर्मा का ॥टे॰
हिया बिदीरण हुआ जाताहै, सुन मृत्यु दिल दहलाता है
हरे ॥ हाय नहीं कुछभी भाताहै, थापरम हितू विधवोंका
सुन हाल वीर शर्म्मा का ॥ स्वर्गधाम भारत को बना
किधर चले गए यश फैलाके ॥हरे॥ गर्भपात हत्याको बचा
॥हरे॥ रखामान धर्म द्विजों का ॥ सुन हाल वीर शर्म्माका॥
ले सिद्धान्त अटल अलबेला, महा कठिनकिया काम अकेला
हरे। फिर चैलेंज रूपी डंडा पेला, हुआ खुद गर्जोंके धमाका
सुन हाल बीर शर्म्मा का ॥ बीरा उठाय करके दिखादी
बाल विधवोंकी कैद छुटादी॥हरे॥दायमउल हविस की मिया
मिटादी था औतार ऋषि का ॥ सुनहाल बीर शर्म्माका ॥

दादरा ।

होना दुशवार श्री पण्डित श्रोत्रिय सा ॥ टेक ॥
भारत में करके भलाई, अब स्वर्ग में पहुंचे जाई । दिया
ऋषि ऋण को उतार ॥ होना दुशवार पण्डित श्रोत्रियसा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितों को नोटिस दीना, उन्हें शास्त्रार्थ लिख दीना करो लो रुपये हजार ॥ श्रीपण्डित श्रोत्रिय सार॥ विवाह अक्षतयोनि पुनः पण्डित, हो पौराणिक करदो खंडित कहा सब से ललकार ॥ श्री पण्डित श्रोत्रिय सा ॥३॥ सुन नोटिस छक्के छूटे, हुये खुदगर्जी सब झूंठे, पीताम्बर कहै पुकार ॥ श्री पण्डित श्रोत्रिय सा ॥ इति

पारिवारिक दृश्य ।

(अबला का विवाह में अपमान)

यमुना के तट पर मथुरा का विशाल नगर बसा हुआहै नगर की गगनभेदी अटारियां कोसोंसे विजय स्तम्भके समान प्रतीत होती हैं रात्रिका समय है भगवान् चन्द्रमा अपनी प्रकाशमय किरणों द्वारा संसार को अद्भुत आनन्द दे रहेहैं शनैः २ निद्रादेवी ने अपने दिन भर के बिछड़े अमित पुत्रों को अपनी आनन्दमय गोद में लेना प्रारंभ करदिया है ।

ओ ! ओ ! भाई देखो महेन्द्रसिंह वकील के मकानकी तरफ से कैसी करुणामय आवाज़ सुनाई देती है । हे ! परमात्मन् ! मैंनें ऐसा कौन अपराध किया था जिसके परिवर्तन मैं आज यह महान् दुःख मिला है ! देवादि देव ! हे । हाय२ पिता मुझे अपने पति का क्या अपने विवाह तकका भी स्मरण नहीं हां ! सुनती अवश्य हूं कि मेरा भी कभी विवाह हुआ था क्या इतने मात्र से ही मैं विधवा होगई । हे दयालू पिता आपकी दया कहां गई जो मुझे इतना कष्ट होते हुए भी आप खबर नहीं लेते हे न्याय कारी प्रभो ! क्या इसही का नाम न्याय है जो मुझे पति का स्मरण भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं और मुझे वैधव्य कष्टमिलरहाहै इससेतो मातापिताही तेहीमारदेते तब अच्छाथा जिसमें इस वैधव्यदुःखसेतोबचती हे! दीनवत्सल अब कष्ट नहीं सहा जाता मुझे इस संसारसे उठालो नहीं तो आज्ञा दो कि मैं विषादि द्वारा आपकी शरण में आऊं। लो नाथ! आप नहीं सुनते तब मैं आप की शरण में आती हूँ यह कह एक दम अटारी से नीचेको पैर लटकाए झट एक युवति ने झपट कर दोनों हाथ पकड़ लिये और यह कहतेर उसे वहां से खींचा ऐं ऐं चन्द्रमयी यह क्या करती है बावली तो नहीं हो गई। उसको खींच कर पास बिठालिया और दोनों हाथ उसके गले में गेर इस प्रकार कहने लगी—कि चन्द्रमयी सच बता क्यों रो रही है और यह क्या करती थी इसका उत्तर चन्द्रमयी ने कुछ न दिया और शनैः रोती रही तब फिर उसने शपथ दिला कर कहा कि तुझे नन्हें की (इसका लड़का अर्थात् चन्द्रमयी का भांजा) शपथ जो ठीक न बतावे।

चन्द्रमयी–दीदी सूर्य्यमयी तुम इसका कारण नहीं पूछो तोअच्छाहै क्योंकि मुझ दुःखियाकेकारणतुम्हें वृथादुःखहोगा

सूर्य्यमयी–बहिन तू कैसी बात करती है क्या तू न कहेगी तो मुझे दुःख न होगा यह कहती हुई की आंखों में आंसू आगए और माथे में हाथ मारकर कहा अच्छा बहिन चन्द्रमयी न बता पर इससे मुझेबड़ा ही दुःखहोगा मैं स्वप्न में भी यह आशा नहीं करती थी कि तू कभी मुझ से अपने सुख दुःख की बात छिपावेगी क्या भावी ने तो कुछ नहीं कह दिया।

चन्द्रमयी—अगर दीदी भावी की बातोंका बुरा मानूं तब तो एक दिन की ही होरहूँ वह तो रात दिन कहती रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी 079487

हैं इतना कहते ही आखों से आसू टप २ गिरनें लगे और हिचकी बन्धगई ॥

सूर्य्यमयी-(धैर्य्य देती हुई) बहिन दुःखी नहो बात तो कहो क्यों रोती है ॥

चन्द्रमयी—बस दीदी ज्यादा न पूछो अबमैं अभागिन आप लोगों के साथ संसार में रहने योग्य नहीं रही यह ही सब बात है।

सूर्य्यमयी-बहिन तू बालकों वाली बात क्यों करे ता है साफ २ कहो।

चन्द्रमयी—दीदी मुझे आज अम्माने मृणालनी के विवाह में भेजा वहां जब ताईजी दूलोका आरता करने गई तब मै भी सब लड़कियों के संग उनके पीछे होली तो ताईजी बड़ी कुड़कुड़ा कर कहनें लगी लल्ली तू मत चले हमारा कुसुगुन होगा मैं ज्यूं लौटी तब पुरोहिताईन जी कहने लगी कि आप तो रांड होगई औरों का भी बद सगुन करती फिरेहै इसे सिंगार करते हुए शरम भी तो नही आती फिर भावी नें कहा इनकी क्या पूछो घरका काम धंधा रातदिन सिंगार रही लगी रहती है यह कहते २ ही चन्द्रमयी की हिचकी बन्ध गई और फूट २ रोने लगी कुछ देर सूर्य्यमयी भी उसके साथ रोती रही थोड़ी देर रोने के बाद सूर्य्यमयी अत्यन्त धैर्य्य दिलाती हुई कहने लगी बहिन धैर्य्य धारण करो रोने से क्या होता है जिसका भाग्य फूटता है उसको सब ही कहने लगते हैं किन्तु आमें पुरोहिताइनजीको बताऊंगी ॥

चन्द्रमयी-दीदी यह आपके चरणों में अन्तिम प्रणाम अब संसार छोड़नेकी आज्ञादो क्योंकि मुझसे अब नित्य ताने नही सहेजाते और दुःखमय संसार में कष्ट रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को चित्त नहीं करता तथा मेरे दुःख से नित्य अम्मा भी दुःखी होतीहैं जब आजका हाल सुनेंगी तब न जानें कितना दुःख होगा ।

सूर्य्यमयी-यह ठीक है कि इस समय तुम्हें महान् क[ष्ट] है परन्तु जानती हो दुनियां में सुख दुःखका तो साथ ही [है] दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख होता है ईश्व[र] करेगा कि फिर सुख होगा ॥

चन्द्रमयी-दीदी यह ठीक है कि सुख दुःख का साथ [है] पर मेरे लिये नहीं मेरा कौन है किसके लिये जीऊं यह भावी दिन रात चैन नहीं लेने देती और वहां सासूजी [रात] दिन कोसती हैं कि मेरे घर यह ऐसी डायन आई आते [ही] मेरे लड़के और पोते को खागई ॥
अब तुम्ही बताओ कि किस के लिये जीऊं ।

सूर्य्यमयी-अरी इतनी दुःखी न हो अब ईश्वर की [इच्छा] यासे बालविधवा विवाह होनेंलगेहैं ईश्वर तेरीभी सुनेगा ।

चन्द्रमयी (उदासीनता से) दीदी रहने भी दो भ[ला] चाचाजी यह सुनकर जीन्दा भी छोड़ेंगे दोनों इस प्रक[ार] बातें कर रही थीं कि एक दम बच्चे के रोनेकी आवाज़ आई जिसे सुन चन्द्रमयी बोली दीदी नन्हा रोताहै चलो ।

दोनों चलदीं ज्यूहीं नीचे माता के कमरे में पहूंची टन टन कर ग्यारह बजगए ।

माता-अरी इतनी देरसे कहां गई थी मैनें कहारी मृणालनी के यहां भेजा था वहां नहीं मिली ।

सूर्य्यमयी-कहीं नहीं यहां ऊपर बैठी थीं ।

माता-अच्छा जा नन्हेको दूध पिलादे फिर मृणाल[नी] के फेरों में जाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य्यमयी-नाना अम्मा हम भरपाये तुम जाओ हम नहीं जायंगी।

माता—क्यों नही जायगी।

सूर्य्यमयी ने रोते २ सब हाल माता को सुनाया माता भी कुछ देर रोती रही फिर कहा अच्छा मैं ही चली जाऊंगी।

हिन्दुओं की शारीरिक अवनति

उपरोक्त शर्षिक से यह स्पष्ट प्रगटहै, कि हिन्दुओं की शारीरिक शक्ति अच्छी नहीं रही, अर्जुन, भीम, कुल, सहदेव, परशुराम, भीष्म पिता मह, द्रोणाचार्य्य, नुमान, जैसे योधा अब नहीं रहे। पांच सहस्र वर्ष छे क्यों जांय ? मैं कहता हूं सब लोग अपनी शारीरिक अवस्था को अपने बाप दादाकी अवस्था से ही लनाकर के देखें तो स्पष्ट अन्तर ज्ञात होगा, और र आप लोग स्वयम अपने बालकों की अवस्था पर चारिये, कैसी शोचनीय दशा है। बढ़ाईये इस क्रम और आपको पता लगेगा, कि वह दिन दूर नहीं है, ब की सच मुच "दौले शाह के चूहे" उत्पन्न होने गेंगे। हम लोगों के बाबा साहिब ७० वर्ष के वृद्ध वह म कर रहे हैं जो हम नव युवक होकर नहीं कर सते आज तक उनके दांत दृढ़ हैं, दृष्टि में कोई न्युनता हीं है, चेहरालाल और भरा हुआ है, आहा ! श्वेत ढ़ीके मध्यमें चमकता हुआ कैसा सुन्दर प्रतीतहोता । लोगकहाकरतेहैं कि जिस शरीरिक उन्नतिका तुम वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हो असम्भव है। हमकहतेहैं कि कविता में अत्युक्ति
कामलिया जाता है परन्तु उसकीभी एक सीमाहोती है,
मारे बलपराक्रम का वर्णन करते हुए कोई कवि ऐसी निय
प्रशंसा नहीं करसक्ता, कि हमने एक हस्ती को आका
मण्डल में फेंक दिया और उसका आज तक पता नहीं ल
हां राममूर्ति जब कि एक हस्ती को अपने ऊपर खड़ा क
की शक्ती रखता है तो सम्भव है कि कोई कवि यह कह
कि वह हस्ती को एक हाथ से उठा कर फेंक देताहै। मह
यो। शारीरिक अवस्था में हम अत्यन्त नीचे गिर ग
इस में कोई भ्रम और सन्देह नहींहै। अस्तु हमें केवल
सोचना है कि हम क्यों गिरगए और क्योंकर हम अपनी
रीरिक अवस्था को बढ़ा सकतेहैं? यह विषय इतना ल
है, कि इसके प्रत्येक विभाग के वर्णन के लिये एक२
चाहिये अपितु क्या मैं स्वस्थ हूं औरदीर्घायुताका भे
नामक उर्दू पुस्तक मेरी लेखनीसे निकल चुकीहैं परन्तु
केवल आवश्यक गुर सुक्ष्म निवेदन करतेहैं बुद्धि मानोंको
त ही पर्य्याप्त होता है मित्रो! मैंने सैकड़ों वैद्यक ग्रन्थ
सैकड़ों निबन्ध अपने पत्र और दूसरोंके समाचार पत्रोंमें
दो दर्जन से अधिक चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें मेरी ले
से निकल चुकीहैं। मैं आपको निश्चय दिलाताहूं कि स्व
को स्थिर रखनेके लिये किञ्चित आवश्यक नियमहैं॥

जिसको आयुर्वेद सम्बन्ध ग्रन्थों के पढ़नेका अवसर
है, वह उनको पढ़कर कहता है कि स्वास्थ्य धनाढ्य
स्ते है निर्धनों के लिये नहींहै। प्रातःकाल से लेकर सा
ल पर्य्यन्त प्रत्युत शयन के समय तक एक वैद्य पा
और प्रतिक्षण उचित नियम बतलाता रहे तब भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियम पूर्ण होनेमें नहीं आते । हाथ इसप्रकार धोओ पांव इस तरह स्वच्छ करो, भोजन स्वर्ण पात्र में हित कर है, भोजन के पश्चात् इतनी देर विश्राम करो अमुक वस्तुगरम हैं अमुक शीतल है अपनी प्रकृति के अनुकूल एक वैद्य से भोजन तैयार करवा के खावो, दैनिक प्रातः काल वैद्य जी को नाड़ी दिखलाओ जो दोष दूषितहों उसका सुधारकरो, अमुक समय पर सोओ, अमुक समय पर जागो । बिछौना रेशमी उत्तम है, यह, करो वह करो यहां तक कि सारा दिन सिवाय इस बात का ध्यान रखने के कि हम स्वास्थ्य के किसी नियम का उलघंन तो नहीं कर रहे और कुछ भी न करो । प्रायः पुरुष साहस छोड़ बैठते हैं और कहते हैं भाई ! स्वास्थ्य धनाढ्यों के वास्ते हीहै हम दीन लोग इसके नियमों की पालना नहीं कर सकते ! परन्तु मित्रो ! अनुभव इसके विपरित है विचार की दृष्टि से देखो तो निर्धन लोग धनाढ्यों से अधिक स्वस्थ्य और बलवान होते हैं वह खूब खाते और पचाते हैं भरपूर नींद सोते हैं धनाढ्य लोग आहार पचानेको चारपाई पर करवटें बदलते हैं परन्तु निद्रा नहीं आती ॥

देशोपकारक से उद्धृत

रूपवती

प्रथम परिच्छेद

प्रातःकाल का समय है सूर्य्य भगवान अपनी किरणों द्वारा पूर्णतः संसार का अन्धकार दुर करचुके हैं भक्तजन अभीतक पूजन में तत्पर हैं सुन्दर कमरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोकि अर्जुन भीम और सीता द्रोपदी आदि भूदेवियों के सुन्दर चित्रों से सुसज्जित है षोड़सवर्षीय युवति कन्या पुस्तक लिये आसन पर बैठी है जिस के सामने पूजाके वर्तन और पास छोटीसी तिपाई पर गीता विश्नुसहस्र नाम आदि पुस्तकें रक्खी हैं।

बस पाठक ! समझ गए होंगे कि यह कन्या ईश्वर भजन में तत्पर है ज्यूं ही यह कन्या अपने आसन से खड़ी हुई एक दासी बड़ी घबराहट के साथ बोली-

कुमारीजी आपने कुछ नया समाचार भी सुना है इतना कहते ही दासीकी आखों से एक दम आसूं टप टप गिरनें लगे और हिचकी बन्धगई आगे कुछ भी नहीं कहसकी। तब कन्या अत्यन्त धैर्य दिलाती हुई बोली ऐं ऐं ऐसी अधीर क्यों होती है कौन आफत आगई जो बात तक नहीं कहती; तब दासीनें रोते हुए उत्तर दिया पापी औरङ्गजेब आपको क्या ००० इतना ही कहकर थोड़ी चुपरही और फिर एक दम पहिले से अधिक रोने लगी यह सुनते ही कन्या के कमल नेत्र लाल होगए बडे क्रोध के साथ बोली क्या यह बात सत्य है तुझे कैसे मालूम हुआ।

दासी—कुमारी जी मैं कुएपर पानी भर रही थी कि तब एक स्त्रीनें कहा क्या तू भी राज कुमारी रुपवती के साथ देहली जायगी मैनें इसका कुछ उत्तर न दिया और वहां से चलदी तब द्वार पर पहरे दार भी ऐसी ही बातें कर रहेथे।

यह सुनते ही कुमारी शोक समुद्र में डूबगई और दासी को आज्ञादी कि जा और दरबार से इसकी सत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता का पलाला; आज्ञा पाते ही दासी चलदी इधर कुमारी ने कमरा बन्दकर लिया और नाना विचार करती हुई कुछ कहने लगी।

चलिये पाठक मोरी से देखें कुमारी जी क्या कर रही हैं।

कन्या फर्सपर पड़ी मछली की तरह तड़फ रही है और इस प्रकार कहरही है—क्या दासी असत्यतो नहीं कहती नहीं २ वह कभी झूंठ बोलने वाली नहीं है मेरा चित्त साक्षी नहीं देता कि यह बात असत्य होगी आदि इस प्रकार अपनी उधेड़ बुन में है इधर औरंगजेब का घृणित विचार राजमहल और नगर में पवनवत् फैल गया देवकी गति बड़ी बिचित्र है हा! जो देवी थोड़ी देर पहिले प्रसन्न चित्त ईश्वर में लवलीन थी वह अब चिन्ता समुद्र में भवन फर्स पर पड़ी तड़फ रही है। और कुछ २ कह रही है।

हाय! हाय! जिन दुष्टों से सदा घृणा रखती हूँ जिन पापियों के देखने में महापाप है हमारी गौमाता के हिंसक उनही धर्म्म शत्रुओं से स्पर्श होना हाय विवाह करना पड़ेगा नहीं २ प्राण त्याग दूंगी किन्तु विवाह करना तो दूर रहा उस दुष्ट का स्वप्न में भी मुख नहीं देखूंगी। मेरे जीवन को सहस्रवार धिक्कार है जो आज इस अत्याचार को सुनकरभी प्रतिकार का उपाय न करती हुई भी जीवित हूँ ऐसे जीवन से मरण ही भला है अच्छा होता यदिमाता पिता जन्मते ही मार देते जिससे यह हृदय बिदारक समाचार न सुनती हाय मेरा यह दुर्भाग्य जो क्षत्राणी होते हुए भी मेरे लिये एक नीच मुगलबादशाह के ऐसे विचार कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथे में हाथ मारा और एक दम बैठ गई "किसी ने ठी
कहा है कि ईश्वर आपत्ति में सब को याद आता है" वि
भुला नित्य की भक्तिने इस संकट समय में क्योंन सर्वरक्ष
परमेश्वर की शरण क्यों न लेती ।

देखिये जो कुमारी थोड़ी देर मछली की तरह त
रही थी अब कैसे संतोष के हाथ जोड़ बैठगई है सांसा
किसी पुरुष में दुष्ट औरंजेव के समान बल न देख शर्वशा
मान् परमेश्वर से प्रार्थना कर रही है ।

हे सर्वरक्षक परमात्मन् अब क्या करूं कहां जा
संसार अंधकारमय दिखाई देताहै, हे पिता मैंने ऐसा क
अपराध किया है जिसके बदले आज मुझे कष्ट मिला है
नवत्सल ! प्रभो मैं आप की शरण हूँ आपके सिवाय सं
में कोई नहीं हे देव मेरी लज्जा आपके हाथ है ऐसी
कीजिये जिससे मेरा पवित्र वैदिक धर्म निष्कलंक रहे
धिक्कारपात्र यवन से विवाह करना एक तरफ रहा
से स्पर्शतक नहीं करूँगी हे विष्णो ! अपने नामको अन्व
कीजिये हे स्वामिन ! यदि आप क्षमा करें तब मैं आत्मघ
करके आप की पवित्र शरण में आऊँ जब तक इस शर
में प्राण है तब तक कदापि विवाह कर अपवित्र होना न
चाहती इससे अब शीघ्र उपाय सुझाईये इस प्रकार कहते
एक दम चुप होगई कुछ देर बाद कमरा खोलकर दासी
आज्ञादी कि जब काका जी महल में आवें तब खबर दे

कुमारी ने अपने काका को यथोचित स्थान पर बै
दिया और बड़ी उदासीनता के साथ इस प्रकार कहने ल
जिस भय से मैं संसार को त्याग एकान्त बास कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर में अपना समय बिताती हूं और पुरुष का मुख तक नहीं देखती पूजा पाठ ही में दिन बिताती हूँ वह भी भय मेरे लिये उपस्थित हुआ। मैंने सुना है शीघ्र ही म्लेच्छ बादशाह मुझे व्याहने को आने वाला है मैंने यह दारुण समाचार आज ही सुना है। अब मुझे अपनी रक्षाका एक भी उपाय नहीं सूझता मैं म्लेच्छ का मुखतक नहीं देखना चाहती इसलिये मुझें प्राण त्यागना तो स्वीकार है परन्तु म्लेच्छ के साथ विवाह करना अंगीकार नही यदि कुछ उपाय न बना तो निश्चय आत्मघात करूँगी।

यह सुन उसके काका ने कहा।

बेटी तू धन्य है यद्यपि मेरे ऊपर यह महा संकटसमय उपस्थित है तथापि मैं अपने को बड़ाही भाग्यवान् समझता हूँ क्योंकि तुझ जैसी धर्मपरायण देवी ने मेरे घर को अपने विमल चरणों से पवित्र किया जो धर्मरक्षा के लिये सांसारिक समस्त सुखों को लात मार प्राणत के न्योछावर करने को तैयार है बेटी बुढ़ा अवश्यहूँ औरमेरे पास कोई विशेष साधननहीं जोउस म्लेच्छका सामना करसकूँ तथापि मैं तुझे कदापि धर्म से विचलित होने की सम्मति न दूँगा चाहेमेरे पास सेना नाम मात्र को है—किन्तु अन्त तक तेरी रक्षा करूँगा। हां मेरी समझ में दो उपाय मालूम होते हैं प्रथम तो यह कि जो मेरे पास सेना है उसके द्वारा तेरी रक्षा मरते समय तक करूं परन्तु मेरी सेना बादशाही लश्कर के सामने समुद्र के सामने एक नदी के समानभी नहीं इसलिये हमारा नाश तो अवश्य होगा। परन्तु तेरे धर्मकी रक्षा करते हुए जो मैंने मृत्यू पाई तब मेरी आत्मा को संतोष प्राप्त होगा किन्तु ऐसा करने में सन्देह यही है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे तेरी प्रतिष्ठा कौन बचावेगा ? हमारे मर जानेपर तु आत्मघात करना ही होगा ।

दूसरा उपाय यह बुद्धिमत्ता से भरा हुआ है कि अपना विवाह हिन्दू पति महाराणा उदयपुर से करे । य तू महाराणा से विवाह करना स्वीकारकरे और वह बार त लेकर आवे तब हमारा मनोर्थ सिद्ध होजावे क्यों कि ज समस्त भरतखंड में ऐसा कोईवीर नहीं जो बादशाह वैर करे । केवल उदयपुर के महाराणा राजसिंह ही शरण त की रक्षा करने वाले तथा बादशाह के साथ निर्भयता वैर करने वाले हैं इसलिये मेरी इच्छा आजही सांडनी स द्वारा उदयपुर पत्र भेजने की है ।

यह सुनकर रूपवती बोली काकाजी उदयपुर के मह णाजी के साथ विवाह करने का निषेध मैं कैसे करसक्ती ऐसी पवित्र और निस्कलंक गद्दी का स्वामी क्या कोई दु भूमण्डल में है ऐसा धर्मात्मा बीर क्या मुझे कोई दू मिलसक्ता है जिन्होंने आजतक म्लेच्छों से सम्बन्ध नहीं या यदि ऐसे उच्चकुल में व्याहे जानेका निषेध करुं तो र तो संसारमें मुझसे अधिक मूर्ख और अभागी कौन हो मैं अपनीं प्रतिष्ठा बचानेंके लिये और आत्मघातक मा पाप से वचनेके लिये राणा जी को व्याही जानेके लिये रहूँ । कृपाकरके आप एक पत्र लिखें और एकमैंभी लि हुँ । इसप्रकार बात चीत होनेंपर एक दिनमें पहुँचने व सांडनी पर एक सवार उदयपूर भेजा ।

पाठकवृन्द पढ़ते २ उक्तागए होगें कि अभीतक कौन र कौनका काका है कुछ पताही नहीं लगा कुछ देर धैर्य खिये दूसरे परिच्छेद में सब मालूम होजायगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मचर्य्य

ब्रह्मचर्य्य यह पद वेदमें ऐसाही ज्यों का त्यों आताहै जिसके लिये स्पष्ट वेद प्रमाण भी आगे २ लिखेंगे। ब्रह्मनाम बड़े का वा उत्तम कक्षाका है ब्रह्म आदि शब्दों को बड़प्पन के वाचीवेद में देखकर ही पाणिनि आचार्य्यने बृह बृहि वृद्धौ, धातु की कल्पना की और "बृहेर्नलोपश्च" इस उणादि सूत्रसे उसी बृहि धातुसे ब्रह्मशब्दकी सिद्धि दिखलाईहै। और (चर गतिभक्षणयोः) इस भक्षणार्थ धातु से चर्य्य वा चारी शब्द बनताहै। वा चर्य शब्द को वेद में भक्षणार्थ देखकर प्रकृति प्रत्यय के अर्थ विभाग की कल्पना की गई जो उस समुदाय में यथार्थ अवयवरूपसे विद्यमानथी इसरीतिसे वेदकी शैली के अनुसार ब्रह्मचर्य शब्द का यह अर्थ हुआ की "बड़े वा बड़प्पन का खाया जाना वा भीतर अपने में लिया जाना अथवा ब्रह्म नाम बड़ा चर्य नाम लेने वा अपने भीतर रखने योग्य होता है" और ऐसे ही ब्रह्मचारी शब्दका अर्थ कि "ब्रह्म नाम बड़े को वा बड़प्पनको स्वभावसे ही अपने भीतर लेने वा रखने चरने खाने वाला" इस अर्थ की ओर थोड़ा ध्यान दीजियेतो सबसे अत्यन्त बड़ा ब्रह्म परमात्मा उसका ज्ञान वा बोध गुरु आदि के द्वारा अपने भीतरलेना वा रख द्वितीय कक्षा में ईश्वरीय वेद का नाम ब्रह्म है उस को पढ़ने द्वारा अपने भीतर हृदयमें लेजाना रखना चरना, तृतीय ब्रह्मनाम ब्राह्मण पन जो मनुष्यजातिमें सबसे ऊंची बड़ी प्रतिष्ठित कक्षा है। उसका चरना ब्राह्मणपन के गौरव को अपने भीतर शिक्षा द्वारा ले जाके जमाना, चौथी कक्षा में ब्रह्म नाम अन्नकाहै "अन्न ब्रह्मेत्युपासीत" इसी के द्वारा सबके जीवन की रक्षा होती है वा जो जीवन का आधार है वही अन्न है और जीवनाधार होनेसे वह ब्रह्मनाम बड़ा है उसका चरना नाम खाना भीतर लेजाके ऐसा रखना कि जिसके परिणाम रूप फल नाम वीर्य-शुक्र को भीतर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना निकलने न देना, उस अन्न के फल रूप शुक्र के न निकलनेसे अन्नभी शरीरसे निकलनहीं जाता किन्तु असार मात्र मलादि निकल जाता और अन्नका स्वरूप वीर्य्य जो दृढ़ताके साथ शरीरमें बैठ जाताहै वह जीवनभर सुख देता है। पांचवीं कक्षा में प्राण भी ब्रह्म नाम बड़ा है "ब्रह्मे-त्युपासीत, शिर के सात छिद्रों के द्वारा वा अधिकांश नासिका द्वारा प्राण शक्ति निकलाकरतीहै। इस लिये तीव्र गन्ध सूंघने द्वारा प्राणशक्ति को कुपित करनेसे विषय सुख भोगों की वासना उत्तेजित होती जिससे ब्रह्मत्व घटता है इस लिये प्राणकी शक्ति को कुपित होने से बचाकर प्राणा याम, आदि द्वारा शान्त करके अपने भीतर रखना यहीबल वाला जीवनहै और प्राणका कुपित हो२के नष्ट होना ही मृत्यु है। छठी कक्षा में ब्रह्मनाम मनका है "मनो ब्रह्मेत्युपासीत, विषय, भोगों का लालची लम्पट मन विषय भोगों की ओर निरन्तर भागा करता है उस ब्रह्मनाम स्थित होनेकी दशा में बड़े आनन्द के हेतु मनको भागनेसे रोककर अपने भीतर लेना, और रखना यह भी एक ब्रह्मका चरना है। सातवीं कक्षा में आनन्द का नाम ब्रह्महै "आनन्द ब्रह्मेत्युपासीतु उसको उपस्थादि सम्बंद्ध साधनों द्वारा बाहर निकलजाने से थाम के, भीतरहीले जाना वा रोकना तब भीतरी आत्मिकआनन्द बढ़ताहै। आठवीं कक्षा में विज्ञान नाम योगाभ्यासादि द्वारा होने वाला विशेष-नाम साक्षात्कार ज्ञान का है विज्ञानं ब्रह्मेत्युपसीत, यह सर्वोपरि इष्ट साधक और अनिष्टोंसे बचाने वाला योगादि साधनों द्वारा इसको अपने भीतर लेजाना और रखना सब से उत्तम इस कारण है। कि इसी से मुक्ति हो सक्ती है। इन आठ प्रकार के ब्रह्मोंका रखने वाला ही आठ प्रकार के मैथुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ा बच के ठीक २ ब्रह्मचारी कहाने योग्य होता है ॥

इस जगत् में स्वाभाविक वा प्राकृत नियम वोही ाने जाते हैं जो ज्ञानशून्य जड़पृथिव्यादि कालका-ादि तथा औषधी वृक्ष बनस्पत्यादि में भी स्पष्ट ही ट जावें तथा सोचनें से स्पष्ट प्रतीत हो। जैसे अन्न लका मनुष्य पशु पक्षी कीट पतङ्गादि सबखाना पीना हतेहैं वृक्ष वनस्पत्यादि वा पृथिवी भी खाते पीते और ाना पीना चाहतेहैं। भूमी में जो खाद घूरा आदि डाला ाता उसको पहिले पृथिवी खाकर पुष्ट होती और पीछे पने गर्भस्थ पुत्रादि के तुल्य सबवृक्ष वनस्पति बोयेहुये गेंहु ं आदिको खिलाती और वे सब पृथिवी से खेंच २ के खा और पुष्टहोते है । बिना खाये पीये जैसे मनुष्यादि दुर्ब होतेवैसे वृक्षादिभी सूखते कुम्हलातेहैं जहांकी पृथिवीको ी खाद वा जलनहीं मिलता वहअच्छीदशामें नहींरहती।

इस नियम के अनुसार जगत् में जो २ प्राणि वा अप्रा ा जिस २ वस्तु को अपने भीतर लेके वा अपने में मिला पुष्ट होता अपनी दशाको सुधारता चिरस्थायिनी कर ा है वह २ ब्रह्मचारी ठहरता और सामान्य रीतिसे कि-ी चराचर में ठहरकर वा प्रविष्ट होकर और जो चराहुआ स्तु उसरकर अच्छी उन्नत दशामें जैसा २ अधिक २ पहु ताहै वह वैसा २ ही छोटा वा बड़ा सापेक्ष ब्रह्मचारी स जड़ चेतन बनताहै। ईश्वर वा वेद सर्वोपरि बड़ा होने निरतिशय ब्रह्म है। क्योंकि उस से बड़ा और कोई नहीं और उसको सब से अधिक चरने वा अपने हृदय में ठहरा जानने वाला सब से बड़ा, ब्रह्मण नाम मनुष्यों की उ म कक्षा में भी उत्तम ब्रह्मचारी और ब्रह्मा है। इस प्रसङ्ग ब्रह्मचर्य का सत्य २ यथार्थ महात्म्य दिखाने के लिये अ र्व वेद के कई मन्त्रों का संक्षेप से अर्थ और भीतरी ाशय यथा शक्ति [illegible] लिखते एकपति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार ।

सत्यदेव सत्यग्रन्थ माला कलकत्ते से लिखतेहैं कि मैंने प्रण किया है कि पांचसौ नवयुवकों को अमरीका पढ़ने के लिये अवश्य भेज दूंगा जो नवयुवक जाने की इच्छा रखते हों और हर प्रकार के कष्ट सहनेको उद्यत हों वे मुझ से पत्र व्यवहार करें। जाने वाले युवकोंकी अवस्था २५ से अधिक न हो और विवाहित न हों। १९१३ में सब नव युवक अमरीका को रवाना होंगे।

आदर्शदान—आनरेबल चौधरी मुहम्मद इस्माईल वारीसाल जिले के प्रसिद्ध जमीदार हैं। उक्त मुहम्मद साहब ने अपनी ५२ हजार वार्षिक आमदनीकी जमीन्दारी बंगाली मुसल्मानों में शिक्षा प्रचार के लिये दे दिया है। जिसमें १२ हजार रु० वह निजी खर्च के लिये रक्खेंगे उनके तथा उनकी स्त्री के बाद वह भी इसी कार्य में लगाई जायगी। उस सम्पत्ति का प्रबन्ध स्थानीय सरकारकी आधीनता में प्रान्तीय मुसल्मानों की कमैटी बनाई जायगी। यहभी कहागयाहै २८ मुसल्मान प्रति साल विदेश शिक्षा प्राप्त करनेके लिये भेज जायंगे।

बाबू बलवन्तसिंह जैनी जोकि अमेरिका आदि भी आए हैं आपके परिश्रम से बिजनौरमें एक पतित पाठशाला और एक रात्रि पाठशाला भी खुल गईहै। आपका परिश्रम अत्यन्त सराहनीय है।

बिजनौर म्युनिस्पिल्टी ने जो टैक्स की कड़ी स्कीम बनाईहै उसके विरुद्ध यहांके वकीलोंने कई सभाकीं प्रत्येक मनुष्य की आय सम्बन्धी फैरिस्त तैयार की जारही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रति मास के आरम्भ में प्रकाशित ता है।

(२) डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है यार्थी और स्त्रियों से ॥=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी बिना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों का अपना नाम और पता पूरा और साफ साफ नागरी या अंग्रेज़ी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर ा चाहिये।

(६) पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकट बिना नहीं दिया यगा।

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि या तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते आने चाहिये— श्रोत्रिया पूर्णादेवी,

"अबलाहितकारक-कार्य्यालय", बिजनौर।

सुधानिधि

इस समय जब कि भारतवर्ष नाना रोगों का घर हो रहा है। एक ऐसी औषधि की अत्यन्त आवश्यकाता थी जिस अकेली पास रखने से नाना औषधियों के बक्सों की आवश्यकता न । इसके लिये बहुत रुपया खर्च और परिश्रम किया जिसके रिणाम में एक वृद्ध वैद्यराज द्वारा यह महौषधि प्राप्त हुई जो ना रोगों में रामबाण का असर दिखाती है। हम अपने मुँह यां मिट्ठू न बन कर केवल सभ्य ग्राहकों से निवेदन करते हैं कि क बार हमारे सुधानिधि को मंगा कर परीक्षा करें कि किस प्रकार क औषधि अनेक रोगों को दूर करने में समर्थ होती है।

सुधानिधि—कफ़, खाँसी, जाड़े का बुखार, हैज़ा, शूल, संग्रणी, आँव लोहू. अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, हाथ पैर कमर दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खाँसी की सुगन्धित षधि है। इसके अलावा बिच्छू ततीये आदि के जहर को फायदा रती है। मूल्य ॥) मात्र है।

मैनेजर—श्रोत्रिय एण्ड कम्पनी बिजनौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की बनाई सरकार से
रजिस्ट्री की हुई दवाईयां जो बीस वर्ष से संसार में
आजमाई जा चुकी हैं ।

सुधासिन्धु

कफ, खांसी, दमा, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्र
आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, जी मिचलाना,
पैर और कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खां
दूध पटक देना आदि की स्वादिष्ट सुन्दर दवा है। कीमत
शीशी ॥)

दद्रुगजकेसरी

दाद को जड़ से खाने की एक मात्र पवित्र दवा है जरा
जलन या चिरमिराहट नहीं होता, इसीको शराब या नीबू के
में मिला देने से दो शीशी अर्क तैयार हो जाता है। कीमत
शीशी ।) आना १२ शीशी मंगाने से एजेंट समझ कर उ
नोटिस आदि मुफ्त भेजते हैं, कमीशन देते हैं, वर्तमान व
पंचांग भेजते हैं।

मँगाने का पता—क्षेत्रपालशर्मा मालिक
सुखसंचारक कम्पनी मथुरा।

पं० शंकरदत्त शर्मा द्वारा 'धर्मदिवाकर प्रेस', मुरादाबाद में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No 383 A.

०७४४८७

अबलाहितकारक

[...८] फरवरी १९१२ ई० [अङ्क २

मार्च

पराशरवंशोत्पन्न श्रोत्रिय शंकरलाल शर्मा द्वारा संस्थापित

तदात्मज

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

द्वारा सम्पादित और प्रकाशित ।

...यों से ॥=)] [वार्षिक मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—
पं० सुदर्शनाचार्य्य,
बी० ए०

गृहलक्ष्मी

उपसम्पादिका—
श्रीमती गोपालदेवी

हिन्दी भाषा में स्त्री-शिक्षा विषयक सर्वाङ्ग-सुन्दरी उच्चश्रेणी की सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका।

इसमें धर्मशास्त्रों के अनुसार पातिव्रत आदि धर्म, उपदेश भरी कविता, शिक्षापूर्ण उपन्यास, नाटक तथा आदर्श स्त्रियों के जीवन चरित्र, गृह प्रबन्ध, पाकशास्त्र, स्वास्थ्य-रक्षा, शिशुपालन, सीना पिरोना, संगीत कला, देश विदेश की बातें, सायन्स की कहानी, मनोरंजक पहेली आदि स्त्रियों के उपयोगी सभी विषय रहा करते हैं।

☞ नोट—इसमें विवाद-ग्रस्त या किसी विशेष पक्ष के लेख नहीं होते इसीसे यह पत्रिका सनातन धर्मी तथा आर्य समाजी दोनों ही की बहू बेटियों के लिए समान-भाव से लाभकारी है और इसी से सब समाचार पत्रों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

इसका आकार ५० पृष्ठ से भी अधिक रहता है। साल भर में ग्राहकों के पास लगभग ७०० पृष्ठ की अच्छी खासी पोथी हो जाती है। हर महीने चित्र भी रहा करते हैं। इस पर भी लागत के अनुसार वार्षिक मूल्य १॥) है।)=॥ आने टिकट भेज कर नमूना मँगा देखिये॥

☞ मिलने का पताः-मैनेजर, 'गृहलक्ष्मी'-कार्य्यालय, प्रयाग।

बाल-विधवा विवाह प्रचारिणी सभा

जो सज्जन अपनी बाल-विधवा कन्या का पुनर्विवाह करना चाहते हैं या जो विधवाएं स्वयं अपने जीवन के सुधार के लिये विवाह करना चाहती हैं उनके लिये उक्त सभा समान वर ढूंढ़ कर शास्त्रानुकूल विवाह करा देती है। बाल-विधवा विवाह के विरोधियों से हम हर समय शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं। पत्र व्यवहार इन पतों पर होना चाहिये—

पता—राय साहब ठाकुर मुरारी लाल बी० ए०
मंत्री बा० वि० वि० सभा कानपुर।

(अथवा) पता—श्रोत्रिय जगदीशदत्त,
बिजनौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रिय शंकरलाल शर्म्मणा

स्थापित

अबला हितकारक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥ १॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते ताद्धि सर्वदा॥ २॥

नवम वर्ष } फरवरी, मार्च, सन् १९१२ { द्वितीय तृतीय अङ्क २-३

विजय-पताका

सुनो जी आर्य योगिन !
धरो तुम ध्यान भारत का।
उठाओ धर्मध्वज करमें,
करो तुम गान भारत का॥
धरो शिर शील का टोपा,
चढ़ा ओ ज्ञान की कफनी।
विरक्ती दंड शुभ धारो,
रखो नित मान भारत का॥
गया सो होगया अबतो,
रहा उसको बचाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे जो हो तुम्हें यारो,
न भूलो मान भारत का ॥
जलाओ कष्ट की होली,
धरो निज इष्ट झोली ।
जमाओ संतजन टोली,
जिन्हें हो ज्ञान भारत का ॥
तजो सब लोक की लज्जा,
तजो सुख शांति की सज्जा ।
कहो ये मांस और मज्जा,
तनू और प्राण भारत का ॥
नहीं है मान की इच्छा,
नहीं अपमान की पर वा ।
नहीं सुख भोगकी बांच्छा,
चहो सन्मान भारत का ॥
हृदय में प्रेमलव जागी,
उठो आर्यों ! महाभागी ।
बनो त्यागी बिरागी औ,
लगाओ ध्यान भारत का ॥
नसों में रक्त भारत का,
बदन में अन्न भारत का ।
करो में कर्म भारत का,
करो बस ज्ञान भारत का ॥
हमारे जन्म सार्थ का,
हमारे स्वर्ग की सीढ़ी ।
हमारे मोक्ष की शान्ति,
सभी कल्याण भारत का ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पताका यह गगन में है,
अहा ! फहरा रही जय की।
चलो आगे बढ़ो भाई,
रखो अभिमान भारत का॥

ल० ध० बा०

(चित्रमय जगत् से उद्धृत)

सम्पादकीय-वक्तव्य

सभ्य ग्राहक गण हम अत्यन्त लज्जित हैं कि जो ठीक समय पर पत्र आप की सेवा में नहीं पहुँचा सके इस लिये बार २ क्षमा प्रार्थना भी नहीं कर सक्ते किन्तु गत पत्र में लिख चुके हैं कि दैविक आपत्ति के बिना हम पत्र बराबर ठीक समय पर निकालेंगे बस दैवक आपत्ति के कारण ही नहीं निकाल सके अर्थात् पत्र की नये सिरेसे रजिष्टरी कराने और मजिष्ट्रेट की आज्ञा लेनेमें देरी होगई। साथ ही हमारे प्रकाशक पं० शङ्करदत्त जी ने प्रेस का मकान बदला जिसमें आज्ञा और दुबारा काम जमाने में देरी हुई आशा है ग्राहक गण इस देरी को क्षमा करेंगे।

गत अङ्क और यह अङ्क देखकर हमारे सभ्यग्राहक गण! अवश्य प्रसन्न हुए होंगे और साथ ही जब यह देखा होगा कि उसी अल्प मूल्यपर इसनें अपना सचित्र रुप धारणकिया है और भी ज्यादा प्रसन्नाता हुई होगी।

हम दिनों दिन इसको चित्रादि से सुसज्जित करनें का प्रयत्न करेंगे किन्तु यह जबही होसक्ता है जबकि हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहक गण इस ओर पूर्व से अधिक कृपादृष्टि रक्खें । हम केवल इतनी ही कृपा चाहते हैं कि समय पर इसका मूल्य भेज दिया करें और वी० पी० जानेंपर न लौटाएं तथा एक एक नवीन ग्राहक बनानें की कृपा करें आशा है इस ओर हमारे सभ्य ग्राहक अवश्य ध्यान देंगे यदि ग्राहकभी नबना सकें तब कम से कम दस योग्य सुधारकोंके पते अवश्य भेजें ।

जिन सज्जनों को अपने पते बदलवानें अथवा मूल्यादि अबला हित कारक सम्बन्धी कुछ पूछना हो तब ग्राहक नम्बरअवश्य लिखा करें क्यों कि अब परमेश्वर की दयासे इसकी ग्राहक संख्या नित्य प्रति बढ़ती ही जाती है इससे उनका नाम ढूंढने में बड़ी दिक्कत पड़ती है ।

सत्य सनातन धर्म कलकत्ता आदि कई समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया था, कि मेरे पूज्यपाद पिता जी (श्रोत्रिय शंकरलाल जी) के देहान्त से बाल विधवा विवाह प्रचारणी सभा के कार्य को भारी धक्का लगा है इस लिये मेरी और मेरी माता जी की इच्छा है कि आप लोगों की सहायता से उनका मिशन यानि बाल विधवा विवाह के प्रचार को जारी रक्खा जाय । इस लिये आपसे निवेदन है कि उन साहबोंकी एक फैरिस्त जोकि इसको अच्छा समझते हैं और जिनको आप जानतेहों मयनाम और पतेकेकृपाकरके मेरे पास भेज दीजिये ।
इस परकुछ सज्जनोंने कृपाभीकीहै जिनको हार्दिकधन्यवाद है । पश्चात् फिर निवेदनहै कि कृपा करके उक्तफैरिस्तभेजें।

यह सुन विचारशील पुरुषोंको अन्तरिक दुःखम होगा: कि माननीय मिष्टर गोखलेका सबजनसाम्य शिक्षा बिलाभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत के दुर्भाग्यवश पास नही हुआ ;

कितने शोककी बात है कि जिस शिक्षा से भूमंडल की जातियोंकी उन्नतिहै। वह शिक्षा भारतवर्ष के लिये क्योंकर हानिकारक होसकतीहै।इसकाविरोधप्रायः सिविलियनमहाशयोंने ही किया था क्योंकि सर्वसाधरण के शिक्षित होनें से स्वार्थियोंके मनमानें अत्याचार कोईभी नहीं सहसक्ता। और अपना दुःख अपने दयालू राजा तक पहूंचा सकतेहैं।

हम अपनी प्रजाहितैषी गवर्नमेण्टका इस ओर विशेषध्यान दिलाते हैं कि किसी व्यक्ति विशेष की तरफ ध्यान न देकर द्वितीय वार पूर्णतः इस पर विचार करे। साथ ही हम अपने माननीय नेताओं से निवेदन करते हैं कि जब तक उक्तबिल पास न हो वार २ अपनी प्रजा हितैषी गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करें। हमें पूर्ण आशाहै कि हमारी प्रजाहितैषिणी गवर्नमेण्ट अवश्य ३० करोड़ भारत वासियोंकी प्रार्थना स्वीकार करेगी।

अत्यन्त हर्ष की बात है कि हमारी धर्मप्रिय गवर्नमेंट ने मिस्टर वसू के विवाह बिल को स्वीकार नहीं किया॥ इस से जो हिन्दू धर्मकी रक्षा हुईहै उसके लिये हम अपनी गवर्नमेण्ट के अत्यन्त कृतज्ञ हैं॥

हमें मार्चमें देवनागरी पाठशाला हल्दौर जि० विजनौर का निरीक्षण कर के अत्यन्त आनन्द हुआ इस का कार्य्य अत्यन्त संतोष जनक है। उक्त पाठशाला में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन अध्यापक हैं। प्रथमाध्यापक नार्मल पास और संस्कृत में अच्छी योग्यता रखतेहैं साथ ही आप बड़े उत्साह और परिश्रम से कार्य्य कर रहे हैं । स्थानीय लालाठाकुर दास व लाला भवानीप्रसाद जी रईस के परिश्रम से उक्त पाठशाला स्थापित हुई है इसलिये आपको धन्यवाद देतेहैं।

मैनेजिङ्ग कमेटी का ध्यान व्यायाम की तरफ विशेषतः दिलाते हैं क्योंकि अभीतक व्यायामका कोई ठीकर प्रबन्ध नहीं है ।

लाला ठाकुरदास रईस संस्थापित पतित पाठशाला का भी निरीक्षण किया । पाठशाला का कुलखर्च उक्त लाला साहिब स्वयं करते है आप हजार मुखालफत होते हुए भी धर्म कार्य में दृढ़ रहे इसलिये लाला ठाकुरदास जी को धन्यवाद देते हैं । इसमें केवल चमारोंको हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है इसही लिये इसका नाम पतित पाठशाला रक्खागया है हमें उक्त पाठशाला से हार्दिक सहानुभूति है ईश्वर करे इसकी दिनों दिन उन्नतिहो । इस समय १५ लड़के हैं तीन साधारण हिन्दी और कुछहिसाबभी जानते हैं बाकी अक्षराभ्यासादि करतेहै। हमारे देशवासी धनाढ्यों को लाला ठाकुरदास जी रईस के कार्य का अनुकरण करना चाहिये ।

{ शेषांश जीवन चरित्र श्रोत्रिय शंकरलालजी बाबू ज्योति स्वरूप मैनेजर राजा लंढौरा लिखित । }

श्रोत्रिय जी के मकान पर सदैव एक दो विद्वान् निवास करतेथे उनके विद्यार्थियों की वस्त्रादिसे सहायता करतेथे आप के दान का पता लगाना दुस्साध्य एवं असम्भव था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि प्रत्यक्ष में बहुत ही कम दान करते थे।

उन के एक मित्र ने मुझे विदेष अध्ययनको जाते समय कुछ आभूषण धरोवर रखकर रुपएको दिये जब मैंने समस्त वृत्त कहा और आभूषण दिये तब देखतेही लाल होगये और कहा मेरे पास कौड़ी नहीं तुम्हें उसकी अबला पत्नी के आभूषण लाते लज्जा नहीं आई स्त्री धन का उसे और तुम्हें क्या अधिकार है पति के विदेष जाते समय उस से आभूषणभी लेलो यदि पीछे उसे किसी प्रकारकी आवश्यक्ता हुई तब बेचारी क्याकरेगी आदि बहुत कुछ कहा और किसी को खबर न करके १००० उसे दिया मुझे किसी प्रकार की खबर न हुई कई वर्ष पश्चात् विदेशसे लौटनेपर उन्होंने ही कहा।

पहले लिखा जा चुकाहै कि चरित्र नायकके दानका पता लगाना असम्भव है आपको पान तमाखू तक का व्यसन नहीं था इतने पर भी ५०० भी मासिक की आय होते हुए भी कई सहस्र ऋण लेकर दान किया। आपने दश बारह लड़के अपने रुपएसे पढ़ाए इस समय भी एक अनाथ जिस का बाल्यावस्था से पालन किया इनके घर पर है।

जिस दिन आप की ठीक सूर्योदय या सूर्यास्त पर सन्ध्या नहीं होती थी उस दिन भोजन नहीं करते थे।

इस चरित्र नायक ने अपने थोड़े से जीवनमें २१ पुस्तकें लिखीं और नौ वर्ष अबला हितकारक मासिक पत्र निकला ट्रैक्टों की संख्या लिखना दुःसाध्य है इतने पर भी रात दिन नगर २ ग्राम २ गर्मी सर्दी सहतेहुएप्रचार करते थे

श्रोत्रिय जी का मस्तिक बल विचित्र था जब बिजनौर रहना होता था प्रायः एक समय में तीन कार्य करते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथसे लिखते मुखसे कृषकोंसे वार्त्ता करते और मैनेजरका कार्य्य देखतेथे, आप भोजन भी बिलकुल साधारण करतेथे।

प्रचार ।

श्रीमान् श्रोत्रियजीने सन् १८०३ में जब विधवा विवाहका प्रचार प्रारम्भ किया तब न केवल बाहर के मनुष्योंसे किन्तु कुटुम्ब से अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ा।

जब आप किसीसे विधवा विवाह विषयक वार्त्ता करते तब बातको सुनना एक तरफ रहा गालियांतो एक साधारण बातथी कहींर पत्थर बरसते कोई नास्तिक कोई गुसईसाई और व्यभिचारी आदि विशेष गुणों से सत्कार करता था। कुटुम्ब के पुरुष पागल ही कहते थे।

किन्तु धन्यवादार्ह श्रोत्रियवीरने कदापि नाममात्र को धैर्य नहीं त्यागा किन्तु ज्यूं ज्यूं आपत्तियां आती रहीं उत्साह द्विगुण ही होता रहा।

जब कभी उनके मित्र कहते कि इस कार्य्य को त्याग दो नित्य की गाली सुनना अच्छा नहीं या गाली और पत्थरों के सत्कार कर्त्ताओं पर इज्जत की नालिश करो क्यों कि भारत गवर्नमैंण्ट में विधवा विवाह बिल (Widow marriage bill) पास हो चुकाहै। इसके उत्तरमें श्रोत्रिय महाशय बड़ी बे परवाही से हँसकर यह श्लोक कहा करते थे।

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव येषां प्रसादात्सुविचक्षणोऽहम्।
यदा यदा मे विकृतिं भजन्ते तदा तदा मां प्रति बोधयन्ति॥

बाल विधवा विवाह का सबसे पहले शास्त्रार्थ नगीना निवासी प० बिहारीलाल शास्त्री से हुआ और श्रोत्रिय जीने विजय प्राप्त की। उक्त शास्त्री महाशय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरादाबाद सहारनपुर के जिलों में अद्वितीय विद्वान् थे श्रोत्रिय जी ५ वर्ष अहर्निश परिश्रम करते रहे किन्तु एक भी विवाह नहीं हुआ सन् १९०१ में १० जून को मुज़फ्फर नगर अग्रवाल वैश्य का हुआ। इस समय श्रोत्रिय जी को जो हर्ष हुआ उसका ठिकाना न था।

प्रचार के प्रारम्भ में एक दो वर्ष बादही आपकी भांजी गोपाल देवी ८ वर्ष की अवस्था में विधवा होगई जिसके दुःखमें श्रोत्रिय जी की उत्साहाग्नि ने घृत का काम किया। अल्पवयस्की विधवाओं को देखकर श्रोत्रिय जी बच्चों की तरह रोते और वार २ बाल विवाह की कुप्रथा को धिक्कारते थे।

सन् १९०१ में श्रोत्रिय जी की धर्म पत्नी श्रीमती गोमती देवी ने अल्पवयस्क चार बालकों को छोड़ विनश्वर शरीर का त्याग किया। इस घटना के बाद तीन वर्ष तक दरी बर जबतक कि दूसरा विवाह न किया खट्वापर न शयन किया एकही समय भोजन किया दुग्ध बिलकुल नहीं पान किया।

सन् १९०३ में आपका द्वितीय विवाह प० फूलचन्द्र शर्मा शिमला निवासी की विदुषी बाल विधवा कन्या से हुआ इस विवाह से केवल दो बालक हुए दोनों ही ने अल्पायु में संसार का त्याग किया।

एकबार आप किरठल एक विधवा की माता को विवाह के लिये पक्का करने गए। वहां ग्राम वालों को खबर हुई कि श्रोत्रिय महाशय विधवा विवाह को आगए और अमुक के स्थान पर ठहरे हैं। फिर क्या था दश बारह बदमाश आगए और कहनें लगे आओ हम तुम्हें विवाह करनें के फल में वैकुंठ भेजें इत्यादि कहते हुए कोलाहल करने लगे तब श्रोत्रिय जी उपदेशक सहित मकान की छतपर चढ़गए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतनालेमें धोती बान्धकरपीछे से नीचे उतर और । रात्रि में कई मील दूसरे ग्राम को पैदल गए ।

आपने २५००० विज्ञापन १००) इनाम के छापवाकर भारतीय विद्वानों की सेवा में भेजे जोकोई श्रुति स्मृति पुराणों से अक्षत योनि कन्याओं के विवाह को शास्त्र विरुद्ध सिद्ध करेगा उसे दिया जायगा किन्तु सन्मुख आकर कोई नहीं डटा । आप में यह प्रशंसनीय गुण था कि जिन विद्वानोंको चैलेंज देते थे कभी उन के साथ उद्धता का व्यवहार नहीं करते थे प्रत्येक पण्डित के चरण स्पर्श करते थे और बड़े शिष्टाचार स व्यव हार करते थे ।

जबकोई विद्वान् अपनी विद्वत्ता के सामनें इनको तुच्छ कहता तब बड़ी नम्रता से कहते थे महाराज मैं कुछ नहीं जानता बड़े विनय से निर्णय की प्रार्थना करताहूं जिससे लक्षों बाल विधवा कन्याओं का कल्याण हो ।

सन् १९०४ में आपनें एक दीनबन्धु नामक प्रेस खोलने उसका कार्य भी स्वयंही करते थे ।

सन् १९०५ ई० में विरोधियों नें ग्राम वालोंको बहकाकर एक फौजदारीमें मुकद्दमा कराद्या इसही अवसरपर आपकी पत्नी और पुत्र सख्त बीमार होगए दोनों में से किसी के बचनें की आशा न थी . जब पुत्रको २४ लंघन होचुके थे एक विधवा मकान पर विवाह कराने आई आपनें तत्क्षण ही विज्ञापन छपने भेजदिया । तब कई उनके सम्बन्धी और मित्रोंनें उसको समझाकर लौटाया इस पर श्रोत्रिय जी को अत्यन्त दुःख हुआ। परमेश्वर की दया से दोनों रोगीयों को आराम होगया । बिजनौर शेसन से आपको चार वर्ष की सजाका हुकुम हुआ किन्तु उसही समय आपको जमानत पर छोड़ दिया मुकद्दमा हाईकोर्ट में तीन मास रहा आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यान्ह तक पूजन करते और बादको सायंकाल कुम्भके मेले में प्रचार करते थे इस समय आपकी बड़ी कन्याका देहान्त होगया ।

वकील ताज्जुबमें थे कि यह कैसापुरुषहै आपत्ति परआपत्ति पड़ रही है किन्तु कुछ परवाह नहीं अब भी प्रचार ही में लगा रहता है ।

परमेश्वरकी कृपा से आप निर्दोष प्रमाणितहुए इस अभियोग में १२००) व्यय हुआ इस समय इनके विदेश से आए मित्रने रु० देनें चाहे किन्तु स्वीकार नहीं किये

सन् १९०२ में आप काशीगए और शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया किसी भी पण्डित नें स्वीकर न किया तब आप महामहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शास्त्री जी के पासगए और प्रार्थना की पण्डित जी ने प्रार्थना सहर्ष स्वीकार की और प्रातिज्ञा पत्र लिख दिया । किन्तु पण्डित जी पीछे मध्यस्थ आदि ठीक न होनें के कारण हटगए । श्रोत्रियजी नें यहां तक कहा कि आप चाहे जिस काशीस्थ विद्वान् को मध्यस्थ करदीजिये इतनें पर भी पक्के नहीं हुए ।

जब सभाका जन्म भी न था सहस्रों रूपया अपना इसमें व्यय किया शनैः२ आपकी कीर्ति समस्त भारत वर्ष में फैलगई सबसे पहिले महाराज नाभाने बुलाया और बड़ा सन्मान किया इसके वाद कितनें ही महाराजा बुलानें लगे विधवा विवाह के अलावा अनेक शास्त्रीय विषयोमें सम्मति लेते थे

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

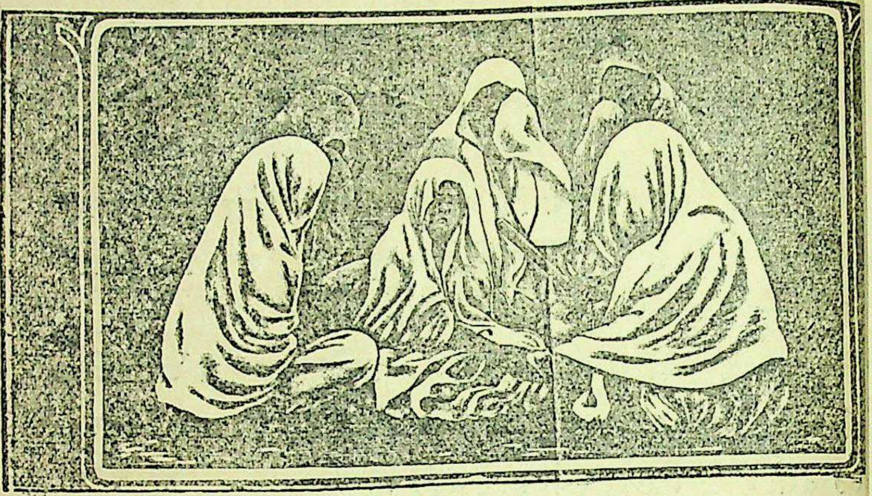

बिधवा विलाप।

(श्रोत्रिया पूर्णादेवी लिखित)

थी एक सात वर्ष की सुन्दर बाला।
अति मनोहर सुन्दर रूप रिसाला॥
खेल रहीथी एकरोज खेल वो सुन्दर।
थी प्रसन्न मन बनाय माटीके मन्दर॥
न जानेथी वोके आज विधि वाम है।
खेल जिन्दगी का आज तमाम है॥
तबही माता रोती सर पीटती आई।
ले चली पकड़ हाथ दया न मनमे लाई॥
लगी चूड़ी फोड़ने हुई निर्दईदादी।
क्यों आज बालाकी मौहब्बत दिलसे भुलादी॥
हाय! दादी निरदई आज तुम क्यों हुई।
कलही पहनाई आज क्यों फोड़ो नई॥
हाय! कड़े छड़े सबही दिये उतार।
हाथरोको न उतारो मेरा चन्द्रहार॥
निजमाता [illegible] मारके खुश होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत बातें नजर आज क्यों आती॥
ऐ भारत वासी अब रहम खाओ।
खता क्या करी है बाला ने जरा बताओ॥

श्री पं० रामस्वरूप पाठक (लिखित)

भजन नम्बर ॥ २ ॥

मुझे मन्दा लगती हाय ! माय, मेरी चुरियां चों फोरें ।
तू तो तहे थी बनेंदी नौदरी, एत तुझे घड़वादूं तिलरी।
आज उतारे है चौं सदरी, नथ बिछुवे मोरे॥ मु० ॥१॥
गड़ छड़े झांझन अरु बाली, झांवर नुंइयां मेरी निताली।
हार पचलरी भूमें दाली, चौं फेले तोरे ॥ मु० ॥ २ ॥
हाय माय ! तू हो दई बैरन, छोर मुझैं जाऊँहूं खेलन।
ताले तरों दे है चों हाथन, हैं दोरे॥ मु० ॥ ३ ॥
हाय शोक दिले टुकड़े होवे, ज्यों वह विधवा कन्या रोवे।
पाठक खेले कूदे सोवे, झूले हिंडोरे ॥ मुझे० ॥ ४ ॥

भजन नं० दादरा ॥ ३ ॥

टेक–मत विधवायें बाली रुलाओ जी–टेक।
दो दो बरस कहीं चार२ बरस की कोई बरस दस खेले हँस हँस॥ विधवा है नहीं जाने कुछ बस हा! मत०१।
ऐसी२ कन्याजो फेरोंकी चोर हैं। तरसतीखाओ ब्याह रचाओ उनका कुछ अपराध बताओ। हा ! मत० ॥२॥
कितनी गईं सङ्ग नीचोंके धनले। गर्भ गिराये, जहर दिलाए। कितनों ने यूँही प्राण गमाये। हा ! मत ॥३॥
कितनी बाजारोंमें बैठी हैं देखो। बनी हैं वेश्या कररहीं पेशा। हा ! तुमको पर नहीं अन्देशा। हा ! मत० ॥४॥
पाठक कहै मित्रो इज्जत बचाओ। होश में आओ, जहां तक पाओ। इनके पुनः संस्कार कराओ। हा! मत०॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[श्रोत्रिया पूर्णदेवी लिखित]

माताका पुत्री को उपदेश ।

माता–पुत्री सुरूपा आवो आज तुम्हें विद्या की महिमा बतायें विद्या पढ़ने से क्या लाभ और न पढने से क्या हानि होती है। सुरूपा माता जी आती हूँ (बैठकर) क्या माता जी विद्या बड़ी उत्तम वस्तु है। मैं जब कलपढ़रहीथी तो रामोंकी दादी बड़ी नाराज हुई और कहने लगी के कोई पण्डित लड़कियों के पढाने की आज्ञा नहीं देता शास्त्र में भी लड़कियों के पढाने का इजाजत नहींहै पढने से लड़कियां बिगड़ जाया करती हैं। फिर माता जी आप विद्या को क्यों उत्तम समझती हो। माता! ठीक है अपनी बुद्धयानुसार ही सब कहा करतेहैं इसमें उनका कोई दोष नहींहै यह भी अविद्या ही का कारण है जो उन्हें कैसी सम्मति दी यदि उनमें विद्या होती तो वेकभी तुझे ऐसी शिक्षा न देती क्या तुम्हें वह श्लोक याद नहीं रहा

विद्या नाम नरस्य रूप मधिकं प्रच्छन्न गुप्तं धनम् ।
विद्या भोग करी यशः सुख करी विद्या गुरुणां गुरुः ॥
विद्या बन्धू जनोवदेश गमने विद्या परं दैवतम्,
विद्या राजसु पूजिता नहीं धन विद्या विहीन पशु ॥ १ ॥

विद्या जोहै यही पुरुषों का अधिक रूप है विद्या गुप्त धन है विद्या भोगकी और यश सुखकी देनवाली है विद्या परम गुरू है : विदेश में विद्या बन्धू के समान सुख देने वाली है विद्या परम देवता है विद्या से बढ़के कोई देवता नहीं विद्या ही से राजा लोगों का सनमान होता है विद्या से बढकर कोई धन नही विद्या विहीन पशुके समान है ॥

सोहे पुत्रि इतने गुण होनेसे ही विद्या को उत्तम समझा जाता है विद्या में अनेक गुण भरें हैं जिनकी गणना मैं सहजमें नहीं कर सकती : उन्होंने जो कहा कि पंडित स्त्रि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों के पढ़ने की इजाजत नहीं देते इसका यह कारण है के जब स्त्रियें पढ़ जावेंगी तो उनकी पोल स्त्रीयों पर खुलजाने से जो उनकी जीविका मूर्ख स्त्रीयों से है जाती रहेगी । क्यों कि ज्यादा तर स्त्रीयां ही इनकी बातोंमें आकर पति स्वसुर की चोरी से इनका घर भरती हैं और जो उन्होने यह कहके शास्त्र में स्त्रीयोंके पढ़नेकी मनाई है सो उनकी भूल है शास्त्र में कहीं स्त्रीयोंके पढ़नेकी मनाई नही है यदि शास्त्रो में मना होता तब हमारी अदर्श मातायं गार्गी आदि क्यों पढ़तीं और धर्म शास्त्रके कर्त्तव्य महार्ष याज्ञवलआदि कदापी नहीं पढ़ने देते बल्कि उन्हों नें अपनी स्मृति मिताक्षरा में यज्ञोपवित कराकर ब्रह्मचर्य से रहनें की आज्ञा दी है जो समय २ पर तुम्हें बताऊँगी देखो अथर्वेद में क्या लिखाहै ।

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम् ।

अर्थात् ब्रह्मचर्य्य से कन्या युवा पति को वरे ।और देखो महा भारत में आता है

पुराकल्पे कुमारीणां मौंजि बन्धन मिष्यते

अर्थात् पहिले कन्याओं का मौंजि बन्धन होता था । फिर भला जब कलियुग अविद्या और पाप से आच्छादित है तबक्यों न पढ़ाया जाय ।

केवल टुच्चे मुच्चे पण्डितमनाकरतेहैं देखो ओरियन्टल (orieutal college) लाहौर के प्रधानाध्यापक महामहोपाध्याय पण्डित शिवदत्त शास्त्री जी अपनी पुस्तको में लिखते हैं ।

औरजो उन्होंने यह कहा के लड़कियें पढ नेसे बिगड़ जाती हैं सो उन्होंने ठीक कहा अव्वल तो ये लोग लड़कीयोंको पढ़ाते ही नहीं, यदि पढ़ाया भी तो शुरू में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णजी की झूँठी २ बुराइयों की पुस्तकें जिन्हें यह जा
समझते हैं पढ़ानी शुरू करदीं बेटी कृष्ण जी ऐसे महात्मा
को इन लोगों ने ऐसे २ दोष लगाये हैं मैं जबान से न
निकाल सकती कोई दुनियां में ऐसी बुराई नहीं रही
कृष्ण जी में न बताई हो जब वह बुद्धि की कच्ची लड़कि
यह पुस्तकें पढ़ेंगी तो जरूर असर होगा और यह सोच
के कि-जब हमारे परमात्मा ही पाप से नहीं बच सके त
हमारी क्या सामर्थ्य है जो कुकर्मोंको त्याग सकें॥ यदि इ
पुस्तकों की जगह सती स्त्रीयों के जीवन व स्त्री धर्म की पुस्त
पढ़ाई जावें तो मैं दावेके साथ कहती हूं फिर सब बुरा
योंसे दूर होकर उनका चित्त चाहेगा कि हम भी इन स्त्री
की तरह सुयोग्याबनकर नाम व इज्जत पैदाकरें। लड़कि
योंतो भूल कर भी किस्से कहानी व झूंटी कृष्ण लीला
पढ़नेदेनी चाहियें, ज्यादा तर ये मूर्खा स्त्री यही कह दि
करती हैं कि क्या लड़कियों को पढ़कर नौकरी करनी है
बेशक स्त्रीयोंको व लड़कियों को ईश्वर की नौकरी करनी
जिस लिये स्त्री जाति को ईश्वरने पैदा कराहै उन्हें अपना
वह फर्ज अदा करना है जो बगैर विद्यापढ़े नहीं होसकता

अगर ये लोग जरा इधर ध्यान देकर देखें तो उनको
मालूम हो जायेगा कि खास कर स्त्रियों को तो विद्या बड़ी
आवश्यक है जब कोई बिपत पड़ती है तो विद्या ही एक
ऐसी वस्तु है जो उस मौके पर धैर्य दिलाती है। विद्या
ही कुकर्मों से बचाकर सीधे मार्ग पर ले आती है। विद्या
ही हमें अपने भले बुरे का ज्ञान दिलाती है विद्या ही हमें
बड़ों का सनमान छोटों से प्रीति करना बताती है विद्या
ही हमें धर्म पर जान निछावरने का उपदेश देती है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादा क्या कहूँ विद्या ही एक ऐसी चीज है हमैं अन्त में परलोक की याद दिला ईश्वर से मिलने की तदबीर बताती है फिर हम क्यों न ऐसी अनमोल वस्तु को ग्रहण करें हाय इस अविद्या पापिन की बदौलत हमारा यह देशोंका सरताज भारत देश आज खाक में मिल गया इस अविद्या ही के कारण जो सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण गिने जाते थे आज उनको मांगने से भीख भी नहीं मिलती ।

हाय आज दिन हम वही स्त्रीयें हैं जो देवी व लक्ष्मी केनामसे पुकारी जातीथीं आज शूद्रा व पैरकी जूती समझी जाती हैं यह सब अविद्या ही की कृपा है जो आज हम पे बिपत पड़ती है तो अगर ब्राह्मणी हो तो रोटी करने के और दूसरी जात हैं तो चरखे के सिवाय ऐसी कोई तदबीर नहींहै जो अपनी वा अपने बच्चोंकी पालना करसकें किन्तु जब से मशीन चली है चरखे का कामभी कम है अन्त में रोटी नमिलनेसे अधैर्य्य होकरसिवाय कुकर्मकरनेके कुछसूझता नहीं यदी मुर्खा की जगह पढ़ी लिक्खी स्त्री होंगी तो यह बातें कभी पेश न आवेंगी ॥

शेष फिर

हिन्दुओं की शारीरिक अवनति ।

(गतांक से आगे)

संसार में सब से अधिक धनाडच अमेरिका का एक फीलर नामक पुरुष है जिसकी आय संसार के सब बादशाहों से भी बढ़कर है । परन्तु आपनें कभी उसका फ़ोटो भी देखा है उसके चेहरे पर मुरदानी छाईहै । उसका आमाशय बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बल है। वह करोड़ों रुपए देनेको तैयार है यदि कोई उसका आमाशय ठीक करदे क्योंकि करोड़ों रुपए उसकी दृष्टि में कुछ भी नहीं हैं। एक मुकद्दमे में उसपर चौदह करोड़ जुर्माना हुआ था। यह खबर सुनकर उसने हंसकर कहा था कि इस वर्ष तैल के पीपों के मूल्य में एक पैसा की वृद्धि कर देगा। इधर हमारे यहां =) का मिहनती सैरों खाकर पचा जाता है इससे पता लगता हैं कि स्वास्थ्य के कोई सुगम नियम अवश्य हैं जिनके पालने से कोईभी मनुष्य स्वस्थता प्राप्त कर सक्ता है। अवश्य वह निर्धन पुरुष स्वास्थ्यसम्बन्धी नियमों में से एक दो नियमका पालन अवश्य करता है जो स्वास्थ्य रक्षा के लिये नितान्त आवश्यक हैं आप छोटे २ नियमों की पालना करो अथवा न करो, परन्तु यदि इन आवश्यक नियमों की पालना करोगे तो अवश्य निरोग्य रहोगे। इस में कोई सन्देह नहीं है क्योंकि प्रधान तम नियमों के पालने वालेको इनकी कोई आवश्यका नहीं रहती 'हाथी के पांवमें सबका पांव' स्वास्थ्य यह नियम ऐसेहैं की धनी निर्धन युवा, वृद्ध, बालक' बली, दुर्बल, स्त्री पुरुष जिस ऋतु जिस देश जिस आयु में पालना करना चाहे वह कर सक्ते हैं और स्वास्थ्य देवी को अपनी रक्षक बना सक्तेहैं। मैं शारीरिक उन्नति और स्वास्थ्य को पर्याय वाची शब्द समझताहूं सुन्दरता जो एक दुर्लभ्य वस्तु है बिना स्वास्थ्य के प्राप्त नहीं होसक्ती जहां निरोग्यता है वहां सुन्दरता है अच्छे से अच्छे रंगवाला और अच्छे से अच्छे डील डौलवाला पुरुष यदि रोग ग्रस्तहै और चेहरे पर मुरदानगी छाई हुई है खून प्रचण्ड शरिरमें भ्रमण नहीं करता और वह चल फिर नहीं सक्ता तो वह सुन्दर ही नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू जो आज कल दिनों दिन कमजोर हो रहे हैं वह इन्हीं नियमों के न पालनें का कारण है। और यदि चाहें तो इन्हीं का पालन करके शारीरिक उन्नति कर सकते हैं। कई दूसरी जाति के लोगों को न जानते हुए इनका पालन करना पड़ताहै इस वास्ते स्वास्थ्य रहते हैं।

स्वास्थ्य सम्बन्धी वह आवश्यक नियम कौन हैं। इन की पूरी व्याख्या यहां कठिन है। तथापि संक्षिप्त निवेदन करता हूं।

प्रथम व्यायाम।

मैंकहता हूँ कि आप मुझे ऐसा कोई मनुष्यबताएं जो कि निरोग हो,मैंबताऊँगा कि वह व्यायाम करताहै,व्यायाम के विना पूर्ण बल और स्वास्थ्य प्राप्त होना असम्भव है। आप लोग जानते हैं कि सब रोगोंका कारण विकृत पदार्थ Feoreign matter होताहै। डाक्टर लूईकुहनी जिन्होंने चार प्रकार के स्नानों के द्वारा सब रोगोंको दूर करनें की चिकित्सा निकाली है,सारा जोर इस बात परही देतेहैं डाक्टर विलसन साहबने न्यूहाईजीन newhygine मे पूरी २ व्याख्या की है।

'मुफर्रहउलकुलूब,, मैं जो यूनानी की एक माननीय पुस्तक है इस प्रकार लिखा है।

"गुप्त न रहे किजो वस्तु खाई जाती है वह सर्वथा शरीर का अंश नहीं बन जाती, प्रत्येक वस्तु के विपाक के पश्चात उसका थोड़ा सा भाग शेष रहता है अब प्रकट है यदि प्रत्येक विपाक का शेष न निकाला जावे और नहीं पाकहो तो बहुतसा संग्रह होकर अनेक प्रकारकी व्याधियोंको उत्पन्न करेगा, इस लिये सावधान रहना चाहिये कि वह संचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न होनें पावे और वह सावधानी व्यायाम है ।

यद्यपि प्रकृति का यह धर्म है कि अनावश्यक वस्तु को बाहरनिकालतीरहे तथापि हरकतकी सहायताके बिना पूर्णत ऐसा नहीं कर सक्ती ।

(शेष फिर)

(देशोपकारक से उद्धृत)

ब्रह्मचर्य्य

(पूर्व प्रकाशित से आगे)

अथर्व काण्ड ११ सू० ५ ॥

देवानामेतत्परिषूतमनभ्यारूढं चरति रोचमानम् ।

तस्माज्जातं ब्राह्मणंब्रह्म ज्येष्ठं देवाश्चसर्वे अमृतेन साकम् ॥ १

अर्थ—(देवानां परिषूतम्) अग्नि वायु और इन मुख्य देवता पदवाच्यों से उत्पन्नवप्रकट हुए अर्थात् अग्नि आदि पदों के ठीक २ वाच्यार्थ के व्याख्यान सहित सृष्टि के आरम्भ में हुए (रोचमानम्) अज्ञान मिथ्यापन तथा कलंक आदि सब दोषोंसे रहित और सर्व शुद्ध होनेसे शोभित रुचिकारक (अनभ्यारूढम्) स्थल न होने से भार जिसका न होता [स्थूल वस्तु का ही सबको सर्वत्र भार प्रतीत होता है] (ज्येष्ठमतद् ब्रह्म) अत्यन्त प्रशँसा के योग्य श्रेष्ठ प्रत्यक्ष ब्रह्मनाम बड़े पूज्य वेद नामक विद्याके तत्व को (चरति)स्वीकर ग्रहण करता नाम पढ़ता औरजानताहै और जिसके शरीर में (सर्वे देवश्चामृतेन साकम्) अपनेर अवान्तर भेदों के सहित सब अग्न्यादि देवता अमृत नाम शीघ्र नष्ट न होने वाले शुद्ध सारांश के साथ वीर्य्य रूप तेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने से वास करते हैं (तस्माज्जातं ब्राह्मणम्) इसकारण तेज के साथ प्रसिद्ध प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए ब्रह्म नाम को चरने नाम पढ़ने के स्वभाव वाले सार्थक ब्राह्मण ब्रह्मचारी जानो। प्रशस्य और वृद्ध दोनों शब्दों को ज्य देश होके ज्येष्ठ शब्द बनता है परब्रह्म शब्द से बड़े का आजाने के कारण ज्येष्ठ शब्द को श्रेष्ठार्थ यहां लेना चित समझा गया।

भावार्थः-अग्नि से ऋग्वेद; वायु से यजुर्वेद और सूर्य सामवेद हुआ यह विचार ब्राह्मणादि सब ग्रन्थों के अनु- है। अग्नि देवता है 'अग्नि पवित्र करने वाला ऋषि है' यादि प्रकारसे वेदों में अग्नि को ऋषि और देवता दोनों ना है सो 'वेदमेंएकही विषयमें जहां विरुद्धसी दखनेवाली तेंकहीहैं वहांवे दोनोंही ठीक धर्मानुकूलहैं' इस मनुजी के क्यानुसार अग्नि आदि को ऋषि तथा देवता मानना नों संगत हैं। उसमें देवपन सामान्य और ऋषि- विशेषहै। जैसे एक ही देहधारी मनुष्य ब्रह्मचारी शब्द का निर्वचन मंत्र के अक्षरों से निकलताहै ह्मचर्य और ब्रह्मचारी यह दोनों शब्द (ब्रह्मचरति) इन पदों से सिद्ध होते हैं जो कि दोनों पद भिन्न २ स्पष्टही गये हैं और चरति क्रियाका ब्रह्म कर्म भी पढ़ा ही है।

लोक में भी सर्वत्र गुण कर्म सम्बन्धी लक्षणों से ही पदार्थों का निर्देश वा बोध किया जाताहै। जैसे अग्नी नहै ? तो उत्तर होगा कि जो जलाताहै। दाह गुण वाला गुण का कारण तथा जलका उत्पादकहै। 'वायु कौन है -उत्तर होगा कि जो स्पर्श गुणका हेतुहै जो चलता चेष्टा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता तथा जिससे अग्नी प्रकट वा प्रदीप्त होताहै
गुण कर्म रूपलक्षणोंको छोड़कर अग्नी आदीका बोध
नहीं होसकता । इसीप्रकार यहां ब्रह्मचर्यत्व और ब्रह्म
पन को मन्त्र के व्याख्यान से बोधित कराया गयाहै ।
आदी पदों के वाच्यों से प्रकट हुआ देवताओंका सारां
शुद्ध शोभायमान श्रेष्टत्व पद वाच्य है इस को जो २
है वह २ ब्रह्मचारी है इस प्रकार चराचर संसा में ब्रह्म
व्याप्त है और जो चेतन वा जड़ जैसे ब्रह्म को चरता है
वैसा ही ब्रह्मचारी होता है यही वेदके सामान्यार्थ ब्र
देव ता पुरुष आदि नामों से व्यवहार किया जाता है
कारण अग्न्यादि ऋषियों द्वारा वेद उत्पन्न हुए दान
ठीक हैं । सँसार में जो शोभा प्रकट होती है वह अग
से ही प्रकट होती है वह गुण रूप शोभा जिसपर होत
उस पर कोई बोझा उसका नहीं होता जैसे श्वेतादि
का किसी पर भार नहीं होता है जैसे देह धारी में
के मन्द मात्र ही होने से नाना रोग हो जाते हैं
महान् कुरूप होजाते हैं तथा अग्नि ही न रहनेसे देह
मृतक कहाने लगता है । श्वेतादि गुणों को किसी पर
नहीं होता किन्तु भार द्रव्य में ही होता है ऐसे ही
विद्या सूक्ष्म गुण रूप होने से धारण करने वाले पर
नहीं बढ़ाती इसी कारण शोभा करने वाली है अमृत
प्राण का और मृत नाम मृत्यु नाम अपान का है वी
रोकने उपस्थेन्द्रिय सम्बन्धी अपान का वीर्य पात रूप
काम रुकता है इसी से मृत्यु की हानि व रुकावट और
को शक्ति रूप अमृत की पुष्टि दीर्घकाल स्थिर होती है
ही प्रकार कारण रूप शुद्ध अग्न्यादि तत्वों के शरीर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रने और प्रकाशमान विद्यारूप वेद के चरने से ब्रह्मचारी कहाता है। यह स्पष्ट प्रचारक मीमांसकोंका अभिप्राय जानो अग्न्यादि पदों से ही प्रकट उन अग्न्यादि के सामान्यार्थ के अन्तर्गत समीप अग्न्यादियन ही ब्रह्म नाम परमात्मा है इसकारण यहां सामान्य कथनमें ब्रह्मपद वाच्य कुछभी शेष नहीं रह जाता जो अनुकूल में अन्त में सुखकारी है वही ब्रह्म इससे भिन्न प्रतिकूल परिणाममें दुःखकारी हानिकारक अब्रह्म छोटा वा नीच है उसका चरना अब्रह्मचर्य नाम व्यभिचारी होना है : यह अर्थापत्ति से सिद्ध होता है।

जिसमें उपस्थेन्द्रिय तथा मन को वशीभूत रखने पूर्वक ब्रह्म नाम वेद धर्म मान के चरने योग्य होता उस व्रत का नाम ब्रह्मचर्य है ॥

रूपवती

द्वितीय परिच्छेद।

प्रातः काल का समय है लगभग नौ या दस बजे हैं धूप क्रमशः तेज होती जाती है जो शीतल वायु अबतक प्राणि मात्र को आनन्द देरहीथी वह अबलू रूप में बदलने लगी है–सूर्य्य भगवान् की बाल किरणें जो कुछ समय पहिले वृक्षों और अटारियों की चोटियों पर ही थीं अब क्रमशः पृथिवी को आच्छादित करने लगी।

चलो पाठक! उदयपुर के राजभवन की सैर करें। महाराणा राजसिंह दरबार में एक रत्न जड़ित आसन पर बैठे इनके दाहनि तरफ सरदार चूंडायतऔर चारोंतरफ अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वत राणावत दूदावत झाला परमार हाड़ी राठौर इत्यादि बैठे नाना प्रकार की राष्ट्रीय वार्ता कर रहे हैं।

इतने ही में एक द्वारपाल ने आकर खबरदी कि राणा रूपनगर का दूत आया है उसके लिये क्या आज्ञा है।

राणाजीने आज्ञादी यदि कोई जरूरी कामहो तब शीघ्र साथ ले आओ द्वारपाल फौरन आगत दूत को आज्ञानुसार साथ ले आया। दूत ने झुककर तीनबार अभिवादन किया और पत्र निकालकर राणा जी के चरणों में धरा।

राणाजीने तुरन्त पत्र पढ़ा पढ़ते ही राणाजीकी दशा कुछ और ही होगई जिस कमल मुखका सरदार अमरवृन्द अद्भुद आनन्द लेरहेथे वह ठीक कमल जैसे सूर्यके वियोग से मुकुलित होजाता है इसी प्रकार महाराणा जी के कमल नेत्र पत्र को हाथ से रखतेही बन्दहोगए, और नीचे मुख करलिया। कुछदेर राणाजी की अपूर्व चिन्ताग्रस्त दशा देखकर सरदार सामंत टकटकी लगाए उनके मुखकी तरफ देखते रहे जब कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत होगया और राणाजी की दशा कुछ न बदली तब सरदार चूडावत बोले महाराज पत्र पढ़कर चुप क्यों होगए।

राणाजीने बिना कुछ कहे दोनों पत्र चूडावत को दे दिए पत्र लेकर चूंडावतने कहा क्या मुझे यह पत्र पढ़नें की आज्ञा है इसके उत्तर में राणाजीने कहा ऐसे पढ़िये समस्त सामन्त सरदार सुने। आज्ञा पातेही चूंडावत पत्र इस प्रकार पढ़ने लगे।

पत्र

श्रीमान् महाराजाधिराज शूरशिरोमणी हिन्दुपति श्री १०८ महाराणा राजसिंहजीके चरण कमलोंमें प्रणामानन्तर अत्यन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेक के साथ लिखती हूँ दुष्ट अधम औरंगजेब १२००० अ-
श्वारोही सेना लेकर मुझे ब्याहने आताहै इस लिये निवे-
दन है कि आप मेरी पापी औरंगजेब के हाथों से रक्षा
कीजिये । क्या राजहंसिनी गिद्ध के साथ जायगी क्या
पवित्र क्षत्रियवंशकी कन्या म्लेच्छको पति बनाएगी । चाहे
अग्नि शीतलता ग्रहण करे और चाहे सूर्य पश्चिममें उदय
हो किन्तु मैं उस दुष्ट से विवाह करना एक तरफ़ रहा स्पर्श
भी नहीं करूंगी । इसलिये हे सीसोदियाकुल भूषण शूरशि-
रोमणि मैं आपसे पाणिग्रहण की प्रार्थना करती हूं । इस
समय केवल पवित्र क्षत्रिय रक्त आपकीही नसोंमें संचारकरताहै।
आशा है इस दुष्ट से मेरी रक्षा करके अवश्य क्षत्रिय शब्दको
सार्थक करोगे।

हे क्षत्रिय कुलावतंस ! यदि आप न आसकें या मुझे
शरण देना स्वीकार न करोगे तब अन्तिम समय तक आपकी
इन्तज़ार करके विषद्वारा आत्मघात कर के सर्वेश्वर दयालु
परमात्मा की पवित्र शरण लूंगी और यह आत्महत्या
का पाप आपके सिर लगेगा ॥

आपकी
कृपाभिलाषिणी
रूपवती

पाठक अब आप समझ गए होंगे जिसको इस समयतक कुमारी
के नाम से लिखा गयाहै वह रूपनगर के राजा की कन्या है
और पूर्व लिखित काका उस के पिता अर्थात् रूपनगर के
राजा हैं

इस पत्र को पढ़कर वीर चूड़ावत के नेत्रलाल होगए
और पत्र दूसरे सरदार को देना था कि हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसा कमर में बंधी तलवार पर पड़ा । ही समस्त दरबारस्थ राजपूतों की दशा कुछ और गई । सब की आखोंने बाल सूर्यका रूप धारण किया भुजा तथा होट फड़फड़ाने लगे सारांश यह है समस्त दार सामन्तों के शरिर क्रोधाग्नि से लाल होगए ।

सरदार चूड़ावत् हाथ मलकर दांत किचकिचा कर कि महाराणा साहब इसमें विचार करना क्या है ! इस को पढ़कर आप किस चिन्ता में मग्न होगए । यह अबला आपको मनसे वर चुकी है जो इसकी रक्षा न तथा विवाह न करोगे तब क्या उसे म्लेच्छ से पकड़वा क्या संसर से क्षात्रधर्मका विनाश होने वाला है। जो आपको मनसे वर चुकी है क्या उसे म्लेच्छ लेजायगा हिन्दूपति की प्रतिष्ठा छीन लेगा । जिस प्रतिष्ठा के मेवाड़ने हमारे बाप दादाओं और हमारी माताओं के पुत्र भेट लिये हैं क्या उस मेवाड़का अधिश्वर अपनी को यवन दुष्ट बादशाह के साथ चली जाने देगा शरणागत अबला को आत्मघात करके मरने देगा जो ड़ाधिपति शरणागत की रक्षा करने के लिये और प्रतिष्ठा बचाने के लिये लाखों क्षत्रियों का बलिदान राज खोकर जंगल में भटकता फिरता और तरह २ के उठाता वही मेवाड़ाधिपति आजशरणआईहुई अबला भीअपनीजातीयराजकुमारीको म्लेच्छके साथ जानेदेगा संसार से क्षत्रियत्व उठाया और क्या क्षत्राणी क्षत्रिय जननेंनन्द करके कायर पुत्र जननेलगीं।क्या मेवाड़की लंक गद्दीका स्वामी नीच बादशाह से डरेगा और बापारावल का वंशज राज्य जाने से डरेगा । या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरने से डरेगा या जंगल में भटकते फिरने से डरेगा अथवा युद्ध के भयसे महलोंमें छिपेगा ।

चूंडावत (कुछ शान्त होकर) बोले महाराज !

आपको इनपत्रों का उत्तर देने में क्या रुकावट आई प्राणिमात्र को मरनाहै । क्या हमारे बाप दादे मरे नहीं जो हम अमर बैठे रहेंगे । शरिर क्षणभंगुर है घर में मरे या बाहर रणक्षेत्र में मरे मरना तो दोनों दशाओं में अवश्य ही है । फिर भला प्रतिष्ठा खोकर क्यों मरना चाहिये । प्रतिष्ठा बचाते हुए फिर भला रणक्षेत्र में क्षत्रिय मृत्युसे क्यों न मरें जिस से स्वर्ग प्राप्ति हो और इस पवित्र मेवाड़ की गद्दि को कलंकित न होनेदें ।

यह सुनकर राणाजी बोले-वीरवर! चूड़ावत ऐसे उतावले बनकर अविचार से मत बोलो,मैं राठौरनी व्याहने को निषेध नहीं करता हूं । जैसे मेरे बाप दादे मरे वैसेही मुझे मरना है परन्तु राणा हमीर सांगाजी कुम्भजी और प्रातस्मरणीय हिन्दुपति प्रतापसिंह जी की तरह नाम अमर कर के मुझे भी मरने की हौंस है । किन्तु मैं और आप दोनों युवावस्था के हैं, अभी संसार का कुछ अनुभव नहीं किया, पीछे कोई यह न कहे कि राजसिंहने यह लड़कपन किया कि बादशाहसे लड़कर राज्य गमा बैठा राज्य बढ़ाना तो छोड़ा और उसे भी खोबैठा । बादशाह के साथ वैर बांधना है सो किसी अनुभवी वृद्ध पुरुष की इस विषय में सम्मति लेनी चाहिये । तब चूंडावत बोले कि महाराज आप यथार्थ ठीक कहते हैं, हमारे बुजुर्ग जब कभी सम्मति लेतेथे तब राजकवि या राजबारहट की सम्मति लेतेथे सो यदि आपकी [illegible] हो तब [illegible] बुद्धिमान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों को बुलाया जाय।

राणाजी ने उन वृद्ध पुरुषों को बुलाकर दोनों पत्रों और उनके विषय में क्या करना चाहिये यह प्रश्न किया तब राजकवि ने उत्तर दिया

राणाजी आप युवा हो तब भी अपने वंश की रीति जानते हो और जानबूझ कर हंसी करने के लिये मुझसे पूछते हो। आपके वंश में कभी किसीने नकारका उच्चारण ही नहीं किया। बापा रावल की सन्तान पर कैसी आपत्ति क्यों न पड़जाए मुख से नकार नहीं निकाल अपनी गद्दीकी प्रतिष्ठा' प्रतापी प्रतापके नाम की प्रतिष्ठा ध्यान करते हुए अपने कर्तव्य पालन में दृढ़ रहो। कर्तव्य पालन से ही पृथिवी फिर रही है, सूर्य्य प्रकाशकर रहा गङ्गा बहती और भूमण्डल स्थित है। शरणागत को र सांगाजी का वंशज यदि लौटा दें तब समझो कि पृथ्वी अब रसातल को चली जायगी। सूर्य पश्चिम में निकले ब्रह्माण्ड नष्ट होजायगा। जो तुर्कों को कन्या न देने प्रतिज्ञा कर चुके; अपने सीसोदिया वंश कटवा डाले। बच्चों और सगे सम्बन्धियों को रण क्षेत्रमें मरते देखा पाट खोकर पहाड़ जंगलोंमें भटकते २ फिरे और फल कन्दादियोंसे जीवन का पालन किया। वृक्षों की डालि के टोकरों में अपने राजकुमारों को भीलों की भांति में रहकर पालन पोषण किया रोटीके टुकड़ोंके लिये भि रियों के बच्चों की तरह अपने बच्चों को रुदन करते और असंख्य शत्रु सेना के पीछे पड़ने पर भी शत्रुओं बीच इस पहाड़ से उस पहाड़ पर निकल कर भागना परन्तु मुसल्मानोंको कन्या देनेकी इच्छा कभी नहीं की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसिंहजी के वंशज अपने को अन्तःकरण से वरने वाली ा को उन्हीं देवशत्रु धर्मशत्रु मुसलमानों के हाथोंमें जाने या ऐसा कभी संभव हो सकता है। मैं वृद्ध होगया मेरे र में बल नहीं रहा ऐसा समझ कर आपने यह समझा ा कि मैं आपको कायर पनेकी सम्मति दूँगा क्या हुआ मैं वृद्ध होगया हूँ किन्तु अभी तक मेरी नसों में सांगा- प्रतापसिंह जी और राणा कुम्भाजी की प्रतापी गद्दीका हू बह रहा है अन्नदाता! मैं आपकाही अन्न खाताहूँ फि ें मैं क्योंकर कायर पन आसकेगा। मैं देखने में वृद्ध हूँ ी देह वृद्ध है किन्तु मेरी आत्मा अभी तक युवा है। ब बिलम्ब का समय नहीं शीघ्र रूपनगर के आदमी को तर देकर बिदा करो और लड़ाई की तैयारी करो। क्या जहँसिनी राजहँस को छोड़कर गिद्ध के साथ जा सक्तीहै। ये लिये उठो तैयारी करो और राठौरनी को व्याह कर पना नाम अमर करो।

(शेष फिर)

जापान स्त्री युनिवर्सिटी
के प्रेसिडेन्ट के व्याख्यान का सारांश।

शिक्षा सम्बन्ध में जो राजाज्ञा प्रकाशित हुईहै उसको र्वदा स्मरण रखना चाहिये और साथ ही युनिवर्सिटी के नियमों का अक्षर अक्षर स्मरण रखना चाहिये। क्योंकि नकी आज्ञानुसार चलने से ही शिक्षा कार्य्य उत्तमता से होगा लड़कियों को अपने शुभचिन्तकों का सम्मान कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं भूलना होगा। अपनी हिम्मत पर विश्वास र
बहुत अच्छा है। निकम्मे रहने और फिजूल खर्च कर
बराबर कोई व्यसन नहीं है। अपनी प्रतिष्ठा का
रखते हुए दूसरों को आदर दें। समाज में सदा शिष्टता
व्यवहार किया जाय और अभिमान का कभी नाम
लें। अपने विचारों की दृढ़ता और उच्च हृदयता के
स्त्रियों को प्रेम और आदर पाने के योग्य बनना चाहि

लड़कियों को चाहिये जो कुछ वह पढ़ें या नई
सीखें उसके मूलकारण की खोज अपनी बुद्धि से करें
अंधों की भांति अपने शिक्षकों के कहने को यथेष्ट न
लें। भली प्रकार समझ कर पढ़ने और कार्य कारण सम
जान लेने से उनको अपने स्वतँत्र विचार स्थिर कर
योग्यता प्राप्त हो जायगी।

दुर्बल स्त्री सर्वदा रोगग्रस्त रहा करती हैं। वह
अपने लिये नहीं किन्तु सब घर के लिये भी दुःखदा
होती है जहां की कि वह मालकिन हैं। फिर उसका
उसके जीवन के साथ ही समाप्त नहीं होता; सन्तान
दुःखी बनाता है और समाज के लिये हानिकारक होत
इस लिये लड़कियों को अपने शरीर को पुष्ट रखना
आवश्यक्ताओं में से है। इस वास्ते सफाई; खान; प
पठनपाठन आदि सब कामोंमें स्वास्थ्यके नियमोंका ध
रखना चाहिये।

मैड क्षत्रियवरों के लिये विधवाओं की आवश्यक्ता।

हमारे पास २५ वर्ष की आयु से लेकर ३३ वर्ष तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयु वालेवरोंकी दरख्वास्तें आई हुई हैं जिनकी माहवारी आमदनी ३१) से लकर १००] तक है यह अपना विवाह विधवाओं से करने को तैयार हैं। पत्र व्यवहार नीचे के पतों पर कीजिये।

(१) सम्पादक—अबलाहितकारक बिजनौर।

(२) पण्डित केशोराम स्वामी—देहरादून।

वैश्य अग्रवाल वरों की आवश्यक्ता।

हमें दो बड़े भारी प्रतिष्ठित घरानों की १४ तथा १७ वर्ष की आयु वाली बाल विधवाओं के लिये दो प्रतिष्ठित वरों की आवश्यक्ता है। जिनकी आमदनी माकूल हो पढ़े लिखे और आरोग्य हों। पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते पर कीजिये

पण्डित केशवराम स्वामी

देहरादून

बालविधवा गौड़ ब्राह्मणीकी आवश्यक्ता

हमें एक ३२ वर्षके आयु वाले वरके लिये जो बिरादरी में प्रतिष्ठित समझे जाते हैं पढ़े लिखे और जायदाद वाले हैं एक ऐसी विधवा की आवश्यक्ता है जो निरोग और सुशील हो। पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते परकीजिये।

(१) सम्पादक-अबलाहितकारक बिजनौर।

(२) पण्डित केशवराम स्वामी देहरादून।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरोड़ वंशके वरकी आवश्यक्ता ।

एक अरोड़ वंश की विधवा के लिये जिसकी आयु २० वर्ष के लगभग है; आरोग्य; रूपवती; पढ़ी लिखी और गृहस्थ के सारे कामों में निपुण है एक ऐसे वर की आवश्यक्ता है जिसकी आयु २८ वर्ष तक हो। आरोग्य और लिखा पढ़ा हो। मासिक आमदनी १००) से किसी दशा में कम न हो। पत्र व्यहार इस पते पर कीजिये।

पं० केशवराम स्वामी देहरादून

कायस्थ वरकी आवश्यक्ता ।

एक १७ वर्ष की बाल बिधवा के लिये जो श्री वास्तव दूसरे वँश की है। उसके लिये एक वर की आवश्यक्ता है जिसकी अवस्था २८ वर्ष तक हो। पढ़ा लिखा सुशील और रोज़गारदार हो। पत्र व्यवहार इस पते पर कीजिये।

पण्डित केशवराम स्वामी

आवश्यक सूचना।

हमारे पास और जातियों की अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और कायस्थों की वर कन्याओं की बहुत सी दार्ख्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न आई हुई हैं। बहुत से पत्र गुप्त रक्खे जाते हैं और कभी २ किसीका उत्तर भी नहीं दिया जाता क्योंकि शायद किसी हाथ लग जाय सब प्रकार की दर्ख्वास्तें निम्न लिखित तों पर आनी चाहियें।

(१) रायसाहब डाक्टर मुरारीलाल B. A.
भूतपूर्व हेल्थ ऑफिसर मंत्री
बाल विधवा प्रचारिणी सभा
कानपुर

(२) श्रीयुत पण्डित केशवराम स्वामी
उपमन्त्री बा० वि० वि० सभा
देहरादून

(३) श्रोत्रिय जगदीशदत्त उपमन्त्री
वि० वि० सभा
बिजनौर

—(+ ❀×❀ +)—

क्या अब नाक रह गई।

मुरादाबाद जिले में एक गौड़ ब्राह्मणकी लड़कीथी जो १० या ११ वर्षकी आयुमें विधवा होगई थी। तीन या चार वर्ष पहिले उसने अपने पिता से पुनर्विवाह के लिये कहा तब बेचारी को बहुत धमकाया और कहा कि रायड हमारी नाक कटावेगी तब बेचारी चुप होगई किन्तु कामके तीक्ष्ण बाणों को सहने की सामर्थ्य किसमें है जब किसीने नहीं सुना तब प्रथम तो गुप्त रीति से व्यभिचार किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे एक भंगीके साथ भागगई और आज कल जिले बि
मीर चान्दपुर के समीप एक भंगी के घर में है ।

विधवा विवाह कराने से तो नाक कटतीथी क्या
नाक बढ़गई यदि उसका विवाह होता तब बिरादरी व
भी धर्म की दुहाई देते किन्तु अब शान्त हैं। विधवा वि
के विरोधियों अब भी चेतो वृथा हट धर्मी को छोड़ो जि
देश और जाति का कल्याण हो ।

पवित्र मानसिक भाव और सुन्दरता

संसार में सुन्दरता एक ऐसी वस्तु है जिससे मनुष्य म
बड़ा प्रेम करते हैं। सुन्दरता वह वस्तु है जिससे, अपवित्र
अपवित्र वस्तु का राजे तक सम्मान करते हैं। यह सुन्दर
काही प्रभाव है; जो समान गुण और शरीर होने परभी मनु
सब कीड़ोंसे अधिक बीरबहूटी (एक प्रकारका बरसाती की
का अधिक आदर करते हैं । यहांतक कि कालिदास प्रभृ
कवियोंने अपनी मनोहारिणी कविताओंमें इसकी सुन्दर
का वर्णन किया है । इस अमूल्य रत्नरूप सुन्दरता के का
राजा अपना राजतक इसके लिये वार देते हैं। इसीके लि
बड़े २ विचारवान् नीतिज्ञ राजाओंने अपने राजतक इस
भेंट किये । यह सौन्दर्य ऐसी वस्तु है जो जड़चेतन दोनों
मान कराती है । बृटिश व्यापार की उन्नतिका विशेष का
रण सुन्दरता ही है क्योंकि वहांकी वस्तुएँ सुन्दर हों
कारण ही भारतवर्ष में बिकती है। देखाजाता है कि स्वदे
मजबूत और सस्ती वस्तु होने पर भी बिदेशी वस्तुको म
ष्य अधिक दाम देकर भी खरीदतेहैं। यहांतक कहें सुन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण नीच जाति की कन्याओं को भी रानी बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है । सुन्दरता के प्रतापसे ही धीवरकन्या सत्यवती को महाराजाधिराज शान्तनु की अर्द्धाङ्गिनी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सुन्दरताही एक ऐसी वस्तू है जिस से आबाल वृद्ध प्रेम करते हैं ।

यह सुन्दरता जिसका किञ्चित् वर्णन किया गया यह क्या वस्तू है और कहां से उत्पन्न होती है । आज कल यह जनखयाल है कि सुन्दरता ईश्वरीय वस्तू है और जन्म से ही मनुष्यको मिलती है और इस लोकमें आनेपर किसी प्रकार प्राप्त नहीं होसक्ती । जिनका यह खयाल है कि सुन्दरता यहां प्राप्त नहीं होसक्ती यह उनकी बड़ी भूल या अनभिज्ञता है । यह कहने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं प्रतीत होती कि जिनका यह विश्वास है कि सुन्दरता यहां प्राप्त नहीं होसक्ती वे वास्तविक सौन्दर्य से अनभिज्ञ हैं; या स्वाङ्ग सौन्दर्य को जानते ही नहीं अथवा यूं कहो वे केवल मृत सौन्दर्य के ज्ञाता हैं ।

केवल चमड़े के सफेद होने आंखों के बड़े और नकशों के सुन्दर होने मात्र से ही सौन्दर्य की समाप्ति नहीं होती चमड़े का सफेद आदि होना सुन्दरता का उपाङ्ग है । सुन्दरता की आत्मा हार्दिक प्रसन्नता और जीवन उसका सदा बहार है ।

मुख को विद्वान् मानसिकभावों का दर्पण कहते हैं । जिस प्रकार शीशे के अन्दर यदि सुन्दर चित्र लगाया जाय तब वह तद्रूप हो जाता है और यदि भयानक तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरूप चित्र लगाया जाय तब वह तद्रूप हो जाता है, इसी प्रकार मानसिक भावों का दर्पण मुख है। जैसे चित्त मनके अन्दर उत्पन्न होते हैं। चेहरे से फौरन मालूम जाता है।

आपने देखा होगा जब कोई मनुष्य क्रोध में हो या कु रहा हो तब कैसा ही सुन्दर क्यों न हो उसकी सुन्दरत भयानक रूप में बदल जाती है और यदि कोई बदसूर प्रसन्न चित्त है तब वह भी सुन्दर मालूम होता है।

चमड़े का सफेद होना आदि सुन्दर चौखटे और नि लंक शीशेके समान है।

आपको कृष्णवर्ण और साधारण नक्सों वाले सदाचा प्रसन्नचित्त सज्जन के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो तब आपने अवश्य देखा होगा कि उसका कृष्णवर्ण मुख स धारण नक्सों को लेकर भी कैसा देदीप्यमान और मनोह मालूम होता है।

एक चित्रकारकी यह इच्छाहुई कि मैं किसीका सब सुन्दर मनुष्य का चित्र बनाऊँ तदनुसार वह बहुत दिनों सबसे सुन्दर मनुष्यकी तलाश में रहा। अंतमें उसकाप्र यत्न सुफल हुआ उसे बड़ी खोज करने के बाद एक सु बालक मिला और उसके माता पिता की आज्ञानुसार सका सुन्दर चित्र बनाया। वह उसकी छवि नित्य घंटों देखाकरताथा।

इसके बहुत दिनों बाद एकबार उसकी इच्छा हुई एक चित्र ... बदसूरत मनुष्य का बनाना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी समय से एक ऐसे आदमी की खोज में निकला जो सबसे ज्यादा बदसूरतहो। उसको निरन्तर कुछदिन परिश्रम करनेके पश्चात् एक जेल में उसका वांछित बहुतही बदसूरत मनुष्य मिला। उसने उसकाभी एक चित्र बनाया और खोज शुरूकी कि ऐसा बदसूरत मनुष्य किस देशकाहै। खोज करने पर मालूम हुआ वह वही मनुष्य है जिसकी सुन्दरता का उसने बचपन में चित्र बनायाथा। उसके रूपके परिवर्तनका कारण ढूंढ़ने पर मालूम हुआ यहफल उस के दुराचारी और क्रोधी होने का है।

प्रायः देखा जाताहै बहुत बच्चोंको जबतक द्वेष क्रोधादिका ज्ञान नहीं होता तबतकही सुन्दर मालूम होते हैं और आगे उनकी सुन्दरता में आकाश पाताल का अन्तर होजाताहै। जब सुन्दरता में इतने परिवर्त्तन (तबदीली) का कारण विचार पूर्वक देखा जाता है तब उनका स्वभाव ही परिवर्त्तन का कारण सिद्ध होताहै।

विलायत में सुन्दरता के डाक्टर हैं। वहां पर सुन्दरताके विषयमें बड़ी२पुस्तकें लिखी गईं। बड़े२विद्वान् रातदिन इसविषयका प्रयत्न करतेहैं। सुन्दरता के विषय पर लिखनेवाले बड़े२ तत्त्ववेत्ताओंकी सम्मति भी इस ओर होरही है-कि मनही एक ऐसाहै जिसको सुन्दरता का यन्त्र या अव्यर्थ औषधि कह सक्तेहैं। इसके द्वारा निश्चय सुन्दरता प्राप्तकी जासक्तीहै।मिस्टरहेरीगेजसाहब तो यहांतक लिखते हैं कि मानसिक शक्ति से सुन्दरता ही नहीं प्राप्त होसक्ती किन्तु इसके द्वारा मनुष्य सदैव जीवित भी रह सक्ता है।

सुन्दरता का एक आदर्श हृदय के भीतर रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सुन्दरता प्राप्त की जा सकी है । सुन्दरताका ध्
में रखना ही सुन्दर बनाना है क्योंकि जब मन कि
सुन्दर वस्तुपर लगाया जाताहै तब वह सुन्दरता उसक
के लिये ध्यान कर्त्ता का अंश हो जाती है ।

यदि कोई मनुष्य अपनी सुन्दरता से दूसरों का चि
अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका तो उसका अप
दोष है क्योंकि जो कुछ उसमें प्रभावहै वह उसकेम
सिक विचारों का फल है । आप देखेंगे सुन्दरसे सु
मनुष्य की भी सुन्दरता किसी विशेष समय अधिक
जाती है । इसका कारण यहहै कि उसकी गुप्त सुन्दर
थोड़े समय के लिये चमक उठती है प्रत्येक मनुष्य
अन्दर वह गुप्त सौन्दर्य वर्तमान रहता है ।

हजारों उपाय हैं जिन से सुन्दरता बढ़ती है । प्रत्ये
मृदु भाव मधुर वचन प्रेममयी दृष्टि आदि पवित्र विच
जो मनमें उत्पन्न होताहै सुन्दरता को लाता और मुख
उसका प्रभाव छोड़ जाताहै । बाह्य विचार आन्तरिक वि
चारों के द्वाराबनता है । शारीरिक और मानसिक सुन्दरत
लगातार सुन्दर विचारों के व्यायाम से बढ़ाई जाती है
चतुरमाताएं अपने विचारोंका प्रभावअपने बच्चोंपर छोड़त
हैं।सुन्दरता भीतरसेउत्पन्नहोतीहै औरसच्चेविचारोंद्वारावि
रहतीहैं । शारीरिक और मानसिक सुन्दरता मानसिक औ
शारीरिक स्वास्थ्य का प्रकाश है । सौन्दर्य को प्रक
करने के वास्ते सुन्दर से सुन्दर और अच्छे से अच्छे विचा
प्रत्येक पट्ठे के भीतर से गुजरें ताकि शरीर के प्रत्येक भागक
बल और सुन्दरता प्राप्त हो ।

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े लाट के ध्यान देने की बात।

भारतवर्ष के सुधारक सज्जन बहुत दिन से पुकार रहे हैं कि सनातन धर्म के नामसे जो अत्याचार लड़कियों पर होता है उसे सरकार बन्द करे। हमने भी जगन्नाथ जी [उड़ीसा] के मन्दिर व जैनियों की यतिनों व ढूंढ़नियों को लेकर दो वर्ष लगातार चीतकार की और कितने ही माननीय महानुभावों को पत्र लिखे तथा उनसे विनती की कि राजाको सावधान करें।

बड़े हर्षसे कहते हैं कि अब हमारे सौभाग्यवश माननीय दादा भाई ने प्रधान व्यवस्थापक सभा में १६ वर्ष से कम आयु की बालिकाओं की रक्षा सम्बन्धी बिल उपस्थित किया है।

हम निम्न लिखित बातोंकाकहना अत्यन्तावश्यक समझते हैं।

(१)अपूर्णायु बालिकाए ही क्यों बालक क्यों नहीं? राजाको दोनों की रक्षा धर्मसे बाध्यहै इसलिये बालिकाओं के साथ बालक भी बढ़ाया जाय।

(२) बिल के शब्द वह होने चाहियें जिससे हिन्दू समाज के निम्न दोष रुकें।

(क) लड़की को हिजड़ों के हाथ देना।

(ख) यतियों बाबाजियों पाखण्डी साधुओं को उनके धन या जागीर के लोभसे अथवा अन्य अन्ध धर्म के प्रेम से अपने बच्चों का सोपना।

(ग) जैन धर्म गत यतिनियों व ढूंढनियोंकी वृद्धि के लिये बालिकाओंका देना या देव दासियों में चढ़ाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) हिन्दू धर्म गत देवदासियों या मुरलियोंकी संख्या बढ़ाने के लिये लड़कियों को देवमन्दिर में चढ़ाना ।

(ङ) दुराचारिणी दुर्भाग्य बाजारुस्त्रियोंके हाथ बेचना या उन्हें सौंपना ।

(च) बूढ़ोंके साथ १६ वर्षकी आयुसे प्रथम लड़किओं विवाह देना ।

(छ) अत्यन्त अल्पवयस्का कन्यायों अर्थात् एक वर्ष आदि की छोटी आयु में विवाह करना ।

समाचार ।

मार्च मास में मथुरा आर्य्य समाज मन्दिर में ए अग्रवाल विधवा का विवाह हुआ जिसका पूरा ह आगामी अङ्क में छपेगा ।

महामान्य मिष्टर गोखले दक्षिण अफ्रिका जा भारत वासियोंकी दशा स्वयं देखेंगे ।

आपका शरीर प्रायः रोगी रहता है । अफ्रिकाका वायु ठीक नहीं है। इधर ईसाई साम्राज्यसे इनकी बातके सु की किसी प्रकार आशा नहीं फिर इनका जाना व्यर्थ सा होता है ।

—(०❀०❀०)—

चीनी मार धाड़से डरते नहीं क्योंकि अच्छी तरह जा रहे हैं कि स्वतंत्रता भिक्षा से प्राप्त होने वाली वस्तु नहीं और न विप्लव सौंपी रहती है । ४० करोड़ प्रजा में एक करोड़ स्वतंत्रता देवी की भेंट होजाए और अन्त में प्र सत्ता दृढ़ होजाय तोभी सौदा सस्ता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद मुहल्ले कीटगंज में एक १२२ वर्ष का मनुष्य है जिसके पौत्रके पौत्रहैं । मिलने पर अच्छी तरह बात करता है और चलता फिरता है ।

इस वर्ष हार्दिक रोगों की दिन पर दिन अधिकता है । तीन मृत्यु बिजनौर और दो मृत्यू मुरादाबाद इसही भयानक रोग से हुई सुना है और भी कई जगह ऐसा ही हुआ ।

—(+ ❀×❀ +)—

आयुर्वेद मार्तण्ड पण्डित सूर्यप्रसादजी मेरठ दस आदमियों के नाम भेजनेपर बिना मूल्य दिनचर्य्या नियम सहित कलैण्डर भेजते हैं। जिन्हे मंगानाहो उक्त वैद्यजी से मंगालें।

बड़े शोक की बात है अबतक महाराज बड़ौदा के लिये कई इंग्लिश पत्र विष उगलरहे हैं । यद्यपि आपके विषयमें बड़े २ विद्वान् अग्रेजोंके अच्छे खयालहैं । किसीने ठीक कहा है, मारते का हाथ पकड़ले पर कहतेकी जबान नहीं पकड़ी जाती है ।

समालोचना

आर्यवर्त ---इस नामका मासिक पत्र प्रसिद्ध पण्डित श्यामजी शर्मा काव्यतीर्थ द्वारा भागलपुर से प्रतिमास प्रकाशित होताहै। इसकी उपसम्पादिका श्रीमती चन्द्र ज्योति हैं । इस में शास्त्रीय भावपूर्ण लेख प्रकाशित होतेहै। माघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अङ्क में हमारी सामयिक समस्या बहुत ही भावपू
हैं इसमें उत्तमोत्तम कविताए प्रकाशित होती हैं ।

सुन्दर चिकने कागज पर छिमाई तीन फार्मका
ताहै । वार्षिक मूल्य १) है। मैनेजर आर्य्यवर्त्त भावल
पते से मंगाना चाहिये ।

आर्यभजन प्रकाश---इस नाम की भजन पुस्तक
दयाल सिंह वर्म्माने बनाई है इसमें विधवा विवाह
प्रार्थना आदि पर अत्यन्त मनोहर भजन हैं यह छोटी पु
निम्न लिखित पतेपर आध आने का टिकट डाक म
के लिये भेजने पर बिना मूल्य मिलतीहै और वैरंग
जाती है ।

पता-भवानीदयालसिंह वर्मा प्रधान आर्य समाज
बहुआरा डा० करगहर जि० शाहाबाद
आरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक ! शोक ! महाशोक !

हाय २ लिखते हृदय विदीर्ण होता है एक दुःख को भूल नहीं पाते दूसरा आजाता है । इस वर्ष कितने ही भारत के शुभचिन्तकोंने संसार का त्याग कर दिया । हा ! भारत तू जिस से अपनी उन्नति की आशा करता है उसे दैव नहीं छोड़ता ।

मुन्शी तोतारामजी के सुपुत्र शङ्करानन्द शास्त्री ने १८ वर्ष की अल्पायु में २१ मार्च को संसार का त्याग कर दिया ।

उक्त महाशय ने १४ वर्ष की आयु में शास्त्री और १६ वर्ष की आयु में इन्ट्रैन्स किया । १७ वर्ष की आयु में एफ० ए० में विशेष अनुत्तीर्ण होगए थे इस प्रकार दिन २ आप की विद्या वृद्धि होती थी उस से ज्यादा देशभक्ति की उन्नति भी होती । कुछ दिनों से आप तपोदिक से पीड़ित थे ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति और धैर्य दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा ! स्त्री जाति

प्राचीन और अर्वाचीन समय में इस देशमें स्त्री जाति के सौभाग्य का तारा चमक रहा था जो सूर्य के प्रकाश के समान किसी से छिपा नहीं है। स्त्री जाति का सौभाग्य सूर्य पातिव्रता, वीरता, विद्वत्तारूप किरणों द्वारा भारत को प्रकाशमान कर रहा था स्त्रियोंकी उदारता, वीरता, साधुता आदि अनेक गुणों द्वारा हिन्दू जाति का इतिहास विशेष गौरवान्वित है ॥

रावण जो अपने समयमें एक मात्र प्रतापीथा जिसके पराक्रम से इन्द्रादि देवता भी भय करते थे तथा जिसने अपने बाहूबल से कैलास पर्वतको भी उठा लियाथा और जो रावण सुवर्णमयी लंका का अधिपति था उसी रावण के अनेक बिन्ती करने तथा नाना भयोंके दिखलाने पर भी सती सीता ने उसकी तरफ एक बार देखा तक भी नहीं सदैव घृणित दृष्टि से तिरस्कार ही करती रहीं ।

धर्ममूर्ति पद्मिनी ने कलिकालमें भी सावित्रीकी तरह यमरूप यवन बादशाह से अपने पति को छुड़ाया और, धर्म रक्षा के लिये अपने अत्यन्त कोमल अङ्गों को प्रज्वलित अग्नि में सूखे इन्धन के समान निःसंकोच भस्म करदिया।

अच्छन कुमारी जिसने अबला होते हुए भी महा बल शालिनी यवन सैना को क्षण में काल के समान अपने तीक्ष्ण खड्ग से छिन्न भिन्न कर दिया विदुषी अहल्याबाई की विद्वत्ता, धैर्यपरायणता, दानशीलता, प्रबन्धकर्तृत्वता इत्यादि का संसार ने गान किया और कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी दशा को देखकर कौन कह सक्ता है कि यह जाति
मी विद्या; वीरता; स्वतन्त्रता आदि से विहीन थी ।
आजउसी वीर और विद्वान् प्रसविनी जाति की वर्तमान्
धोगति देखकर किस सहृदय के अश्रु पात न होंगे ।
हा ! गुणों की खान वीर और विद्वानों की जन्मदात्री
क आंख खोलकर अपनी ओर निहारो । तुम वीराङ्गना
ध्वी और विदुषी भूदेवियों की सन्तान हो न कि श्रेष्ठ
विधर्मियों की जो चाहे तुम पर मनमाने अत्याचार करे रात-
काम कराकर भी चाहे उदरपूर्ति योग्य भोजन दे वा
जिदे । निःसंकोच तुम्हारे वस्त्र आभूषण छीनले और तुम्हें
जिसे मर्य्यादा से गिरादे किन्तु चूं तक नहीं कर सक्ती । हे
आ व भगिनियों इससे ज्यादा कौन दुःख और लज्जाकी
बात है कि तुम्हें विद्या धन तकसे वंचित रक्खा जाता है ।
यों अब सोने का समय नहीं है; उठो और अपनी मा-
मर्यादा की रक्षा करो । क्या तुम्हें उन्हीं वीर और वी-
ना प्रसविनी माताओं की पुत्रि होने का सौभाग्य प्राप्त
जिनमें और जिनकी सन्तान में वह शारीरिक और
तत्मिक बल वर्तमान था जिसके सामने देव, दनुज, यक्ष,
क्षस, आदियों की आंख झपतीं थी । जिनकी कोपदृष्टिके
प्रभाव से बड़े२ राजा थर्राते थे और जो शूर, वीर, दाता,
विद्वान् ज्ञानवान् तथा धर्मात्मा व योद्धा थे । अपथ्यय
क द्रव्यों का सेवन; बाल विवाह; जुआ; व्यभिचार; चोरी
अत्याचार आदि से स्पर्शित भी न थे किन्तु इनका नाम
भी नहीं सुन सकते थे ।
मान्यवरा माताओं । जरा ताराबाई के पवित्र चरित्र
ध्यान दो । किस प्रकार अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करते
इसदेवीने अपने देशको यवनों से छुड़ाकर पिताके चरणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में समर्पित किया था।

दिल्लीपति अलाउद्दीनने जब अणहलाके राजको भ्रष्ट करडाला था। तब वहांके चालूक्य वंशीय राजपूत शिला अथवा तोडातङ्क में वसकर वहीं का राज्य किया रते थे परन्तु बहुत दिन वहांभी सुखीनहीं रहसके। राव शूरनाथ को एक अफगान सरदार लैलाने वहां से निका दिया तब रावशूरनाथने मेवाड़ राज्यमें आकर शरणली औ वेदनौरस्थानमेंरहनेलगे जब दुर्भाग्यवश इन्हें अपनादेशछोड़ पड़ा था तब इनकी कन्या ताराबाई की आयु बहुत थो थी। यद्यपि उदयपुराधिपति महाराणा रायमल अपने श णागतों के सुखके लिये यथाशक्ति प्रयत्नकरतेथे तथापि र शूरनाथ सदैव मलीनमुख रहते थे क्योंकि जो राजा क स्वतन्त्रतादेवी की गोद में खेल चुकाहो वह परतंत्र रहत हुआ किस प्रकार प्रसन्न रहसक्ताथा। पिताके सुखको मली देख कर ताराबाई को अत्यन्त दुःख होता था वह रा दिन पिताको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करतीथी किन्तु इसक चेष्टा सदैव निष्फल होती थी इसकारण यह बहुधा सोच करती थी कि यदि मैं लड़काहोती तब अवश्य अपने पिताक देश शत्रुओं से छीनकर पिताजी के चरणों में समर्पित करत इस प्रकार अपने को धिक्कारती भी थी कि हाय मैंलड़क न हुई। एकबार एकान्त में सोचते २ यह विचार आया मैं अभीतक किस भ्रममें पड़ीहूं केवल यह समझकर कि पुरुष नहीं स्त्रीहूँ और हाथ पर हाथ धरे बैठीहूं। हा आजतक मेरी मति कहांथी जोअपने महान् उद्देश्यको छो बैठीथी। प्राचीन हिन्दूमहिलाओंने पुरुषोंसे बढ़कर पराक्र के कामकिये।

युद्धोंमें जाजाकर सेनाओंको अपनी ओजस्विनी वक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं द्वारा उत्तेजित किया । शंकराचार्य्य जैसे द्विवानों
शास्त्रार्थों में अपनी विद्वत्ता से परास्त किया । आजभी
लावती कृत लीलावती नामक ग्रन्थ विद्वानों को चकित
रहा है । संसार में कठिन से कठिन कामों को पुरुषों से
सी अंशमें कम नहीं किया । मैं वहकाम क्यों नहीं कर-
ी क्या मैं उस सर्वशक्तिमान् परमात्मा की सृष्टिमें नहीं
। क्या मेरे शरीर में जीव नहीं है यदि है तब किस बात
में पुरुषों से कम हूं । मैं बड़ी पापिनीहूं जो इतना स-
व्यर्थ नष्ट किया । इतने समय में कुछ काम किया होता
अब तक क्या न करडाला होता । आज इतनी देर बाद
ी आंख से अज्ञान का परदा उठा। आज मुझे ज्ञात हुआ
मुझमें भी पुरुषों के समान जीव है । मैं भी उसी सृष्टि
ो परमेश्वरके हाथ से रचीगई हूं जिसके कि पुरुष "जो
संसार में पुरुष करसकता है स्त्रीभी वह अवश्य करसक्ती
। जोशमें खड़ी होगई और (जोरसेकहने लगी) "मैं कर
क्तीहूं । मैं करूंगी ! ! अवश्य करूंगी ! ! ! तोड़ातङ्क के
हासन को मैं पिता के चरणों से स्वयं सुशोभित कराऊं
" (उसका तेज और भी बढ़ा बायां पांव आगे बढ़ाकर)
ली । "मैं सुवीरा बनकर तोड़ातङ्कको शत्रुओंसे छुटाऊंगी
संसार को करुणायमान करदूंगी देखूं अबमेरे आगे कौन
हरता है । पृथिवि सुनतीहै आकाश सुनताहै त्रिभुवन सुने
मैं बारम्बार पुकार २ कर कहती हूं कि मैं अपने चरित्र
सारे संसारको दिखादूंगी कि भारत वर्षमें स्त्रियोंने क्या
किया है; क्या २ करसक्ती हैं और क्या क्या करती हैं ।
मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि जबतक पिताजी को तोड़ातङ्क के
सिंहासन पर आरूढ़ न करदूंगी संसारकी सुख दायक साम
ग्रियों से सदैव विमुख रहूंगी देवलोक सुने हैं; नरलोक सुने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं; नागलोक' सुनें हैं। हे ! सूर्य्य भगवान् ! तुममेरे साक्षी आज तुम्हारे सन्मुख यह प्रतिज्ञाकरतीहूं कि जबतक तो तङ्कपर मेरी जातीयपताका न फहरायगी मैं अपना विवाह न करूंगी और यदि विवाहकरूंगी तो उसीसे करूंगी मुसल्मानों से मेरे देशका उद्धारकर मेरे पिताको फिर सिंहासनारूढ़ करेगा। बस अबचलूं जो प्रतिज्ञा की है उसे पूर्ण करनेका उद्योग करूं।

गो विलाप।

[श्रीयुत सिद्धिनाथ दीक्षित द्वारा लिखित]

लावनी।

हो गया वंश विध्वंस गऊ चिल्लाती,
 लोठि रही धरनि पर शोर ज़ोर फहराती।
है दई कसाई हाथ न पूंछी जाती,
 चलि भई मरण हित हाय तऊ गुन गाती ॥ १ ॥
हा तीन दिवस लौं बंधी न पानी पाती,
 क्षण क्षण में उठत मरोड़ फटत है छाती ॥ २ ॥
हो रहा हाल बेहाल सुनो सब जाती,
 मम तन काटे खाये जात यवन यम जाती॥ ३ ॥
क्या भई अजब यह बात गज़ब दिखलाती
 गऊ गले कटैं दिन रात नींद बहु आती ॥ ४ ॥
यह भई दुर्दशा देश देखि पछताती।
 अब पढ़ि पढ़ि होहु सुचेत सबै सब भांती ॥ ५ ॥
सब दूध दुहत हैं ... दुखियों लाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटि फिरे धरनि केहि दिवस गांय कुल घाती ॥६॥
मोहि दीन जान दे छोड़ि मातु कहलाती ।
धनि धन "अनन्त" के बचन गऊ अकुलाती ॥७॥

(ग़ज़ल)

गुनाह गौवों की क्या जग में, ये कातिल क्या कसाई है ।
लड़की हूँ जगों जार, खुदा खलकत बनाई है ॥
सुनो हिन्दू मुसलमानों, ईसाई जैन हो जितने ।
दही और दूध माखन घी, न खाने से अघाई है ॥१॥
बहुत गुन करें निज मुलक, कहां तक मैं कहूँ प्यारे ।
मिठाई अन्न जो जग में, सो बैलों की कमाई है ॥२॥
करो इनसाफ़ मालिक तुम, कहावो देश के राजा ।
ज़रा सा हुक्म देने से, मेरी जां की भलाई है ॥३॥
गऊ होकर ए भारत में, रिआया को मदद देती ।
कहैं "अनन्त" दुःख मेरे, सभी साफ़ो दिखाई है ॥४॥

(दादरा)

जियत सकल जग गऊ के प्रताप ते ॥ टेक ॥
गुण कर्म देखि मातु धाप यही थाप ते । जियत स० ।
वस्त्र औ मिठाई अन्न होत सब जोत ते ।
कौन भांति होहु उऋण गोरू की जात ते ॥ १ ॥
भार औ सवारी लिये फिरैं देश देशन में ।
नाहिं नेकु सुरत महान तीन ताप ते ॥ २ ॥
नहीं दोष कलिकर परत अकाल जेते ।
देश हीन दुखी गौ वध के पाप ते ॥ ३ ॥
कहत "अनन्त" सुनो सन्त जन ध्यान देकें ।
कंपित देखि नयन दैल सकु कांपते ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की मनुष्य गणना।

गत वर्ष भारत की जो मनुष्य गणना हुई
सम्बन्ध में १४ मार्च को लन्दन की रायल सोसाय
आर्ट्सके सामने मि० गेटने बहुत उपयोगी व्याख्
था मि० गेट मनुष्य गणना विभाग के सर्वोच्च अ
। हरदस वर्ष बाद भारत वासियों की गणना की
गत वर्ष की गणना में २० लाख मनुष्यों से काम
गया था। गणना का सब कार्य्य बड़ी शीघ्रता अ
आनी से किया गया। इतने बड़े देश की वस्ती के न
९ दिनके अन्दर तैयार किये गये। जो मनुष्य इस दे
बस्तियों और एकदूसरेकेबीचके अन्तरकोजानतेहैं
सकते हैं कि मनुष्य गणना का कार्य्य कैसी शीघ्रता
गया। कार्य्य बहुत पेचीदा और कठिन था, लेकि
बहुत उत्तम रीतिसे समाप्त किया गया। अन्य कि
इस से उत्तम कार्यवाही की आशा नहीं की जास
देश में अधिकांश लोग अनपढ़हैं इस लिये नकशों
सब कार्य्य गणना करने वालों को स्वयं करना प
निगरानी भी यथेष्ट रूप से कीगई। भारत की कुल
प्रायः साढ़े ३१ करोड़ है। इसमें तीन चौथाई वृ
की और बाकी देशी रियासतों की है औसत के
प्रत्येक वर्गमील में पौने२०० आदमी बसते हैं पर
कई जिलों में नौ नौ सौ तक कईइला कों में इ
घनी वस्ती हैं।

इसके सामने, वरमा कशमीर और अन्यकई प्रा
खिये तो वहां एक वर्गमील पीछे प्रायः ५० आद
। सब से कम आबादी बिलोचिस्थान की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* नवीन ग्राहकों को सूचना *

।जिन सज्जनोंकी सेवा में जनवरी का अङ्क नमूनेकी भांति भेजागया था उन्हों ने न अङ्क लौटाया और न इन्कारी पत्र ही भेजा इस लिये उनका नाम इस मास ग्राहक श्रेणी में लिखकर यह दूसरा अङ्क फिर उनकी सेवा में भेजाजाता है यदि अब भी उनको किसी कारण से ग्राहक बनना अस्वीकार हो तब इस अङ्कको पढ़कर बैरंग या पैकट द्वारा लौटादेने की कृपा न करें अथवा इन-कारी पत्र द्वारा भी सूचित न करेंगे उन महाशयोंकी सेवामें अप्रैल का अंक १।–) का वी. पी. भेजा जावेगा आशा है वी. पी. स्वीकार कर इस अबला पत्र की सहायता अवश्य करोगे नमूने का अंक न लौटाकर वी. पी. लौटा देना सत्पुरुषों का काम नहीं आशा है नवीन ग्राहक इस प्रार्थनापर अवश्य ध्यान देंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची।

१ विजय पताका
२ सम्पादकीय-वक्तव्य
३ शेषांश जीवन श्रोत्रिय शंकरलाल जी।
४ प्रचार
५ विधवा विलाप
६ पंडित रामस्वरूप पाठक भजन
७ " दादरा
८ माताका पुत्रीसे उपदेश
९ हिन्दुओंकी शारीरिक अवनति।
१० प्रथम व्यायाम।
११ ब्रह्मचर्य
१२ रूपवती
१३ पत्र
१४ जापान स्त्री युनिवर्सिटी
१५ गौड़ क्षत्रियवरों के लिये विधवाओंकी आवश्यकता
१६ वैश्य अग्रवाल वरों की आवश्यकता।
१७ बालविधवा गौड़ ह्मणी की आवश
१८ अरोड़ वंशके व आवश्यकता।
१९ कायस्थ वरकी आ
२० आवश्यक सूचना
२१ क्या अर्थ नाक
२२ पवित्र मानसिक और सुन्दरता।
२३ बड़े लाट के ध्यान की बात।
२४ समाचार।
२५ समालोचना।
२६ शोक! शोक! महाश
२७ ❀ हा! स्त्री जा
२८ गो विलाप।
२९ भारत की म गणना।
३० नवीन ग्राहकोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रतिमास के आरम्भ में प्रकाशित ता है।

(२) डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है यार्थी और स्त्रियों से ॥=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी बिना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पता पूरा और साफ साफ वनागरी या अंग्रेज़ी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर ना चाहिये।

(६) पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकट बिना नहीं दिया यगा।

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि या तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते आने चाहिये— श्रोत्रिय पूर्णादेवी,

"अबलाहितकारक-कार्य्यालय", बिजनौर।

सुधानिधि

इस समय जब कि भारतवर्ष नाना रोगों का घर हो रहा है। एक ऐसी औषधि की अत्यन्त आवश्यकता थी जिस अकेली पास रखने से नाना औषधियों के बक्सों की आवश्यकता न हे। इसके लिये बहुत रुपया खर्च और परिश्रम किया गया जिसके रिणाम में एक वृद्ध वैद्यराज द्वारा यह महौषधि प्राप्त हुई जो ना रोगों में रामबाण का असर दिखाती है। हम अपने मुँह यां मिट्ठू न बन कर केवल सभ्य ग्राहकों से निवेदन करते हैं कि क बार हमारे सुधानिधि को मंगा कर परीक्षा करें कि किस प्रकार क औषधि अनेक रोगों को दूर करने में समर्थ होती है।

सुधानिधि—कफ़, खाँसी, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्र- णी, आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, हाथ पैर कमर ा दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खाँसी की सुगन्धित ौषधि है। इसके अलावा बिच्छू ततीये आदि के जहर को फायदा रती है। मूल्य ॥) मात्र है।

मैनेजर—श्रोत्रिय एण्ड कम्पनी बिजनौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की बनाई सरकार से रजिस्ट्री की हुई दवाईयां जो बीस वर्ष से संसार में आजमाई जा चुकी हैं ।

सुधासिन्धु

कफ, खांसी, दमा, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्र[हणी], आंव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, जी मिचलाना, पेट और कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खां[सी], दूध पटक देना आदि की स्वादिष्ट सुन्दर दवा है। कीमत शीशी ॥)

दद्रुगजकेसरी

दाद को जड़ से खाने की एक मात्र पवित्र दवा है जि[समें] जलन या चिरमिराहट नहीं होता इसीका शराब या नीबू के [रस] में मिला देने से दो शीशी अर्क तैयार हो जाता है। कीमत शीशी ।) आना १२ शीशी मगाने से एजेंट समझ कर [विज्ञापन] नोटिस आदि मुफ्त भेजते हैं, कमीशन देते हैं, वर्तमान वर्ष [का] पंचांग भेजते हैं।

मँगाने का पता—क्षेत्रपाल शर्मा मालिक
सुखसंचारक कम्पनी, मथु[रा]

पं० शंकरदत्त शर्मा द्वारा 'धर्मदिवाकर प्रेस', मुरादाबाद में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No 363 A.

अबलाहितकारक

अप्रैल १९१२ ई० [अङ्क ४

पराशरवंशोत्पन्न श्रोत्रिय शंकरलाल शर्मा द्वारा संस्थापित

तदात्मज

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

द्वारा सम्पादित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[वार्षिक मूल्य १)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—
पं० सुदर्शनाचार्य्य,
बी० ए०

गृहलक्ष्मी

उपसम्पादिका
श्रीमती गोपालदे

हिन्दी भाषा में स्त्री-शिक्षा विषयक सर्वाङ्ग-सुन्दरी उच्चश्रे
की सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका।

इसमें धर्मशास्त्रों के अनुसार पातिव्रत आदि धर्म, उपदेश, कविता, शिक्षापूर्ण उपन्यास, नाटक तथा आदर्श स्त्रियों के जी चरित्र, गृह-प्रबन्ध, पाकशास्त्र, स्वास्थ्य-रक्षा, शिशुपालन, सी पिरोना, संगीत कला, देश विदेश की बातें, सायन्स की कहा मनोरंजक पहेली आदि स्त्रियों के उपयोगी सभी विषय करते हैं।

☞ नोट—इसमें विवाद-ग्रस्त या किसी विशेष प लेख नहीं होते इसीसे यह पत्रिका सनातन-धर्मी तथा आर्य-सम दोनों ही की बहू-बेटियों के लिए समान-भाव से लाभकारी है। इसी से सब समाचार पत्रों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की

इसका आकार ५० पृष्ठ से भी अधिक रहता है। साल भ ग्राहकों के पास लगभग ७०० पृष्ठ की अच्छी खासी पोथी हो है। हर महीने चित्र भी रहा करते हैं। इस पर भी लाग अनुसार वार्षिक मूल्य केवल २॥) है।)=॥ आने टिकट भेज नमूना मँगा देखिये॥

☞ मिलने का पता:—मैनेजर, 'गृहलक्ष्मी'-कार्य्यालय, प्रया

बाल-विधवा विवाह प्रचारिणी सभा

जो सज्जन अपनी बाल-विधवा कन्या का पुनर्विवाह क चाहते हैं या जो विधवाएं स्वयं अपने जीवन के सुधार के विवाह करना चाहती हैं उनके लिए उक्त सभा समान वर ढूं शास्त्रानुकूल विवाह करा देती है। बाल-विधवा विवाह के धियों से हम हर समय शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं। पत्र इन पतों पर होना चाहिये—

पता—राय साहब ठाकुर मुरारी लाल बी० ए०
मंत्री बा० वि० वि० सभा, कानपुर

(अथवा) पता—श्रीमिश्र जगदीश
बिजनौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रीय शङ्करलाल शर्म्मणा

स्थापित

अबला हितकारक ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैता: वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

नवम् वर्ष } अप्रैल सन् १९१२ { चतुर्थ अङ्क

आर्त्त-वाणी ।

हे पतित पावन प्रभो ! हूँ मैं कुकर्मों से मढ़ा ।
अति अधम उद्धत अधर्मी कुछ अजामिल से बढ़ा ॥
पातकी मुझसा कहीं विश्वेश मिलने का नहीं ।
भार दोषों का सहज में नाथ ? हिलने का नहीं ॥ १ ॥
क्रूर-कुत्सित-कुलकलंक उपाधियां काफी नहीं ।
न्याय से मुझको दयामय? मिलसके माफी नहीं ।
सच तो यों है—जन्म ही मेरा बृथा जग में भया ।
गर्भ से गिरकर न क्यों मैं हाय ईश्वर मरगया ॥२॥
सब तरफ निन्दा-घृणा उपहासकी बौछार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर उठाना है कठिन, दुख का न वारापार है ॥
शान्ति का तो लेश भी स्वामी ? नहीं है रह गया
खोजने से भी कहीं पर मैं नहीं पाता दया ॥३॥
जब गुजरती चैन से थी-मानथा अभिमान था
तब नहीं मुझ को कभी आया तुम्हारा ध्यान था
अब भला मैं कौन मुँह लेकर पुकारूँ आपको ॥४॥
भक्त वत्सल दीनबन्धो ! आपही अपनाइए ।
मुझ पतित को प्रणतपालक विश्व बीच निबाहिए
पाहि अशरण-शरण ? मुझको द्वार से न निकालए
मुझे अपने ही चरण में शरण अब दे डालिये ।।५।।

रूपनारायण पाण्डेय (कमलाकर)

(सरस्वती से उ

सम्पादकीय वक्तव्य

गत मार्च मासके अबला हितकारक में प्रेस का रियों की असावधानी से कुछ अशुद्धि रहगई थीं । विशेषतः विषयसूची और कुछ पेज गड़बड़ लग गए सके लिये क्षमा प्रार्थीहैं । अबहमारे प्रिन्टर पं० शंका सूचना देतेहै आगे कार्य सावधानी से होगा ।

---

६ अप्रैल को ईष्टरकी छुट्टियों में जो कानपुर प्रान्तीय शोसल कान्फ्रेन्स हुई थी उस में प्रबन्ध कमेटी का बड़ा उत्तम प्रबन्ध था । विशेतः युवकों त्साह और परिश्रम सराहनीयहै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसबारकी संयुक्त प्रान्तीय कानफरेंन्स (confrance) सभापती बाबूगंगा प्रसाद M.A. डिप्टी कलैक्टरथे। बाल विधवा विवाह आदि कितने सुधारक प्रस्ताव आपके सभापतित्व में पास हुए। हमें यह देखकर अत्यन्त आनन्द हुआ कि इस वर्ष प्रान्तीय कान्फ्रेन्स में मातृभाषा में भी व्याख्यान हुए और कार्य भी कुछ मातृभाषा में हुआ। इस से हमको आशा होती है कि अब कान्फ्रेन्सका कार्य्य का-गजी और व्याख्यान मात्रही नहीं किन्तु कार्य्य रूप में होगा क्योंकि जबतक सुधार संम्बन्धी उच्चप्रस्ताव सर्वसाधारण केकानों तक नहीं पहूंचेगे। तबतक सुधारकी आशा करना मृगतृष्णा मात्र है और यह तबही होसक्ता है जब कि समस्त कार्य्य मातृभाषा में हो।

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू सम्पादिका स्त्रीदर्पण प्रयागने म्युनिस्पिल कमेटी में मेम्बर होनेके लिये प्रार्थना की थी। इससे स्त्री मात्र और स्त्रीशिक्षाके प्रेमयोंको विशेष आनन्द हुआ था किन्तु मालूम नहीं उक्त श्रीमतीजी ने प्रार्थना पत्र क्यों वापिस करलिया। हम श्रीमती जी का विशेषतः इस ओर ध्यान दिलाते हैं कि जब आप उक्तपद की योग्यता रखतीहैं तब ग्रहण करके स्त्रीजातिका मुख क्यों नहींउज्वल करतीं।

आर्य्य मित्र आदि पत्रों ने प्रकाशित किया था कि सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ है कि बालविधवा विवाह प्रचारणी सभाका बृहदधिवेशन कानपुर ईस्टर की छुट्टियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में करके सभापति आदि निर्वाचित किये जांय और उपयोगी प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किये जांय। कानपुर में उस समय प्लेग होने के कारण बृहदधिवे[illegible] होसका। हप्पी लाज (Happy lodge) में मीटिङ्ग करके अधिकारी चुनेगए। जिसका कार्य्य इस[illegible] में आगे छपा है।

अब इस बात में किसी प्रकार का सन्देह नहीं कि [भार]तवर्ष में सुभिक्षकी आशा करना वृथा है क्योंकि रत्न[गर्भा] भारत भूमि में जितना अन्न उत्पन्न होता है उसका अ[धिक] भाग अन्य देशोंको चला जाता है। यहां तक कि मोटा [अन्न जो] यहां के निर्धनों का प्रधान आशय था उसे अब जा[पान] आदि देशों में व्यापारी शराब बनानेके लिये ढोये [लिये] जाते हैं। इस वर्ष भारतवर्ष में यव (जौ) अधिक पैदा [हुआ] था यदि वह यहां रहता तब रुपएका ३०-३५ सेर बिक[ता] किन्तु जापानकी खरीदने इतना बहुमूल्य करदिया कि [रुपये]का १४ सेर कठिनतासे मिलताहै। भारतकी विशेषतः [गु]जरात की प्रजाको अन्न कष्टसे अत्यन्त पीड़ित देखकर ब[म्बई] के शरीफ महाशय पुरुषोत्तमदास मुरारजी ने स्था[यी] दुर्भिक्ष फण्ड स्थापित किया है। जिस में प्रत्येक पुरु[ष] से सहस्रों रुपए तक जमा कर सक्ता है हमारी सम्मति [में] ऐसे फण्डों की प्रत्येक जगह आवश्यक्ता है।

श्रोत्रीयजी की जीवनी

चरित्रनायक श्रोत्रीय जी धर्म काम में चाहे कै[सी] आपत्ति या निन्दा हो कदापि विचलित नहीं होते थे जै[से]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों को चरित्र से ठीक २ विदित होगया होगा एक
र दूढ़ता देखिये ।

सन् १९०६ में आपके पुत्रोंका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ
यज्ञोपवीत साधारण न था वह ठीक जैसा कि पहिले
ता था वैसा ही वैदिक था । काशी जाते लड़कोंको माता
भगिनी से नहीं रोकने दिया ब्रह्मचारी बना दोनों प्रिय
ों को जिनको कभी अपनेसे पृथक् नहीं करते थे विवाह
पहिले जब कि प्रथम धर्मपत्नी ने संसार का त्याग किया
अपने पास ही रखते और विदेशमें भी साथ रखते और
यं ही शिक्षा देते थे बिना संकोच उनही दोनों प्राण
ोंको पण्डित मुकन्दरामशास्त्री के साथ भेज दिया वहां
वे भिक्षा की रोटियों से उदरपूर्ति करते हुए तथा गुरु-
ा और अग्नि होत्र करते हुए वेदाध्ययन करते थे जब
दोनों ने यजुर्वेद संहिता पूर्ण न की और उक्त शास्त्री
का स्वास्थ्य खराब हो गया तब समावर्तन संस्कार
ाया ;

इस संस्कार में काशीके पण्डित महादेवशास्त्री आदि
तने ही विद्वान् सम्मिलित हुए। जब दोनों ब्रह्मचारी
के साथ चले गए तब एक दम समस्तनगर में ही नहीं
न्तु दूर २ तक कोलाहल होगया कि स्त्री के कहने से
ड़कों को रूपबसन्त की तरह बनवास देदिया कुटम्बीतक
ह पर निन्दा करते थे। किन्तु वीरवर श्रोत्रियजी का
चित्त कदापि विचलित नहीं हुआ।

ईश्वर की असीम दया से आप को द्वितीय धर्मपत्नी
नती पूर्णादेवी भी ऐसी ही दृढ़ मिलीं जो कभी आपके
साह को कम नहीं होने देती थी बल्कि सदैव सहायता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही किया करती रहीं ।

चरित्र नायक की दृढ़ता विद्वत्ता बुद्धिमत्ता और नि-
र्थं परता चरित्र के पद२ पर झलकतीहै आपकी बुद्धि
तीव्र थी जिस कार्य्य में लगाते सदैव लाभ होता था।
लविधवा विवाह प्रचारिणी सभा के सभापति और प्र-
होते हुए अखबार का सम्पादन करते और अपने ग्रा-
अलावा प्रेस और ठेके के ग्रामों का प्रबन्ध भीबड़ी उत्त-
से सब भाइयों से अच्छा करतेथे यदि यह महात्मा
का कांम न करते तब इस में संदेह नहीं आज कई क-
अधिपति होते किन्तु इन्हें तो अपने को सदैव य-
शरीर से संसार में रहना था--

किसी कवि ने ठीक कहा है कि ।

रत्नैर्महार्हैं स्तुषुषु र्न देवाः
न भेजिरे भीमविषेणभीतिम् ।
तथापि देवैः न कृतो विरामः
न निश्चितार्थात् विरमन्तिधीरा ।

सो श्रोत्रीय जीनेतक्षण भंगुर धनका लोभ किया
सांसारिक निन्दा आदि आपत्तियों से डरे जब तक
निश्चित अबलाओं के दुःख को दूर न किया ।

आपने अपने पुत्रोंको उस समय तक जबतक किय-
समाप्त न किया इंग्लिश का अक्षर नहीं पढ़ाया ।

यदि कोई कहताथा कि इंग्लिश क्यों नहीं पढ़ा-
कहते कि मैं नौकरी नहीं कराना चाहता वैसे यह
पढ़ाही रहा हूँ । इस समय दोनों पुत्र संस्कृत साहि-
पण्डित हैं और साधारण इंग्लिश भी जानते हैं अ-
अध्ययन करतेहैं ।

आप चार दिन प्रचार में भोजन नहीं करते थे
का न खाने के कारण आठ २ और दश २ दिन केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ीर चनों से उदयपूर्ति करते थे।

एकबार काशी में किसी के मकान पर ठहरे रात्रि को यन कर रहे थे सहसा दसबारह आदमी कुल्हाड़ी और ठे लेकर आगए मालिक मकान भी उनके साथ मिल गया और सोते हुए श्रोत्रिय महाशय को घेर लिया आनेके शब्द श्रोत्रीयजी की निद्रा छुट गई और कोई उपाय न देख र्व रक्षक परमेश्वर में लवलीन हुए। आहा! किसी कवि ठीक कहा है।

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं,
सुरक्षितं दैवहतो विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः,
कृतः प्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति॥ १॥

उन लोगोंमें परस्पर मत भेदहोगया और झगड़ा होने लगा कोई कहने लगा कि अभी मार दो कोई कहने लगा उठाकर कोई कहता था कि शास्त्रार्थ में पराजय लिखाक जीवित छोड़ दो इस प्रकार बहुत देर झगड़ा होता रहा अन्त में एक आदमीने एक लठिया से उठाया और कहा कहो क्या जी में है अब ईश्वर को याद करलो यदि बुला सक्ते हो तब किसी सहायक को बुलालो तब श्रोत्रिय जीने कहा मैं तुमसे चन्दमिनिट बात करना चाहता हूँ उन्होंने मानलिया तब आपने समझाना शुरुकिया सबने आप के उपदेश को मान क्षमा मांगी और आगे सहायता की प्रतिज्ञा की।

श्रोत्रियजी ने उत्तर में कहा तुम्हारा कोई दोष नहीं तुमने मुझे पापी समझ दण्ड देना चाहा और यथार्थ सत्य जान अपना विचार छोड़ दिया इसलिये मैं तुमको अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यवाद देता हूँ ।

सन् १९०८ में आपने कलकत्ता हाईकोर्ट के एक पेंश ब्राह्मण जज को पत्र लिखा कि मैनें सुना है आप कन्या बालविधवा है कैसा अच्छा हो यदि उसबालवि अबलाकी शादी करदो इसके उत्तरमें जजसाहब बड़ेक्रो हुए और लिखा शोक है तुम ब्राह्मण हो वरन् इज्जत दावा कर जेल भेजता । इसका उत्तर श्रोत्रीयजी ने कुछ न दिया और समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जब हमारे देशके न्यायमूर्ति विद्वानों का अपनी सन्त के साथ यह अत्याचार तब देश की जो दुर्दशा हो थो है मैं कहता हूं वह दिन शीघ्र आने वाला है जब उक्त साहब अपने कियेपर प्रश्चाताप करेंगे और सम्भवहै विव करावें ।

उसही साल के अन्दर जजसाहबने माफ़ी मांगी विवाह कीप्रार्थना की ।

आप के सादे लिबास को देख कर कोई नहीं सक्ता था कि यह रईस या विद्वान् होंगे छोटेसे बड़े तक तरह से मिलते थे ।

एकबार आप शिमले गए और वहां उक्त जज सा से मिलने गए चपरासी से कहा कि इत्तला करदो कि बि नौरका विधवा विवाहवालाबामनआयाहै चपरासीने इत्त की किन्तु जज साहब न समझे कि यह कौन है और का परचा लिखलाओ कुछ न लिखकर कहा मिलना है मिल नहीं जाताहूँ मैंरुक्का लिखना नहीं जानता यहकह चपरा के रोकने पर भी अन्दर चले गए जजसाहब देखतेही पैरों पड़ गए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज साहब की कन्या का विवाह सन् १९०८ में कराया। श्रीमती गोपाल देवी जिनके विधवा होनेका पहिले वृत्त लिखा गया है इनका प्रथम विवाह काशीपुर जिला नैनीताल स्वर्गीय पण्डित बांकेराय चौबे रईसके पुत्रसे हुआ था। दूसरे विवाहकी सुन इन लोगों ने बड़ा कोलाहल किया यहांतक कि इनको मारने को मनुष्य फिरते रहे।

श्रीमती गोपाल देवी का विवाह मुरादाबाद निवासी पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० से हुआ इस समय श्रोत्रिय-जीने जैसी दृढ़ताई की ऐसी संसारमें बहुतकम देखीजाती है इधर आचारी जी के सम्बन्धी मारने मरने तक को फिरते थे यहां तक कि इनकी भगिनी विवाह के समय बरेली गई और बड़ा कोलाहल किया।

इस विवाह में श्री० श्रोत्रिय जी ने अपना दीनबन्धु प्रेस दहेज में दान दिया इस समय इस में लग भग सौ तरह का टाइप था।

सन् १९१० में आप लाहौर प्रदर्शनी में गए और महामहोपाध्याय पण्डित शिवदत्त शास्त्री एम० ओ० एल० से बालविधवा विवाहपर सम्मति लिखा लाए सुना है पहिले पण्डित जी इसके प्रतिकूल भी थे।

सन् १९१० में फिर काशी गए और समस्तकाशीस्थ विद्वानोंको नोटिस दिया और ५०००) इनाम उसपण्डितको देने के लिये विज्ञापन वितीर्ण किये जो अक्षतयोनि कन्याओं के विवाह को शास्त्र विरुद्ध सिद्ध करे इस पर कई पण्डित उठे किन्तु शास्त्रार्थ करने का साहस किसीको न हुआ इसीवर्ष आप बम्बई इन्दौर आदि गए इन्दौरमें राय बहादुर दिवान आजम नानकचन्द सी आइ० ई० व सी० एस० आई० के स्थान पर कई पण्डित शास्त्रार्थ के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए नियम तयहुए श्रोत्रियजी जो प्रश्न लिखकर दे आए थे उनका आजतक कुछ उत्तर नहीं मिला ।

सन् १९११ में मईमासमें श्रोत्रियजीका छोटापुत्र बीमार हुआ आपको तार दिया गया किन्तु आपने कुछ परवाह न की और कहा अमुक विवाह कराकर आऊंगा तब पण्डित शंकरदत्त मालिक धर्म दिवाकर प्रेसादि के बहुत कहने से घर गए लड़के का देहान्त पीछे ही होगया ।

इसही वर्षइनकीएक कन्याकाभी देहान्तहुआ किन्तु प्रचार में किसी प्रकार की हानि न होनेदी ।

एकदिन आप कहीं प्रचार को जारहे थे पीछे घर पशुओं के चारे के मकानको अग्नि लगगई आदमीने कहा महाराज कहां जातेहो घर अग्नि लगरही है तब कहा मुझे कल विवाह में अवश्य शरीक होना है यदि बुझा सको बुझा लेना।

इस प्रकार बहुत सी घटनाएं होती थी सन् १९११ में आपको प्लेग हुआ उस में एक दिन के सिवाय बराबर लिखते ही रहते थे । अब दो पुत्र और एक कन्या है ।

आरम्भकी कथा।

स्वर्ग वासी श्रोत्रिय शंकरलालजी की मृत्युके पश्चात राय साहब डाक्टर मुरारीलाल जी और श्रोत्रिय जगदीशदत्तजी ने उक्त स्वर्गवासी श्रोत्रियजी के विधवा विवाह सम्बन्धी कामको प्रचलित रखनेके लिये फरवरी सन् १९१२की स्थान बिजनौर में विचार किया और यह निश्चय किया कि प्रथम एक विज्ञापन द्वारा विधवा विवाह के सहायकों का पता लगाया जावे तत्पश्चात् जनरल मीटिङ्गका समय और स्थान नियत करके उसको सूचना देकर जलसा किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार विज्ञापन द्वारा सहायकों का अन्वेषण करके ...नुसार विज्ञापन द्वारा सहायकों का अ॰वेषण करके
...र पत्र द्वारा ता० ७ एप्रिल सन् १९१२ को कानपुर
...एक वृहत्सभा को सूचना दी गई और उसके अनुसार
...गठन हुआ ।

जनरल मीटिंग

—:❀+०×०+❀:—

ता० ७ एप्रिल सन् १९१२ ईस्वी
कानपुर

हैपी बाज समय ७ बजे शाम

...० डा० मुरारीलाल जी ने प्रस्ताव किया कि श्रीमान्
...ठाकुरजी वेरिस्टर एटला अजमेर सामयिक सभापति
... किये जावें बा० व्रजमोहनलालजीने अनुमोदन किया
सर्वसम्मतिसे उक्त वैरिस्टरसाहब सभापति नियतहुए।

सभा की स्थापना और नाम का विचार

—❀❀❀—

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि सभा का नाम
बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा रहे—और उसके
...कारी नये सिरे से चुने जावें ।
निदान निम्न लिखित महाशय अधिकारी और कार्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारिणी कमेटी के मैम्बर चुने गये ।

१	सभापति	पं० राधाचरण गोस्वामी आन॰
		स्ट्रेट
२	उपसभापति	श्रीयुत गौरीशङ्करजी बैरिस्टर
३	तथा	बा०रामसिंहजी वकील भार्गव
४	मन्त्री	रा०साहबडा०मुरारीलालजी B.
५	उपमन्त्री	महाशय केशवरामजी स्वामी
६	तथा	श्रोत्रिय जगदीशदत्तजी
७	कोषाध्यक्ष	सेठ रामगोपाल जी कान
८	सहकारीमन्त्री	डांक्टर जवाहरलालजी कान

शेष—कार्य्य कारिणी कमेटी के मेम्बर

९ बाबू ज्वाला प्रसाद जी वकील कानपु

१० बाबू गिरधर दास जी वकील कानपु

११ महाशय बाबूलालजी छावनी कानपुर क्लर्क नं०२४

१२ बाबू काशी नाथ जी खत्री चौक कानपु

१३ महाशय, सुदर्शनाचार्य्य जी B. A. इलाह

१४ बाबू कुञ्ज विहारी लाल जी सबजज लखन

१५ बाबू व्रज नारायण जी वकील कानपु

(कोरम)

कार्य्य कारिणी कमेटी के कोरम नियत करने का होकर सर्व सम्मति से निश्चय हुआ:—

कोरम ५ का समझा जावे परन्तु प्रथम बार को होने पर दुबारा विज्ञापन देनेपर यदि फिर पूरा कोरम तो बिला लिहाज कोरम कार्रवाई कमेटी की जावे जायज समझी जावे ।

हेड आफिस

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि सभा का प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्यालय कानपुर रहे ।

जनरलमीटिङ्ग का कोरम

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि जनरल मीटिङ्ग का कोरम १५ का माना जावे ।

सभाकेनियम उपनियम

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि सभा के नियमादि उपनियम कार्य्य कारिणी कमेटी बनाकर जबतक उनको जनरल मीटिङ्ग में पास कराने के लिये प्रविष्ट करके स्वीकृत करालें तब तक उनके अनुसार काम करें ।

साधराण सभासद

उपरोक्त सज्जनों के अतिरिक्त निम्न लिखित महाशयों के नाम साधारण सभासद बनाने के लिये प्रविष्ट किये गये और सर्व सम्मति से वे सभासद स्वीकार किये गये ।

श्रीयुत	बालाप्रसाद जी	अकबर पुर
,,	भूपनारायण रेलबाज़ार (मर्चेन्ट प्रेस)	कानपुर
,,	गारगीदीन डाक्टर नया गंज	कानपुर
,,	ज्वाला प्रसाद डिप्टी कलक्टर	मिर्ज़ापुर
,,	गोपालदास जी परमटसिविल लाइन	कानपुर
,,	महावीरप्रसाद ,,	,,
,,	निहाल चन्द्र वकील	मेरठ
,,	गयाप्रसाद अवस्थी बादशाही नाका	कानपुर
,,	खज़ानसिंह जी सब इन्स्पेक्टर	कानपुर
,,	लक्ष्मीधर सम्पादक चित्रमय जगत	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ ,, सूर्य्य नारायण दवाखाना मूलगंज का

१२ ,, सूर्य्य प्रसाद का

१३ ,, बंशीधर वकील का

१४ ,, विष्णुलाल अग्रवाल काहूकोठी दुकान शक

१५ ,, देवी प्रसाद कायस्थ पटकापुर का

१६ ,, ज्योति स्वरूप देह

१७ ,, गंगा प्रसाद डिप्टी कलक्टर गो

१८ ,, रामरक्षपाल महेश्वरी मुहाल का

१९ ,, किशनदयाल सोहन लाल एन्डसन्स का

२० ,, बलदेव सहाय आर्य्य समाज का

२१ ,, शंकर सहाय फ़

२२ ,, महादेव गोविन्द क्षत्री पचमरती ना

२३ ,, माला प्रसाद वल्द ज्वालाप्रसाद अकबरपु

२४ ,, प्रयागदत्त कायस्थ पटकापुर का

२५ ,, कृपाशङ्कर दलेल पुरवा कान

२६ ,, मनीराम

२७ ,, गौरीशङ्कर नारायण बाज़ार कान

२८ ,, प्रेमसागर सिंह मौ० बांसथाना बलि

२९ ,, हरिश्चन्द्र

३० ,, महेश प्रसाद

३१ ,, लोचन सिंह अकबरपुर कानपु

३२ ,, राय नारायण सिंह नया चौक कानपु

३३ ,, मुन्नालाल

३४ ,, गौरचन्द्र शर्मा बैंक बंगाल कानपु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५	,,	खुन्नूलाल किंगमारकेट	कानपुर
३६	,,	श्रीयुत राजपति शर्म्मा	
३७	,,	देवी दास खत्री	कानपुर
३८	,,	भोलानाथ मा० डा० बीरबल	कानपुर

हा ! ईश्वर ॥

दोहा-हाय हन्त हन्त ! हा ! शोक शोक हा ! शोक ।
छांड़ी दुःखी विधवा सबै, श्रोत्रिय गये परलोक ॥

सोरठा-गर्भपात बचावनहारे, दीनन दुःख निवारन हारे।
डूबतीनैयारहीबेवनकी ताहिको पार लगावनहारे।

हाय, हा ? ईश्वर अब हमकहां जायें, किससे अपना हाल कहैं हमारी कौन सुनेगा ॥ हेपरमात्मन् हम अबला अनाथ मजधार में डूबरहीहैं । चारों तरफ अन्धकारमय दीख पड़ताहै हे सर्व शक्तिमान् प्रथम की तरह अब भी किसीवीर को प्रेरणा करो जो हमारा सब दुख दूर होजावें । हाय हमारे दुर्भाग्य से जो हमारा दुःख दूर करना चाहता है वही काल के गाल में जापड़ता है । हाय ! हम ने ऐसा कौनसा पाप करा है जो हमारा यह दारुण दुःख दूर ही होनेमें नहीं आता ॥

ऐ ! भारत वासियों ऐ ! आर्य्य सन्तान कहलानेका दावा रखने वालो तनिक हमारी तरफ़भी देखो हमभी उन्ही महर्षियों की सन्तान हैं जिनकी सन्तान होनेका तुम्हें घमंडहै फिर क्या कारण है जो हमारी सुनाई नहीं होती हम नहीं चाहती हैं कि जो अपना परमप्रिय धर्म अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह इज्जत जिसका तुम्हें घमंड था आज धूल में
दें जिन बच्चों के पालने पोसने का भार ईश्वर ने
सौंप रक्खा है या यों कहो कि इन बच्चोंही की रक्षा
केवास्ते हमारा जन्म है हाय आज उन्हीं निरापराध ब
अपने ही हाथ से मारनेको हम तैय्यार हैं । परन्तु क्या
इच्छा न होने पर भी समयानुसार हमें सब कुछ
पड़ता है ? अय! ऋषी संतानो यदी तुम हमारी ओर त
भी कृपा दृष्टी करो तो यह सब कष्ट हमें क्यों उठाने प
खैर अबतक जो हुवा सो हुवा कहावत है कि (बीती त
बिसार दे आगे की सुधलेय) हम तुम्हारी शरण हैं हम
लाज तुम्हारे हाथ है हम तुम्हारे हाहा खाती हैं अब
करो कमर कस कर तैय्यार हो जावो हमारी रक्षा
तुम्हारी ईश्वर रक्षा करेगा जो दीनों की सुधलेता है
उसकी निश्चय इच्छा पूर्ण करता है हम से बढ़कर
दीन तुम कोई नहीं पावोगे यदि तुम्ही हमारी सुध न
तो फिर और कौन हमारीसुधलेगा बड़ेआश्चर्यकीबात है
तुम लोग रायबहादुर और मुनसिफ़ जज डिप्टी तहसील
आदि पदोंसे सुशोभितहो औरहम तुम्हारीही पुत्रियां
तुम्हारी ही भगनियांहैं कि जिनके आर्तनादसे पृथिवी
उठती है ॥ श्रीमान श्री श्रोत्रिय जी के उद्योग से ह
आशा लता जो कुछ हरी हो चली थी उसपर पाला प
इसी लिये हम अबला अनाथों को आप लोगों के सा
उपस्थित हो कर प्रार्थना करने की अवश्यकता हुई
देखें अब आप लोग कहां तक हमारा कष्ट दूर कर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्न करते हो। हमें यह पढ़ कर और सुन कर सन्तोष हुवाहै कि कानपुरमें और लखनऊ में विधवा विवाह प्रचारणी सभा स्थापित हुई है जिसके प्रधान उपप्रधान मन्त्री और उपमन्त्री योग्य हैं वे जरूर हमारी विपता पर ध्यान देंगे हम टकटकी लगाये इनलोगों की ओर देखरहीं है देखें कहां तक ये लोग अपने कर्तव्य का पालन करते हैं ईश्वर इनके कामों में सफलता प्रदान करे यही हम लोंगोकी हार्दिक प्रार्थना है। हम अती दुःखी हैं इस लिये जो अनुचित बात हो क्षमा करना॥

एक दुःखी विधवा

ग़जल

(श्रोत्रिया पूर्णा देवी लिखित)

धर्म पर जान ऐ बहनो निसारोगी तो क्या होगा।
गिरी हालत है भारतकी सुधारोगी तो क्या होगा॥
देवी से होगईं जूती वजे ये क्या है नाजानो।
धर्म को यादकर देवी कहावोगी तो क्या होगा।
ना समझी तुम्हारीसे बुरी हालत है भारतकी॥
गुणोंको धारकर भारत सुधारोगी तो क्या होगा।
तुम्हारे मूर्ख होने से हुई सन्तान भी मूरख॥
पढ़ोगी और बच्चों को पढ़ा लोगी तो क्या होगा।
ऐ बच्चे अक्ल के कच्चे करें हैं देखते जैसा॥
करके शुद्धाचार बच्चोंको सिखा दोगी तो क्या होगा
तजो आलस उठो बहनो जरा अबभी पढ़ो विद्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की डूबती नैय्या तरा लोगी तो क्या होग

हिन्दुओं की शारीरिक अवनति ॥

[गताङ्क से आगे]

यहां पर यह प्रश्न किया जा सकता है कि और विरेचनादि के द्वारा थोड़े २ समय के बाद शुद्धि जा सकती है इसका उत्तर योग्य ग्रन्थकार यह देता है

बमन (कै) विरेचनादि अमाशयादि अवयवों और संज्ञक नाड़ियों को शक्ति रहित कर देंगे । वह कर दोष धातुओं को भी दूषित के साथ बाहर निक और यह भी होसक्ता है कि अवांछित वस्तु बाहर नि

प्रसिद्ध हकीम बुकरात लिखता है:—

"और यह भी सम्भव है कि औषधि देने में कोई हो जावे और इस कारण रोग वढ़ जावे और अफलात एक जगह लिखा है।

रेचक (दस्तावर) औषधिका देना अन्धेरेमें तीर है जो कभी हितकर है और कभी चूकताहै प्रकृति स्वा औषधि आदिकी परीक्षा के पश्चात् निश्चय हुआ है अनावश्यक मलको संग्रह होने से रोकने के व्यायाम से बढ़कर कोई वस्तू नहीं है क्योंकि विना कष्ट के मलों को पचाती और प्रकृति की सहाय

शेखुल रईस हकीम बूअली सेन का बचन है-

जिस मनुष्य में उचित विधि से व्यायाम की सा है वह सर्व इलाजों से मुक्तहै। व्यायाम न करने वाला क्षई रोग में ग्रस्त होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरेश कहता है "व्यायाम न करने से शक्तियां क्षीण होती हैं आहार नहीं पचता है"

व्यायाम से और बहुत लाभ हैं। जो थोड़े से वर्णन किये हैं व्यायाम रोग को नष्ट करता है। अग्निको दीपन करता है अँगों और प्रत्यङ्गो को दृढ़ करता है रोमकूपों को खोलताहै। देखिये सुश्रुतमें संक्षिप्त परन्तु बहुत उत्तमता साथ लाभवर्णन कियेहैं मानो सिन्धुको सीपमें बन्द किया है। वह श्लोक टीका सहित नीचे अङ्कित करता हूँ—

(श्लोक) शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवंमृजा ॥ श्रमक्रमपिपाशोष्ण शीतानां सहिष्णुता आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते न चास्तिसदृशं तेन किंचित्स्थौल्याय कर्षणम्। न च व्यायामिनं मर्त्यः मर्दयंत्यरयोभयात् न चैनं सहसा क्रम्य जरासमाधि रोहति।स्थिरी भवति मांसश्च व्यायामाभिरतस्य च । वयोरुपगुणैर्हीनमपि कुर्य्यात् सुदर्शनं। व्यायाम कुर्वतो नित्य विरुद्धमपि भोजनंविदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते व्यायामोहि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनां। स च शीते वसन्तेच तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥

प्रथम श्लोकार्थ—व्यायाम से शरीर बढ़ता है; सौन्दर्य्य अधिकहोताहै; अंगसुडौलहोतेहैं। स्थूलको सूक्ष्म सूक्ष्म को स्थूल बनाने का यदि कोई उपाय है तब तो बस यह ही व्यायाम है शरीर को सुडौल बनाना व्यायाम का पहिला काम है। सुन्दरता अङ्गो के सुडौल होनेका दूसरा नाम है। व्यायाम सौन्दर्य्य को प्रतिदिन बढ़ाता है। जिन के चेहरे पर सदैव मुर्दापन छाया रहता है वह ६ मास के व्यायाम से ही देखने योग्य होतेहैं हमने अपनी आंखसे देखे हैं। चे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरेपर लाली बिना व्यायामी के और किसीं के नहीं
व्यायाम करने से पाचन शक्ति बढ़ती है और जैसा
अनेक बार निवेदन कर चुका हूं स्वास्थ्य का यदि सा
तो बहुत कुछ निर्भर आम तथा पक्वाशय पर है। को
रोग हो उसमें कुछ न कुछ इनकी खराबी आप अवश्य
। आमाशय की शक्ति को ठीक करने के वास्ते जैसा कि
बहुत से मोटे२ नियमों का पालन आवश्यक है वहां व्य
का होना भी आवश्यक है । पक्वाशय की निर्बलता के
बेदाम परन्तु सब से बढ़िया योग्य व्यायाम है । व्या
करने वालों को पक्काशय की निर्बलता का रोना रोते
कदाचित ही देखा होगा। व्यायाम आलस्य का शत्रु
व्यायामकरनेवाला मनुष्य प्रत्येककामको सहर्ष और
शीघ्र करसक्ता है। व्यायामशील ही प्रायः जलते हुए म
और डूबते हुए मनुष्यों को बचाते हुए देखे गए हैं। व्या
करने से शरीर दृढ़ होता है और भारी से भारी काम
योग्य होता है । आश्चर्य तो यह है कि शरीर दृढ़
स्थूल होता है तथापि व्यायामशील हलका फुलका
है । व्यायाम करने से सम्पूर्ण धातुएं उचित अवस्था
रहती हैं । रोग किसी दोषकी असाम्य अवस्था के
होता है । व्यायाम प्रत्येक दोषको साम्य अवस्था में
का उत्तम उपाय है अतः यह कहना कि व्यायाम स्व
की जड़ और सर्व रोगों की औषधि है। मिसटर सैन्डो
यह वचन कि सर्व रोगों की औषधि व्यायाम है कद
मिथ्या नहीं ज्ञात होता ।

उपरोक्त श्लोक में ऋषिजी यह उपदेश करते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायाम से शरीर बढ़ता है (२) सौन्दर्यता बढ़ती है (३) शरीर सुडौल होता है (४) पाचन शक्ति बढ़ती है (५) आलस्य दूर होता है (६) शरीर दृढ़ और हलका बनता है।

द्वितीय श्लोकार्थ--इस श्लोक में महर्षि धन्वन्तरी निम्न लिखित नियम बनाते हैं—

व्यायाम करते रहने से परिश्रम का अभ्यास होजाता है (२) थकावट पास ही नहीं आती [३] शीतोष्ण [गर्मी सर्दी] सहन करने की शक्ति होती है [४] व्याधि कभी पास नहीं फटकती। सर्व रोगोंकी रक्षा विधि सबसे उत्तम व्यायाम है। किसी उर्दू कविने क्या यथार्थ कहा है:-

"जिस्म में ज़ोर नहीं हालते ज़ार ऐसी है।
फूल मुरझाये हैं अब फ़स्ले बहार ऐसी है॥
दर्द सिर कभी है शिकायत है कहीं कब्ज़ो ग़म।
ज़ोफ़े बीनाई का रोना है शोरे मातम॥
उम्र तो कम है मगर ज़ोफ़ से है नाक में दम।
पसे रफ़तार भी उठता है तकल्लुफ़ से क़दम॥
नौजवानी है इधर और उधर दिल है मलूल।
सबब इनका यह ही छोड़ा जो वर्जिश का असूल।
ख्वाब गफ़लत में पड़े रहने से आराम नहो॥
सुस्त आज़ा जो हैं उनसे कभी काम न हो।
शुगल वर्जिश की मुनासिब हमेशा ताईद॥
जितने अशगाल हैं वर्जिश के वह हैं काबिले तकलीद,

शेष फिर

[देशोपकारक से उद्धृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की मनुष्य गणना

गतांक से आगे

वहां एक वर्ग मील में कुल ६ आदमियों की बसती सन् १८७२ से अबतक भारत की जन संख्या में सैंकड़े पीछे आदमियों की वृद्धि हुई। इतनी वृद्धि का कारण यह है इस बीचमें कई नये सूबे राज्य में शामिल हुवे और गणना के लेखमें भी बहुत शुद्धता रही। गत दस वर्ष में सैंकड़े साढ़ेपांच के हिसाबसे जनसंख्या बढ़ी किन्तु देशी रियासतों में १३ के हिसाब से वृद्धि हुई। वृटिश राज्य में प्लेग बहुत ज़ोर रहा इस से वृद्धि अधिक नहीं हुई। मलेरिया ज्वरसे जो तबाही हुई वह प्लेग से भी बढ़कर भयंकर और स्थायी है। नगरों में जन संख्या के ख्याल से कलकत्ते का दरजा पहला है प्रायः साढ़े बारह लाख आदमी बसते हैं वहां गत १० वर्ष में सैंकड़े पीछे १० आदमी बढ़े। बम्बई नगर की जन संख्या १० लाख से कुछ कम है। वहां सौ पीछे आदमी बढ़े। हैदराबाद (दक्षिण) की बस्ती में सैंकड़े पीछे १२ और रङ्गून में १९ की वृद्धि हुई। मद्रास की बस्ती उतनी ही है जो दस साल पहिले थी। करांची की जन संख्या में सैंकड़े पीछे ३० और ढाके में २१ बढ़े। भारत की सम्पूर्ण जन संख्या में हिन्दू सैंकड़े पीछे ७० हैं किन्तु बढ़ी हुई जन संख्या में इनका हिस्सा आधे से अधिक नहीं है। इसका कारण मि० गेट की राय में यह है कि हिन्दुओं में विधवा विवाह की प्रथा नहीं है और यह है कि विधर्मियों को हिन्दू बनाने की चाल भी उन में नहीं है यह गेट साहब की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस को विवेचना करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है ।
पने कहा कि भारतमें प्रायः ईसाईयोंकी संख्या ४० लाख
गत १९ वर्ष में दस लाख की वृद्धि हुई । परन्तु यह वृद्धि
ार भंगी आदि नीच जातियों और छोटे दर्जेके मुसलमानों
ईसाई होनेसे हुई है । गत १० वर्ष शिक्षित नर नारियों
संख्या में इस प्रकार वृद्धि हुई १० वर्ष पूर्व हज़ार मर्दों में
शिक्षित थे अब १०६ हैं यों ही स्त्रियां हज़ार में ७ पढ़ी
खी होती थीं अब ११ हैं इस देश के फी एक लाख मनुष्यों
२६ पागल २४ गूंगे और बहरे १४२ अन्धे और ३५ कोढ़ी हैं ।
हिसाब से स्पष्ट है कि गत दस वर्ष में भारत की जन-
ख्या उतनी नहीं बढ़ी जितनी कि बढ़नी चाहिये थी ।
रण यही है कि दिनपर दिन आवश्यक चीजें महंगी होती
ी जातीं हैं अधिकांश देश वासियों का गुजारा होना
ठन हो रहा है इसी दरिद्रता के कारण रोग व्याधियां
त दबा रही हैं घी दूध की बहुत कमी है और होरही है
दि के कारण स्वास्थ्य रक्षा की ओर यथोचित ध्यान
हीं दिया जाता यदि इन का कुछ उपाय किया जाय तो
िस्सन्देह जन संख्या बढ़ सकती है । शम् ॥

—:❀+०×०+❀:—

ब्रह्मचर्य

[गताङ्क से आगे]

पृथक्सर्वे प्राजापत्याःप्राणानात्मसु बिभ्रति ।
तान्सर्वान् ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारिण्याभृतम् ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ-(सर्वेप्राजापत्याः पृथक् प्राणानात्मसु बि
रक्षा करने योग्य सुखहेतु चराचर वस्तुओं की रक्षा करने
सब लोग स्त्री आदि से अलग रहकर वीर्य्य को थामने
बल नाम इन्द्रियों की शक्तिरूप प्राणोंका अपने श
धारण करते हैं अथवा यों कहो कि लगा लिपटी से
अपने प्राणोंका ठीक धारण करते हैं वे ही प्रजा रक्षा
सकते हैं (तान्सर्वान् ब्रह्मचारिण्याभृत ब्रह्म रक्षति) उ
प्राजापत्यों की ब्रह्मचर्य्य में स्थित हुआ वा गुरु द्वारा स्थ
किया वेदज्ञान रक्षा करता है अर्थात् दुर्वासना रूप
नान्धकार जो पाप रूप कहता उसका हृदयसे निवारण
वेदका ज्ञान दुःखों से बचाता है। शरीरमें सब से बड़ा
के कारण वीर्य्य ब्रह्म है वह जैसा जिसमें स्थित रह
वैसी ही न्युनाधिक रक्षा होतीहै। किसी में वीर्य्य स
न रहे तो क्षण भरभी प्राण नहीं रह सकते विशेषकर
का धारण कर्ता ही प्राण धारक ब्रह्मचारी होता है
वह ही वेदज्ञान का पात्र होता है यह बात ब्रह्मच
ण्याभृतम् पद से जिताई है।

स्त्री आदि भोग्य वस्तुओं से अलग रहने वाला
ब्रह्मचारी होसक्ताहै और वहही प्राणबल के हेतु वीर्य्य
अपनेमें धारणकरसक्ताहै यहअत्यन्त दुःस्साध्यहै कि
में रहता हुआ पुरुष ब्रह्मचारी रहसके इसही लिये प्रा
समय में आचार्य जङ्गलों में रहते थे और बाल्यावस्था
ही ब्रह्मचारी विवाह तक बराबर आचार्य्यों के
गुरुकुल में रहते थे। किसी ने कैसा ठीक कहा है

घृतकुम्भसमा नारी तप्ताङ्गार समः पुमान्।

अर्थात् स्त्री घृत के घड़े के समानहै और पुरुष दह
हुए अङ्गार के समान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि मनु जी ने तो यहां तक लिखा है कि:

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न विविक्तासनो भवेत्।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वाँसमपिकर्षति ॥

अर्थात् माता बहिन, बेटी, इनके भी साथ निर्जन स्थान में न रहे क्योंकि बलवान् इन्द्रियां विद्वान् को भी अपनी ओर खेंच लेती हैं और भी कहा है कि (पृथक् शयीत सर्वत्र) सब स्थानों व सब कालोंमें ब्रह्मचारी सब से पृथक् शयन करे

यह बात सब अच्छी तरह जानते हैं कि शरीरसे वीर्य निकलने से जितना बल घटता है उतना किसी प्रकार नहीं घटता है। आपने प्रमेह ग्रस्त (जिर्यान वालों) रोगियों को देखा होगा उनके मुख पर कैसी मुर्दानगी छाई रहती है और कैसे निर्बल होते हैं और थोड़ी सी ही सर्दी या गर्मी से तुरन्त बीमार हो जाते हैं। प्राण का धारण नाम जितेन्द्रिय हुए बिना प्रजापतित्व किसी में नहीं घट सकता है क्योंकि जो अपने ही तत्वरूप वीर्यकी रक्षा न करके व्यभिचार में उसे खोता है वह अन्य की रक्षा करके किस प्रकार प्रजापति हो सक्ता है। जो पुरुष जैसी थोड़ी बहुत वीर्य की रक्षा करते हैं वे वैसे ही बली प्राण धारक और रक्षा के योग्य रक्षक होतेहैं और वे यदि महत्व को लेने और रखने के स्वभाव वाले अपने देहस्थ हृदय में ब्रह्मनाम वेद को स्थान देते हैं तब शारीरिक बलसे भिन्नसे भिन्न वेदाध्ययनद्वारा होनेवाला आध्यात्मिक विद्या बल भी उनको सुख देनेवाला होताहै इसप्रकार यहां पृथक्स्थिति द्वारा वीर्यके रोकनेसे प्राणका धारणरूपजीवन और वेदविद्या का ग्रहण यह दो प्रकार से ब्रह्मचर्य का स्वरूप दिखलाया गया है इसीको विशेष व्याख्यान इससे अगले मंत्रमें जिसको कि पूर्वलिख चुके हैं किया गया है। [शेषफिर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये बाल विधवा विवाह ।

अप्रैल १२ को भागलपुर में मंत्री आर्य्यसमाज के उद्यो से राजपूत बाल बिधवा कन्या का पुनर्विवाह बाबूराम सि के साथ हुआ । इस कन्या की शोचनीय दशा को सुनक सब लोग तरस खातेथे और मुसल्मान व वेश्या न होने दे हिन्दू समाज में इसको रखने के कारण सनातन धर्म भाईयोंने भी इस विवाह की प्रसंशा की । अब पुरानी ल कीर के फकीर हमारे सनातनी भाई भी इसके लाभों जानने लगे हैं ।

दूसरा बिवाह

श्रीयुत रायबहादुर नानक चन्द जी सी० आई० ई० सी० एस० आई कारभारी इन्दोर के स्वर्गवासी छोटे भा राय केशो दास जी की बाल विधवा अग्रवाल कन्या पुनर्बिवाह उनके सुपुत्र लाला श्रीमान सिंह जी बी० (ऑक्सन) ने शुभ विवाह २० अप्रैल १२ को बड़े आन के साथ मोरटक्का मुकाम में श्री नर्मदाजी के तटपर श्रीयु लाला मंगतरायजी के साथ किया । श्रीयुत लाला मंगतरा जी आज कल रियासत इन्दोर में नौकर हैं । बरात इन्दो से गई थी और इस में बड़े २ योग्य पुरुष सम्मिलित थे वरकी तरफ़ से उनके बहनोई श्रीयुत लाला हीरालाल हेड मास्टर ईडंस्ट्रीयल स्कूल रोहतक और कई सा इन्दोर से शामिल हुए थे । लाला श्रीमान् सिहं जी की तर से भी बहुत से पुरुष सम्मिलित थे जिन में कुछ सज्ज के नाम यह हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१ लाला निहालचन्द जी एम्० ए० नाज़िम सायर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ श्रीयुत लाला माटूलालजी बी० ए० फौरन सेक्रेटरी इन्दोर

३ लाला मूलचन्द जी बी० ए० सेक्रेटरी कौन्सिल इन्दोर

४ लाला ओंकारप्रसादजी व्यारी टेवल सुपरिन्टेन्डेन्ट इन्दोर

५ लाला रघुवर दयाल मजिस्ट्रेट इन्दोर

६ लाला छोटेलाल जी फायनेन्स सेक्रेटरी इन्दोर

७ लाला राम चन्द्र जी डिप्टी स्टेट ट्रेजर इन्दोर

८ ठाकुर राम सिंह एम० ए० वकील इन्दोर

९ लाला अखेराम तहसीलदार तराना इन्दोर

१० पंडित हरप्रसाद चौबे तहसीलदार बडवाह इन्दोर

११ सेठ लछमण दास चम्पालाल सनावदवाल इन्दोर

इनके अलावा और भी बहुत से सज्जन सम्मिलित थे। हमारे रायबहादुर नानकचन्द जी सी० आई० ई० सी० एस० आई० भी सम्मिलित थे आपने कन्याओं के मिलते भी अपने पुत्रका विवाह विधवा कन्या से किया था। ईश्वर वर कन्याको चिरायु करे।

हिन्दू विधवा सुधारणी समिति।

लखनऊ का

प्रास्पेक्टस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समिति के उद्देश नितान्त सामाजिक हैं विधवाओं को शिक्षा देना, जिन विधवाओं को पुनर्वि करने की इच्छा हो अथवा जिनका पुनर्विवाह करा ही उचित हो उनको विवाह करने के लिये प्रोत्सा करना और सहायता देना, और शेष को भी जहां समिति से हो सके, सहायता देना, ये सब इस स के उद्देश हैं ।

२—यह समिति अपने को राजनैतिक आन्दो तथा राजनैतिक सभा समितियोंसे बिलकुल अलग रखे

३—वे सब हिन्दू विधवाएं, जोकि चाहें, एवं वे वाएं जिनकी दशा ऐसी हो कि उन्हें इस समिति आधार आवश्यक हो, इस समिति के आधार पर जा सकती हैं ।

४—इस समिति के सदस्यों को कार्य समितिके उद्दे को अभिवर्द्धित करना ।

५—कोई भी व्यक्ति जो ३ रुपया वार्षिक चन्दा और सभासदी का फार्म भरे, इस समितिके सदस्य होने अधिकारी हो सकता है । चन्दा प्रत्येक वर्षके पहले ही देना होगा ।

६—इस समिति के सदस्य होने की इच्छा रखने लोगोंके आवेदन पत्र देने पर समिति के कार्य कारिणी उन्हें सदस्य बनावेगी ।

७—इस समिति का एक साधारण अधिवेशन वर्ष में से कम एकबार होगा ऐसे अधिवेशनोंमें प्रत्येक सदस्यको सम्मति देनेका अधिकार रहेगा । 'कोरम' नौ सदस्योंका होगा

८—कार्य कारिणी सभा कार्य कर्ताओं के सहित सदस्योंकी होगी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

)

ा । इस सभा के सभासद् समिति के एक साधारण
वेशन में बहु मतानुसार चुने जायेंगे । इस प्रकार से
हुआ प्रत्येक सभासद् चुनने वाले दिन से चार वर्ष तक
कारिणी समिति में रह सकेगा, तदुपरान्त वह फिर
ा जा सकेगा ।

९—एक अधिवेशन में जो २१ एप्रिल को हुआथा निम्न
त सज्जन प्रथम वर्ष (एप्रिल १९१२ से मार्च १९१३ तक)
लये कार्यकर्ता नियुक्त किये गये हैं:—

बाबू कुञ्जबिहारीलाल सेट अडिशनलजज, स्माल काज,
लखनऊ, प्रधान ।

पण्डित गदाधरप्रसाद बी. ए. मुन्सरिम, डिस्ट्रक्ट जज
, लखनऊ मन्त्री ।

विश्वेश्वरप्रसाद इन्जिनियर्स आफिसलखनऊसहकारीमंत्री।

१०—कार्यकारिणी सभा के किसी सभासद् की मृत्यु
ाने पर, अथवा इस्तीफा देने पर अथवा उसकी बदली
जानेपर, उसके स्थान पर साधारण समिति का कोई
स्य कार्यकारिणी समिति के एक अधिवेशन में चुनाव
ा नियुक्त किया जायगा ।

११—समिति का सब रुपया और कागज पत्रादि [पु-
कें भी] प्रधान के हाथ में रहेंगी और प्रधान ही के
देशानुसार मन्त्री कार्य करेंगे ।

१२—समिति के कार्य की एक रिपोर्ट प्रत्येक वर्ष कार्य
ारिणी समिति द्वारा प्रकाशित की जायगी ।

१३—वे पुस्तकें और पत्र रक्खे जायँगे जो कार्यकारिणी
मिति द्वारा निश्चित किये जायँगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३—कार्य कारिणी सभा के अधिवेशन स[illegible] हुआ करेंगे। किसी अधिवेशन के होने से पहले [illegible] होने के दिन, समय, तथा स्थान सभाके प्रत्येक स[illegible] सूचित कर दिया जाया करेगा।

१५—अत्यावश्यकता पड़ने पर प्रधान को [illegible] करने का अधिकार रहेगा और इस व्यय की सूच[illegible] कार्य कारिणी समिति के आगामी अधिवेशन में [illegible] करेगा।

लखनऊ
२१ एप्रिल १९१० } कुंजबिहारीलाल

—

नोट—हमें यह देखकर अत्यन्त हर्ष होता है [illegible] पर दिन शिक्षित पुरुषों का विधवाओं की दुर्दशा [illegible] ध्यान आर्षित होता जाता है। किसी ने ठीक कहा [illegible] "बारह वर्ष में कूड़ी के भी भाग्य उदय होते हैं" फि[illegible] इन बेचारियों ने कौन अपराध कियाथा जो इनका [illegible] सूर्य उदय न होता। हमें उक्त समिति से हार्दिक सहा[illegible] है ईश्वर करे नगर२ ऐसी सभाएं खुलें। क्या ही [illegible] होता अगर यह पृथक् समिति न बनाकर प्राचीन बाल[illegible] विवाह प्रचारणी सभाके आश्रित रह कर काम करती [illegible] उसके ही नियमों को घटा बढ़ा लियाजाता। एक [illegible] विशेष विचारणीय है उक्त समिति ने यह स्पष्ट नहीं [illegible] बाल विधवा या कुल विधवों के बिवाह कराएगी [illegible] पत्र बाबू कुंज बिहारीलाल B. A. सबजज लखन[illegible] मंगावे।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा ! मास्टर भगवानदास!

करुणा विमुखेन मृत्युना
हरता त्वां वद किन्न मे हृतम्,

हाय ! लिखते हृदय विदीर्ण होता है अभी बालविधवा विवाह प्रचारिणी सभा के सभापति श्री० श्रोत्रिय शङ्करलाल-जी के असह्य दुःख को भूले ही नहीं थे कि उनके मित्र और बाल वि० वि० प्र० सभा के मन्त्री श्रीयुत मास्टर भगवान दासजी ने हमें बिलखता छोड़ स्वर्गयात्रा की अब यह कहना पड़ता है कि 'छिद्रेष्वनर्था बहुलि भवन्ति'।

मास्टरजी २३ अप्रैल को गंगा स्नान करने गये थे वहां कुछ लड़के खेलते २ डूब गये उनको मास्टर साहब निकालने गये पांच लड़के निकाल दिये और फिर सामर्थ्यहीन होकर अपने पुत्र सहित भागीरथी माता की गोद में सदैव के लिये शयन किया आपकी शिक्षा प्रणाली आदर्श थी आप सच्चे देश-हितैषी और धर्मात्मा थे प्रारम्भ से आप बाल विधवा-प्रचारिणी सभा के मन्त्री रहे और बड़ी योग्यता से काम किया। उनकी विद्वत्ता पाठक नवम्बर के अबलाहितकारक की श्रोत्रियजी की वैकुंठ यात्रा की कवितासे जान सकते हैं।

[❀]

समाचार।

एक महाशय जसपुर से सूचना देते हैं कि काशीपुर में एक अग्रवाल विधवा का अहीर से बुरा सम्बन्ध था कुछ दिन बाद पाप [illegible] गर्भवती हुई अब इसके एक लड़का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । जातीय पुरुष से विवाह करने में तो कहा जाता है कि हममें और नीचोंमेंफ़र्क ही क्या रहजायगा अब फ़र्क रहगया जब द्विजाति की जगह उस के गर्भ से वर्णशंकर पैदाहुआ। हाँ यह कृपा की जो उस बेचारे बालक की जान न मारकर जिन्दा रहने दिया ।

नये लिफाफे—आजकल जैसे लिफाफे रजिस्टरी के डांक विभाग में पाए जाते है उनसे अच्छे बनने की सरकार ने आज्ञा दी है । इनका दाम अढ़ाई आना होगा । ऐसे लिफाफों को खरीद कर रजिस्टरी कराने का पृथक् महसूल न देना होगा । ।=)के टिकट और नये लिफाफे शीघ्रही बिकने लगेंगे ।

स्थानाभावसेपवित्र मानसिकभाव औरसुन्दरता तथा रूपवती जो शेष रहगयाहै वहआगामी अङ्कमें प्रकाशित कियाजायगा

त्रिनेत्र बैल-भारत मित्र कलकता लिखता है कि बाबू हरेन्द्र कृष्णने अपनी एक मुसल्मान रय्यत से लक्ष्मणनाथ ग्राम में सवा दो रुपए पर एक त्रिनेत्र बैल खरीदा है दो तो यथा स्थानपर और एक भौवोंके बीचमेंहै और यह दोनों आंखों से बड़ा है ।

नवीन ग्राहकों को सूचना ।

जिन सज्जनों की सेवामें अबलाहितकारक जनवरी से जारहा है यदि उन्हें किसी कारण लेना स्वीकार न हो तो सूचना दें या इस अङ्क को बैरंग या वैसेही लौटादें वी० पी० जाने पर लौटाना सभ्यता के विरुद्ध है । आशा है सज्जन गण इस अबला पत्र को वृथा हानि नहीं पहूँचायँगे।

(सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रतिमास के आरम्भ में प्रकाशित होता है।

(२) डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है। विद्यार्थी और स्त्रियों से ॥=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी बिना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पता पूरा और साफ साफ देवनागरी या अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर लेना चाहिये।

(६) पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकट बिना नहीं दिया जायगा।

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहिये—

श्रीमती पूर्णादेवी,
"अबलाहितकारक-कार्य्यालय", बिजनौर।

सुधानिधि

इस समय जबकि भारतवर्ष नाना रोगों का घर हो रहा है। तब एक ऐसी औषधि की अत्यन्त आवश्यकता थी जिसे अकेली के पास रखने से नाना ओषधियों के बकसों की आवश्यकता न रहे। इसके लिये बहुत रुपया खर्च और परिश्रम किया गया जिसके परिणाम में एक वृद्ध वैद्यराज द्वारा यह महौषधि प्राप्त हुई जो नाना रोगों में रामबाण का असर दिखाती है। हम अपने मुँह मियां मिट्ठू न बन कर केवल सभ्य ग्राहकों से निवेदन करते हैं कि एक बार हमारे सुधानिधि को मंगा कर परीक्षा करें कि किस प्रकार एक औषधि अनेक रोगों को दूर करने में समर्थ होती है।

सुधानिधि—कफ, खाँसी, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्रहणी, आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, हाथ पैर कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खाँसी की सुगन्धित औषधि है। इसके अलावा बिच्छू ततैये आदि के जहर को फायदा करती है। मूल्य ॥) मात्र है॥

मैनेजर—ओरिय एण्ड कम्पनी, बिजनौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की बनाई सरकार [से]
रजिस्टर्ड की हुई दवाईयां जो बीस वर्ष से संसार में
आजमाई जा चुकी हैं ।

सुधासिन्धु

कफ़, खांसी, दमा, जाड़े का बुखार, हैज़ा, शूल, संग्र[हणी]
आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, जी मिचलाना,
पैर और कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खां[सी]
दूध पटक देना आदि की स्वादिष्ट सुन्दर दवा है । कीमत
शीशी ॥)

दद्रुगजकेसरी

दाद को जड़ से खोने की एक मात्र पवित्र दवा है । जरा
जलन या चिरमिराहट नहीं होती इसीको शराब या नीबू के
में मिला देने से दो शीशी अर्क तैयार हो जाता है । कीमत
शीशी ।) आना १२ शीशी मगाने से एजेंट समझ कर उन
नोटिस आदि मुफ़ भेजते हैं, कमीशन देते हैं, वर्तमान वर्ष
पंचांग भेजते हैं ।

मँगाने का पता—क्षेमपालशर्मा मालिक
सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा

पं० [illegible] शर्मा द्वारा [illegible] मुद्रित ।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered No. 363 A

अबलाहितकारक

मई १९१२ ई० [अङ्क ५

पराशरवंशोत्पन्न श्रोत्रिय शंकरलाल शर्मा द्वारा संस्थापित

तदात्मज

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

द्वारा सम्पादित और प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[वार्षिक मूल्य १)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—
पं० सुदर्शनाचार्य्य,
बी० ए०

गृहलक्ष्मी

उपसम्पादि...
श्रीमती गोपाल...

हिन्दी भाषा में स्त्री-शिक्षा विषयक सर्वाङ्ग-सुन्दरी उच्च... की सबसे सस्ती सचित्र मासिक पत्रिका।

इसमें धर्मशास्त्रों के अनुसार पातिव्रत आदि धर्म, उपदेश... कविता, शिक्षापूर्ण उपन्यास, नाटक तथा आदर्श स्त्रियों के... चरित्र, गृह-प्रबन्ध, पाकशास्त्र, स्वास्थ्य-रक्षा, शिशुपालन, ... पिरोना, संगीत कला, देश विदेश की बातें, सायन्स की ... मनोरंजक पहेली आदि स्त्रियों के उपयोगी सभी विषय ... करते हैं।

☞ नोट—इसमें विवाद-ग्रस्त या किसी विशेष प... लेख नहीं होते इसीसे यह पत्रिका सनातन-धर्मी तथा आर्य-सम... दोनों ही की बहू-बेटियों के लिए समान-भाव से लाभकारी है... इसी से सब समाचार पत्रों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की...

इसका आकार ५० पृष्ठ से भी अधिक रहता है। साल भ... ग्राहकों के पास लगभग ७०० पृष्ठ की अच्छी खासी पोथी हो... है। हर महीने चित्र भी रहा करते हैं। इस पर भी लागत... अनुसार वार्षिक मूल्य केवल २॥) है।)=॥ आने टिकट भेज... नमूना मँगा देखिये॥

☞ मिलने का पता:-मैनेजर, 'गृहलक्ष्मी'-कार्यालय, प्रया...

बाल-विधवा विवाह प्रचारिणी सभा

जो सज्जन अपनी बाल-विधवा कन्या का पुनर्विवाह कर... चाहते हैं या जो विधवाएं स्वयं अपने जीवन के सुधार के लि... विवाह करना चाहती हैं उनके लिए उक्त सभा समान वर ढूंढ़... शास्त्रानुकूल विवाह करा देती है। बाल-विधवा विवाह के वि... धियों से हम हर समय शास्त्रार्थ करने को तैयार हैं। पत्र व्यव... इन पतों पर होना चाहिये—

पता—राय साहब ठाकुर मुरारी लाल बी० ए०
मंत्री बा० वि० वि० सभा, कानपुर।
(अथवा) पता—श्रीयुत जगदीश...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रीय शङ्करलाल शर्म्मणा

स्थापित

अबला हितकारक।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥ १॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा॥ २॥

वम् वर्ष } मई, जून सन् १९१२ { पञ्चम, षष्टम् अङ्क ५—६

पुष्पांजलि

हे! अन्तर्यामी अखिलेश चराचर चारी,
जय निर्गुण सगुण अनादि आदि अविकारी।
पाता है कोई पार न नाथ! तुम्हारा,
चलता है यह संसार तुम्ही से सारा॥

(२)

पाकर हे विश्वाधार! तुम्हारा ही बल,
है निश्चल यह आकाश और यह भूतल।
बहता है नित-जल वायु अनल जलता है,
द्रुम-गुल्म-लता-दल-फूल-फल फलता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

हे ईश ! तुम्हीं में रवि प्रकाश पाता है ।
कृश हुआ कलाधर फिर विकाश पाता।
हैं तारे करुणा-बिन्दु तुम्हारे प्यारे,
न्यारे न्यारे हैं खेल तुम्हारे सारें ॥

(४)

हम जब तक अपना जन्म धरा पर धारें,
हो जाती हैं उत्पन्न दूध की धारें ।
वात्सल्य तुम्हारा जलद दिखा जाते हैं,
मृदु-अङ्कुर भूतल भेद निकल आते हैं।

(५)

गा सके तुम्हारे गुण न वेद भी हारे,
प्रभु ! कोटि कोटि हैं तुम्हें प्रणाम हमा
हो तुमसे केवल, तुम्हीं कौन तुमसा है,
तुम बीज रूप हो देव ! जग द्रुमसा है

(६)

रहती है जन पर सदा तुम्हारी ममता,
चमता अद्भुत है नहीं कहीं भी सम
सर्वेश शक्ति हो तुम्हीं शक्ति हीनो की,
गहते हो दुःख में बांह तुम्हीं दीनों की

(७)

अपने बल का अभिमान जिसे होता है,
क्यों अन्त समय वह अचेत पड़ा सो
विभुवर हमको प्राण तुम्हीं देते हो,
फिर क्या?जब तुम निज अंश खेंच ले

(८)

पुष्पाञ्जलि-सम यह दीन पत्रिका लीजे,
अङ्गी कृत कीजे इसे दृष्टि-वर दीजे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी पति हो हरि ! तुम्हीं श्रीपति हो,
अब अधिक कहें क्या तुम्हीं हमारी गतिहो ।।

मैथिली शरण गुप्त

सम्पादकीय वक्तव्य ।

हम कई विशेष कारणों से पत्र ठीक समय पर नहीं निकाल सके और बार २ अपने सभ्यग्राहकों से क्षमा प्रार्थना करते आए हैं । इससे हम स्वयं लज्जित हैं इसलिये अब दो २ अङ्क निकालकर फिर प्रार्थना करते हैं कृपा करके क्षमा प्रदान कीजिये । आशा है जोलाई माससे प्रतिमास ग्राहकों की सेवामें ठीक समय पर पहुँचेगा ।

हम अपने सभ्य ग्राहकों से कईवार प्रार्थना कर चुके है यदि किसी विशेष कारण से किसी महाशय को इसकी ग्राहकता स्वीकार न हो तब सूचनादें । हमारे कितने ही सभ्य ग्राहकों का इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं प्रथम बराबर पत्र लेते रहते हैं और जब वी० पी० भेजा जाताहै तब लेना स्वीकार नहीं मात्र लिखकर सस्ते छूटजाते हैं । कितने शोक की बात है इस अबला पत्र की सहायता करना एक तरफ रहा उलटी हानि पहूँचाते हैं जो सज्जनता और धर्म के सर्वथा प्रतिकूल है ।

जबसे इस पत्रने सचित्ररूप धारण किया है बराबर चित्र नहीं देसका इसके दो विशेष कारण है प्रथम ग्राहकों की लापरवाही अर्थात् प्रथम अस्वीकृति की सूचना न देना और वी० पी० जाने पर लौटकर व्यय हानि पहुं-चना । इससे कलकत्ता आदि से चित्र बहुत देरीसे आते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं । आशा है ग्राहकगण इस त्रुटिकी क्षमा करेंगे । जो
के अङ्कमें अवश्य चित्र होगा ।

कुछदिन हुए इटावा निवासी पण्डित ब्रह्मदेव
विधवा विबाह निषेध नामक पुस्तक बनाई थी जि
विधवा विवाहके पक्षपातियों पर मनमाने आक्षेप किये
जिसका क्रमशः अबलाहितकारक में खण्डन छपेगा ।
पुस्तक के टाईटिल पेजपर बिधवाविबाह को शास्त्रानु
सिद्ध करने वालेको २०००) इनाम का विज्ञापन प्रका
किया है । किन्तु पण्डितजीने यह स्पष्ट नहीं किया कि
इनाम बालविधवाविवाह के शास्त्रानुकूल सिद्ध करने व
के लिये है या विधवा मात्र के विवाह को सिद्ध करनेव
के लिये है इससे मालूम होता है कि शायद पण्डित
अक्षतयोनि कन्याओं (जिनको अज्ञानता के कारण वि
कहा जाता है) के विवाह के विवाह को मानते हैं । य
ऐसा है तब पण्डितजी हमसे सहमत ही हैं क्योंकि स्व
वासी श्रोत्रियजी तथा उनके अनुयायी भी अक्षतयो
विधवाओं के विवाह को मानते और प्रचार करते हैं ।

श्रीयुत पण्डित ब्रह्मदेवजीने माननीय वैकुण्ठवासी
श्रोत्रियशंकरलालजी तथा गोस्वामी पण्डित राधाचरण
आनरेरी मजिस्ट्रेट वृन्दावन व प्रधान बालविधवाविव
प्रचारणीसभा संयुक्तप्रान्त पर अपनी पुस्तक में खूब वि
उगला है ? और यहांतक लिखदिया है कि श्रोत्रियजी
इदीर्ष्वनार्य भि जीवलोकम् आदि श्रुति स्मृतियों से अ
स्वामी दयानन्दजी के अनुकूल किये हैं । इसलिये ह
पण्डितजी से सविनय निवेदन करते हैं कि पण्डितजी कृप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं उनके अर्थों को विचार पूर्वक पढ़िये । श्रोत्रियजीने र्वनार्यभि जीवलोकमादि श्रुतियों का अर्थ सनातन-मान्य सायणभाष्यानुकूल किया है । क्या सायनाचार्य-भी स्वामीदयानन्दजी के अनुकूल अर्थ किया है ।

उद्वाहितापि सा कन्या न चेत्सं प्राप्त मैथुना पुनः संस्कार मर्हेत यथा कन्या तथैव सा (ना० स्मृ०)

यह पाठकों को पूर्णतः ज्ञातहै कि पूज्यपाद पिताजी (श्रोत्रिय शंकरलालजी) की वैकुण्ठयात्रा से बालविधवा विवाहप्रचारणिसभा को बड़ीभारी हानि हुई है क्योंकि तन मन धन से प्रक्टिकिल कामकरने वाला कोई नहीं इसलिये प्रत्येक बालविधवाविवाहके हितैषीयोंसे निवेदन है कि कृपा करके अपने २ नगरकी बालविधवा कन्याओं माता पिता का नाम तथा पता व जाति लिखकर भेजें जिससे उनके विवाहका प्रबन्ध किया जाय ।

जो महानुभाव बालविधवाविवाह के प्रतिकूल कोई पुस्तक लिखें या किसी पत्र में कोई लेखदें उनसे और सम्पादकों से सविनय निवेदन है कि कृपापूर्वक एक प्रति हमारी सभा को बिजनोर या प्रधान पण्डित गोस्वामी राधाचरणजी के पास वृन्दावन भेजदिया करें क्योंकि जिससे तुरंत उनके भ्रमित विचारों का उत्तर देदिया जाया करे । अन्यथा न भेजने वलों की पराजय समझी जायगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्री , जाति

(गताङ्क से आगे)

तारावाई नें उसी दिन से शस्त्रविद्या सीखना करदिया। थोड़ेही दिन बाद शस्त्रविद्या और घोड़ेकी में अद्वियतीय होगई बड़े२ सरदार भी उसकी बराबरी कर सकते थे। शस्त्रविद्या में निपुण होकर उसनें पितासे यवनों पर आक्रमण करनें की प्रार्थना की। की गई किन्तु तारावाई का अभिप्राय सिद्ध न हुआ २ चढ़ाई की किन्तु विफल मनोरथ ही होती रही तारावाई का उत्साह कम न हुआ किन्तु द्विगुण हो। वह ज्यों २ हारती जाती थी त्यों २ उसका और भी संकल्प द्रढ़ होता जाता था। उसने यह निश्चय कर था कि थोड़ी सैना होते हुए भी शत्रुओं को सुखसे न दूंगी। और सत्यही उसनें अफ़गान सरदार लैलां को नहीं सोनेंदिया।

तारावाई की सुन्दरता की प्रसंशा दिनोंदिन भा में फैलनें लगी। उसके अभिलाषी बहुत से राजा थे उसकी विकट प्रतिज्ञा को सुनकर हाथ मलकर रह जा एकबार उदयपुर के उत्तराधिकारी जय मलनें उसकी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने का विचार करके उसके पास गया उसकी मोहिनी सूरतको देखकर क्षत्रिय व्यवहार वि मुखसे निकले जिनके फल में तारावाई के पितानें सर धड़से अलग कर दिया। सत्य की रक्षा के कारण रायमलनें अपनें पुत्रके वधकरनें वाले को किसी प्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर अपने पुत्र जयमल के परलोकवास होनें पर महाराणा जी नें अपने वीर पुत्र पृथ्वीराज को बुला लिया । पृथ्वीराज की विजय पता का दिन पर दिन वृद्धि को प्राप्त हो रही थी । इनकी अनूपम वीरता से बड़े२ वीर भय खाते थे । इनकी वीरोचित प्रसंशा सुनकर तारावाई नें इन्हे मन से वर चुकी थी वह कहा करती थी परमात्मानें यदि मेरे लिये योग्य बनाया है तब वीरवर महापराक्रमशील पृथ्वीराजही को बनाया है । किन्तु ईश्वर जानें वह मेरेवास्ते कष्ट उठायेंगे या नहीं, नहीं २ ऐसा कदापि नहीं होसक्ता वह सच्चे वीर हैं और वीरता के अवतार धर्मात्मा हैं फिर मेरे पवित्र कार्य्य में क्यों न सहायता देंगे । इस में संदेह नहीं मुझे इन के अतिरिक्त और कौन मिलेगा मेरी जयमाल इनके ही गले में पड़ेगी किन्तु सन्देह इसमें हीहै क्या मुझे उनकी अधिङ्गिनी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा ।

विधाताने दोंनों को वीरता और गुणों की मूर्ति बनाया था । ताराबाई सत्यही भारतवर्ष नहीं भूमण्डल की स्त्रियों में तार थी और पृथ्वीराज भी भूमण्डल के अधिश्वर होने योग्य थे तारावाई सुवीरा सर्वाङ्गसुन्दरी उन के योग्य थी जिस तारावाई के लिये और राजाओं का चित्त व्याकुल था वह वह ही तारावाई पृथ्वीराजको उनके गुणों के कारण सुलभ थी । तारावाई में सबसे उत्तम गुण उन्हें जान पड़ते थे वहउसकी अद्भुत वीरता रण दक्षता और महान् उद्देश्य थे । तारावाई के गुणों और रूपकी प्रसंशा सुनकर पृथ्वीराजका भी चित्त उसकी तरफ आकर्षित होगया । पिताके बुलाने के बाद कुछ दिन टाली रहने से पृथ्वीराज का चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ाई को चाहता था उनकी तरवार का निष्काम रहना अच्छा मालूम नहीं होता था। उन्होंने वह अच्छा मौका समझकर सोचा चलो इसी वहाने लड़ाई का मोका मिलैगा और अपने समय की एक मात्र सुन्दरी स्त्री हाथ आवेगी।

यह विचार कर पृथ्वीराज वेदनौर को चल दिये। जिस वीरमूर्ति की तारावाई चिर काल से उपासना कर रही थी उसका आगमन सुनकर उसके आनन्द की सीमा न रही। वीरशिरोमणि पृथ्वीराज प्रथम राव शूरनाथ से मिले शूरनाथनें अति सत्कार के पश्चात् पृथ्वीराज से कहा कि "कब आप यवनोंको मेरे देश से निकाल देगें यह सुनकर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया "एक सप्ताह में ,, यह सुन शूरनाथ अत्यन्त प्रसन्न हुआ। इसके वाद पृथ्वीराज तारावाई के पास गये। दोनोंके कंठ गदगद होगए। आहा! क्या सत्य ही इस कोमलाङ्गी में विद्या साहस वीरता भरीहै।

तारावाईनें कहा "महाराज क्या आप मेरे देशका उद्धार करोगे, पृथ्वीराज बोले "तुम्हारे देशका उद्धार तो अवश्य करूंगा किन्तु आप अपनी प्रतिज्ञा स्मरण रक्खें जिसमें मेरा भी उद्धार होजाय ,, अब तारावाई के हर्ष की सीमा न रही क्यों कि वह तो पहिले ही इनको अपना पति मान चुकी थी। उसनें प्रार्थना की कि महाराज मैं आपके संग चलूंगी ,, यह और भी प्रसन्न होगये।

इन्होनें मुहर्रमका दिन अपनी कार्य्य सिद्धि के लिये निश्चित किया और ५०० सैनिक लेकर उस दिन तोड़ा तक पहूंचे। सेनाको बाहर छोड़ा आप तारावाई और सेना पति नगर में गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताजिए महलके सामने लाए जारहे थे मुसलमान अपनी ती धुन२कर हाय हसन हाय हुसेन कह कर चारों और लाहल कर रहे थे ।

फगानसरदार बरामदे में खड़ा कपड़े पहिनरहाथा एकदम ला यहतीनसक्सकोनहैं कहा हजूर वह, । हां वहही शब्द कला था कि एक तीर उसके जाकर लगा अभी सम्भलनें पाया था कि पृथ्वीराज के भालेने तारावाई के तीरका स छिद्र कर दिया । सरदार तत्काल भूमी पर गिरगया के गिरते ही हाहा कार मच गया । जो हाय हुसे हाय न कहरहे थे उनके मुहं से हाय मरे मरगये मारलिया रे कलनें लगा । किसी का चित्त सावधान न था नहीं तो रों की भीड़ में तीन चार का मारना कोई बड़ी बात थी । पृथ्वीराज की तलवार बहुत दिनों से निष्काम र- ती थी आज उन्हे भरपूर चलानें का अवसर मिला था । दूसरे की अद्भुत वीरता रण कौशलता को देखकर एक रे पर प्राण न्यौछावर करनें को तैयार थे । तारावाई की सी प्रशंसा सुनी थी वह सत्य ही वैसी निकली यह वीराज को विश्वास न था कि यह सत्य ऐसेगुणोंसे वि- षित होगी ।

अन्त में जब मुसलमानों की बुद्धि कुछठिकानें आई और न ही पुरुष दिखाई दिये चारों तरफ से शस्त्र लेकर टूट- गे परन्तु तारा और पृथ्वीराज एक २ हाथ में मूलीगाजर तरह काटनेंलगे। कोई भी पास तक नहीं पहूचनें पाता । जब महल के दरवाजे पर पहूँचे वहां देखा एक मस्त थी मार्ग रोके खड़ाहै इस समय इनको मुसल्मानों ने बुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह दबा रक्खा था और घमसान युद्ध होरहा था।
रांजनें चिल्लाकर हाथी की सूंड काटदो कहा यह सु
ताराबाई की तरवार हाथी की सूंडके पार हुई
चिल्ला ता हुआ भागा और उस भीड़ में सैकड़ों उस
से दबगए। पृथ्वीराज तारा और सेना पति फौरन
आए और आतेही एकदम दोनोंको चढ़ाई की आज्ञा
हर हर जय महादेव जय एक लिङ्गकी ध्वनिसे पृथ्वी
कम्पायमान करते हुए नगर में प्रवेश किया। नगर के
द्वारबन्द कर दियेगए और कतल आम की आज्ञा हुं
मात्र में ही एक को भी जीवित न छोड़ा। तारा
तुरन्त पिताको बुलाने की आज्ञा दी। स्वागत के
स्वयं गई। शूरनाथ की प्रजानें अपने पूर्व रांजाको
अत्यन्त आनन्द मनाया। राव शूरनाथ पहिले से
सावधानी से राज्य करनें लगे। राव शूरनाथ को
स्वतंत्रता और राज्यके दुवारा मिलने से जो आनन्द
उसको वह ही जानसकता है जिसने पहिले कभी स्व
का आनन्द लिया हो ?

धन्य तारा तैनें अपने चरित्र से भारत सन्तानों
मुख उज्वल किया तूनें सत्यही अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण
यह दिखा दिया कि वास्तव में स्त्रियां पुरुषों से
बात में कम नहीं है। तूसत्यही भारत की तारा नहीं
चन्द्र थी आज भी तेरा यश भारत वासियों के हृदय
काश कर रहा है।

धनि २ भारतकी क्षत्राणी धनि २ भारतकी क्षत्राणी
वीर कन्याका वीर प्रस्वनी वीरवधू जगजानी ॥
सती शिरोमणी धर्म धुरन्धर बुधिबल धीरजखानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके यशकी तिहूलोकों में अमल ध्वजा फहरानी ॥

भारतेन्दु ।

हे माता व भगिनियों ! ताराबाई के विमल चरित्र से आपको यह पूर्णज्ञात होगया होगा कि कुछ दिन पहिले भी स्त्रियां पुरुषों से किसी बात में कम न थीं । कैसे पराक्रम और वीरता से रणक्षेत्र में विजय प्राप्त करतीं थीं। परन्तु खेद है कि आज उसी वीर प्रसवनी जाति की देवियों में नाम मात्र के लिये स्वालम्बका लेश नहीं बहुत दिनों से परतन्त्र रहने के कारण व अपने को दासी ही समझनेलगीं । यदि उनसे पढ़ने के लिये कहाजाता है तब वह कहती हैं कि हम शूद्रा हैं हमें पढ़ने आदिका अधिकार नहीं । उठो कमर कसो अब सोने का समय नहीं है अपना वास्तविक रूप पहिचानों ।

(श्रीयुत चम्पालाल जौहरी (सुधाकर) लिखित)

दुःखोद्गारः ।

(हिन्दू संसार का एक हृदय विदारक चित्र)

(१)—एक महाजन था धनदास ।
द्रव्य बहुत था उसके पास
जिसके थे सब नाती पोती ।
ऐसी थी उसकी एक पोती ॥

(२)—पांच नारियां परन चुका था
तो भी इसका जी न रुका था ॥
फिरभी करली एक सगाई ।
दसहज़ार कीमत ठहराई ॥

(३)—घर विवाह करने का वाना ।
बनड़ा बनगये बूढ़े नाना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर रहे न जो रोने हारी ।
कुलकी बात जायतो सारी ॥
(४)—हाथ पांव से यह खंखल था ।
तनमें इसके जरा न बल था ॥
आंखें बैठी थीं कोटर में ।
आंज लिया पर अंजन उनमें ॥
(५)—हाड़ मांस का काम नहीं था ।
कहीं दांत का नाम नहीं था ॥
फिर भी पीठी खूब लगाई ।
बीड़ी कर से मसल चबाई ॥
(६)—सिरके बार नहीं थे कारे ।
थे सफ़ेद सब पलक भँवारे ॥
कर खिजाब बौरे की नाई ।
तरुणाई फिरभी दिखाई ॥
(७)—बजने लगा भड़ाभड़ बाजा ।
चढ़े व्याह करने वर राजा ॥
चार जनोंने इन्हें उठाया ।
गली २ में खूब घुमाया ॥
(८)—देख देख कर पुरके नरनारी ।
खूब हँसे दे दे कर तारी ॥
वर राजा तो रन पर आये ।
बेटीने टोडरमल गाये ॥
(९)—जब देखा बरको कन्याने ।
लगी रक्त के आंसू बहाने ॥
बोली " मैं न विवाह करूंगी ।
योंही अपना जीवन दूंगी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०)—मातपिता भाई मतिमान।
किसको देना कन्यादान॥
इसका करिये नेक विचार।
मतकरियेंयों अत्याचार॥
(११)--पर सुनता था कौन वहां पर।
महा कसाई मिले जहां पर॥
जबरी से उसको परनादी!
फांसी पर हा, हा, लटकादी !!!
(१२)—ऐसा दृश्य देख दुखदाई।
कविजनकी आंखें भर आई॥
आगे लिखा नहीं जाता है।
सारा हृदय फटा जाता है॥

जरमनीमें शिशु-शिक्षा।

("सरस्वती से उद्धृत।)

जङ्गल और फूलबाग के वृक्ष और लता अदि प्रायः [समा]न जातिके होते हैं, पर फूलबाग वाले जैसे सुहावने ल[गते] हैं वैसे जङ्गलके नहीं। बागके वृक्षोंको माली, यथास्थान, [अ]पनी रुचिके अनुसार लगता और बढ़ता है; पर जङ्गलके [वृ]क्ष उगते और बढ़ते हैं। इसीसे वे प्यारे नहीं लगते। ठीक [य]ही हाल शिशुओंका भी है। जो माता-पिता अपने शि[श]ुओंको उचित समयपर देश और धर्म्मके अनुसार शिक्षा देते [हैं] वे उन्हें सर्वप्रिय और योग्य बनाकर अपना कर्तव्य पा[ल]न करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल कूद और खिलौनोंके द्वारा शिशुओंके कोमल ह-य पर शिक्षाओंके फल अङ्कित करनेकी रीति जर्मन दे-ही निकली है। अतएव उस देशकी शिशुशिक्षा पर लिखना, सम्भव है' हमारे देशके लिये लाभदयक हो। शिशुकी शिक्षाका मूलहै। इसलिये यह लेख स्त्रियों के शेषकर उपयोगी होना चाहिये। अतएव केवल स्त्रि-के लिये प्रकाशित होनेवाले पत्रोंमें यदि यह लेख किया जाय तो अच्छा हो।

विद्याका बल संसारके सब बलोंसे अधिक है। देशकी प्रजा विद्वान है वहां सभी सुख प्राप्त होते हैं। स्तानकी तरह जरमनीमें भी पहले अनेक छोटी छोटी यासतें थीं। सब अपनी अपनी डफली अपना अपना अलापती थीं। पर जबसे जरमनवालोंने मिलकर फ्रांसके हराया तबसे उन्हें एकेका बल अच्छी तरह मालूम गया। तभीसे ही जर्मनी एकेके सूत्रमें बंधी और तभीसे बल चालीस वर्षके बीच, उसकी अत्यन्त बढ़ती हुई जरमनीने अपने एक भी बच्चेको निरक्षर नहीं रखा। बच्चा-पांच वर्षका हुआ तहां माता पिता उसे स्कूल देते हैं। अब इन बच्चोंके स्कूलोंका कुछ वृन्तात सुनि-

आंठसे साढ़े आठ बजे तक सबेरे और दोसे ढाई तक तीसरे पहर यदि आप जरमन देशके किसी छोटे छोटे गांव या नगरमें निकलें तो आपको एक अजब दिखाई पड़ेगा। ऐसी कोई गली या सड़क न होगी परसे आप दस, पांच, बीस, पच्चीस शिशुओंको कन्धे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीनका बक्स लटकाये हुए गुजरते न देखेंगे। ये शिशु चारसे सात बरसकी उम्रके हैं। ये कहां जा रहे हैं? किनडर शूल Kinder schula बच्चोंके स्कूलमें। आबादीके हिसाबसे हर महल्लेमें एक दो तीन, चार किनडर-शूल हैं। ये बच्चे, वहीं जारहे हैं। अहा, चार वर्षका बच्चा सबेरे जागते ही मामा, काफी—मामा, काफी, पुकारताहै। सभ्य देशोंमें मां बच्चेको अपने साथ नहीं सुलाती। वह अलग अपने छोटे से पलंगपर सोताहै। मां बच्चेको जगादेख उसकी चारपाईपर चित्रोंकी पुस्तक रखदेती है और वह उसे देखने लगता है। इतनेमें मां उसे काफी तैयार करके देती है। बच्चा काफी पीकर—"शूल-शूल"—पुकारता है। मां उसे कपड़े पहनाती है और रोटीके एक छोटे टुकड़े पर कुछ मक्खन चुपड़कर उसके टीनके बक्समें रख देती है। बच्चा बड़ी ही खुसीसे इस टीनके बक्सको अपने कन्धेपर लटकाकर खटा-खट करता हुआ स्कूलको चल देता है।

बतलाइये तो सही यह किनडर-शूल कौनसा जादूघर है जहां बच्चा अपने आप खुशीसे चला जाता है? यह कौनसा खिलौना है जहां चारसे सात वर्षतकके छोटे छोटे बच्चे दिनमें आठ नौ घण्टे विना अपने माता-पिता की याद किये बने रहते हैं? एक दिन मैं यह सब जाननेके लिये एक किनडर-शूलमें गया। एक बड़ा कमरा, करीब ५० फीट लम्बेका, नजर पड़ा आधेमें छोटी छोटी बचे और डेक्स लगे हैं और आधा खाली है। एक ओर लिखनेका बोर्डहै, और दूसरी ओर एक आलमारी रक्खी है। एक घुड़िया भी पास ही रखी थी, जिसमें बहुतसी खूंटियां लगी थीं इस

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरके भीतर कोई ३५ वर्ष उम्रकी एक स्त्री और कुछ ब मोजूद थे। स्त्रीं क्या थी, देवी थी। मुझे आया देख मेरी और आगे बढ़ी और गुटेन-मार्गन Guten-Morg सबेरेका सलाम किया। फिर मुसकराकर वह पूछने लगी क्या आप बच्चोंका स्कूल देखने आये हैं। हां' उतर पा वह बड़ी खुसीसे मुझे भीतर लिवालेगयी। बच्चोंके आने सिल सिला अभी जारी है। जो आता है वह देवीका थेलीपर कूदकर थप्पी मारता है और गुटेन-मार्गन Gu ten=Morgen कहकर हाथ मिलता है। जरमनीमें ब कूदकर माता-पिता आदिकी हथेलीपर थप्पी मारकर लाम करते हैं। अहा! शिशुओंकी यह पवित्र माता उ कन्धोंसे टीनके बक्स उतारकर खूंटीपर टांगती है बच्चे अपने स्थानपर जा बैठत हैं। मुझे करीब १५ मि हुए होंगे कि इतनेंसे महल्ले के सब बच्चोसे कमरा भरग । एक अजूबा बात मैंने वहां यह देखी कि एक साढ़े ती वर्षका बच्चा अपनी बहिनके साथ रोताहुआ आया। दे चट उसकी और बढ़ी और जैसे ही रूमाल निकालकर उसका मुंह पोंछने लगी वैसे ही न जाने वच्चे की रुल कहां को बिदा हो गयी। उसने कूदकर अध्यापिका जी हाथ पर थप्पी मारी और अपनी जगह पर जा बैठा।

शिक्षा शुरू हुई। देवी पूंछती हैं—आज कौनसा दि है? अहा, बच्चोंके उत्तरोंको सुनकर जो आनन्द मुझे आ उसका वर्णन नहीं होसक्ता। कोई चुपहै, कोई ताग कह कोई टाग, कोई हैट कोई मनटाग (सोमवार) अन्त देवी ने ठीक दिन बताया। तब फिर सबने एकस्वर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न का नाम लिया । उसके बाद अधयापिकाने समय पूछा
चों ने खड़े होकर उसे अपनी उगलियों से घड़ीमें समय
ाया बहुतों ने ठीक समय बताया इसकेअनन्तर बच्चोंने
क स्वर से देवीके साथ ईश्वर-प्रार्थ ना-सम्बन्धी गाना शुरू
या । उस समय बच्चों की मीठी और तोतली वाणी में
वर की प्रार्थना सुनकर मेरे चित्त में अनेक भाव उत्पन्न
ने लगे । मेरा कलेजा भर आया । बच्चों ने कभी किसी
वले मनुष्य को न देखा था । इस लिये सब की निगाह
चेहरे और साफ़ पर थी । यह देख देवीने बच्चों से पूछा-क्या
 लोग इस सज्जन के साथ जावोगे ? सब ने एकही साथ
र दिया 'नाय'। "अच्छा इन्हें सलाम करो ।' बिना
सी के सिखाये इन बच्चों के मुह से एकदम निकला—
Gutn-Morgen. Schwartzy man" अर्थात
मारनिग, काले आदमी ।" मुझे इनका काला कहने पर
ा भी बुरा नहीं लगा । हमारे देश में भी तो, बच्चे क्या
ान तक यूरोपवालों का गोरा कहते हैं ।

मैं एक ओर खड़ा हूँ और देवी बीच में उसका सङ्केत
ते ही बच्चे खड़े हो गये और फिर बैठ गये । दो चार बार
ा उठी के सङ्केत किये गये । बीच २ में देवी उन बच्चों
सङ्केत पर खड़ा होना और बैठना बताती थी जो
लकुल ही नादान थे । सिर्फ दो या तीन बच्चे ऐसे थे ।
ठहरने के बाद अब दूसरे सङ्केत किये गये । पहले एक
थ ऊपर को उठा, फिर दूसरा हाथ; फिर दोनों हाथ नीचे
ये । अब एक एक करके दोनों हाथ आगे को बढ़े, फिर
रछेहुए । कठ पुतलियोंका सा तमाशा होने लगा । तमाशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहीं पर खतम नहीं हुआ। मुट्ठी बंधी पहिले दाहिनी फिर बायी। सिलसिले वार देवी की उंगलियों की ताल के साथ डेक्स पर पड़ने लगीं। यह हो ही रहा था कि पैर से घप मारने का इशारा मिला जर्मनी में फ़र्श तख्ता के होते हैं। बच्चों के पैरों की थप्पियों और मुट्ठियों की आवाज ने एक अजब समा बांध दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि, कोई मधुर बाजा बजा रहा है देवी ने उंगलियों के इशारे पर बच्चों के हाथ और पैर तख्तों पर पड़ते थे। करीब बीस मिनट तक यही होता रहा।

अनन्तर, पांच मिनटका विश्राम देकर उस मनोहारिणी देवीने अपनी पाकटसे कागजका एक लम्बा टुकड़ा निकाला उसे वह अपने होठों पर लगाकर एक अजीब आवाज निका-लने लगी। तब सब बच्चे खड़े होगये। वेभी अपनी आवाज और हाथों से उसका साथ देने लगे। डैशलेण्ड की आवाज सुनकर मैं समझ गया कि, यह इनका जातीय गान है। इस गीतके गाने में बच्चों के चेहरे पर एक अद्भुत रङ्ग छागया था। धन्य है वह देश जहां बच्चों के कोमल हृदयपर देश भक्ति मातृ सेवा, बन्धुस्नेह, एवं राज भक्तिका अङ्कुर जमाने के लिये उनसे प्रति दिन जातीय गीत गवाये जाते हैं।

एक दिन हमने अपने एक मित्र की नौ वर्ष की लड़की से पिआनो बाजे पर जातीय गान गाने को कहा। वह चट बाजे के स्टूल पर बैठ गयी और जैसे ही उसने "डैशलेण्ड" निकाला कि, उसका एक छोटा भाई और बहिन भी आ गयी और वे दोनों भी बाजे के साथ गाने लगे। न जाने जातीय गानमें क्या जादू भरा हुआहै, मेरे मित्र और उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धी जो मुझ से मिलने आये थे, दोनों ने भी अपनीं २
रतियां छोड़ दीं और बड़ी ही प्रेम से वे भी गाने लगे ।

मातृ भूमि पितर देश इंगलेण्ड प्यारे ।
भानु जहं प्रकाश होय, मिलता सब कही तोय,
क्षण हूँ तुमसे कदापि हो कोई न न्यारे ॥ १ ॥
बन्धुभाव जहं समान, सबका तू महा प्रान,
चलें सदा हम सब इक तेरे ही सहारे ।
होती जहं मानहानि, उठते इक साथ पाणि,
देते बलिदान तुच्छ जान प्राण सारे ॥ २ ॥
डैश नारि डैश सोम *डैश गाना डैश कौम
इनके ही रङ्गको सदैव रहे धारे ।
डैश शक्ति डैश राज, में पगा सभी समाज,
युग युग ऐश्वर्य्य पूर्ण होओ तुम हमारे ॥ ३ ॥

जरमन लोगोंके जातीय गीतका यह सारांश है । इस
वर्षकी लड़कीने जातीय गान समाप्त करते ही एक दूसरा
छेड़ दिया । वह क्या था । ? मैं दूसरे दिन विदा होनेको
। अतएव उसने मातृभूमि से बिदा होनेका गाना गाया
स गानका अर्थ ऐसा हृदयको विह्वल करता है कि, मैं
लिख नहीं सकता। यह गान दूसरे स्कूलका था' जहां
वर्ष तककी लड़कियां पढ़ती हैं ।

हां उन शिशु शिक्षालयकी बात तो भूलही गया ।
चोंके उस पूर्वोक्त गानसे स्कूल गूंज उठा । गाना खतम
ही देवीने सङ्केत किया । सब बच्चे अपनी अपनी बेंचें

* अंगूर और सेव जरमनीवालों की शराब है । यह
ली नहीं होती । बलोत्पादक है, इस लिये वह सोम
जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़कर खाली जगहमें आगये । उन्होंने अपने अपने म्
मुताबिक अपनी अपनी जोड़ी चुनली । जिस तरह सि
हियोंके पैर जमीनपर पड़ते हैं, बच्चे अपने जूतोंकी ऐ
को फर्शपर मारते हुए मार्च करने लगे । अजब आवाज नि
कलती थी । याद रहे उनमें लड़कियां भी थीं । पांच म
चक्कर कमरेमें लगवाकर उस पवित्र मूर्तिने उस ओरका
वाजा खोल दिया जिधर चौगान था । बच्चे उधरसे नि
लकर चौगानमें आकर अपनी २ इच्छाके अनुसार खेलने
मैं चलनेको था, पर देवीने मुझेठहरनेको कहा उसने
अलमारी खोलकर मुझे दिखायी और सीटी बजायी सु
ही सबके सब बच्चे कमरमें आगये । टीनके बक्स प्रायः
ही रङ्ग और नापके थे । पर बच्चे अपने अपने बक्स प
चानते थे । देवी खूंटीसे बक्स उतारने लगी और बच्चे
पने अपने बक्स लेकर बेंचपर बैठ अपनी अपनी प्या
मांकी रखी हुई रोटी खाने लगे । यह तमाशा देख मैंने
देवीसे बिदा मांगी और अपने डेरेपर वापिसआया ।

क्या ही अच्छा हो यदि हमारे देशमें भी इस तर
स्कूल खोले जायं । बच्चोंके बक्सोंमें रोटीयोंकी जगह
हुऐ चने ही सही !

गुरुदयालसिंह

रूपवती

तृतीय परिच्छेद ।

राजकविके जाने के बाद महाराणा राजसिंहजी वी
वर चूड़ावत से बोले—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरचूंडावत राजकविने जो कुछ कहा है वह सब यथार्थ ठीक है और धर्मशास्त्रानुकूल है। इस में सन्देह नहीं कि इस समय उस अबला राठौरनी की रक्षा न करके अपने पूर्वजों की महान् कष्टों और हजारों आत्मसमर्पण से कमाई हुई प्रतिष्ठाको कलंकित करने का महान् पाप और अबला की आत्म हत्या के अपराधी हम होंगे। जिससे दोनों लोकों में सुख न मिलेगा इसलिये अब हमको अपनी प्रतिष्टा और उसकी धर्मरक्षा के लिये शीघ्र जाना चाहिये। किन्तु इसमें एक महान् विघ्न दिखाई देता है इसलिये पहिले उसका उपाय विचारना चाहिये।

चूंडावत–वह कौन महान् विघ्न है जिसके लिये आप को इतनी चिन्ता हुई।

महाराणा-जब हम अपनी सेना को लेकर राठौरनीजी को विवाहने जायंगे तब यदि बादशाह स्वयं अपनी सेना लेकर आन पहुंचा और घोर युद्ध हुआ और अधिक सेना होने के कारण हम सब वहां पर ही समाप्त हुए तब हमारा मनोरथ पूर्ण नहोगा और सम्भव है कि अन्तिम राठौरनीजी को आत्महत्या करनी पड़े इसका क्या प्रबन्ध किया जाय।

चूंडावत--महाराज मेरा विचार इस के बिलकुल विरुद्ध है।

राणाजी–वह कौनविरुद्ध विचार है।

चूंडावत--आप थोड़े से मनुष्य लेकर राठौरनी व्याहने रूपनगर जावेंऔर मैं समस्त सीसौदियादल को लेकर बादशाहका मार्ग रोकने के लिये आगे जाता हूं, और आगरा व रूपनगरके बीचका मार्ग रोककर बैठता हूं। मै प्रतिज्ञा करता हूं जब तक आप विवाह करके उदयपुर लौटकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न आजावेंगे मैं बादशाह को रूपनगरका द्वार न देखने

राणा यदि वीरवर ऐसा हो सकेतो २ ब चिन्लाही है, मेरे प्रिय शूरशिरोमणी चूंडावत तुम्हारी दूरद शूरता और बुद्धिमत्ता को धन्य है तुमने बहुत ही उपाय बताया उसकी सफलता श्री एकलिङ्ग महारा दया पर निर्भर है दरवार में बैठे हुए सब सामन्त सरदारोंने चूंड़ावत के विचारकी सराहना की। और दारोंने अपनी २ सेना लेकर बादशाह का मार्ग रोक पूर्ण निश्चय करलिया। राणाजीने रूपनगर के दूतको का उत्तर देकर विदा किया। चूंडावत और सब अपने २ घरगए ओर लड़ाईका सामान एकत्रित प्रारम्भ करदिया।

चतुर्थ परिच्छेद।

प्रातःकालका समयहै शीतल २ पवन प्राणीम अद्भुत आनन्द दे रहा है। पक्षी वृक्षोंपर बैठे और हुए अपने मधुर स्वरसे मानों निद्रादेवीकी गोद में पथिकोंको जगारहे हैं बहुत से पथिकोंने अपना लिया। अभी सूर्य भगवान की बाल किरणें वृक्षों अटारियों परही हैं। सूर्योदय के साथही वीर सेनावद्ध मानो प्रतापी सूर्यको ही सेनापति चूड़ावत के मकान के सामने इकट्ठे होरहे हैं। बाल किरणें वीर योद्धाओं के मुखपर गिरतीहुई तेजको द्विगुणा कररही हैं।

महलमें प्रतापी चूंड़ावत माताको प्रणामकर विजयदायिनी आशीर्वाद लेकर चले कि आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान के ऊपर झरोखे में झांकती हुई अपनी धर्मपत्नी पर
ई चूड़ावत की आयु अठारह वर्षकी थी और हाल ही में
विवाह हुआ था अभी हाथका कंघन भी नहीं खुला था ।
नकी सुन्दरी रानी भी पन्द्रह सोलह वर्ष की युवती थी
दलों में छिपे चन्द्रमा के समान अपनी पत्नी के मुखको
खकर चूड़ावत की आकृति कुछ फीकी पड़गई । वे उतरे
ए मनसे ज्यूंही ऊपर महल में रानी के पास गए चतुर
त्नी ने तुरन्त पहिचानलिया कि उनके मखपर अब क्षत्रितेज
हीं मालूम होता । वह बोली महाराज यह क्या हुआ
या कोई अशुभ समाचार सुन पड़ा जो आपकी मुखाकृति
ीकी पड़गई । बड़े उत्साह से आप डंका बजवाकर चौकमें
ाये थे और उस समय आपकी आकृति पर तेज विराज-
ान था वह तेज अब न जानें कहांगया सो वताईये ।
या कोई शत्रु चढ़ आया है जो लड़ाई का डंका बजाया
या है यदि ऐसाही है तब आपका मुखारबिन्द क्यों उतर
या क्योंकि युद्धकी वार्ता मात्र सुनकर क्षत्रियों का स्वाभा-
विक तेज द्विगुणा होजाता है किन्तु उस अनूपम तेज का आप
मुखारविन्द पर लेश भी दिखाई नहीं देता क्षत्रिय मात्र
लड़ाई को सुन शूरता का आवेश होता है ।
ापको भी शूरता का आवेश अवश्य होना चाहिये था
न्तु उसके विरुद्ध आप शिथिल क्यों पड़गए । कोई कारण
वश्य है आपको मेरी सपथहै जो सत्य२ नही वताओ ।

यह सुनकर चूड़ावत कुछदेर चुप चाप खड़े रहे और
छ न बोले ।

पतिकी यह दशा देखकर रानीने फिर बड़े आग्रह से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि नाथ क्या आप दासी से रुष्ट हैं जो आप
तक नहीं यदि कोई अपराध होगया हो तब क्षमा

इस प्रकार रानीके आग्रह पूर्वक कहने पर चूड़ा
उत्तर दिया नहीं प्रिये! मैं तुम से कैसे रुष्ट होसक
इसका तो तुम कभी स्वप्नमें भी ख्याल न करना।

रानी—फिर नाथ! आप क्यों सुस्त हैं और दा
वार २ आग्रह करने पर बताते भी नहीं।

चूड़ावत—प्रियतमे! रूपनगर की राठौरवं
राजकुमारी को दिल्ली का बादशाह औरंगज़ेब
आता है और वह राजकुमारी मनसे हमारे राणाजी
वर-चुकी है इसलिये प्रातःकालही राणाजी उसे व्या
लिये सिधारेंगे, और बादशाहका मार्ग रोकने के लि
स्त मेवाड़ी सेना मेरे साथ जाती है वहां घोर संग्राम
और मुझे फिर वहां से लौटने की आशा नहीं है
बादशाही सेनाके सामने हमारी सेना बहुतही थोड़
मुझे मरने का तो कुछ शोक नहीं है क्योंकि मनुष्य
मरना है और यदि मरने से डरूं तो मेरी माताकी
को कलंक लगे। मेरे पूर्वज चूड़ाजी के नामको धब्बा
मरने से तो मैं डरता नहीं क्योंकि अमरतो कोई रह
नहीं और न रहेहीगा। आगे पीछे सबको ही मरना

किन्तु मुझे तुम्हारी अत्यन्त चिन्ता है क्योंकि
अभी व्याही आई हो और दामपत्य सुख कुछ देखा
और मैं आज मरने के लिये जाता हू. मुझे तुम्हारी
व्याकुल कर रही है। चौक में आकर मैंने ज्योंही तु
मुख देखा मेरा कठोर हृदय पिघलगया।

यह सुनकर रानी बोली—प्राणनाथ! आप कैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं ? यदि आप रणक्षेत्र में विजय प्राप्त करेंगे तो से बढ़कर मेरे लिये संसार में कौन सुख मृत्यु समय आने चलते २ खड़े २ बातें करते हुए आजाती है जिसकी मृत्यु महलों में भी नहीं बच सकता और जिसकी मृत्यु नहीं रणक्षेत्र में क्या अग्नि कुंड में से भी जीवित निकल ता है घरमें आकर जब काल ग्रसता है तब किस की मर्थ्य बचाने कि है क्या आपइसको भूलगए ।

रक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितम् ।
सुरचितं दैवहतो विनश्यति ।
ीवत्य नाथो ऽपिवने वसर्जित ।
कृतः प्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ॥१॥

अर्थ—अरक्षित दैवकी रक्षा किया हुआ रहता है और अच्छी प्रकार किया हुआ भी दैवका मारा मरजाताहै नमें छोड़ा हुआ अनाथ भी जीताहै औरप्रयत्नों से रक्षित भी गृह में नहीं जीता ।

इसलिये युद्ध में जाते समय किसी में मोह रखना उचित नहीं इसलिये अक्षय यशकी इच्छा करते हुए आनन्द पूर्वक युद्ध के लिये प्रस्थान कीजिये । और अपने स्वामी राणाजी का कार्य निश्चन्तता पूर्वक पूर्णकर के अक्षय पण्य को संचय कीजिये । आयुष्य होगा और ईश्वरेच्छा से रण- में विजय होगी तो फिर संसार में सुख प्राप्त होगा और कदाचित यदि आप युद्ध में काम आए तो पीछे स्त्री कर्त- व्य का पूर्णतः पालन करूंगी । रणक्षेत्र में मृत्यु मिलने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अनन्तकाल पर्यन्तस्वर्ग में दाम्पत्य सुखभोगेंगे। सो हे प्राणाधिपति सहर्ष रणक्षेत्र में पधारिये और जय पाकर आईये अथवा वीरता पूर्वक शत्रुओं का विनाश करते युद्ध में काम आईये फिर हम दोनों की भेंट स्वर्ग में आप निश्चिन्त पूर्वक कुलके योग यश प्राप्तकीजिये। क्षत्राणी को किस प्रकार अपना धर्म पालना चाहिये। अच्छी प्रकार ज्ञात है। मै आपके पीछे अपने धर्मपालन किसी प्रकार का विलम्ब और त्रुटि नहीं करूंगी।

इस प्रकार (वार्ता करते हुए रानी हाड़ी से चूंडा विदा होनेही को थे कि रानी ने कहा "महाराज विजय पाकर शीघ्र लौटना। आप अपने कुलका धर्मपूर्णतः जानते हो इसलिये विजय कामना से युद्ध में प्रवृत्त हूजिये। क्षणभंगुर सांसारिक किसी वस्तु में ध्यान रखते हुए रणमें शत्रुओं का संहार कीजिये।

विधवोद्वाह निषेध खण्डन

उक्त पुस्तक के टाईटिल पर ही पण्डित ब्रह्मदेव लिखते हैं अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होगई है कि विधवा विवाहकी बराबर देशका अधोगति में डालने लायक दूसरा कोई कर्तव्य नहीं।

मालूम नही यह बात कब और किन विद्वानों द्वारा तथा किन युक्तियोंसे निर्विवाद सिद्ध हुई है कि देशको अधोगतिमें डालने ❀ लायक दूसरा कोई कर्तव्यनहीं, आह

❀ ईश्वरजाने लायक शब्दसे यहां पण्डितजी का योग्य बराबर क्या अभिप्राय है औरकैसे यह शब्द यहां संगत होता है किन्तु हम बराबर अर्थ समझ कर लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या ही हास्यास्पद विषय है द्विजातिकी बालविधवा कन्या पना विवाह न करके मुसलमान और ईसाईयोंके साथ धर्म ष्ट करें वा भ्रूण हत्या करें तब देशकी अधोगति नहीं होती और शास्त्रानुकूल विवाह करनेसे इसकी बराबर अधोगति ा दूसरा कर्तव्य नहीं ! वाह क्या ही बुद्धिमत्ता है किजिन स्त्रियों के गर्भ से वेदोंके वक्ता सनातनधर्म के सेवक और रक्षक उत्पन्न होते उनहीके गर्भ से वेदोंके श्रवण मात्रके नधिकारी सनातनधर्म के शत्रु और गोभक्षक उत्पन्न होनें देशकी अधोगति नहीं होती है ऐसी ही बुद्धिमत्ता के प्रभाव से प्रति दिन हिन्दूजाति की संख्या घट रही है स वर्षकी मनुष्य गणना (मर्दुम शुमारी) में भी लगभग लाख हिन्दू घटे क्या इसका कारण हिन्दूओं में विधवा वाह का न होगा नहीं क्योंकि हिन्दूओं में वर्षके अन्दर आयुवाली १०३४१५३ विधवा हैं यदि दसवर्ष अन्दर प्रत्येक के एक २ सन्तान पैदाहोती तब १०३४१५३ न्यूनता सहज ही पूर्ण होजाती।

पुस्तका रंभ मेंही पण्डितजी लिखते हैं कि प्रथम विधवा विवाह का प्रचार बंगालमें पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने किया और विधवा विवाह विषयक पुस्तक लिखी सका खंडन तत्कालीन पण्डितोंने किया था। क्या इन डन पुस्तकोंका खण्डन फिर नहीं कियागया। पण्डितविष्णु म शास्त्रीने बड़ी योग्यता और विद्वत्ता से विधवाद्वाह विवेक नामक पुस्तक संस्कृत भाषामें खंडन कियो। सका खंडन आजतक ४७ वर्षके अन्दर किसी पण्डित से हुआ।

आगे चलकर पण्डितजी ने वैकुंठवासी श्रीमान् श्रोय शंकरलाल जी रईस प्रधान बाल विधवा विवाह प्रचा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिणी सभा तथा माननीय गोस्वामी राधाचरणजी आन
मजिस्ट्रेट वृन्दावन व रायबहादुर नानकचन्द सी० आ
ई० को कपोलकल्पित सनातनधर्मी लिखते हैं।

हमारी समझमें नहीं आता कि पण्डितजीने उक्त म
नुभावों का कौन कार्य आर्य्यसमाजीपन का देखा।
मनमाना लिखदिया कि कुछ लोग कहते हैं कि उपा
महाशय सनातनधर्मी हैं। पर यह उनकी कपोलक
ना हैं। बिना प्रमाण यह लिखना सर्वथा सभ्यता के
रुद्ध है क्योंकि जब वे श्रुति स्मृति पुराण आदि सना
धर्ममान्य धर्मग्रन्थों से अपने पक्षको सिद्ध करतेहैं तब
प्रकार इनका सनातनधर्मी होना कपोलकल्पना मात्र

क्या श्रुति स्मृति इतिहास पुराणों से भी सनातन
के ग्रन्थ पृथक् हैं जिनको न मानकर अपने पक्षको सिद्ध
रते हैं। क्या सत्य बात जो आर्यसमाजी भी मानते हों
सका मानना या उसका प्रचार करना भी आर्य्यसमा
होना है तब तो निसंदेह उक्त सज्जन और उनके अनुया
आर्य समाजी हैं।

आगे पण्डितजी श्रोत्रिय शंकर लाल जीके प्रमाणों
खंडन लिखते हुए लिखते हैं उदीर्ष्व नार्यभि आदि
का अर्थ दयानन्द और उनके सदृश विधवा विवाहके
पाती इस प्रकार करते हैं--हे नारी ? तू इस मरे
पतिके पास लेटरही है।

उठ और जीते हुए मनुष्यों की भीड़ के सन्मुख आ
विधवा का हाथ पकडने वाले और पुनर्बिवाह की
करने वाले पतिकी पत्नी हो।

इस श्रुति के अर्थके विषयमें अधिक न लिखकर स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्मसमान्य सायणभाष्यका अक्षर २ उद्धृत करते हैं जिससे
ाठकों को पण्डितजी का पक्षपातमय अर्थ स्वयं विदित हो
ायगा ।

यजुर्वेद तैत्तरीय आरण्यक प्रपाठक ६ अनुवाक १ मंत्र १४ ।

उदीर्ष्व नार्यभि जीव-लोकं ।
इतासु मेतं उपशेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोः त्वं येतत् ।
पत्यु र्जनित्वं अभिसंबभूव ॥

सायणभाष्यम्–हे 'नारि' त्वं 'इतासु' 'गतप्राण' 'एतं' 'पतिं' "उपशेषे" उपेत्य शयनं करोषि "उदीर्ष्व" अस्मात् पतिस मीपादुत्तिष्ठ जीवलोकमाभि जीवंतं प्राणिसमूहं अभिलक्ष्य एहि आगच्छ । त्वं हस्तग्राभस्य पाणिग्राहवतः 'दिधिषोः' पुनर्विवाहेच्छोः पत्युः (एतत्) (जनित्वं) जाया त्वं (अभिसंबभूव) आभिमुख्येन सम्यक् प्राप्नुहि ।

भाषार्थ–हे? नारी ? तू इस मृतक पतिके समीप सोती है सो उठ और इस जीवलोकके आगे आव ? पुनर्विवाहकी इच्छाकरने वाले पाणिग्राही पतिके इस पत्नीत्व को प्राप्त हो

पण्डित ब्रह्मदेवजी उक्त मंत्रका अर्थ इस प्रकार कहते हैं--हे नारी ! अपने सन्तानों का ख़याल करके तुम यहां से उठो जो कि तुम इस मृतक पतिके समीप लेटी हो वहां तुम आओ जिससे विवाहके समय जिनने मंत्र पढ़के तुम्हारा हाथ पकड़ा था उन गर्भाधान करने वाले पतिके सम्बन्धसे आये तुम्हारे इस पत्नीपन को देखकर पतिके मरजाने का निश्चय तुमने किया है उससे उठो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी का पक्षपात उनके कपोलकल्पित अ
पाठकों को स्वयं मालूम होगया होगा क्योंकि पण्डि
के और सनातनधर्म मान्य पूज्यपाद श्रीसायनाचा
जी (जिनका भाष्य समस्त सनातन धर्मानुयायी मा
और जिनके अनुसार यज्ञ में बलिदान दिया जाता है)
अर्थ में पृथिवी और आकाश का भेद है ।

वाह पण्डितजी खूब अच्छा अर्थ किया जो सायना
जीके अर्थको भी मिट्टी कर दिया । कृपा करके यह लि
आपने किस भाष्य के अनुकूल यह अर्थ किया है या
वेदों के आचार्य बनकर सीधे साधे सनातनी भाईयों
धोके में डालते हुए मनमाने अर्थ करके स्वर्गवासी श्री
शंकरलाल जी से विजय पाने का प्रयत्न किया है ।

स्मरण रहे उक्त श्रोत्रिय जी के बार २ काशी में
कारने परभी महामहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शा
आदि किसी काशीस्थ विद्वान्‌की शास्त्रार्थके लिये हि
न हुई ।

इस लिये पण्डित जी का उत्साह सराहनीयहै कि
यदि पण्डितजी कुछ योग्यता से पक्षपात रहित होकर
करते तब अच्छा था (क्रमशः)

ऐसी स्वदेशी से बाज आये !

कुछ दिन हुए दैनिकभारतमित्र में एक बिचार
स्वदेशी आन्दोलन विषयक लेख प्रकाशित हुआ है ।
में सन्देह नहीं स्वदेशी आन्दोलन की सब से अधिक हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी व्यवसाईयों के असीम लोभ से हुई है । जिस समय स्वदेशी आन्दोलन की हवा देश भर में बह रही थी उसी समय यदि स्वदेशी मिलों ने सस्ते दामों में वस्त्रों का प्रचार किया होता तब आज उनकी ऐसी दुर्दशा न होती पर उस समय उन्हों ने फी सदी पचास और साठ रुपया मुनाफा लिया और स्वदेशी की मूल में कुठाराघात किया आज वे उसी का फल भोग रहीहैं जिस लोभने वस्त्रोंकी मिलों से यह अन्याय कराया वही लोभ अब अन्य व्यवसाइयों से धर्म का नाश करा रहा है पाठकों को यह सुन कर अत्यन्त दुःख होगा कि देशी साबनों में भी कितने ही गौ की चर्बी से बनते हैं । इसका उत्तर सहयोगी भारत मित्र के मुख से लीजिये ।

बंगालियों का स्वदेशी बहिस्कार आन्दोलन की राजनीति मूल थी वह आन्दोलन धर्म मूलक बिलकुल न था यदि वह धर्म मूलक होता तब पवित्रता का अवश्य प्राधान्य होता ।

हम जानते हैं विदेशी चीनी (खांड) साफ करने में पशुओं के कोयले (Animal charcoal) की आवश्यकता होती है केवल मोरिस चीनि में इसका उपयोग नहीं किया जात है किन्तु जब उसमें भी उबाल आता है तब चर्बी का छींटा दिया जाता है इस लिये हिन्दुओंकी दृष्टि में किसी प्रकारकी विदेशी चीनी शुद्ध और पवित्रनहींहै । विदेश से जितनी चीनियां आती हैं उन सब में किसी न किसी प्रकार की चर्बी रहती हैं । साधारणतः सभी चर्बियों से काम लिया जाता है यह साबुन हिन्दुओं के विरु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत: मुसलमानों के किसी काम का नही होता
हिन्दू मांसाहारी न होने का दम भरते हैं पर इस
का खूब व्यवहार करते हैं। कितनें ही तो साबुनसे
दांत रगड़ते देखेगए हैं। हिन्दू समाज के प्रचीन
विक नेता ब्राह्मण देवता भी इससे बचे नहीं हैं।

देशी साबुन में लोगोंको चर्बीका सन्देह नहीं हो
लोग समझते हैं हमारे देशबन्धु चर्बी से साबुन नहीं
होंगे। जो पुराने ढंगसे साबुन बनाते हैं वे इसमें तेलसे काम
हैं। किन्तु जो पाश्चात्य सभ्यता की माया से च
होगये हैं वे इसमें लाभ नहीं देखते। उनका कहना है
के साबुन में खर्च अधिक होता है और लोग इसे पस
कम करते हैं इससे चर्बीसे साबुन बनाना ही हम अच्छा
समझते हैं।

कई दिन हुए हरिद्वार से एक सज्जन यहां आए थे
दूसरी वस्तुओंके साथ साबुन भी खरीदना था। हमा
मित्र उन्हे एक साबुनके कारखानें में लेगए। वहां उ
कई बक्सों का आर्डर दिया। इतनें में साबुन बना
प्रक्रिया पर बात होनें लगी। कारखानें के मैनेजरनें
हम लोग भी चर्बी से साबुन बनाते हैं। तब हमारे
पूछा आप किस पशुकी चर्बी काममें लाते हैं मैने
उत्तर दिया गाय की! बस फिर क्या था तुरन्तही
रद्द किया गया। दोनोंने प्रतिज्ञाकी अब कभी साबुन
वहार न करेंगें। राहभर दोनों सज्जन कारखाने की
देशी प्रीति को निन्दा करते चले आए। इतना कहने
धारण यह है कि सबने भी वस्तु मात्र कहनें से प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीं आजाती । बंगाल के नेताओंपर यह अत्याचार होता वे टससे मस नहीं होते धर्म भाव हो तब ही तो हों।

इसपर अधिक लिखनें की जरूरत नहीं है। स्वदेशीरहे चूल्हे में जाय हिन्दू गौकी चर्बी शरीरपर लगाकर अपने और पूर्वजोंके मुखपर कलंक नहीं लगाएंगे। हम यह बात दृढ़ता से कहेंगे कि साबुनादि कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिके विना काम रुकजाय किन्तु उसके क्षार से शरीरको चको हानि पहूँचती है तथा थोड़ी देरके बाद रुक्ष होजाता । हमारे यहां बहुत ऐसे सुगन्ध युक्त उपटन हैं जिनसे शरीर कोमल और स्वच्छ होता है। रीठा आंवला वेसन आदि पदार्थ शरीर और वस्त्र दोनों को स्वच्छ करते हैं। किन्तु इसे पसन्न में कुछ झंझट अवश्य है क्या ऐसे झंझटसे बचनेंके लिये कोई भी हिन्दू गौ की चर्बी शरीर से मलेगा। यदि हो तब वह हिन्दू ही नहीं उसे शीघ्र ईसाई होजाना चाहिये। ऐसी धर्म नष्ट करनें वाली हम स्वदेशी भी नहीं चाहते। हिन्दूओंके शरीर में जो स्वदेशी गौकी चर्बी लगती है ऐसी स्वदेशी से हम बाज आए।

हिन्दूओंकी शारीरिक अवनति

(गतांक से आगे)

सरदी के दिनोंमें एक व्यायाम करनें वाले और एक दूसरे पुरुष की अवस्था देखो तब स्पष्ट ज्ञात होगा कि व्यायाम कितना आवश्यक है। व्यायामशील जहां हर्षसे काम काज करता है वहां दूसरा सरदीसे सिकुड़ता है। विलक्षणता तो यह है व्यायाम करने से केवल सरदी ही सहन करनेकी शक्ति नहीं बल्कि गर्मी भी शहन करनेंकी वैसीही शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न होजाती है। रोगोंका सामना भी केवल व्या
पुरुष ही करता है। प्रथम तो रोग उसके पास आते हि
हैं यदि आभीगए तब अपना सा मुँ लेकर लौट जा
ड़ता है। मेरे एक मित्र एक बार राजयक्ष्मा में ग्रस्त
। डाक्टरादि चिकित्सक जवाब देबैठे ऐसे समय
उनको व्यायामही आश्रय सूझता था। उन्होंने विधि
व्यायाम किया और ईश्वर की कृपासे निरोग होगा

व्यायाम में बड़ी खूबी की बात यह है; कि इसके
को कभी थकन नहीं होती' जो सांसारिक भलाई के
अत्यन्त अवश्यक है। जोहो' यदि आप चाहते हैं
पको शीतोष्णता न सता सके और आप पर संसर्गि
आक्रमण न करसकें आपको काम करने में कभी थकन
तथा आप सदैव स्वस्थता पूर्वक रहें तब

व्यायाम किया करो

दीर्घायुस्ता का यह सबसे आवश्यक और सबसे
उपाय है।

तृतीय श्लोकार्थ अधिक स्थूलता को दूरकरने के
व्यायाम से बढ़कर कोई औषधि नहीं है, व्यायामी
उसके शत्रु भय करते हैं और उसे दु:ख नहीं दे सकते

कहते हैं एक राजा व्यायाम नहीं करता था और
दिन स्थूल आलसी और निकम्मा होता जाता था
बहुतेरा बल लगाया किन्तु कुछ लाभ न हुआ तब एक
वैद्यजीनें आकर कहा मैं ऐसा मंत्रपढ़ दूंगा आप १५
में आपसे आप राजी होजांयगे। राजानें स्वीकार
वैद्यराजनें अति सुन्दर वेष्टन में लोहा बांधकर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह सजाकर राजाको दिया और कहा इसको लेकर अमुक बाग के चारों तरफ चक्कर लगाया करो उसने मंत्र के विचारसे वैसाही किया। वह हैरान हुआ कि १५ दिनके भीतर ही उसकी दशा पलटगई। तब वैद्यने सब भेद खोलदिया और उस राजा को समझा दिया कि व्यायाम ही है जो तुमको फुरतीला सुडौल स्वस्थ और बलवान् बनाता है। इसलिये इसे कभी न छोड़ना जैसा कि एक उर्दू कविने कहा है।

"है यह बेकन का कोल पुर हिकमत'
है रियाज़त पर मुनस्सिर सेहत।
जो कि कसरत की करते हैं कसरत,
और नहीं छोड़ते हैं यह आदत।
रहते हैं तन्दुरस्त और महजूज।
हर मरज व रंजसे महफूज।
जिनको वरजिश पसन्द होती है,
उनकी हिम्मत बुलन्द होती है।
मुस्तकिल और दिलेर रहते हैं,
और कभी मिसले शेर रहते हैं।

चतुर्थ श्लोकार्थ—बुढ़ापा यकायक कसरती पर कभी नहीं आसकता। व्यायाम करने वाले का शरीर और मांसादि सब दृढ़ रहते हैं। जो लोग बुढ़ापे के दुःख से बचना चाहते हों उनके वास्ते व्यायाम से बढ़कर कोई औषधि नहीं जिन लोगोंने व्यायाम को मित्र बनाया है, वह बुढ़ापे में भी स्वस्थ और लाल दिखाई देते हैं, उनके वास्ते बुढ़ापे का एक क्षण काटना कठिन होजाता है जो व्यायाम नहीं करते। यदि स्वास्थ स्थिर रखना चाहते हो और यदि बुढ़ापे के कष्टसे बचना चाहतेहों तब व्यायाम करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायाम अमृत से कम नहीं है, व्यायाम से न
बूढ़े होकर तरह २ के दुःखों में पड़ते हैं।

पञ्चम श्लोकार्थ—जो मनुष्य सौन्दर्य्य, जवानी, बीरता से हीन हो उसको व्यायाम सुन्दर बलवान् बीर बनाता है।

षष्टम श्लोकार्थ—व्यायामी को भारी कच्चा जला चाहे कैसाही भोजन हो पचजाता है कुछ हानि नहीं क

व्यायामी को आप मन्दाग्नि की शिकायत करते न सुनेंगे। जैसा कि मैं पहिले सिद्ध करचुका हूँ। आम का स्वस्थ रहना स्वास्थ और दीर्घ जीवन का भेद है लिये व्यायाम नित्य करते रहना चाहिये। जिन म को सदैव कोष्टबद्धता का दुःख रहता है जिनको अ अथवा अतिसार हो, उन सबको स्मरण रखना चाहिये उनके लिये सब औषधियों से बढ़कर औषधि व्यायाम भारी और अमीराना भोजन करनें वालोंको अवश्य ही याम करना चाहिये। दफतरों के क्लर्कों हर समय लें हने वाले धनियों दुकानों पर बैठे रहनें वाले दूकानद को सदैव व्यायाम का ध्यान रखना चाहिये। जो स्त्रि घरका काम नहीं कर सकतीं उनको स्मरण रखना चा कि वह सदैव रोग ग्रस्त रहेंगी। और प्रसूत समय दुख वेंगी सम्भव है मर भी जावें; इस वास्ते थोड़ा बहुत व्याय करते रहना चाहिये

स्त्रियों के लिये चक्की पीसना चरखा कातना बेलना अच्छे व्यायाम है। इनके अतिरिक्त और जो कर सकें वह भी करें। जब स्त्रियां व्यायाम करना आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देंगी तो घरोंसे हाय२ का शब्द दूर होजायगा। पुरुषों को यह अपना कर्तव्य समझना चाहिये कि वह अपनी स्त्रियोंको व्यायाम सिखलावें और करावें, अपने घरोंको सुखी करें; अन्यथा स्मरण रहे कि उनकी रोगिणी स्त्री उनको दुःखी करेंगी

स्त्रियोंको भली भांति समझादेना चाहिये; कि वह बिना व्यायाम के कभी स्वस्थ नहीं रह सकतीं। देखो अंग्रेजोंकी स्त्रियों की दशा वह व्यायाम करती हैं कैसी सुन्दर रहतीहैं। ग्रामीण छोटी २ जातियों की स्त्रियां जिनको व्यायाम का अवसर मिलता है घृत दुग्धादि खानेको न मिलने पर भी कई गुणा स्वास्थ्य होता है। आओ हम सब मिलकर उद्योग करें कि स्त्रियां भी व्यायाम से वंचित न रहें; जिससे हमारे घर सच्चे सुख और शान्ति के धाम बनें इन ६ श्लोकों में मेरे विचार में यथेष्ट रूप से व्यायाम के ही लाभ वर्णन किये हैं। इसवास्ते अब आवश्यक नहीं कि अब और ग्रन्थों के प्रमाण भी दिये जावें। चतुरों को संकेत ही पर्य्याप्त है। अब व्यायाम सम्बन्धी किंचित् आवश्यक बातों का वर्णन किया जाता है।

मैनें केवल शारीरिक निर्बलता के कारण और निदान वर्णनकरना है; इसवास्ते यहां यहवर्णन् करनें की आवश्यकता नहीं कि व्यायाम की विधि क्या है किस २ समय व्यायाम करना चाहिये क्या खाना चाहिये और क्या २ पथ्य आवश्यक है। मै केवल भारतवासियोंको डंकेकी चोट बताना चाहता हूँ कि उनकी शारीरिक अवनति का कारण बहुत कुछ व्यायाम को त्यागना है। किसी धनीके पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जावें वह व्यायाम को अपमानजनक समझता है। मुझे
दीवानचन्द जी एम० ए० एल्० बी० उनका वचन या
जबकि अमृतसर में उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं
प्रातःकाल सड़कों पर मीलों इसवास्ते दौड़ता फिरता
लोग मुझे देखकर इसको आरंभ करें। और धनाढ्य
चित्तमें हरकिसीके सन्मुख व्यायाम करनेकी लज्जादूर
देखता हूँ बड़े २ शहरों में वकीलादि क्लबें बनाते हैं प
वहां होता क्या है ? कोई घोड़े से खेलमें चाले होते हैं
कोई ताशले बैठता है कोई बर्फकी कुलफियां और कोई
की बोतलें उड़ाता है। और जो कोई व्यायाम करते
हैं वह भी ऐसा कोई व्यायाम नहीं करते जिसको
व्यायाम कहा जावे; लाहोरके क्लबमें में प्रविष्ट हुआ
मैनें निवेदन किया आप मोंवाली मुगदर; डम्बलादि
प्रस्तुत करें। तब उत्तर मिला असभ्य खेलों को क्यों
जबकि सभ्य खेल वर्तमान हैं। जब देखा कि यह लोग
समझेंगें तब पृथक होगए हिन्दू सभाओंका कर्तव्य
चाहिये कि प्रत्येक नगर में व्यायाम घर बनावें। जहां
नाढय और माननीय इकट्ठे होकर व्यायाम कर सकें।
जो दूसरे लोगहैं उनके वास्ते अखाड़े बनाने और व्या
कराने का उद्योग करें। और प्रत्येक मनुष्य को चाहिये
व्यायाम को ऐसा आवश्यक समझें जैसाकि रोटीको
झताहै। अमेरीका के एक बड़े समाचार पत्र के सम्पाद
अमेरीका और इंगलैण्डके बड़े २ और स्वस्थ्य मनुष्यों
लिखा है कि वह अपने स्वास्थ्य को संक्षिप्त रूपसे लि
वह सब पत्र प्रकाशित हुए हैं उन सबका सारांश यह
कि सभोंनें स्वास्थ्यके वास्ते व्यायाम को मुख्य माना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं व्यायाम की व्याख्या तो नहीं करता परन्तु तत्सम्बन्धी एक बातका वर्णन अत्यावश्यक है । व्यायाम के साथ पुष्टि कारक आहार ज़रूरी है । यदि व्यायामके साथ पौष्टिक आहार न खाया जाय तब वही व्यायाम निर्बल करदेता है व्यायाम करते जाओ आहार खाते जाओ; वह व्यायाम तुम्हारे शरीर को बलवान् बना देगा । (क्रमशः)

ब्रह्मचर्य

(गतांक से आगे)

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः ।

प्रजापति विराजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी ॥ ३ ॥

व्याख्यार्थ-(आचार्यो ब्रह्मचारी) ब्रह्मचारी होने पर ही आचार्य होसकता है अर्थात् विद्वान् पुरुष यदि भीतरी विचारमें तत्पर मनस्वी नाम अपने आपेमें रहनेवाला होनेसे ब्रह्मचारी विचार शील हो तभी उसको शिष्यलोग गुरु बनाते हैं और उसकी शिक्षामें चलना चाहते हैं क्योंकि विद्वान् और सदाचारी को ही सब आचार्य (गुरु) बनाते हैं तथा विद्वान् और सदाचारी ही गुरु होसकता है । किन्तु कामाशक्त लम्पट पढ़े हुओंसे न कोई दबता है और न बड़ाही मानता है और न वे आचार्य्य होसकते हैं । जोपहिले ब्रह्मचारी होते हैं वेही आचार्य्य होतेहैं । जो पहिले किसी सद्गुरू के शिष्य होते हैं वेही आगे अन्योंके लिये सत्गुरु बनते हैं । इस प्रकार आचार्य्यपन और ब्रह्मचारीपन दोनों के साधक होतेहैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ब्रह्मचारी प्रजापतिः) और अपने विचार में मनकोवश में रखके लम्पट होके जो ब्रह्मचारी हो वही रक्षाके योग्य निर्मलप्राणियों का स्त्री पुत्र शिष्या रक्षक वो स्वामी अधिपति होता है किन्तु प्राणी शरीर अपना मन जिसके वशमें नहीं वह किसीको अपने कार में रखनेवाला रक्षक वा स्वामी नहीं होसकता। (प्रजापतिर्विराजति) और अन्योंके ऊपर अपना अ वा गौरव रखने वाला प्रजापति पुरुष ही जगत में प्रका प्रतिष्ठित और नामी वा प्रतापी होता है। तथा(वि इन्द्रोऽभवद्वशी) प्रतापी होने से ही वह विराट् कहा इसी से सबको वश में रखनेवाला होने से इन्द्र कहा इसी से कामों द्वारा इष्ट सिद्ध करनेवाले सब प्राणी रूप विराट्नाम इन्द्रके वशमें रहते और तमोरूप अ में स्वप्नवा सुषुप्ति के समान प्रलय होता है तब सब सिद्ध भी भूलजाती है। इसी से वहां वशमें रहना ही सकता है।

जैसे भौतिक प्रकाश के आधीन सब कामों की होती वैसे उसी भौतिक प्रकाश का प्रधान भाग प्रकाश है यह दोनों प्रकार का प्रकाश जिस २ वस्तु में विद्यमान है वैसी ही अधिकता से अन्य उसके वश हैं। और अन्यों की कार्य्य साधन रक्षा करने रूप पति पन से प्रकाश की सिद्धि होती तथा ब्रह्मचर्य्य के से प्रजापति होना सम्भव होता और आचार्य्य रूप वा गुरु आदि होने का हेतु ब्रह्मचर्य्य का साधन ही अभिप्राय यह हुआ कि मनसे ही कामासक्तिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ती है इसी कारण कामदेव मनसिज कहाता है इस ...रण मनको बिना वश में किये कोई भी ब्रह्मचारी नहीं ...सकता । इसी से जगत् में जब जो और जैसा मनको ...भूत करके ब्रह्मचर्य्य साधन करता है वह उतना ही ...क में प्रकाशित, प्रतापी आचार्य्य वा पूज्य अन्यों का ...पकारी रक्षक होजाता है ।

ब्रह्मचर्य्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति

आचार्यो ब्रह्मचर्य्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ।

अर्थ-(राजा तपसा ब्रह्मचर्य्येण राष्ट्रं विरक्षति) मन ...को वश में रखने पूर्वक उपस्थेन्द्रिय को मैथुन से रोकने में ...ी कठिनता होती है ऐसे सहन से शरीर को तपानेवाले ...पोरूप ब्रह्मचर्य्य के साधने से ही राजा विशेषरूप राज्य ...क्षा करसकता है क्योंकि जो प्रजा की सुन्दर स्त्रियों को ...ताकता है और उनके साथ विषय भोगकी इच्छा करता है ...जा उसके वशमें नहीं रहसकती और न वह प्रजाकी रक्षा ...ी करसकता है (आचार्य्यो ब्रह्मचर्य्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते ...और स्त्रियों की और से मनको रोकने रूप ब्रह्मचर्य्य के ...साधन ही से आचार्य्य शिष्यको शिक्षा करने के लिये ब्रह्म...चारी बनाना चाहता है किन्तु यदि जिसका मन स्त्रियों ...के साथ कामभोग में आसक्त है और उन्हींमें जो स्मरण ...करता है वह कभी स्वप्न में भी किन्हीं को ब्रह्मचारी बना ...के रखने की इच्छा नहीं करसकता । क्योंकि उसका चित्त ...अन्यत्र फसा हुआ है ।

राजधर्म प्रकरण में मनुजीने इसका अनुवाद किया है कि-जितेन्द्रिय पुरुष ही प्रजाको वशमें रख सकता है और प्रजाको वशमें स्वाधीन अनुकूल रख सकना ही राज्य की रक्षा कहाती है, और यहही विषय महाभारत उद्योग पर्व में विदुरजीने भी स्पष्ट कहा है । ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्रोत्रिया पूर्णादेवी लिखित)

माता का पुत्री को उपदेश।

(गताङ्क मार्च से आगे)

माता—सुन पुत्री मैं तुम्हें अपनी यात्रा का वृत्तान्त सुनाती हूँ। जिससे तुम्हें अच्छी तरह मलूम हो जायगा कि विद्या पढ़ने से किस प्रकार मनुष्य आपत्ति से बचता है और कुपढ़ निष्कारण कैसे आपत्ति खड़ी करता है।

जब तुम छैः मासकी थीं तब तुम्हारी दादी और ता[ऊ] का इरादा हरिद्वार के कुम्भ में जाने का हु[आ] मैंने बहुत समझाया कि यदि आप लोग कुम्भ के बाद जा[एं]यंगी तब अच्छा होगा क्योंकि आज कल बहुत भीड़ है और आपका शरीर वृद्ध है वहां भोजन ठीक नहीं मिलेगा प्रायः भीड़ में दबकर भी मर जाते हैं अधिक भीड़के कारण जहाँ वायु (आब हवा) ठीक नहींहै। किन्तु उन्होंने मेरी एक न मानी और जाने की तैयारी कर ही दी मैंभी उनके साथ ही चली कलकत्ते से बनारस तक तो कुशल पूर्वक चले गए। मैं बनारस के स्टेशन पर किसी काम से उतर गई कुछ ज्यादा देर हो जानेके कारण गाड़ी छूट गई और मेरे पास एक पैसा भी न था इस कारण तुम्हें गोद में लिये बड़ी चिन्तामें पड़गई परन्तु मैनें धैर्यको नहीं छोड़ा इतने में स्टेशन मास्टर आया और कहने लगा तुम कैसे खड़ीहो तब मैंने समस्तवृत्त सुनाया उसने मुझे प्लेटफार्म से बाहर भेज दिया मैं स्टेशन से शहर की तरफ रवाना हुई बारह बजेकी कड़ी धूप थी और तू गोदमें थी पहिले कभी मुझे घरसे बाहर निकलने का मौका नहीं हुआ था इसलिये मुझे वह रास्ता बड़ाही कष्टदायक मालूम हुआ तब से ही मैनें दिलमें सोचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि प्रत्येक स्त्री पुरुषको रास्ता चलने और बोझा उठा
अभ्यास होना चाहिये मुझे कुछभी मालूम नहीं था कि
कहां जारही हूं और कहां जाऊंगी; दूर से एक बड़ा
कान नज़र पड़ा मैं बड़ी कठिनतासे उसके समीप पहुंची
ह मकान काशी महाराज की कन्या पाठशाला का था उस
न वहां महाराज स्वयं निरीक्षण (मुवायना) करने आए
क्योंकि उन्हे शिक्षा से बड़ा प्रेमथा और विद्वानोंसे बड़ा
न करतेथे ।

मैं निस्संकोच पाठशाला में चलीगई और पूछा ।

दोहा—कौन पढ़ावत है यहां; काकी है चटसाल ।
कौन कौन विद्या यहां; पढ़तीहैं सब वाल ॥

हांकी अध्यपिका बड़ी चतुरथीं इसलिये तुरन्त केरचेहुए
हेको सुनकर बड़ी प्रसन्न हुईं मुझे आदर पूर्वक बैठा कर
हने लगीं कि देवी ! यह पाठशाला काशी महाराज की
और यहां भाषा तथा संस्कृत पढ़ाईजाती है । महाराज
ज स्वयं पधारे हैं । यदि आपकी इच्छा होतब चलिये
र महाराज से मिलिये आपसे मिल कर महाराज बहुत
न्न होंगे क्योंकि वे विद्वानों का बड़ा आदर करते हैं
शेषतः विदुषी देवियों से बड़ेही प्रसन्न होते हैं ।

अध्यापका जीके साथ फौरन महाराज के पास गई और
ध्यापकाजी ने मेरा समस्त हाल महाराजको सुनाया और
: इन्हो ने नवीन दोहा रचकर पाठशाला का परिचय पूछा
यह सुनकर महाराज बड़ेही प्रसन्न हुए और कहा देवि !
पके दोहे से मालूम होता है कि तुम बड़ी विदुषी हो कृपा
के यह बताइये कि आपका कहां से आना हुआ और आपके
कौन है । तबमैंने अपना हाल संस्कृत में सुनाया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजन् ! मैं अपने कुटुम्बके साथ हरिद्वार जारही थी स्टे पर गाड़ी छूटगई और मैं रहगई इसलिये अपनी और कन्याकी क्षुधा (भूख) मिटानेंके लिये यहां आई हूँ।

यह सुनकर राजाबोला कि मैं तुम्हारी योग्यता दे अत्यन्त प्रसन्न हूँ देवि ! तुम धन्य हो और धन्य वह जहां विदुषी स्त्रियें जन्मलें जिससे भारत के समस्त दुःख दूर किन्तु आपका कुटुम्ब से वियोग देख कर मुझे अत्यन्त है परन्तु आपका धैर्य्य मुझे भी धैर्य्य दिलाता है। चित्त आपकी अमृत वाणी से तृप्त नहीं होता मैं चाहता कि आपसे पाठशाला में कन्याओं को शिक्षा दिलाऊं कि क्याकरूं आपकी वर्तमान दशा सुनकर रोकनेंकी इच्छा होती फिर कभी दर्शनों से कृतार्थ करना।

मुझे भोजन जिमानें के बाद २५) रु० भेंट देकर आदमीको संगकर दिया और आज्ञा दी जब तक इन कुटम्बी न मिलें इनकी सेवामे रहना। मैनें बनारस में कागज पेंसिल लेकर स्टेशन पर ही चिपका दिया कि मैं शिल्या व तारीख आज कुशल पूर्वक हरिद्वार जारही हूं कोई ढूंढ़ने आवें हरिद्वारही लौट जावे इसी प्रकार तम स्टेशनों पर चिपकाती हुई हरिद्वार पहुंची। और वहां ममा शहर में यह लिखकर चिपका दिया कि मैं कौशि अपनी पुत्री सुरूपा सहित हरिद्वार आगई हूँ और की धर्मशाला में टिकी हूँ।

अव इधरका हाल सुन जब तुम्हारी दादी और ने देखाकि गाड़ी छूटगई और मैं सवार न होसकी तब उन नें रोना व चिल्लाना शुरू किया दूसरे स्टेशनपर जब गा पहुंची तब तुम्हारे पिता उनके पास आए औरबहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या कि वह ऐसी मूर्खा स्त्री नहीं है जो रहजायगी; किन्तु न्होंनें एक न मानी निदान वह बनारस को रवाना हुए और न्हे नौकर के साथ हरिद्वार को भेज दिया।

किन्तु वहां स्टेशन पर मेरे लिखे विज्ञापन को देखकर रिद्वार आए और मुझे धर्मशाला में बैठी देख बडे. प्रसन्न हुए र मुझे वहां पर लेगए जहां पर कि सब टिकेथे। वहां कर देखा कि तुम्हारी दादी व ताई बडे. शोक में मग्न हैं दौड़ कर उनके चरणोंमें गिरगई,और सब रास्ते का हाल ाया जिसे सुनकर सब प्रसन्न हुए।

अब कहो यदि मैं पढ़ी न होती तब मुझे बडे. २ कष्ट ाने पड़ते और बड़ी कठिनतासे सम्बधियों के दर्शन होते। र संभव था इस आपत्ति में अपना धर्म खोबैठती तब तो कहते हैं कि 'को विदेशः सविद्या नाम्; अर्थात् विवानों को कौन विदेश है।

समाचार।

डकैतियां—गत चार मास के अन्दर पंजाब प्रान्त सब मिला कर ५५ डकैतियां हुई। और दो लाख की नि हुई।

दर्भंगे में शिक्षा—समस्त दर्भंगा जिले में २१६४८ लिकाएं और ६२५६६ वालक शिक्षा पा रहे हैं।

विलायत में मता भिलाषिणी स्त्रियों का उपद्रव तिदिन बढ़ता ही जाता है गत २८ जून को एक मताभिलाषिणी स्त्री ने मंत्री मि० आर० आसक्विथ पर मला किया वे रानी पेल० के० फाटक पर खड़े थे। वहीं ... ने उनका कोट पकड़ कर उनको हिलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर वह वहां से निकाल दी गई । यह शि
करती है कि लोगों ने मुझे सीढ़ी परसे नीचे
दिया । मैं मरते२बची मेरा हीरा खोया गया और
की घड़ी चकनाचूर होगई । क्या कभी हमारे दे
स्त्रियां भी इसप्रकार अपने अधिकारों के लिये प्रयत्न

मद्रास गवर्नमेन्ट गौ रक्षा करने का विचार कर
है । इस के लिये कोयम्बतूर नगर में एक बड़ी गौ
स्थापित की जायगी । इसमें सवा दो लाख रुपए
होंगे मद्रास गवर्नमेन्ट का यह कार्य प्रशंसनीय है
जबतक गौवध बन्द न होगा तव तक गौरक्षाकी आशा
दुराशा मात्र है । क्या ही अच्छा हो यदि मद्रास
मेन्ट अपने यहां अग्रेजी सेनाके लिये गौवध बन्द क

भारतीय रजवाड़ों में बड़ौदा राज्य शिक्षाके
सब से आगे है । समस्त बड़ौदा राज्य के अन्त
तीन हजार ६५ नगर और ग्राम हैं । जिनमें से
नगर और ग्रामों में स्कूल तथा पाठशालाएं हैं ।
ग्रामों में शिक्षा प्रचार करने के लिये बड़ौदा शिक्षा
भाग के अधिकारी प्रयत्न कर रहे हैं किन्तु बहु
कारणों से ७५३ ग्रामों में अभी पाठशाला नहीं
सकतीं क्योंकि इनमें अधिकांश ऐसे ग्राम हैं जहां
आबादी बहुत ही कम है । कुछ ग्रामों के आदमि
को अभी शिक्षा की ओर प्रवृत्ति दिलाना कठिन
अनिवार्य और प्रारंभिक शिक्षा के मुफ्त होने से प्र
यहां की पाठशालाओं की संख्या बहुत ही कम
बड़ौदा राज्य में २०लाख २६ हजार ३२० मनुष्य बस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें १८लाख६२हजार ४४ मनुष्य प्रारंभिक शिक्षा से लाभ उठारहेहैं। यह कार्यसमस्त रजवाडों को अनुकरणीयहै

सुप्रसिद्ध दोरत्न

सिर तथा केशों के लिये जगत विख्यात हितकर

हिमसागर तैल।

हिमसागरतैल—बालों को चमकीला और रेशमके लच्छे जैसा मुलायम करताहै। बालोंको खूब बढ़ाता और जड़ों को दृढ़ करता। इसके व्यवहार से सिर दर्द भारीपन खुश्की खाज और बालों का गिरना बन्द होता है इसे मस्तक पर लगाने से मस्तकमें ठण्डक तरावट और हलकापन होता है। मनका प्रसन्नता और दिमाग की पुष्टि करता है। आंखा में रोशनी और तरावट पैदा होती है चेहरे पर मलने से चेहरे की श्यामता झांई आदि दूर हो कर चिकनाहट गोरापन और सुर्खी आजाता है। इस लिये कितनीही स्त्रियां इसका नित्य व्यवहार करतीहै। जोएक बारभी इसका सेवन करता है वह इसके गुणों पर मोहित होजाताहै मूल्य फीशी) रु० दर्जन १०) रु० । ६ का ५।।) रु० । ३ शीशी का २।।) रु० १।

नयनामृत अंजन सुरमा

यदि नेत्रों की रक्षा करनी है तब नैयनामृत का नित्य व्यवहार करें। हमारे नयानामृत अंजन के प्रतिदिन सेवन से नजर की कमजोरी; दूर की चीज का ठीक न दीखना आदि रोगों को लाभ होता है। थोड़े दिनों का जाला' फूला; धुंध, ढलका नजला आदि नेत्रों की सुर्खी आखोंका दुखना जलन; आखों में चिपचिपाहट रतोंधा आदि रोगों को फायदा करता है। इसके नित्य व्यहार से बुढ़ापे तक ज्योति कायम रहती है। मूल्य फी शीशी १) रु० ६ शीशी ५।।) और तीन शीशी २।।) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त ! इनाम !! उपहार !!!

शरीररक्षा धन मान प्रतिष्ठा बढ़ानें वाले और सुख दिखाने वाले नीति के उपदेशों सहित नये सालका कलैं मुफ्त देंगे । जो अपने यहांके हिन्दी जानने वालोंके १०-नाम और पते साफ २ लिखभेजें ।

पता—आयुर्वेद मार्तण्ड पण्डित सूर्यप्रसाद शर्म्मा मालिक भारत हितैषी औषधालय मेरठ श

अबला हितकारक कार्य्यालयकी

प्रसिद्ध पुस्तकें

लक्ष्मी (स्त्रीशिक्षा का अपूर्व उपन्यास) =) नीतिसौन्द (नीतिका अनूठाग्रन्थ) ≡) विधवा पुनःसंस्कार (श्रोत्रि शंकर लाल द्वारा रचित) ≡) विधवा विवाह विवरण (राधाचरण कृत) ।) बावा का विवाह (वृद्धविवाहकी दु शाका अपूर्व दृश्य) -) माता पिताकाकर्त्तव्य -) फ बेवा उर्दू (विधवाओं के दुःखसजीव दृश्य) -) विध दुःखदर्पण (नामही से जानलीजिये) -)

इकट्ठी लेनें वालों को डाकव्ययसहित १) में दीजायगी

पता—श्रोत्रिया पूर्णादेवी
अबला हितकारक कार्य्यालय-बिजनौर

छपगई ! छपगई !! छपगई !!!

प्रसिद्ध गानविद्या विशारद पं० राधे श्याम कृत गानेकी अपूर्व पुस्तकें ।

राधेश्याम विलास चारों भाग ॥) द्रौपदी लीला =) ताहरण =) भिलनी की भक्ती)॥ निजानन्द प्रदीपिका सुग्रीव मिताई ≡) प्रेमरत्नावली । -)

पुस्तकें मिलनें का पता
पण्डित बांके लाल राधेश्याम कथावाचक
मुहल्ला बिहारीपुरा
बरेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रतिमास के आरम्भ में प्रकाशित होता है।

(२) डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है। विद्यार्थी और स्त्रियों से ॥=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी विना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पता पूरा और साफ साफ देवनागरी या अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर लेना चाहिये।

(६) पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकट बिना नहीं दिया जायगा।

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहिये— श्रीमिया पूर्णादेवी,

"अबलाहितकारक-कार्य्यालय", बिजनौर।

सुधानिधि

इस समय जबकि भारतवर्ष नाना रोगों का घर हो रहा है। तब एक ऐसी औषधि की अत्यन्त आवश्यकता थी जिस अकेली के पास रखने से नाना ओषधियों के बकसों की आवश्यकता न रहे। इसके लिये बहुत रुपया खर्च और परिश्रम किया गया जिसके परिणाम में एक वृद्ध वैद्यराज द्वारा यह महौषधि प्राप्त हुई जो नाना रोगों में रामबाण का असर दिखाती है। हम अपने मुंह मियां मिट्ठू न बन कर केवल सभ्य ग्राहकों से निवेदन करते हैं कि एक बार हमारे सुधानिधि को मंगा कर परीक्षा करें कि किस प्रकार एक औषधि अनेक रोगों को दूर करने में समर्थ होती है।

सुधानिधि—कफ़, खाँसी, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्रहणी आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, हाथ पैर कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर खाँसी की सुगन्धित औषधि है। इसके अलावा बिच्छू ततैये आदि के जहर को फायदा करती है। मूल्य ।) मात्र है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर—औषधि एजेन्सी कम्पनी, बिजनौर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसंचारक कम्पनी मथुरा की बनाई सरकार में
रजिस्ट्री की हुई दवाईयां जो बीस वर्ष से संसार में
आजमाई जा चुकी हैं।

सुधासिन्धु

कफ, खांसी, दमा, जाड़े का बुखार, हैजा, शूल, संग्र
आँव लोहू, अतिसार, पेट का दर्द, कै होना, जी मिचलाना,
पैर और कमर का दर्द, बच्चों के हरे पीले दस्त, कुकर
दूध पटक देना आदि की स्वादिष्ट सुन्दर दवा है। कीम
शीशी ।)

दद्रुगजकेसरी

दाद को जड़ से खोने की एक मात्र पवित्र दवा है।
जलन या चिरमिराहट नहीं होती इसीको शराब या नीबू
में मिला देने से दो शीशी अर्क तैयार हो जाता है। कीम
शीशी ।) आना १२ शीशी मगाने से एजेंट समझ कर
नोटिस आदि मुफ्त भेजते हैं, कमीशन देते हैं, वर्तमान व
पंचांग भेजते हैं।

मंगाने का पता—क्षेत्रपालशर्मा मालिक
सुखसंचारक कम्पनी, मथु

[illegible] में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबला हितकारक

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं , गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं , पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥

संस्थापक- श्रोत्रिय शङ्कर लाल शर्म्मा

सम्पादक व प्रकाशक-श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विषय-सूची

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख	नाम लेखक	पृ०
प्रार्थना	मुरलीधर ठाकुर	
ग्रहणामोक्त		
विविध विषय		
भारत में प्राचीन झलक		
पारिवारिकक दृश्य	डाक्टर बलदेव सहाय धामपुर	
अतीत भारत के अधःपतन का आरम्भ [सरस्वती से उद्धृत]		
आवश्यकता	मंत्री	
वैधव्यदुःखाभिनय	गौतमऋषि	
सभा का संक्षिप्त विवरण	मंत्री	
कार्य्यवाही जनरल मीटिंग	,,	
नए बाल विधवाविवाह	,,	

....

अबलाहितकारक के नियम।

[१] अवलाहितकारक प्रतिमास प्रकाशित होता है।

[२] डाकव्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १) है। ... और स्त्रियों से ।।=) मात्र है।

[३] नमूने की कापी बिना मूल्य भेजी जाती है।

[४] ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता साफ २ देवनागरी ... अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

[५] विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा त... लेना चाहिये।

[३] पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकिट विना नहीं दिया जा...

[७] लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि ... तथा सब प्रकार के अवलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते प... चाहिये।

श्रोत्रिया पूर्णादेवी
'अवलाहितकारक-कार्य्यालय विजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रिय शंकरलाल शर्म्मणा

संस्थापित

अबला हितकारक ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥ (मनु)

दशम वर्ष	सम्वत् १९७० चैत्र	प्रथम अङ्क

प्रार्थना

(१)

किया है क्या ऐसा प्रभुवर ! महापाप हमने ?
हमें जो देते हो दुख विविध यों निष्ठुर बने ।
घिरा दुःखों से है हृदय रहता अस्थिर बड़ा ।
सदा चिन्ता का है कटक रहता सम्मुख खड़ा ॥

(२)

रहा कर्त्तव्यों को सविधि करने का बल नहीं ।
रुजों की पीड़ा से पल भर हमें है कल नहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा हैं दो एक और तरह के रोगादि से ॥
व्यथा जो पाते हैं किस विधि बतावें हम उसे ॥

(३)

न जाता कोई भी दिवस सुख से शान्ति सहित।
पड़े ही हैं पीछे अड़चन तथा कार्य अमित ॥
न जो कर्तव्यों को स्थगित हम हो साधन करें।
प्रभो! बोलो कैसे भव जलधि के पार उतरें ॥

(४)

न कांता है कोई, सुयश प्रभुता भूमि धन की।
विलासों से पूर्णा प्रचुर सुखमा है सदन की ॥
सभी है. छाया है प्रभु! यदि तुम्हारी चरण की।
न हा! पै क्यों हैं तो सुलभ हमको शान्ति मन की ॥

(५)

दयासिन्धो! नाना रुजगण हमें नित्य दहते।
सहे ही जाते हैं उन सकल को मौन रहते ॥
रही ऐसी ही जो स्थिति प्रभु न रक्षा अब यहां।
बताओ जावेंगे शरण हित हा! हा! हम कहां? ॥

(६)

लखो तो कैसे हैं घर भर पड़े रोग मुख में।
न आती थोड़ी भी हम पर दया गाढ़ दुख में?
तुम्हारी आशा के बल, कर प्रभो सुस्थिर हिया।
किये ही जाते हैं जप हवन दानादिक क्रिया ॥

(७)

नहीं देना था जो वर, न उसको दान करते।
जिसे जो दे देते सुजन उसको हैं न हरते।
दिखाई देती है विधि तव हमें देव! उलटी।
नहीं तो आती क्या विपद जो थी सब हटी ॥

मुरलीधर मुकुटधर

(स्वदेशबान्धव से उद्धृत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण मोक्ष

प्रिय पाठकवृन्द ! आज अबलाहितकारक दस मास पश्चात् ग्रहण प्रेस के विघ्नों से मोक्ष पाकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ है। इतने अधिक समय जो यह आपकी सेवा न कर सका उसके बारम्बार क्षमा प्रार्थी है। आशा है इसकी विवशता को सुन कर समय की अनुपस्थिति को अवश्य ही क्षमा करोगे।

जोलाई १२ से इसकी एक मात्र अधिष्ठात्री व संरक्षिका परम पूज्या श्रीमती श्री १०८ माता जी (श्रोत्रिया पूर्णादेवी) अत्यन्त ग्रस्त होगई थे। परमेश्वर की दया से कई मास पश्चात् आराम है। इसके प्रिंटर पण्डित शंकरदत्त जी मालिक धर्मदिवाकर प्रेस ने धर्मदिवाकर प्रेस (जहां पर कि यह पहले छपता था) बेच था। प्रेस पकट के कारण सहसा अन्यत्र न छप सके।

कई एक विशेष कारणों से निज का प्रेस खोलना निश्चित क्योंकि बाहर के प्रेसों में छापने के कारण कभी ठीक समय पर निकाल सके। और न आगे अन्यत्र ठीक समय पर प्रकाशित होने की ही थी। तथा बाहर के प्रेस यह समझ कर कि सहसा अन्यत्र छप ही नहीं सकते इस लिये असावधानी से काम करते थे। जिससे क अशुद्धियां और त्रुटियां रहती थीं। जैसा कि हमारे पाठकों से नहीं है क्योंकि हमने गतवर्ष यथाशक्ति अनेक प्रयत्न अबलाहित-क को उत्तम बनाने के लिये किये किंतु प्रेस वालों की असावधानी हानि ही उठानी पड़ी। क्योंकि ठीक समय पर प्रकाशित न होने के ण पाठकों से मूल्य मांगने में लज्जित थे। इस कारण केवल १२७ कों से ही मूल्य वसूल हुआ जिस से इस अबला पत्र को कई सौ के हानि उठानी पड़ी।

उक्तकारणों से हतोत्साह होकर यह निश्चय किया था, कि अपनी विधवा बहिनों की सेवा और किसी प्रकार करेंगे। किंतु दो भी पत्र को बंद हुए नहीं हुए थे कि ग्राहक तथा अन्य सज्जनों के क पत्र आने लगे।

कोई लिखते हैं कि क्या अबलाहितैषी श्रोत्रिय शंकरलाल जी स्वर्गयात्रा से उनके स्थापित अबलाहितकारक का भी अस्त होगया लिखता है " कई स्त्रीशिक्षा के पत्र निकलते और हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आते हैं किंतु अवलाओं के सच्चे हितैषी अवलाहितकारक
हो जाने का अत्यंत दुःख है क्यों कि अवलाओं के हित के लिये
कता के साथ लिखने वाला कोई पत्र नहीं । यद्यपि स्त्रीधर्मशिक्षक
पुनर्विवाहिता सम्पादिका श्रीमती यशोदा देवी व आर्य्यसमाजि
कि अपने को स्त्री सुधार का दावेदार कहते हैं] सज्जन
सम्पादित होते हुए भी न जाने क्यों बाल विधवा-विवाह
में हस्ताक्षेप नहीं करते; प्रत्युत: समय २ पर इस के
ही लिखते हैं । कोई लिखता है "विधवाओं का हितैषी
ही पत्र अवलाहितकारक है वह भी बन्द सा ही हो गया
होता है । कोई लिखता है "न जाने कब अवलाहितकारक
लाओं के हित में लग अपने नाम को पुनः पूर्ववत्
करेगा " और राहू से मुक्त होगा । कृपा कर के शीघ्र
प्रकाशित करने का प्रबन्ध कीजियेगा आदि । इस प्रकार
पत्रों के आने पर हमने अपने सहृदय पाठकों की आज्ञा का
करना अपना परम कर्त्तव्य समझ फिर सज्जन ग्राह
सहायता और परमेश्वर के भरोसे पर अपने कर्त्तव्य में
होते हैं । आशा है अवलाहितकारक के पाठक और बाल
विवाह के प्रेमी इसको आश्रय देंगे ।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि हमारा दसवां
सन्नता और निर्विघ्न समाप्त हो ।

विविध विषय

व्यभिचारवृद्धि

यह देख कर अत्यन्त शोक और पश्चाताप होता है
भारतभूमि जो कि पूर्व समय में यति और देवताओं की
थी । जिस भूमि के वासी व्यभिचार को महापाप समझते
के यति लक्ष्मण और भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जैसे ब्रह्मचारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वर्षों श्रीमती सती सीता के पास रहकर भी उनके कुंडल तक नहीं पहिचान सके। देखो सीता जी के आभूषण पहिचानने के लिये जब आगे रक्खे गये तब क्या उत्तर देते हैं—कुंडलं नैव जानामि नैव जानामि कंकणम्। नुपुरावेत्र जानामि नित्यं पादा वभिवन्दनात्॥ अर्थात् कुंडल और कंकण को नहीं पहिचानता नित्य पैरछुने से केवल बिछवे मात्र जानता हूं। हाय! शोक उसी देश में आज प्रतिदिन व्यभिचार बढ़ता जाता है। जिस से भारत की शारीरिक और आर्थिक दशा का नित्य ह्रास होता जाता है। कितने खेद का विषय है कि ३ पैसे नित्य की आय होने पर भारतवासियों द्वारा २५०००० वेश्याओं का पालन हो रहा है। इस से चोरी और ज्वारी की नित्य वृद्धि होती जाती है। वेश्याओं की वृद्धि के कारण आगामी अङ्क में दिखाये जायंगे।

पानी में वह गये।

जब किसी देश या जाति के बुरे दिन आते हैं तब आलस्य,आशायस और फ़िज़ूलखर्ची की वृद्धि होने लगती है। राष्ट्र,जाति या व्यक्ति कोई भी हो उसका एक दिन सर्वनाश अवश्य ही होता है जब कि वह फ़ज़ूल खर्च और आलसी हो जाती है। मुगल बादशाह जिनकी विजय पताका लगभग ६०० वर्ष भारत में फहराती रही। आलसी और फज़ूलखर्च होने पर उन्हें भी पराधीन होना पड़ा। आश्चर्य है कि भारत में निर्धता के साथ २ आशायस और फज़ूलखर्ची बढ़ती जाती है। जिन भारतवासियों की तीन पैसा रोज आय मुश्किल से है उन्होंने पांच वर्ष में २१६५३०६६ रु० का साबुन मात्र विदेश से मंगाया! पांच वर्ष में इस प्रकार साबुन विलायत से आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९०६-०७ ई० में	३२ २८ १५६) रु०
१९०७-०८ ,,	४१ ७२ १४३)
१९०८-०९ ,,	४२ ७५ ९६२)
१९०९-१० ,,	४६ ३७ ३३१)
१९१०-११ ,,	५३ ७३ ४७०)

यह व्योरा केवल विदेश से आये साबुन का है। बना साबुन इस से पृथक् है। ऐसी दशा में जबकि करोड़ों रु० का नाश होता है। देश में दरिद्रता और वृद्धि हो तब क्या आश्चर्य है।

हारवर्ड—युनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर महाशय का है जो स्त्री अधिक बोलती है उसकी सुन्दरता कम होजा भारतवासियों का भी मसला है ' कुचकट खटिया बतका मरे नहीं तो रोगी होय।

फरमाइश में आपत्ति—जर्मनी के एक व्याहारी मह अपने देश के किसी बड़े सौदागर के पास कुछ के लिये फरमाइश भेजी; किन्तु सौदागर ने उसकी फर पूरी नहीं की। क्योंकि पत्र फ़्रैंच भाषा में था। एक जर्मनी का दूसरे जर्मन निवासी को मातृभाषा में पत्र न लिख देशीय भाषा में पत्र लिखना व्यबसायी को बहुत बुरा इस से उसने माल नहीं भेजा। जर्मन के तीन बड़े समाचार इसकी खूब प्रशंसा की है। धन्य है वह भूमि जिसमें स भक्त हों।

एक हमारा देश जहां शिक्षित; यहां तक कि बड़े धारी विद्वान् भी अपनी मातृभाषा में बोलना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा जानते भी परस्पर व्यवहार करना लज्जा और पाप समझते हैं ।

बहुत से वे सज्जन जो कि देवनागरी को राष्ट्र भाषा बनाना चाहते हैं; वे निजि कार्य भी अपनी भाषा में नहीं करते। जैसे डायरी लिखना, पत्रव्यवहार आदि । ऐसी दशा में किसी दूसरी भाषा के प्रचारित होते देवनागरी के राष्ट्र भाषा होने की आशा करना मूर्खता या दुराशा नहीं तो क्या है ।

*
* *

गौ बध !

गत सन् १९१२ मार्च से ६ अगस्त १२ तक कलकत्ते के टेंगरा कसाईखाने में १४ हजार ५९० गोबध हुईं । उनमें १३ ६९८ गौ दुध देने वाली और शेष कलारें थीं । हा ! शोक नित्य इस प्रकार गौवध बढ़ता ही जाता है किन्तु हमारे भाइयों की आखें नहीं खुलती । यह ही कारण है कि नित्य घी दूध का शुद्ध मिलना दुर्लभ होता जाता है ।

*
* *

भारत में प्राचीन झलक

—:○:*:○:—

२१ मार्च १३ को हमने महाविद्यालय ज्वालापुर में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । यह विद्यालय ज्वालापुर जिला सहारनपुर बाबू सीताराम जी के बगीचे में है । इस महाविद्यालय गुरुकुल को देख कर अत्यंत प्रसन्नता प्राप्त हुई । जिन ऋषिआश्रमों का बर्णन आज तक काव्यों में ही पढ़ा था। उनको यहां प्रत्यक्ष देखा । आहा! वह कैसा उत्तम समय होगा जिस समय कि प्रत्येक स्थान पर ऐसे आश्रम थे। जिन में राजा और भिक्षुक दोनों की सन्तान समान दृष्टि से देखी जाती होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने इस बात को जहां तक भी हो सका ३-४ दिवस रह कर
तरह देखा कि यहां पर विना फीस गरीव और अमीर दोनों की
से समान व्यवहार किया जाता है। इस विद्यालय के प्रायः सभी
तनिक अध्यापक हैं। यह और संस्थाओं से विशेष बात है। ब्रह्म
की शारीरिक दशा अत्यन्त प्रसंशनीय है। कुछ ब्रह्मचारियों से
पर कुछ समय संस्कृत में भाषण किया। अपनी आयु के लि
बहुत उत्तम संस्कृत भाषण करते थे। मुख्याधिष्टाता वेदतीर्थ
देव जी शास्त्री की कुटी तथा अन्य आचार्यों के आश्रम देख क
निश्चय विदित होता था कि इस विद्यालय में गरीव भारत का
वृथा इमारत आदि आडम्बर में वरवाद नहीं किया जाता; प्रत्युत
शिक्षा में व्यय किया जाता। उक्त विद्यालय से साम्प्रदायिक भे
भी हमें सहानुभूति है परमेश्वर इसकी दिनों दिन उन्नति करे।
जाने वाले शिक्षा प्रेमी प्रत्येक यात्री से वि प अनुरोध है कि सम्प्र
खयाल को छोड़ उक्त संस्था का अवश्य अवलोकन करें।

... ...

२३ मार्च को हमें ऋषिकुल देखने का शुभ अवसर मिल
यह देख कर अत्यन्त हर्ष होता है; कि हमारे सनातन धर्मी
देशोपकारी कामों में भाग लेने लगे। उक्त ऋषिकुल में लड़के ब्रह्म
श्रम का पालन करते हुए धार्मिक शिक्षा पा ... । अवकाशाभाव
समय उक्त कुल को न देख सका। किन्तु दो ... चारियों से सं
वार्ता ईश्वर सिद्धि पर हुई जिस से अत्यन्त प्रसन्नता हुई। प्रत्येक
तन धर्मावलम्बी भाइयों को इसकी सहायता करनी चाहिये।

परिवारिक दृश्य

अपनी रक्षा आप करो

(लेखक डाक्टर वलदेव सहाय वैद्य धामपुर)

दुर्गा--वहिन सौभाग्यवती जी प्रणाम !

सौभाग्यवती--वहिन ! आज कहां से आरही हो
तुम्हारा मुख मलीन क्यों हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गा--क्या कहूं आज भाई किदारनाथ का बालक उतर गया (मरगया) वहाँ गई थी ।

सौ०-उन के और कितनी सन्तान हैं । इस बालक की आयु क्या थी ।

दुर्गा-उन के और कोई सन्तान नहीं है । अब तक जितने बच्चे हुए सब इसी प्रकार मौत के मुख में चले गये ।

सौ०-किस रोग से पीड़ित होकर उनकी यह दशा हुई ।

दुर्गा-क्या बताऊं बहिन ! कोई आसेब बताता है, कोई मसाने का रोग, कोई परियों का साया और कोई भूत प्रेत का फिसाद बताता है । कोई ऊपर वालियों की झपट कहता है । जितने मुंह उतनी बात सुनने में आती हैं ।

सौ०-किसी रोग का चिन्ह तो कहो कि मरने से पहिले उनकी क्या दशा होती हैं ?

दुर्गा - क्या बताऊं किसी को डिब्बे की पीड़ा होने लगती है । कोई रोने लगता है । किसी को रंग २ के दस्त आने लग जाते हैं । किसी के हाथ पैर कांपने लगते हैं । इत्यादि रोगों से ही पीड़ित होकर बिचारों के प्राण निकल जाते हैं । न कोई औषधि ही कुछ करती है, और न यंत्र मंत्र से कुछ बनता है मानो भगवान का कोप हैं । कुछ समझ में ही नहीं आता कि क्या रोग है ?

सौ०-बहिन दुर्गा ! न तो वह डिब्बा उब्बा है; और न भूत प्रेत कोई चीज़ है यह तो अपनी नासमझी का फल है

दुर्गा-तनिक खोल के कहो कि ना समझी से तुम्हारा क्या मतलब है ।

सौ०-यह सब कुछ बालविवाह का परिणाम है ।

दुर्गा - बाल्यावस्था के विवाह से इन बातों का क्या सम्बंध ?

सौ० - बाल्यावस्था में विवाह होने से पति के संसर्ग से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं । इस रोग वाली स्त्रियों को हमारे ऋषियों ने "मृतवत्सा वन्ध्या" कहा है । ऐसी स्त्रियों के गर्भकोप के भंग हो जाने के कारण धातु और रज (मासिक धर्म) क्षय होकर दुर्बलता अधिक हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाती है। इसी से गर्भाशय की धारणशक्ति कम हो जाती है। तरह प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

दुर्गा-क्या इसके सिवाय और भी रोग हो जाते हैं।

सौ-हां, हो जाते हैं।

दुर्गा-कृपा करके सब का पूरा हाल सुनाइये बड़ी दया होगी।

सौ० सुनिये(१)मृतवत्सा वंध्या जिसका कि आप को अभी हाल सुना चुकी हूं (२) गर्भस्रावी वंध्या (३) गर्भपात की वंध्या (४) [पागलपन (५) प्रदर [जिरयान) इस के सिवाय और भी अनेक रोग हो जाते हैं जिनका कि पूरा २ हाल फिर सुनाऊंगी।

दुर्गा-ओहो ! बाल विवाह से बड़ी २ हानियां हो रही हैं। कृपा करके जिन रोगों का आपने नाम सुनाया उनकी पूरी पहिचान और इलाज बताइये।

सौ०-ध्यान देकर सुनिये। जिस स्त्री के बालक डब्बा (पसुली चलना) या हाथ पैरों में ऐंठन होकर अथवा सूख कर मर जायें वह मृतवत्सा वंध्या कहाती है। [२] गर्भस्रावी वंध्या उसको कहते हैं जिसका गर्भ तीन मास के अन्दर गिर जाता है। [३] जिन स्त्रियों का गर्भ तीन मास के पश्चात् गिरता है, वह गर्भपात की वंध्या कहाती है। [४] और जिन स्त्रियों को मासिक धर्म कम हो जाता है; या विलम्ब होता है; अथवा ठीक समय पर नहीं होता और बड़ा कष्ट होता है यहां तक कि ऐसे दुःखमय जीवन से मरना अच्छा समझा जाता है। इसी कारण से उनको गुल्म रोग हो जाता है। जिस को प्रायः भूत प्रेतादि समझते हैं। इस रोग से स्त्रियां चीख मार कर बेहोश होजाती हैं। और हाथ पैर ठंडे हो जाते हैं तथा नवज़ सुस्त हो जाती है। इस रोग के लक्षण लगभग अपस्मार [मिरगी] जैसे होते हैं। इस में और मिरगी में बहुत थोड़ा भेद है जो फिर बताऊंगी।

प्रदर रोग में गर्भाशय अथवा योनि से गुलाबी; पीला; या सफेद रंग का पानी जाने लगता है। और शरीर का रंग सफ़ेद या पीला हो जाता है। मुख मलीन रहता है; दिल धड़कने लगता है।

दुर्गा इन भयंकर रोगों से बचने का यदि कोई उपाय हो तो बताइये। मैं आपकी जन्म भर दासी बन कर रहूंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ० अब संध्या समय हो गया है। मैं सब का विस्तारपूर्वक वर्णन सुनाऊंगी।

दुर्गा अच्छा जब आपकी इच्छा हो। अब जाती हूं आज्ञा दीजिये। म कर दुर्गा अपने घर को चली गई।

क्रमशः

*
* *

अतीत भारत के अधःपतन का आरम्भ

-:*:-

सब भांति जब जग में हमारी पूर्ण उन्नति हो चुकी।
पाया जहां तक पथ वहां तक प्रगति की गति हो चुकी॥
तब और क्या होता हमारे चक्र नीचे को फिरे।
जैसे उठे थे अन्त में हम ठीक वैसे ही गिरे॥ १॥
उत्थान के पीछे पतन सम्भव सदा ही सर्वदा।
प्रौढ़त्व के पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा॥
हा! किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति सी बड़ी।
जैसी बड़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या पड़ी॥ २॥
प्रकटित हुआ अभिमान पहिले चित्त में निज शक्ति का।
जिस से रुका वह स्रोत सत्वर शील, श्रद्धा, भक्ति का॥
अविनीतता बढ़ने लगी; अनुदारता आने लगी;
पर;बुद्धि जागी, भीति भागी, कुमति बल पाने लगी॥ ३
क्या देर लगती है बिगड़ते जब बिगड़ने पर हुए।
फिर क्या परस्पर बन्धु ही तैयार लड़ने को हुए॥
आखिर महाभारत समर का साज सज ही तो गया।
डंका हमारे नाश का बेरोक बज ही तो गया॥ ४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है शोचनीय, परन्तु ऐसा कलह भी होगा नहीं,
तू ही बता हे काल ! ऐसा हाल देखा है कहीं।
हा बन्धुओं के ही करों से बन्धु कितने कट मरे;
यह भव्य भारत अन्त में बन ही गया मरघट हरे!
इस सर्वनाशी यूद्ध का यह दृश्य कैसा घोर था,
उस ओर था यदि पुत्र तो लड़ता पिता इस ओर था
सन्तान ही के रक्त में यह मातृभूमि सनी यहां,
उस स्वर्ग की सी वाटिका की हाय ! राख बनी यहां
इस भांति जब बल हीन होकर देश ऊजड़ हो चुका
फिर वह हुआ कि जिससे सर्वस्व अपना खो चुका
घुस कर शकारि अनार्य्यगण निर्भय यहां लड़ने लगे
निःशक्त देख शृगाल घायल सिंह पर चढ़ने लगे॥
हिंसा बढ़ी ऐसी कि मानब दानवों से बढ़ गए।
भू से न भार सहा गया अविचार ऊपर चढ़ गए॥
सहसा हमारा यह पतन देखा न प्रभु से भी गया।
तब शाक्य मुनि के रूप में प्रकटी दयामय की दया।
भारत गगन में उस समय फिर एक वह झण्डा उड़ा
जिस के तले आनन्द से आधा जगत् आकर जुड़ा।
वह बौद्ध कालिक सभ्यता विश्व भर में छा रही।
अब भी जिसे अवलोकने भूमि खोदी जा रही॥ ९
वर्णन विदेशी यात्रियों ने उस समय का जो दिया।
पढ़कर तथा सुनकर उसे किसने नहीं विस्मय किया॥
बनते न विद्या प्राप्त कर ही वे यहां बुधवर्य्य थे ।
श्री भी यहां की देख करते महा आश्चर्य्य थे॥ १०
तब भी कला कौशल यहां का था जगत के हित नया
है फाहियान विलोक जिसको मुग्ध होकर कह गया!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह काम देवों का किया है मनुज कर सकते नहीं।
दृग देख कर जिसको कभी श्रम मान कर थकते नहीं॥११
था सार्वभौम अशोक का कैसा प्रताप बढ़ा चढ़ा।
विस्तार जिसके राज्य का था अन्य देशों तक बढ़ा॥
थे गुप्तवंशी नृप, न धर्म्म द्वेष जिनको इष्ट था।
तात्पर्य्य--तब भी भूमि पर भारत बहुत उत्कृष्ट था॥१२॥
इस भांति भारतवर्ष ने गौरव दिखाया फिर नया।
पर, हाय! वैदिक-धर्मरवि था बौद्ध-घन से घिर गया॥
फिर जैन आदिक धर्म फैले भेद बढ़ता ही गया।
उस फूट के फल का प्रबल विष और चढ़ता ही गया॥१३॥
ऐसे विरोधी काल में भी जो कि सब विध वाम था।
अक्षुण्ण रहना एक हिन्दू-जाति का ही काम था॥
अथवा किसी के मेटने से सत्य मिट सकता नहीं।
घन घेर लें: पर सूर्य्य का अस्तित्व खो सकता नहीं॥१४॥
इस काल में भी हिन्दुओं मे धीरता कुछ शेष थी।
निज पूर्व्वजों की वीरता, गम्भीरता कुछ शेष थी॥
फैली विशेष विलासिता थी; किन्तु थी कुछ भक्ति भी।
हम घट चले थे किन्तु फिर भी शेष थी कुछ शक्ति भी॥१५
विक्रम कि जिनका आज भी संवत् यहां है चल रहा।
ध्रुव धर्म्म को ऐसे नृपों का उस समय भी बल रहा॥
जिन के अनेकों देश हित-कर पुण्य कार्य्य किये गये।
जो शक यहां शासक बने थे सब निकाल दिये गये॥१६॥
नर-रत्न रत्नों से सजी थी, नृपति विक्रम की सभा।
अब भी जगत् में जागती है जगमगी जिनकी प्रभा।
जाकर सुनो, उज्जैन मानों आज भी यह कह रही।
मैं अब मिटूं पर अस्ति मेरी तब मिटेगी जब मही॥१७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यानुरागी भोज भी कैसा सदाशय भूप था।
विख्यात कवियों के लिये जो कल्प-वृक्ष स्वरूप था॥
साहित्य के उद्यान में वह पुण्यकाल वसंत है।
वे वे प्रसून खिले कि अब भी सुरभि-पूर्ण दिगन्त है॥
पर ठीक वैसे ही हमारा यह अपूर्व विकाश है।
जैसे कि बढ़ने के प्रथम बढ़ता प्रदीप प्रकाश है॥
हो लक्ष्य से च्युत बौद्ध क्रम से घोर नास्तिक हो रहे।
सँभल न फिर हम आर्य्य भी इस भांति विषयों में बहे॥
यद्यपि सनातन धर्म की ही अन्त में जय जय रही।
भगवान शंकर ने भगादी बौद्ध-भ्रान्ति भरी वही॥
पर हाय हम चेते नहीं फँस कर कलह के जाल में।
क्या फूट की जड़ टूटती है फैल कर पाताल में॥
बढ़ने लगा विग्रह परस्पर क्रान्तियां होने लगीं।
अनुदारता-मय स्वार्थ के वश भ्रांतियां होने लगीं।
जिस में हुआ कुछ बल वही अधिकार पर मरने लगा।
सौभाग्य भय खाकर भगा, दुर्भाग्य जय पाकर जगा॥
बहु तुच्छ रजवाड़े बने साम्राज्य सब का छूट गया।
यों भूरि भागों में हमारा दीन भारत बट गया॥
जो एक अनुपम रत्न था, परिणत कणों में हो गया।
वह प्रभा और प्रकाश सारा फूटते ही खो गया॥
देखी न होगी ऐक्य की ऐसी किसी ने छिन्नता।
बढ़कर महामत भिन्नता फैली भयङ्कर खिन्नता॥
आखिर अहल इसलाम को हम सब बुला कर ही रहे।
स्वातन्त्र्य को मानो सदा को हम सुलाकर ही रहे॥
क्या पालिया जयचन्द ने निज देश का हितहार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कह रहे कन्नौज के वे सौध-धुस्स पुकार के।
जर्जर हुए भी आज तक हम इस लिये हैं जी रहे।
अब भी सजग हो जायं गें विद्वेष विष जो पीरहे ॥२४॥
जो हम कभी फूले फले थे राम-राज्य वसंत में।
हा! देखनी हमको पड़ी औरंगज़ेबी अन्त में॥
है कर्म्म का ही दोष अथवा सब समय की बात है।
होता कभी दिन है कभी होती अन्धेरी रात है॥ २५॥

(सरस्वती से उद्धृत)

*

*   *

ब्राह्मण वरों के लिये बाल विधवा कन्या की

आवश्यकता

एक मद्रासी ब्राह्मण जिनकी आयु २९ वर्ष की है और १४०) रु० मासिक के नौकर हैं अपना विवाह बाल विधवा कन्या से करना चाहते हैं। जिन को उक्त वर स्वीकार हो बम्बई निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें।

वी० एन० भजेकर वकील हाईकोर्ट
सेक्रेटरी नेशनल कान्फ्रेंस गिरगाम-बम्बई

एक वैद्यराज जो कि सारस्वत ब्राह्मण हैं। और १६ वर्ष से बम्बई में चिकित्सा करते हैं जिनकी मासिक आमदनी २५० है। तथा संचित द्रव्य भी लगभग १५००० हैं। आयु ४० वर्ष के लगभग हैं। अपना विवाह किसी बाल विधवा से करना चाहते हैं पत्रव्यवहार निम्न पतों पर करना चाहिये।

श्रीयुत पं० बाबूराम शर्म्मा
प्रबन्धकर्त्ता आर्य्यभास्कर प्रेस-आगरा
अथवा
मंत्री बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा
बिजनौर यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रवाल वैश्यों वरों के लिये बाल विधवों की

आवश्यकता

एक इंजीनियर जो कि ६३०) रु० मासिक सरकारी नौकर आयु लगभग ३० वर्ष है। आमदनी किराया मकानात से ३००० है। गोत्र वंशल है। अपना विवाह बाल विधवा से करना चाहं जिन सज्जनों को उक्त संबन्ध स्वीकार हों, निम्न लिखित पते पर व्यवहार करें।

∴—∴

हमारे एक मित्र जिन्होंने इस वर्ष भिषगाचार्य परीक्षा पास है। और वैद्यकशास्त्र में निपुण हैं। आयु करीब २४ वर्ष है। इस समय प्रैक्टिस करते हैं। अपना विवाह बाल विधवा कन्या से चाहते हैं। पत्रव्यवहार मंत्री से करें।

—·—

एक वैश्य लड़का जिसकी आयु २० वर्ष है। और पानों दुकान करता है। मासिक आमदनी १५ रु० है। घर का और दुकान है। अपना विधवा से विवाह करना चाहता है। मुरादाबाद का रहने वाला है। पत्रव्यवहार निम्नलिखित पते पर करें।

…˙˙˙…

एक बी० ए० एल० एल० बी वकील आयु ३३ वर्ष है। विवाह करना चाहते हैं। जिनकी आमदनी करीब ३०० मासिक है। एक लड़का भी है। पत्रव्यवहार निम्न पते पर करें।

…*…

एक अग्रवाल वैश्य जिनकी आमदनी गल्ले की आढ़त रु० वार्षिक है। आयु लगभग ३० वर्ष की है। एक सन्तान भी है विवाह किसी बाल विधवा कन्या से करना चाहते हैं। जिन महाशयों को उक्तसम्बन्ध स्वीकार हो इस पते से पत्र व्यवहार करें।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त मंत्री

बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा

बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणी बाल विधवों के लिये वरों की

आवश्यकता

एक सनाढय ब्राह्मण अपनी बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह करना चाहते हैं। कन्या की आयु इस समय १८ वर्ष है। कन्या कुछ पढ़ी है। वर की आयु ३० ३२ वर्ष से अधिक न हो। आमदनी कम से कम ५०) मासिक होनी चाहिये।

..*...*...

तीन गौड़ ब्राह्मणी बाल विधवाओं के लिये वरों की आवश्यकता है कन्याओं की आयु लगभग १६-१७ वर्ष है। पढ़ी लिखी चतुर हैं। इन तीन सम्बन्धी विवाह करें। लड़कों की आमदनी ४०) रु० मासिक से कम न हो और आयु २५ से अधिक न होनी चाहिये।

बंगालिन ब्राह्मणियों के लिये वरों की

...*...

आवश्यकता

एक ग्रेजुयेट मुकर्जी अपनी बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह करना चाहते हैं। कन्या ११ वर्ष की आयु में विधवा हुई थी इस समय करीब २२ वर्ष की है। लड़की पढ़ा लिखी गृहकार्य्य में दक्ष है। वर की आयु ३० वर्ष से अधिक न हो और मासिक आमदनी १००) से कम न हो। जिस सज्जन को उक्त सम्बंध स्वीकार हो वह सम्पादक अबलाहितकारक से पत्रव्यवहार करें।

... ...

एक बंगालिन ब्राह्मणी आयु २२ वर्ष है। नागरी और बंगला जानती है। अपना विवाह देशी या बंगाली कोई ब्राह्मण हो करना चाहती है।

इसका विवाह समाज की कुरीतिवश नौ वर्ष की आयु में ६५ वर्ष के बुड्ढे से हुआ था उसको और उसके भाई दोनों का देहांत हो गया। वह समय हमारे एक बंगाली मित्र के परिवार के साथ रहती है। जिनको सम्बंध स्वीकार हो पत्रव्यवहार मंत्री से करें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट--इसके अलावा और भी बहुत वर कन्या कान्यकुब्ज
भटनागर और श्री बास्तव विवाह करना चाहते हैं। जिनके
पत्र आगामी अंक में प्रकाशित होंगे।

उक्त वर कन्याओं के विषय में पत्रव्यवहार निम्न पते
चाहिये। उत्तर के लिये टिकिट या जवाबी कार्ड आने चाहिए।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त मंत्री

संयुक्त प्रान्त बाल विधवा विवाह प्रचारिणी
वि

*
* *

सूचना

सर्व इष्ट मित्र और भ्राताओं को सूचित किया है कि
छोड़ कर सदा के लिये ट्रांसवाल जाता हूं, और वहीं रहो
हैं इस लिये जिन महाशयों को मुझ से पत्र व्यवहार करना हो
लिखे पते के अनुसार करें। पता शुद्ध और स्पष्ट अंग्रेजी
चाहिये और लिफाफे पर एक आने का टिकट लगावें।

निवेदक---

भवानीदयाल

हमारा चिरस्थायी पता:-

PANDIT BHAWANI DAYAL

Box 37 Germiston
TRANSWA
(South Afri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

पाठक यह वैधव्यदुःखाभिनय पहिले आर्यदर्पण में छिपता विवाह नाटक नाम से प्रकाशित होता था अब वह बंद होगया इस में कुल आठ सीन निकले थे; और पंद्रहा सीन बाकी रह गये थे। अब पाठकों के वास्ते फिर शुरू से इस अबलाहितकारक में प्रकाशित किया जाता है। मैंने पहिले सोचा था कि आठ सीन के बाद प्रकाशित करूं। इतने में मेरा खयाल फिर उलट गया कि प्यारे पाठकों के पास आर्यदर्पण हो या न हों इस से यह नाटक शुरू से प्रकाशित किया जाता है। जिस से पाठकों को किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े। यह आठ सीन मेरे बड़े भ्राता जी के बनाये हुये हैं, और शेष पंद्रहा सीन मैंने बनाये हैं। इसका अधिकार भ्राता जी ने मुझे दे दिया है।

नोट-लेखक की बिना आज्ञा इसको कोई महाशय न छापे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओं नमः शिवाय *

वैधव्य दुःखाभिनय

स्थान रंगभूमि]

रंगशाला में नान्दी गान करता है।

प्रार्थना

हे कृपासिन्धु भगवान दीन हितकारी ।
हे अखिलेश्वर जगदीश विश्व आधारी ॥
हम हैं आरत भारत के सब नर नारी ।
अब करो दया की दृष्टि दया भण्डारी ॥
धनहीन दीन भारत की प्रजा दुःखारी ।
रो रही रात दिन कठिन क्लेश की मारी ॥
दुख हरो नाथ तुम नाम दीन दुख हारी ।
हे अखिलेश्व जगदीश विश्व आधारी ॥

छन्द शिखरिणी ।

करे सेवा जोई, सकल सुख सोई जन लहे ।
तरे सोई जोई, तुमहि तन मन सेवत रहे ।
अहो अन्तर्यामी, सकल जगस्वामी शुभकरी ।
बिना सेवा तारो, तबहि तुम जानूं दुःखहारी ॥ १ ॥
जगत भ्राता धाता, सुभग गुण ज्ञाता जगपती ।
हरो बाधा गाधा, शरण तव आयी मदमती ॥
असारे संसारे, अमित जन तारे जिमि प्रभू ।
महा दीने हीने, तिमिहि निरवारो अज विभू ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रा-(जल कर अजीब जमाना बेहया है । जिसने बेवा की शादी को समझा रवा है ॥

कमला-क्या तुम्हारी अक्ल पर पर्दा छागया है जो सारे ज़माने को बेहया बताया है। मुसलमान और ईसाइयों के बल्के सारे जहान में परमें धर्म बेवा की शादी है। नहीं तो घर घर बर्बादी है बेवा कहीं नहीं मजबूर है। शादी का होना जरूर वर्ना मा बाप का कसूर है। सारे जहान में आम है। हिन्दुओं तमाम है इस में कुछ नहीं कुनाम है। खसूसन बाल विध ओं की शादी का होना जरूर है।

चित्रा-(तेजी से) तुम्हारी अक्ल में कुछ फतूर है। जो ती हो कि विधवा विवाह का होना जरूर है। जा जा ईसा- ई मुसलमानों में मिलजा न। सबको एक ही लाठी से हांकती अपनी अक्लमन्दी पर इतराती है। क्या तुझे कुछ शर्म भी ती है। जो विधवा होकर ऐसी बातें जबान पर लाती है

चम्पा—(नाज से) ऐ है! अलुपी नार! शर्म तो तुम्हें आती है, जो बेवा होकर इतराती है। छोटा मूंह और बड़ी सुनाती है, बेवा की शादी नाजायज ठहराती है, उल्टा सिखलाने आती है।

चित्रा—अरि चुप! माता जी आती हैं।

(चन्द्रा की माता कमला का प्रवेश)

कमला—(चन्द्रा से) ऐ दुख्तार नेक अख्तार, परमेश्वर फ़जल हो तुझ पर। हमेशा खुश व खुर्रम रहा कर। सदैव न भरा कर

चन्द्रा—प्यारी माता। कुछ कहा नहीं जाता आह चुप रहा नहीं जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचे रहना आह बेला से हमेशा ऐ कमर ।
काम कर जायेगी वर्ना यह तुम्हारा हाथ ॥

चित्र-(चन्द्रा से) ऐ प्यारी चन्द्रा ! क्यों आहे सर्द भरती हो, नाहक क्यों दुखी होती है, तबियत परेशान करती फ़ज़ूल जीने से बेज़ार होती है । रंजोग़म दूर कर, दिल म रूप कर, सब्र के सिवाय कुछ चारा नहीं है, यह कसूर हमा नहीं है, जिसकी तकदीर में जो कुछ होना है । परमेश्वर इच्छानुसार होता है ।

चन्द्र-(आह सर्द भर कर) सब्र ! सब्र ओह चित्रा ! तो मुझ से कोसों दूर भागता है, कुछ तूही तदबीर बता, हृदय क्यों फटा जाता है ! (हिचकियां भरना)

चित्रा-किसमत की बदनसीबी को सय्याद क्या करे । पर गिरे पहाड़ तो फरहाद क्या ॥

चन्द्र=सच है जब किसमत ही पोच हो तो कोई क्या सिवाय इसके कि सिर धुने और हाथ मले

कमला-(दूसरी सहेली) आपका यह फरमाना क़यास नहीं, हरगिज हमें इस का पास नहीं । बदकिसमती इन्सान का कर्म है, इस में कुछ शुभा नहीं है । बालदैन का सारा क़सूर है क्या बाल अवस्था में शादी करना जरूर है । बाल वेदों के सरासर खिलाफ है, इस में किसी को नहीं हिराफ है इस के मानने में अगर कीलकाल है तो जरूर आ

चित्रा-बातिल खयाल है ।

चम्पा-(तीसरी सहेली) इस में क्या शक है । हुई तदबीह को ही तो तकदीर कहते हैं । जब तदबीर होती है तो तकदीर भी खुल जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार-बस अब और न बढ़ाओ। आज उपस्थित सभासदों की आज्ञा है कि प्रोफेसर सुतीक्ष्ण राय कृत वैधव्यदुखानिय नाटक खेलो जिसको उन के सुयोग्य भ्राता गौतम ऋषि पूर्ण किया है।

सत्य ही है जो सभासद् समाज की दुर्दशा का अनुभव करते हैं उनके ही सामने खेलना चाहिये।

उपजैं ओछे खेत में, मूरखहू के धान।
सघन होन में धान के, चहियें न गुणी किसान॥

(भारतेन्दू हरिश्चन्द्र)

अच्छा तो मैं घर जाकर अपनी पत्नी को बुला कर अभिनय का सामान करता हूं।

(विधवा चंद्रवती महल में सहेलियों के साथ बैठी हैं)

शोकार्त्त गान

चंद्रा-(कलप कर गज़ल गाती है,

क्या करूं किससे कहूं यह हाल अपना हाय हाय।
क्यों नज़र आता नहीं है कोई अपना हाय हाय॥
तन बदन में शोले ज़न है आग फुर्कत की यहां।
कैसे ठंडे होंगे शोले या ही रामे हाय हाय॥
हाय क्या मा बाप ने सोचा था कर बच्चे विवाह।
करके बाली उम्र में शादी जलाया हाय हाय॥
ब्याह के लायक हुई जब यह मेरी उमर।
कह दिया सब ने कि होगई हूं बेवा हाय हाय॥
बच्चेपन की शादी से तुम को पिता क्या मिल गया।
जीते जी मुझ को है मारा तुमने माता हाय हाय॥
कौमी लीडर सोगये अंधेरा सारा छागया।
बाल विधवा मर रही हैं ऐ विधाता हाय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कूक करूं तो जग हंसे, और चुपके लागे घाव ।
या बिधना इस कठिन स्नेह का किस विध करूं उपाव ।

मेरा जिगर टुकड़े २ हुआ चाहता है (कलप कर) माता ईश्वर के लिये मेरी हालत जार पर रहम खाओ पिता को समझाओ । वर्ना मेरा जीना महाल होगा ।

कमला (नाज़रीन की तरफ) शर—गुल तो दो की बहारे जांफिज़ा दिखलायेंगे । हसरत इन गुँलों (चन्द्रा तरफ) पर है जो बिन खिले मुरझा यगें ॥ ऐ बीबी सब्र अगर ईश्वर तेरा मददगार है तो बेड़ा पार है । अभी जाती तेरे लिये खुश खबर लाती हूं। ऐ चित्रा ! चंद्राके ही पास रहा कर उसका दिल खुश करती रहा कर.वर्ना मैं तुझ से सख्त नाराज हूंगी

चित्रा-जो आज्ञा ।

(कमला देवी का जाना

चंद्रा-हे ईश्वर यह क्या जिगर मैं देखती हूं उधर हो खुशी आवाजें सुनाई देती है। अहा मालूम होगया यह सब मेरे पुसलाने ढंग हैं ।

चित्रा-क्यों इतनी परेशान है चलो बाग में दिल बहलाओ।

चंद्रा-अगर तेरी ऐसी इच्छा है तो आओ चलो ।

सब का मिल कर गाना

पहला सीन समाप्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा का संक्षिप्त विवरण

वकुन्ठवासी श्री १०८ श्रोत्रिय शंकरलाल जी प्रधान संयुक्त प्रांत बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा के स्वर्गवास होनेके पश्चात् सभा का काम बाकायदा अधिकारियों के न होने से बन्द सा ही हो गया था। कुछ सज्जनों के प्रयत्न से फिर सभा ५ अप्रैल १२ को कानपुर प्राविन्सल सोशल कान्फ्रेन्स के समय स्थापित हुई, और योग्य अधिकारी तथा सभासदों का चुनाव हुआ। इसमें अत्यन्त धन्यवादार्ह राय साहब डाक्टर मुरारीलाल बी० ए० कानपुर हैं जिनके उत्साह से सभा में पुन: जीवन का संचार हुआ।

यह सभा लगभग ६ मास बाल विधवाविवाह प्रचारणी सभा के नाम से चलती रही। इन छ: मास के अन्दर कानपुर कई बार जनरलमीटिङ्ग हुई। और अनेक प्रस्ताव बराबर पास होते रहे। अन्तिम मीटिंग में बहुसम्मति से बाल विधवाविवाह प्रचारिणी सभा के नाम और सिद्धान्त दोनों का ही परिवर्तन हो गया। अर्थात् सभा का नाम विधवा विवाह प्रचारिणी सभा और सिद्धान्त क्षता अक्षता सब प्रकार की विधवाओं का विवाह। जिस समय उक्त मीटिंग हुई थी, मंत्री राय साहब डाक्टर मुरारीलाल जी बी० ए० ने अनेक प्रश्न इस विषय में किये थे क्यों न सभा का नाम विधवा विवाह प्रचारणी सभा, और विधवा मात्र का विवाह ही उसका सिद्धांत रक्खा जाय। जिनका उचित उत्तर उसी समय दे दिया गया था।

जिस समय कि उक्त मीटिंग में नाम और सिद्धान्त का परिवर्तन हुआ था। हमने तभी से इस से सम्बन्ध छोड़ दिया था। नवम्बर १२ से मार्च १३ तक द्वितिय बार बाल विधवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह प्रचारिणी सभा को स्थापित करने का यत्न होता रहा अन्त में परमेश्वर की दया से परिश्रम सफल हुआ। महाविद्यालय ज्वालापुर शान्तिनिकेतन में २३ मार्च बाबू ज्योतिस्वरूप जी रईस वकील देहरादून के सभापतित्व में पुनः जनैल मीटिंग होकर अधिकारी चुने गये। और पृथक् सभा स्थापित की गई।

इस में वेदतीर्थ पण्डित नरदेव शास्त्री मुख्याधिष्ठाता महाविद्यालय व पण्डित भीमसैन शास्त्री मंत्री महाविद्यालय ज्वालापुर को अत्यन्त धन्यवाद दिया जाता है जिन्होंने कृपा कर के अपने विद्यालय में सभा के लिये स्थान दिया, और सब प्रकार की सहायता करते रहे।

कार्य्यवाही जनैल मीटिंग।

पण्डित मुरारीलाल शर्म्मा सिकन्दराबाद निवासी ने प्रस्ताव किया कि सामयिक सभापति बाबू ज्योतिस्वरूप रईस वकील देहरादून को बनाया जावे। और इसका अनुमोदन श्रोत्रिय जगदीशदत्त तथा समर्थन लाला बनवारीलाल जी सम्पादक रहबर मुरादाबाद ने किया। बहु सम्मति से उक्त बाबू जी सभापति बनाये गये।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने प्रस्ताव किया कि यह सभा इस समय इस लिये एकत्रित हुई है, कि कानपुर की बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा ने, सभा का नाम और सिद्धान्त दोनों का ही परिवर्तन कर दिया है। जो कि सर्वथा धर्म विरुद्ध है। इस लिये मेरी सम्मति में कानपुर की सभा से पृथक् एक सभा स्थापित की जाय जिसका मुख्योद्देश्य बाल विधवाकन्याओं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्विवाह कराना तथा हर प्रकार से विधवा मात्र की रक्षा करना हो।

अनुमोदन-बाबू ज्योतिस्वरूप जी सभापति ने किया था, और समर्थन पण्डित मुरारीलाल जी शर्म्मा व पं० भीमसेन जी ने किया। बहु सम्मति से सभा पृथक् स्थापित करना निश्चित हुआ।

लाला बनवारीलाल जी ने प्रस्ताव किया कि सभा का नाम नाम वाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा ही होना चाहिये, जो कि स्वर्गवासी श्री श्रोत्रिय शंकरलाल जी के समय था।

इसका अनुमोदन पण्डित अखिलानन्द कविरत्न, तथा समर्थन पं० पद्मसिंह जी ने किया।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ और सभा का नाम बाल विधवाविवाह प्रचारिणी रक्खा गया।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने प्रस्ताव किया कि सभापति श्री० गोस्वामी राधाचरण आनंररी मजिस्ट्रेट वृन्दावन को बनाया जाय। और यदि वे स्वीकार न करें तब पण्डित पद्मसिंह जी सम्पादक भारतोदय को सभापति बनाया जाय।

अनुमोदन पण्डित भीमसेन जी मंत्री महाविद्यालय सभा ने किया।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यदि गोस्वामी जी सभापति होना स्वीकार करलें, तब पण्डित पद्मसिंह जी उप सभापति रहेंगे। (हर्ष है गोस्वामी जी ने उक्त पद को स्वीकार करलियाहै)सम्पादक

पं० मुरारीलाल शर्म्मा ने प्रस्ताव किया कि उप सभापति पं० अखिलानन्द जी कविरत्न को बनाया गया।

पण्डित पद्मसिंह जी ने अनुमोदन किया और पं० भीमसेन जी ने समर्थन किया।

बहु सम्मति से पं० अखिलानन्द जी उप सभापति बनाए गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला बनवारी लाल जी ने प्रस्ताव किया, कि मंत्री श्रोत्रिय जगदीशदत्त को बनाया जाय।

अनुमोदन पं० मुरारीलाल शर्मा, तथा समर्थन पण्डित ... जी ने किया।

बहु सम्मति से श्रोत्रिय जगदीशदत्त को मंत्री बनाया गया।

नियम वह ही रहे जो कि स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल ... समय थे। पाठकों के दिग्दर्शनार्थ वह नियम पुनः प्रकाशित किये जाते हैं।

(१) इस सभा का नाम संयुक्त प्रांत वाल विधवा बिवाह प्रचारक सभा (आगरा और अवध) रक्खा जावे और श्रीमान् महाराजा ... राव गायकवाड़ सेना खास खेल शमशेर बहादुर जी० सी० एस० आई० इस सभा के पोषक समझे जावें।

(२) इस में तीन प्रकार के मेम्बर होंगे। जो १) मासिक चन्दा देगा वह विशेष सभासद, जो २) साल चन्दा देगा वह साधारण सभासद समझा जावेगा। जो केवल फीस दाखिला हो १) देगा वह सहायक समझा जावेगा। फीस दाखिला विशेष और साधारण सभासदों को देना होगा परन्तु विशेष सभासद ही कार्य्यकारिणी सभा के ... होंगे और अपनी सम्मति दे सकेंगे।

(३) इस सभा का मुख्योद्देश्य बालविधवाओं का विवाह ... का है अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इत्यादि जिन में विधवाओं का विवाह नहीं होता है उन जातियों की ऐसी विधवा कन्या जो पति के समीप नहीं गई हैं यानि अक्षत योनि हों उनका विवाह करना सभा का उद्देश्य है।

(४) यह सभा बालविवाह और वृद्ध विवाह के रोकने का प्रयत्न करेगी और स्त्रीशिक्षा का भी ध्यान रक्खेगी।

[५] जो विधवा विवाह न करा कर ब्रह्मचर्य्य से रहना चाहती हैं किन्तु भोजनादिक के कारण उन को धर्म नष्ट करना पड़ता है उन को यथाशक्ति (कोष की बचत के अनुसार) सहायता यह सभा ... पूर्वक देगी।

[६] इस सभा का किसी ... विशेष (...) ... सभा आर्य्यसमाज ब्रह्मसमाज ...) ... सम्बन्ध नहीं है यह सब से मिल ... रक्खेगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[७] जिन विधवा कन्याओं के माता पिता उनके पुनर्विवाह खर्च नहीं उठा सक्ते उनका विवाह निश्चत हो जाने पर खर्च यह भा देगी ।

[८] इस सभा में वैतनिक उपदेशक के अतिरिक्त आनरेरी उपदेशक भी रक्खे जावेंगे । सहायक और साधारण सभासदों में से (मासिक बिना दिये भी कार्यकारिणी सभा की अनुमति से आनरेरी (प सभासद् भी हो सक्ता है ।

[९] यह सभा मेलों पर भी उपदेशकों को भेज कर व्याख्यान द्वारा और विधवाविवाह संबंधी छोटे छोटे पुस्तक छपवा कर मुफ्त बांट कर इसका प्रचार करेगी ।

[१०] यह सभा सब प्रकार का दान हर किसी से प्रसन्नता से स्वीकार करेगी ।

[११] इस सभा का वार्षिकोत्सव [सालानाजलसा] होकर साल भर की कारवाई को रिपोर्ट छपा करेगी और जलसे की जगह कार्यकारिणी सभा नियत करेगी जिसका विज्ञापन एक मास के पूर्व दिया जाया करेगा ।

[१२] कोई पुरुष जो सहायक या सभासद् होना चाहें वह छपे हुए फार्म मन्त्री उपमन्त्री सभापति उप सभापति या कोषाध्यक्ष के पास कार्ड भेज कर मंगा ले और उसको खानापूरी करके मंत्री जगदीशदत्त बिजनौर के पास भेज देवें ।

[१४] फीस का दाखला चन्दे और सब प्रकार के दान का रुपया लाला जानकीप्रसाद वैश्य कोषाध्यक्ष मुरादाबाद के पास मनीआर्डर से भेज दें या कार्यकारिणी सभा के किसी सभासद् को देकर रसीद लेलें ।

[१४] जो मनुष्य अपनी कन्या या पुत्र का विवाह कराना चाहे और इस सभा द्वारा वर वधू की खोज करावे वह मंत्री श्री०जगदीशदत्त के पास से फार्म मंगा कर और उनकी खानापूरी करके उन को ही भेज दें । यह फार्म और जगह नहीं मिलेंगे और जब तक विवाह होना निश्चित न हो जायगा तब तक यह सब कार्रवाई गुप्त रक्खी जावेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) जो कोई किसी प्रकार पत्रव्यवहार करना चाहे वह स
पति उपसभापति, मंत्री उपमंत्री या कोषाध्यक्ष से कर सक्ता है।

*
* *

नए बालविधवा विवाह

३ नवम्बर सन् १९१२ को बिजनौर चौधरी रघुराजसिंह
के स्थान पर मुन्शी दोरगाज पटवारी नंगली जिला बिजनौर नि
का पुनर्विवाह कैरानो निवासी मुंशी श्यामलाल भटनागर की
विधवा कन्या से हुआ। यह विवाह कन्या के पिता ने स्वयम् कि

———

३ दिसम्बर सन् १९१२ को लाला बद्रीप्रसाद जी अग्रवा
अमरोहा निवासी की बालविधवा कन्या श्रीमती मोहिनी देवी
विवाह सरकड़ा निवासी लाला मुकन्दराम जी के पुत्र से हुआ
बिरादरी के अनेक सज्जन सम्मिलित हुए।

....

२३ जनवरी १३ को सी० वाई० चिन्तामणी सम्पादक
प्रयाग का पुनर्विवाह एक स्वजातीय मद्रासी ब्राह्मणी से हुआ।
वर कन्या को चिरायु करे।

....

२७ फरवरी १३ को इटावे में श्रीमती गंगादेवी जी का पु
बाबू ज्वालाप्रसादजी के साथ हुआ। श्री गंगादेवी जी की आयु
बाबू ज्वालाप्रसाद जी की ३८ वर्ष है।

———

गत ता० २८ को कानपुर में राय साहब डा० मुर
प्रयत्न से उन्हीं के बंगले पर एक विधवा का पुनर्विवाह हुआ
विधवा भटनागर कायस्थ वय वर्ष २० बाल विधवा
सकसेना कायस्थ पूसा के कृषि कालेज में मुलाजिम ७५) म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नियुक्त हैं वह की अवस्था ४० वर्ष की है विवाह में ५० सभ्य उपस्थित थे। वर को ओर से विधवासहायक सभा को ५०) दान मिला।

डिब्बी १ गोली ३२

आरोग्य देवी

आतंक निग्रह गोलियां

मूल्य रु० १

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारिरक बल हो।

इन गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है। गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बल कांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये सूचीपत्र मंगा लीजिये

वैद्य शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी
जामननगर-काठियावाड़

मलेरिया का असर

जो कि प्लेग की हलकी शकल है बाटली वाले की बनाई मिक्चर या गोलियां १)

बाटली वाले का क्लोरल हैजे को एक मात्र दवा १)

बाटलीवाले का खिजाब। यह खिजाब पहिले खिजाब से बहुत अच्छा है जिस से सफ़ेद बाल कुदरती बालों के समान हो जाते हैं। ३)

बाटली वाले की ताकत की दवा-बदन या दिमाग की ताकत कम होगई हो, उसे लाभकारी १॥)

बाटली वाले का दांतों का मंजन-यह दवा अंग्रेजी दवाओं से वैज्ञानिक रीति से तैयार की गई है मया फल और कारबोलिक एसिड

बाटलीवाले का दाद का मलहम।)

यह दवा सब जगह मिलती हैं।

डा० बाटलीवाला

वरली लबोरेटरी दादर — बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमसागर तैल

हिमसागर तैल—बालों को चमकीला और रेशम के लच्छे जैसा मुलायम करता है। बालों को ख़ूब बढ़ाता और जड़ों को दृढ़ करता है इसके व्यवहार से सिर दर्द भारीपन ख़ुश्की खाज और बालों का गिरना बन्द होता है ! इसे मस्तक पर लगाने से मस्तक में ठण्डक, तरावट और हलकापन होता है। मन को प्रसन्नता और दिमाग़ की पुष्टि करता है। आंखों में रोशनी और तरावट पैदा होती है चेहरे पर मलने से चेहरे की श्यामता झांई आदि दूर होकर चिकनाहट गोरापन और सुर्खी आजाती है। इस लिये कितनी ही स्त्रियां इसका नित्य व्यवहार करती हैं। जो एक बार भी इसका सेवन करता है वह इसके गुणों पर मोहित हो जाता है मूल्य फी शीशी १) रु० दर्जन १०) रु०। ६ शी० ५॥) रु०। ३ शीशी का २॥।) रु० १।

नयनामृतांजन सुरमा

यदि नेत्रों रक्षा करनी है तब नयनामृत का नित्य व्यवहार करें। हमारे नयनामृत अंजन के प्रतिदिन सेवन से नजर की कमजोरी, दूर की चीज का ठीक न दीख़ना आदि रोगों को लाभ होता है ! थोड़े दिनों का जाला, फूला, धुंध, ढलका, नजला आदि नेत्रों की सुर्खी आंखों का दुखना जलन आंखों में चिप चिपाहट रतोंधा आदि रोगों को फायदा करता है। इस के नित्य व्यवहार से बुढ़ापे तक ज्योति क़ायम रहती है। मूल्य फी शीशी १) रु० ६ शीशी ५॥) और तीन शीशी २॥।)।

आयुर्वेद मार्त्तण्ड पण्डित सूर्यप्रसाद शर्म्मा
मालिक भारत हितैषी औषधालय मेरठ शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के नामी डाक्तर एस, के, बर्म्मन की बनाई

मोल १।) सवा रुपया। शीशी

स्त्रीरोग की दवा

डा० म० ।=)

स्त्री रोगों में विशेष गुणकारी मारकीन देश की प्रसिद्ध दवाएं इस्तनम आदिक और वैद्यक की प्राचीन कोश से प्रसिद्ध दवाएं शोक और कई एक चीजों के संयोग से यह दवा बनी है और यथा ति इसकी परीक्षा भी होती आई है।

यह सब प्रकार के स्त्री रोग की दवा है। दुर्बल गर्भाशय को व पुष्ट करती है; इस लिये गर्भस्थान के सब रोगों में काम देती मासिक धर्म वा ऋतु के विकार से अधिक वा कम दिनों में महीना ना, कमर पेडू जांघ में दर्द होना, सिर दर्द जी मिचलाना आदि टी हैं।

प्रदर दोष जिससे सफेद वा लाल पानी (मवाद) जाता है, पतला वा जमा हुआ ज्यादा या कम जाना साथ दर्द आदिक क्लेश ना इस दवा से मिटते हैं।

गर्भ के शिथिल पड़ जाने से गर्भ अकाल में नष्ट हो जाता है, ला तीसरे चौथे महीने गिर जाता है। इस हालत में इस दवा के दिन सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है। यह दवा गर्भ के गों को मिटाके दुर्बल शरीर को पुष्ट करती है।

डा: एस,के बर्म्मन।
५,ताराचंद दत्त ष्ट्रीट।
कलकत्ता।

विशेष हाल व प्रशंसा-पत्रों की पूरी पुस्तक बिना मूल्य मंगा कर पढ़िये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निम्न लिखित मुफ्त

अमृत

'अमृत'--इस नाम की एक पुस्तक उर्दू, हिन्दी, गुरुमुखी, गुजराती या मराठी जिस भाषा की चाहें मु... जावेगी, इस में सर्व रोगघ्न औषध

'अमृतधारा' का

पूरा २ वर्णन है। 'अमृतधारा' श्री पं० ठाकुरदत्त... की जगत भर मे एक नई ईजाद है, क्योंकि यह एक ही... प्रायः सर्व रोगों को हितकर है। कीमत बड़ी शीशी... २॥) आधी शीशी १।) और नमूना की शीशी छोटी...

पुरुषों के विशेष रोग

आज कल लोगों में व्यसन बहुत बढ़ जाने से ... बहुत ही बढ़ गये हैं, इस पुस्तक के अन्दर उन रोगों... लक्षण तथा चिकित्सा भली प्रकार से वर्णन की, जिस... कर फिर से आरोग्य तथा बलवान हो सकते हैं यह पु... मुफ्त भेजी जाती है। हिन्दी उर्दू मराठी गुजराती में मिल...

"हिन्दी देशोपकारक,,

अपनी किस्म का भारतवर्ष में पहिला पाक्षिक... है। जो एक बार देखता है यदि उस को जरा भी ... हित हो। इस पर मोहित हो जाता है। नमूना मुफ्त...

पत्र तथा तार का पता:—अमृतधारा (ब्रांच)

चौ० बुद्धा सिंह द्वारा दीनबन्धु मैशीन प्रेस. विजन.र...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् नमः शिवाय *

अबलाहितकारक

संस्थापक

श्रोत्रिय शङ्करलाल

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं,
गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं,
पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ ॥

(ऋक) मन्त्र ३४

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चास्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीते ॥

(पराशरः)

सम्पादक व प्रकाशक—

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबल वृद्ध स्त्री पुरुषों की शिक्षा पुस्तके

डाक व्यय सहित

एक रु० में ६००पृ०की १५ पुस्तकें

यह वह पुस्तकें नहीं जिनको पढ़कर रखदोगे। इस में अ... और हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों की लिखी पुस्तकें हैं जैसे... कारीली की प्रसिद्ध नीति की पुस्तक "ब्यटीज आफ मेरी कु... का हिन्दी अनुवाद नीति सौन्दर्य्य है यह पुस्तक गृहस्थों के... जैसी उपयोगी है देखने पर ही मालूम होगा इस में प्रत्येक विष... अच्छी व्याख्या की गई है। दूसरी पुस्तक माता पिता का कर्त... यह पुस्तक प्रसिद्ध तत्ववेत्ता स्पेन्सर साहब की बनाई है इसकी... धिक प्रसंशा लिखना व्यर्थ है। कान्यकुब्ज अबला विलाप यह पु... हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत है।

१ नीति सौनदर्य्य	११ भारत के आदर्श ब...
२ माता पिता का कर्तव्य	१२ बनिता ...
३ बाबा का विवाह	
४ कानकुब्जअबला विलाप	१३ अबला सुधार भजन ब...
५ लक्ष्मी उपन्यास	१४ विधवा भजन ...
६ विधवा बिवाह बिवरण	१५ विधवा वि...
७ मनकी उमंग	अबला हितकारक के
८ रजनी चरित्र	
९ कुमार रक्षा	ग्राहकों को ।।।)। दीजा...
१० मोहव्वत का फंदा	

मिलने का पता—मैनेजर दीन बन्धु प्रेस वि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित ।

अबला हितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥

दशम वर्ष	माघ—फाल्गुन	अङ्क ११,१२

उद्बोधन

—:+:◯:※:◯:÷:—

[भारत भारती से उद्धृत]

हतभाग्य हिन्दू जाति तेरा पूर्व दर्शन है कहां ।
वह शील, शुद्धाचार, वैभव, देख अब क्या है यहां ॥
क्या जान पड़ती वह कथा अब स्वप्न की सी है नहीं ।
हम हैं वही, पर पूर्व्व दर्शन दृष्टि आते हैं कहीं ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीती अनके शताब्दियां पर हाय तू जागी नहीं ।
निज कुम्भकर्णी नींद तूनें तनिक त्यागी नहीं ॥

देखें कहीं पूर्वज हमारे स्वर्ग से आकर हमें —
आसूं बहावे शोक से, इस वेश में पाकर हमें ॥

अब भी समय है जागनें का देख आँखें खोल के ।
सब जग जगाता है तुझे जगकर स्वयं जय बोल के ॥

निःशक्त यद्यपि हो चुकी है, किन्तु तू न मरी अभी ।
अब भी पुनर्जीवन प्रदायक साज हैं सम्मुख सभी ॥

अब भी सुधारेंगे न हम दुर्दैववश अपनी दशा ।
तो नाम शेष हमें करेगा काल ले कर्कश कशा ॥

बस टिमटिमाता दीख पड़ता आज जीवन दीप है
हा दैव क्या रक्षा न होगी, सर्वनाश समीप है ॥

निज पूर्वजों का वह अलौकिक सत्यशील निहारलो,
फिर ध्यान से अपनी दशा भी एक वार विचारलो

जो आज अपने आप को यों भूल जाते हम नहीं ॥
तो यों कभी सन्ताप मूलक शूल हम पाते नहीं ॥

निज पूर्व्वजों के सद्गुणों को यत्न से मन में धरो ;
सब आत्म–परिभव–भाव तज निज रूप का चिन्तन करो

निज पूर्व्वजों के सद्गुणों का गर्व जो रखती नहीं ।
वह जाति जीवित जातियों में रह कभी सकती नहीं ॥

किस भांति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए–
सो सब हमें निजपूर्व्वजों से याद करना चाहिए ।
पद–चिह्न उनके यत्न–पूर्व्वक खोज लेना चाहिए;
निज पूर्व– गौरव–दीप को बुझने न देना चाहिए ॥ ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी प्रयोजन-पूर्ति क्या हम आप कर सकते नहीं,
क्या तीस कोटि मनुष्य अपना ताप हर सकते नहीं,
क्या हम सभी मानव नहीं, किंवा हमारे कर नहीं,
रो भी उठें हम तो बने क्या अन्य रत्नाकर नहीं ? ॥ ८ ॥
विष-पूर्ण ईर्ष्या, द्वेष पहले शीघ्रता से छोड़ दो;
घर फूँकने वाली फुटेली फूट का सिर फोड़ दो।
मालिन्य से मुँह मोड़ कर मद-मोह के पद तोड़ दो;
टूटे हुए वे प्रेम-बन्धन फिर परस्पर जोड़ दो ॥ ९ ॥
भागो अलग अविचार से, त्यागो कुसङ्ग कुरीति का,
आगे बढ़ो निर्भीकता से, काम है क्या भीति का।
चिन्ता न विघ्नों की करो पाणि-ग्रहण कर नीति का;
सुर-तुल्य अजरामर बनो पीयुष पीकर प्रीति का ॥ १० ॥
है ज्ञात क्या तुमको नहीं—तुम लोग तीस करोड़ हो ?
यदि ऐक्य हो तो फिर तुम्हरा कौन जग में जोड़ हो ?
उत्साह-जल से सींच कर हित का अखाड़ा जोड़ दो;
गर्दन अमित्र अधःपतन की ताल ठोंक मरोड़ दो ॥ ११ ॥
आओ, मिलें सब देश-बान्धव हार बन कर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख-शान्ति-मय उद्देश के।
क्या साम्प्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो ? ॥ १२ ॥
अति धीरता के साथ अपने कार्य में तत्पर रहो;
आपत्तियों के वार सारे वीरवर बन कर सहो।
सब विघ्न-भय मिट जायँगे, होगी सफलता अन्त में;
फ़िर कीर्ति फैलेगी हमारी एक बार दिगन्त में ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ दीप तो देकर हमें आलोक जलता आप है;
पर एक हम में दूसरे को दे रहा सन्ताप है।
क्या हम जड़ों से भी जगत में हैं गये बीते नहीं ?
हे भाइयों ! इस भांति तो तुम थे कभी जीते नहीं ॥ १४॥
हम को समय को देख कर ही नित्य चलना चाहिए;
बदले हवा जब जिस तरह हम को बदलना चाहिए।
विपरीत विश्व-प्रवाह के निज नाव जा सकती नहीं;
अब पूर्व की बातें सभी प्रस्ताव पा सकती नहीं ॥ १५॥
है बदलता रहता समय, उसकी सभी घातें नईं;
कल काम में आती नहीं हैं आज की बातें कईं।
है सिद्धि-मूल यही कि जब जैसा प्रकृति का रङ्ग हो--
तब ठीक वैसाही हमारा कार्य-कृति का ढङ्ग हो ॥ १६॥
प्राचीन हों कि नवीन छोड़ो रूढ़ियां जो हों बुरी;
बन कर बिवेकी तुम दिखाओ हंस जैसी चातुरी।
प्राचीन बातें ही भली हैं, यह विचार अलीक है;
जैसी अवस्था हो जहां वैसी अवस्था ठीक है ॥ १७॥
सर्वत्र एक अपूर्व युग का हो रहा संचार है;
देखो, दिनों दिन बढ़ रहा विज्ञान का विस्तार है
अब तो उठो, क्यों पड़े रहे हो व्यर्थ सोच विचार में
सुख दूर, जीना भी कठिन है श्रम बिना संसार में ॥ १८॥
लो भाग अपना शीघ्र ही कर्त्तव्य के मैदान में,
हो बध्द-परिकर दो सहारा देश के उत्थान में।
डूबे न देखो नाव अपनी है पड़ी मझधार में
होगा सहायक कर्म का पतवार ही उद्धार में ॥ १९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर निराश कभी न बैठो नित्य उद्योगी रहो,
सब देश-हितकर कर्म्म में अन्योन्य सहयोगी रहो।
धर्म्मार्थके भोगी रहो बस कर्म्म के योगी रहो
रोगी रहो तो प्रेमरूपी रोग के रोगी रहो ॥ २० ॥

देखो तुम्हें तुम्हारे पूर्वज देखते हैं स्वर्ग से,
करते रहे लोक का हित जो उच्च आत्मोत्सर्ग से।
है दुःख उन्हें अब स्वर्ग में भी पतित देख तुम्हें अरे!
सन्तान हो क्या तुम उन्हीं की राम? राम! हरे! हरे! ॥ २१ ॥

अब तो विदा दो, दुर्गुणों को सद्गुणों को स्थान दो!
खोया समय यों ही बहुत अबतो उसे सम्मान दो।
चिरकाल तिरावृत रहे, आलोक का भी स्वाद लो,
हो योग्य सन्तति पूर्वजों से दिव्य आशीर्वाद लो ॥ २३ ॥

ऐसा करो जिस में तुम्हारे देश का उद्धार हो,
जर्जर तुम्हारी जाति का बेडा विपद से पार हो।
ऐसा न हो जो अन्त में चर्चा करें ऐसी सभी—
थी एक हिन्दू नामकी भी निन्द्य जाति यहां कभी ।२३॥

हे ब्राह्मणों ? फिर पूर्वजों के तुल्य तुम ज्ञानी बनो,
भूलो न अनुपम आत्म—गौरव धर्म्म के ध्यानी बनो।
करदो चकित फिर विश्व को अपने पवित्र प्रकाश से
मिट जाय फिर सब तम तुम्हारे देश के आकाश से॥ २४॥

क्षत्रिय! उठो अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो,
निज देश को जीवन सहित तन, मन, तथा धन भेट दो।
रघु, राम, भीष्म तथा युधिष्ठिर सम न हो जो ओज से,
तो वीर विक्रम से बनो, विद्यानुरागी भोज से॥ २५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैश्यों सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का
सब धन हरा है जा रहा, कुछ पार है क्या क्लेश का।
अब भी न यदि कर्तव्य का पालन करोगे तुम यहां,
तो पास हैं वे दिन कि जब भूखों मरोगे तुम यहां॥ २६॥
अब तो उठो, हे बन्धुओ ! निज देश की जय बोल दो,
बनने लगें सब वस्तुएं कल-कारखाने खोल दो।
जावे यहां से और कच्चा माल अब बाहर नहीं
हो 'मेड इन' के बाद बस अब इंडिया ही सब कहीं॥ २७॥
है आज भी रत्न-प्रसू बसुधा यहां की सी कहाँ,
पर लाभ उससे उठाते हैं विदेशी ही यहां।
उद्योग घर में भी अहो हम से किया जाता नहीं,
हम छाल छिलके चूसते हैं रस पिया जाता नहीं॥ २८॥
हे शिक्षितो ! कुछ कर दिखाओ, ज्ञान का फल है यही,
हो दूसरों को लाभ जिससे श्रेष्ठ विद्या है वही।
संख्या तुम्हारी अल्प है, उसको बढ़ाओ शीघ्र ही,
नीचे पडे हैं जो उन्हें ऊपर उठाओ शीघ्र ही॥ २९॥
अपने अशिक्षित भाइयों का प्रेम-पूर्वक हित करो,
उनकी समुन्नति से उन्हें उत्साह युत परिचित करो।
ज्ञानानुभव से तुम न निज साहित्य को बंचित करो,
पाओ जहां जो बात अच्छी शीघ्र ही संचित करो॥ ३०॥
करते रहोगे पिष्ट पेषण और कबतक कविवरो।
कच, कुच कटाक्षों पर अहो ! अब तो न जीते जी मरो॥
है बन चुका शुचि अशुचि, अब तो कुरुचि को छोड़ो भला
अब तो दया करके सुरुचि का तुम न यों घोटो गला॥ ३१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी
है जन्म से ही वह यहां श्रीराम की अनुगामिनी ।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई
ज्योत्स्ना गई, देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई ॥३२॥
अब तो विषय की ओर से मन की सुरति को फेर दो,
जिस ओर गति हो समय की उस ओर मति को फेर दो ।
गाया बहुत कुछ राग तुम ने भोग और वियोग का
सञ्चार कर दो अब यहां उत्साह का, उद्योग का ॥३३॥
केवल मनोरञ्जन न कवि का कर्म्म होना चाहिए,
उसमें उचित उपदेश भी का मर्म्म होना चाहिए ।
क्यों आज रामचरित्रमानस सब कहीं सम्मान्य है ?
सत्काव्य-युत उसमें परम आदर्श का प्राधान्य है ॥३४॥
धैर्य्य-च्युतों को धैर्य्य से कवि ही मिलाना जानते,
वे ही नितान्त पराजितों को जय दिलाना जानते ।
होते न पृथ्वीराज तो रहते प्रताप कृती कहां ?
एथेन्स कैसे जीतता होता न यदि सोलन वहां ?
संसार में कविता अनेकों क्रान्तियां है कर चुकी,
मुरझे मनों में वेग की विद्युत्प्रभायें भर चुकी ।
है अन्ध सा अन्तर्जगत कविरूप-कविता के बिना,
सद्भाव जीवित रह नहीं सकते सुकविता के बिना ॥३६॥
मृत जाति को कवि ही जिलाते रससुधा के योग से,
पर मारते हो तुम हमें उलटे विषय के रोग से ।
कवियो ? उठो, अब तो अहो ! कविकर्म्म की रक्षा करो,
सब नीच भावों का हरण कर उच्च भावों को भरो, ॥३७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे नव-युवाओ ! देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की तुम्हीं में ज्योति सब से जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में?
देखो,कहो क्या हो रहा है आज कल संसार में ॥३८॥
धनियो ? भला कब तक व्यसन की बान छोड़ोगे नहीं!
अब और कब तक अज्ञता की आन तोड़ोगे नहीं?
किंवा कृपण कब तक रहोगे लोभ के पाले हुए?
क्या तुच्छ धन वाले हुए तुम जो न मन वाले हुए? ॥३९॥
कमला-विकाश विलोलतर चपला-प्रकाश समान है,
धन-लाभ का साफल्य बस सत्कार्य्य-विषयक दान है।
हा ? देश का उपकार करना अब तुम्हें कब आयगा?
विद्या,कला,कौशल बढ़ाओ धन स्वयं बढ़ जायगा ॥४०॥
लाखों अपव्यय हैं तुम्हारे,एक तो सद्-व्यय करो,
चाहो न जो तुम कीर्ति तो अपकीर्ति का तो भय करो।
क्या मातृ-भूमि वृथा तुम्हारी विश्व में जननी बनी,
देते करोड़ों देश-हित हैं अन्य देशों के धनी ॥४१॥
सब से प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में,
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है,
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है। ४२॥
जब तक समुज्ज्वल ज्ञान का आलोक पावेंगे नहीं।
तब तक भटकना व्यर्थ है सुख-सिद्धि के सन्धान में,
पाये बिना पथ पहुँच सकता कौन इष्ट स्थान में ? ॥४३॥
वे देश जो हैं आज उन्नत और सब संसार से—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौंका रहे हैं नित्य सब को नव नवाविष्कार से।
सब ज्ञान के सञ्चार से ही बढ़ सके हैं वे वहां,
विज्ञान बल से ही गगन में चढ़ सके हैं वे वहां ॥४४॥
विद्या दिनों का पथ पलों में पार है करवा रही,
विद्या विविध वैचित्र्य के भाण्डार है भरवा रही।
गति सिद्ध उसकी हो चुकी आकाश में पाताल में,
है वह मरों को भी जिलाना चाहती कुछ काल में ?॥४५॥
है राष्ट्र-भाषा भी अभी तक देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जना सकें जिससे परस्पर सब कहीं।
इस योग्य हिन्दी है, तदपि अब तक न निज पद पासकी,
भाषा बिना भावैकता अब तक न हम में आसकी ॥४६॥
सुख-शान्ति-मय सरकार का शासन-समय है अब यहां।
सुविधा समुन्नति के लिये है प्राप्त हम को सब यहां।
अब भी न यदि कुछ कर सके हम तो हमारी भूल है,
अनुकूल अवसर की अपेक्षा हूलती फिर शूल है। ४७॥
है ब्रिटिश शासन की कृपा ही यह कि हम कुछ जग गये,
स्वाधीन हैं हम धर्म में;सब भय हमारे भग गये।
निज रूप को भी हम सभी कुछ कुछ लगे हैं जानने,
निज देश भारतवर्ष को अब हम लगे पहचानने ॥४८॥
यद्यपि अभी तक स्वार्थ का साम्राज्य हम पर है बना—
पर दिखाते हैं साहसी भी और कुछ उन्नत-मना
बन कर स्वयं-सेवक सभी के जो उचित हित कर रहे,
होकर निछावर देश पर जो जाति पर हैं मर रहे ॥४९॥
है हीन शिक्षा की दशा, पर दृष्टि उस पर भी गई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैला रहा है धूम हिन्दु-विश्व-विद्यालय नई।
श्रीमालवीय-समान नेता-नृप दरभङ्गा यथा—
देशार्थ भिक्षुक बन रहे हैं धन्य हैं वे सर्व्वथा। ५०॥
यद्यपि कृपण कि अपव्ययी ही हैं धनी मानी यहाँ
सत्कार्य में सर्व्वस्व के भी किन्तु हैं दानी यहाँ।
देशी नरेशों की दशा यद्यपि अभी बदली नहीं
पर सर सयाजीराम-सम आदर्श नृप भी हैं यहीं॥५१॥
री लेखनी! बस बहुत है, अब और बढ़ाना व्यर्थ है
है यह अनन्त कथा तथा तू सर्वथा असमर्थ है।
करके क्षमा की प्रार्थना निज वाचकों से शान्त हो,
कहती हुई—'जय जानकीजीवन'—विदा हो शान्त हो॥

मैथिली शरण गुप्त

(सरस्वती से उद्

—:+:○:※:○:÷:—

विविध विषय

जिन भारत वासियों को भारत सरकारनें दक्षिण अफ्रि सरकार के बारम्बार मांगनें पर भेजा था। आज वहां उन्हें न प्रकार के कष्ट दिये जारहे हैं जिनके स्मरणमात्र से रोमांच हो है। या यूं कहो वहां पर भारतवासियों के लिये नादिरशाही हो रही है मनमाने कानून बनाकर और भारतवासियों को जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं किन्तु कोई पूछ नें वाला नहीं कई वार तो ऐसा हुआ है के वहां के गोरों ने भारतवासियों को जानतक से मार डाला है और अपराधी जुर्माने मात्र से छूट गए हैं।

मज़दूरों को अपनी इच्छानुसार मज़दूरी देते है यदि वह उस मज़दूरी पर काम न करें तो पुलिस उन दीनों की खूब कोड़ों से खबर लेती है और अन्त में जैल में वह भेजे जाते हैं।

इस से ज्यादा और क्या अन्याय और अत्याचार हो सकता है कि जापानी अफ्रिकन आदि अनेक देशों के आदमियों के रहते हुए केवल भारतवासियों के १३ वर्ष के बच्चे तक से ४५) रु० केवल भारत वासी होनें के कारण टैक्स (कर) लिया जाता है।

हमको भारतवासियों के इस असह्य कष्ट और उन पर अनेक अत्याचारों से बढ़ कर इस बात का अत्यन्त दुःख है कि एक महाराज जार्ज की दोनों प्रजा होते हुए भी बह अत्याचारी हमें ऐसा सताते है। कैसा आश्चर्य्य है वहां के शासकों नें माननीय महाशय गोपाल कृष्ण गोपाले से प्रण किया था कि हम भारतवासियों का चित्त दु:खानें वाले आईन न बनावेंगें किन्तु इतना कहनें पर भी हाल में उन्होनें एक नवीन यह आईन बनाया है कि भारतवासी विना परवाना लिये एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में नहीं जा सकें।

एक कमीशन भारतवसियों के दु:खों को देखनें के लिये नियत हुआ है। देखो यह क्या करता है।

जो भारतवासी वहां पर अपने स्वत्वों और मान मर्य्यादा की रक्षा का प्रयत्न करते हैं वह जेल में भेजे जाते हैं।

x:+S-SX:X

आपको यह विदित ही है कानपुर वाल विधवा विवाह सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जानें पर वहां कुछ दिन वाद इसके नाम और सिद्धान्त ही बदल गए थे अर्थात् सभा का नाम वाल विधवा विवाह... रणी सभा और सिद्धान्त विधवा मात्र का विबाह। इस प... गतवर्ष पृथक् वालविधवा विवाह प्रचारणी सभा स्थापित की ...

जिसका पूरा २ बृतान्त अबलाहितकारक में प्रकाशित है ... सैकड़ों पत्र सभाके कार्य्यालय में इस विषय के आए कि सभा के ... करके क्यों वृथा इसकी शक्ति घटाइ गई क्यों कि अवला हितैषी ... श्रोत्रिय शंकर लाल जी की स्वर्गयात्रा के साथ ही इसकी ... नष्ट होगई थी और रही सहीको इस प्रकार दो भागों में विभक्त ... नाश कर दिया।

हम इस वातसे सहमत हैं कि वास्तव में पत्र सभा के ... होजाने के कारण सभाकी शक्ति के कम होने से हानिहुई और होगी ... विवश होकर ऐसा किया गया क्योंकि विधवा मात्र का विवाह शास्त्र ... लोक के भी विरूद्ध है। क्योंकि क्षता तथा सन्तान वाली वि... तथा का विवाह करनेसे हमारा गौरव पतिव्रत कहां रहेगा।।

--,:,०,:':--

भारत वासयों का इस समय मुख्य कर्तव्य देश मे ... न्नति करना है क्योंकि यह देश इस समय भूमण्डल में ... सभ्य देशों से वल, स्वत्रंता, कला, धन, आदि ऐश्वर्यों में ... और नित्य प्रति अधोगति को प्राप्त होरहा है। हाय शोक ... देश में किसी समय नाना देशों से आकर मनुष्य हर प्रकार ... शिक्षा पाते थे वह ही आज विद्या में सब से पीछे है। विशेष ... स्त्रियां तो नाम मात्र को हज़ारों में दो चार ही शिक्षित दि... देती हैं जोकि मनुष्य जाति की में आत्मा के समान है। नीचे ... शीक्षित स्त्रियों की संख्यासे भलीभांति विदित होता है कि ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश या जाति में इस क़दर शिक्षितों की कमी हो वह देश या जाति किस प्रकार स्वतंत्र हो सकती है ।

भारत वर्ष में शिक्षित स्त्रियां

प्रति हज़ार पीछे पढ़ी लिखी स्त्रियों की संख्या

नाम जाति	कुल	प्रान्तिक भाषा	अन्यभाषा
ईसाई	१२५	७४	३१५ (अंग्रेजी
बौद्ध	४२	४२	०
जैन	१८	१७	१ ,,
सिक्ख	७	७	० ,,
हिन्दू	५	४	१ ,,
मुसलमान	३	२	१ (अन्य)

स्वनाम धन्य मानीय मदन मोहन मालवी कई वर्ष से हिन्दू विश्वविद्यालय के लिये अत्यन्त प्रयत्न कर रहे हैं । अभी तक विश्वविद्यालय के लिये पर्य्याप्त चन्दा नहीं हुआ । परन्तु मालवी जी बराबर इस काम में प्रयत्न कर रहे हैं । भारत वर्ष में लगभग ५० करोड़ रु० का प्रति वर्ष दान होता है यदि यह दान भारत के सुधार मे लगाया जाय तब विश्वविद्यालय का कार्य्य शीघ्र पूर्ण होसकता है । इस समय भारत वर्ष में जनसंख्या के हिसाब से विश्वविद्यालायों की बहुत ही न्यूनता है क्योंकि भारत वर्ष में विद्या की इस क़दर न्यूनता है जितने कि भारत के सब विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी है उस से कुछ कम अम्रिका में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक हैं। अर्थात भारत के पान्चों विश्वविद्यालयों में २८००० विद्यार्थी है और अम्रिका में २४००० अध्यापक हैं।

अन्नत देशों की विद्योन्नति देखने से पता लगता है उनकी उन्नति का एक मात्र कारण शिक्षा है।

उन्नत देशों मे निम्न लिखित विश्वविद्यलय हैं

नाम देश	विश्वविद्यालय की संख्या
विलायत (U.K)	१८
अम्रिका (U.S.A.)	१३४
फ़्रांस	१५
जर्मन	२२
इटली	२१

इन प्रसिद्ध पांच देशों की कुल जन संख्या २४८५८३३ पचीस करोड के लगभग है जिन में २१० विश्वविद्यालय हैं।

परन्तु हमारे भारत बर्ष की ३१ करोड़ जन संख्या होते भी यहां पर केवल पांच विश्वविद्यालय हैं। ऐसी दशा में इसकी जो दुर्गति न हो थोड़ी है

न जानें दैव को भारत वर्ष से किस कारण द्वेष है हाय जो भारत वर्ष की सेवा के लिये खड़ा होता है--उसे वह देख नहीं सकता थोडी ही आयू में वह काल का ग्रास होजाता है हम अवलाहितैषी श्रोत्रिय शंकर लाल जी, अद्वितीय वक्ता गणपति शर्म्मा, तथा श्रद्धास्पद सर्वस्वत्यगी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी को भूले ही न थे कि होनहार युवा पं० इन्दु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी स्वर्ग सिधारे इनको अभी कुछ मास भी नहीं बीते थे कि स्वामी नित्यानन्द सरस्वती भी इस संसार से विदा हुए। यह आर्य्य समाज में अद्वितीय वक्ता तथा विद्वान् थे। साम्प्रदायिक भेद होते हुए भी सुधारक और परोपकारी की हैसियत से हम उक्त स्वामी जी का विशेष सन्मान करते हैं।

एक बंगाली सज्जन ने किसी पत्र द्वारा बंगाल के नवयुवकों को सम्मति दी है जिस प्रकार बैरिस्टर पालित ने १५ लाख और डाक्टर घोस ने १० लाख रु० शिक्षा प्रचार के लिये दान किया है। क्या इसको देख कर तुमने कभी सोचा कि क्या हम में भी ऐसा करने की योग्यता है।

यदि तुम उचित मार्ग से चलो तब क्या आप इतना नहीं कर सकते अवश्य कर सकते हो। यदि तुम पान तमाखू सिगरट आदि शौकीनी वस्तुओं का अपव्यय तथा थियेटर देखने की बुरी आदत छोड़ दो तब महाशय पालित और डाक्टर घोस ने देशोन्नति के लिये जितना दान किया है उस से कहीं अधिक दान तुम्हारे द्वारा हो सकता है।

केवल कलकत्ते में ही दस हज़ार से अधिक विद्यार्थी हैं। दस हज़ार के औसत से हर एक विद्यार्थी नित्य प्रति एक पैसे रोज़ से कम पान बीडी में खर्च नहीं होता होगा। हिसाब लगाकर देखो कि सावधानी से काम लेने पर एक २ पैसे से कितनी बड़ी रक़म होसकती है। विद्यार्थी पीछे एक पैसा नित्य खर्च होने से दस हज़ार विद्यार्थीयों में प्रति दिन १५७५ पान बीडी में खर्च होते हैं एक महीने में यह रक़म ४६८३।")होती है साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर में ५६२५० रु० और दस वर्ष में साढ़े पांच लाख के क़री होती होते हैं ।

बारिस्टर पालित और डाक्टर घोस ने २० वर्ष अदालत वकालत करके द्रव्योपार्जन किया होगा । २० वर्ष में दस विद्यार्थ ११लाख रु० दान कर सक्ते हैं केवल एकपैसा रोज़ अपनी फ़ज़ू खर्ची से बचाकर इतनी बड़ी रक़म थोड़े दिनों में ही बचा देशोपकारक कार्य्यों में लगाई जासकती है बहुत लोग कहेंगे ऐसा होना अत्यन्त कठिन है क्योंकि इस तरह पैसे कौन एकत्र करेगा । इसका सरल उत्तर यह है विद्यार्थी स्वयं करके आत्मत्य दिखावें । इस से फज़ूलखर्ची घटेगी और विद्यार्थियों के ब्रह्मचर्य की रक्षा होगी । इस सम्मति पर देश भर के विद्यार्थियों अन्ययुव तथा युवतियों को ध्यान रखना चाहिये

वास्तव में यदि हमारे देशवासी अपनी फ़ज़ूल खर्ची बन्द करदें और वह रुपया देशोपकारी कामों में लगावें तब देश बहुत कुछ सुधार होसकता है ।

इस समय तक लेखों की ही चोरी का कोलाहल मचा रह था किसी पुरानें या नए अखबार से अथवा किसी अन्यभाषा लेख लिया और किसी समाचार पत्र को भेजदिया बस लेख बनगए लेखों की चोरी के विषय में सरस्वती आदि में प्रायः लेख निकलते रहते हैं किन्तु इतनें पर भी लेखक ध्यान नहीं देते हम को एक आद समाचार पत्रों के विषय में नवीन और आश्च र्य्य जनक बात मालूम हुई है—कि एक आद पत्र हिन्दी के है जिनके नामसे वह सम्पादित होते है वह शायद उन पत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा को भी कठिनता समझ सकते है। इनमें प्रायः स्त्री शिक्षा के पत्र हैं जोकि स्त्रियों के नाम से प्रकाशित होते हैं।

हम ऐसे झूटे नाम धारी सम्पादकों से प्रार्थना करते हैं कि वह कृपाकरके देवनागरीको इस कलंक से वंचित रक्खें।

S:X÷:S:X

चार पांच वर्ष हुए जब कि महामहोपाध्याय पं० रामामिश्र शास्त्रीजी के पुत्र पण्डित केशवजी नें अपना विधवा से विवाह करने के लिये विज्ञापन दिया था जिस परश्रीवेंकटेश्वर आदि सहयोगी बहुत बिगड़े थे और उक्त पण्डित जी ने भी लिखा था कि विधवा विवाह के प्रचारकों नें मुझे बहकालिया था और मेरी तरफ से झूटा विज्ञापन निकाल दिया था। जहां तक हमको स्मरण पं० जी अदालत में दावा तक करने को तैयार थे किन्तु ईश्वर जानें वह क्यों उक्त अवसर पर शान्त होगए थे।

कुछ दिन हुए हम प्रयाग गए थे वहां पर यह सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ कि वहां उक्त पण्डित जी की माता कीटगंज या मुट्ठिगंज के मिशनस्कूल में रोटी बनाती हैं और पास के ग्रामों से घृत आदि लाती है और उसे बेच करके अपना पालन करती हैं।

हम अपने प्रिय मित्र पं० केव देव जी तथा उनके हिमायती सहयोगियों और महाराज काशी का इस ओर विशेष ध्यान दिलाते कि वह स्वर्गीय पं० जी की पत्नी को वृद्धावस्था में किसी प्रकार का कष्ट न होनें दें। आशा है महाराज काशी इस विषय र ध्यान देंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्याग्रहकी लडाई

लोकमान्य गान्धी दक्षिण अफ्रिका के सरकार से तन, ईमीग्रेशन कायदे मे सुधार करने के लिये जो पत्र व्य होरहा था। अन्त में उसकी समाधानी न हुई और सत्याग्र लड़ाई आरम्भ होगई। सबसे पहले १६ मनुष्यो की एक टो दरवन से प्रस्थित हुई। इस टोली में चार स्त्रियाँ भी थीं, गान्धी, दूसरी मीसेज छगन लाल गुजराती सम्पादक 'इन्डियन पिनियम, तीसरी मीसेज डाक्टर माणी लाल वारिस्टर और मीसेज मगन लाल।

जब यह १६ मनुष्यों का समूह ट्रांस वाल की सीमा में तो इमीग्रेशन आफिसरने आकर पारमीट (सनद) मांगा। न दिखाने पर प्रत्येक को तीन २ मास का सपरिश्रम कारावा दन्ड मिला। इसके पश्चात् विहिया के निकटवर्ती ग्राम के निवासी मि० वद्री के साथ चार मनुष्यों का एक दल करस्ट में आया पर ट्रांसबाल के परवाना न दिखानेपर मनुष्यों को भी पुर्वोक्त दन्ड मिला। ता: २८ सितम्बर को ट्रांस बृटिइशइन्डियन ऐसोसियेशन का विशेष अधिवेशन मिस्टर लिया के सभा सभापतित्त्व में बडे समारोह से समपन्न हुआ लोकमान्य गान्धा, मी० एल० डवल्यू० रीच वारिस्टर मि० केलन मि० जोसफ रायपर बारिस्टर मी० भवानी दयाल सिंह रिपोटर—रेन्ड डेलीमेल, मीस सिलजिन-रिपोर्टरइन्डियन ओपि आदि प्रतिष्ठित सज्जन्न उपस्थित थे। सभा मे यह प्रस्ताव हुआ कि सत्याग्रह की लड़ाई चलाई जाय। सभा विर्सजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर 'इलूस्ट्रेटेडस्टार,के सम्वाददाता ने सभा का चित्र उतार लिया।

ता° ३० सितम्बर को भी सुरेन्द्र नाथ मेढ़,प्रागजी देशाई और मास्टर मणिलाल गान्धी विना परवाने के फेरी करते पकड़े गये और प्रत्येक को एक एक सप्ताह के कठिन कारागृह का दन्ड मिला ।

ता° ३० सितम्बर को मिसेज भवानी दयाल जेर मीस्टनसे जो हांसवर्ग गई । वहां लोकमान्य गान्धी से भेट की । लोक मान्य गान्धी और मिसेज भवानी दयाल से निम्न प्रकार वार्तालाप हुआ।

लोकमान्य गान्धी—कहिये आप को जेल जाना है

मिसेज भवानीदयाल—जी हां प्रसन्नता पूर्वक

लो° गान्धी—जेल में सुन्दर वस्त्र न मिलेगा ।

मीसेज भवानीदयाल—मुझे जेली कपड़ा स्वीकार है ।

लो° गान्धी—वहां स्वादिष्ट भोजन न मिलेगा ।

मिसेज भवानीदयाल—मैं जेल के भोजन को ही मोहन भोग समझूंगी ।

लो° गान्धी—वहां बड़ा परिश्रम करना पड़ेगा ।

मिसेज भवानीदयाल—मैं सब प्रकार का कष्ट सहन करनेको तैयार हूँ ।

लो° गान्धी—तुम क्यों जेल जाती हो ।

मिसेज भवानीदयाल—अपने हक्क के लिये ।

लो° गान्धी—तूम्हारा क्या हक्क मारा गया है ।

मिसेज भवानीदयाल—नया क़ायदा बना है उसके अनुसार भारतीय महिलाएँ रखेली समझी जांयगी ।

लो° गान्धी तुम प्रसन्नता पूर्वक जेल जाकर भारत के यश और कीर्ति का विस्तार करो इस के पश्चात् मिसेज़ भवानीदयाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामिल वेनीफीट, सोसायटी के सभापति मिस्टर ना
के घर पर गई सत्या ग्रही महिलाओं का एक
भोज था। उसी दिन इन्डियन ओपिनयन के फोटोग्राफ
अपने पत्र में प्रकाशित करने के लिये सत्याग्रही स्त्रियों
चित्र उतारा जो अनेक पत्रों में प्रकाशित हुआ है। फि
ता० २ अक्टूबर को मिसेज भवानीदयाल के साथ
महिलायें और १० बच्चों का एक दल जेल जाने के लि
फरीस्टेठ को रवाना हुआ। इन बच्चों में पं० भवानीद
का एक बालक १ वर्ष का आर० डी० वर्मा भी अ
माता के साथ गया है। इन सत्याग्रही महिलाओं को वि
के लिये पार्क स्टेशन पर भारतीय जनता का बड़ा
जमावड़ा था। रेड डेलीमेल, रीडर, स्टार, इन्डियन ओ
नयन, क्रोनिकल आदि समाचार पत्रों के रिपोर्टर
स्टेशन पर विद्यमान थे। महिलाओं के साथ मिस्टर केल
इनजीनियर गया। ता० ४ अक्टूबर को रुटर की सूचना
कि मिसेज भवानीदयाल आदि महिलायें फ्रीस्टेट में
कर चुकीं पर वहां के कर्म्म चारियों ने इन लोगों को स
ग्रही जान कर छोड़ दिया। इस पर सत्याग्रही स्त्रियों
बड़ा खेद हुआ। अब जेल मे जानें के लिये उन्होंने ए
उपाय निकाला है अर्थात् बिना परवाने के फरीस्टेठ
फेरी कर रही है। सम्भवत: अब पकड़ ली जायंगी। ता०
दिसम्बर को जेमीस्टन प्रवासी भारतवासीयों की एक
जनिक सभा हुई।

सभा पति का आसन श्रीयुत लाल बहादुर सिंह ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया सर्व सम्मतिसे सत्याग्रह सम्बन्धी लड़ाई चलानेका प्रस्ताव पास हुआ। सभा पति की ओर से पं० भवानी दयाल को एकटी पार्टी दी गई। पं० भवानी दयाल नें प्रतिज्ञा कीकि मै जेल को महल समझ कर अपनी इज्जत आ-वरु पर अपनी जानको कुर्बान कर दूँगा पर इस जुल्मी कायदे के आगे कभी न सिर झुकाउँगा। ता० ६ अक्टूबर को पं० भवा-नी दयाल के साथ कतिपय सत्याग्रही जेलजाने के लिये जो हास-वर्ग को प्रस्थान किया और तीन मास के लिये जेल भी गये। इस विषय पर लार्ड एम्पथील और बम्बई के भूत पूर्व गवनर लार्ड सीनडनहम ने इंगलैंड के हौस आफलार्डस,मे भारत वासियों की सहानुभूति मे व्याख्यनादियाहै। हमारे प्रजाप्रिय वाइसराय लार्ड हारार्डिंज अपने भारतीय प्रजाकेअभाव अभियोग को पूरा करने के लिये यूनियन सरकारसे लिखा पढ़ी कररहे हैं। आनरेबल गोपाल कृष्ण गोखले इसविषय पर पूरा आन्दोलन कररहे है आशा है कि भारत वासी मात्र इस काममे सहायता देकर अप-ने दक्षिण प्रवासी भाईयों का दुख निवारणार्थ प्रयत्न करेगें।

———

(आर्य्यावर्त सें)

राजकुमारी संयोगता

राजकुमारी संयोगता कन्नोज के महाराज जयचन्द की पर-म रुपवती और गुणवती कन्या थी। उस समय कन्नोज का राज्य वहुत बढ़ा हुआ था परन्तु जब महाराज पृथीवीराज चौहान को जो राजा जय-चन्द के मौसेरे भाई थे अपने अजमेर के पैतृक राज्य के सिवाय अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाना अनंगपाल तंवर का दिल्ली का भी राज्य मिल गया। तो इनका वैभव भी जैचंन्द के समान होगया। इससे जयचन्द के हृदय में द्वेष उत्पन्न हुआ फिर जब पृथ्वीराज ने अश्वमेध यज्ञ किया तो और भी ईर्षा द्वेष बढा। इसलिये अधिक महत्व प्राप्त करने की इच्छा से जय[चन्द] ने अब राजसूय यज्ञ किया।

इस यज्ञ मे पृथ्वी राज और रावल समरसी के सिवाय भारत के स[ब] राजा उपस्थित हुए जयचन्द ने इन कोअन्य राजाओ के सम्मुख अपमा[नित] करने केलिये इनकी सुवर्णमूर्ती बनवा कर एक को डयौढ़ीपर और दू[सरी] जूठे वर्तन माजने के स्थान पर खड़ा करदिया। यज्ञ के पीछे जय[चन्द] राजकुमारी संयोगता का स्वयम्बर करने का विचार किया। पृ[थ्वी] राज ने जब यह बात सुनी तो यज्ञ को नष्ट करने और राज कुमारी [को] वलात् लेजाने की प्रतिज्ञा की।

संयोगता ने जब से पृथ्वी राज की वीरता साहस और परा[क्रम] की प्रशंसा सुनी थी तब से इसने इन्ही से विवाह करने का दृढ़ नि[श्चय] किया था उसने समझ लिया था कि मेरे पति होने के योग्य वही पर[म] महाराज हैं जब राज कुमारी जयमाल लेकर राज सभामे आई तो अ[पने] पिता की प्रसन्नता और अप्रसन्नता का कुछ विचार न करके सब सभा[के] सामने हो कर आगे को वढती चली गई और पृथ्वी राज की मूर्ति [के] गले मे जयमाल डालदी पृथ्वी राज एक दिन अचानक कुछ सैनि[क] सवारों और सर्दारोको साथ लेकर कन्नौज के महलों से संयोगता [को] वलात् दिन दहाडे लेचले। ५ दिनतक वरावरकन्नोज् से दिल्ली तक रा[स्]ते में घोरयुद्धहुआ पृथ्वी राज दिल्ली को चले जाते थे और कन्नौ[ज] की सेना इनका पीछा करती जाती थी। पृथ्वी राज ने राज कुमारी [को] नही छोडा और अपनी शूरवीरता का पूर्ण परिचय दिया परन्तु दिल्ली का वल नष्ट कर दिया और राजा जयचन्द ने भी कन्नोज की शक्ति [को] न करदिया इसी स्वयम्वर के पश्चात् दिल्ली और कन्नौज के राजा[ओं] की शत्रुता इतनी बढ़ी कि दोनो का ऐश्वर्य्य अन्त मे नष्ट होगया और आर्य्यों की स्वतंत्रता का सूर्य्य अस्त होगया। पृथ्वी राज के बहुत योद्धा और शूरवीर सामन्त इसग्राममे काम आये परन्तु वह कुशलपूर्वक ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूंक्ता को दिल्ली लेगये पुरातत्ववेत्ता पर्न्ड कनिंगहम साहाव लिखते हैं कि यह संग्राम सन् ११७५ में हुआ अन्यथा इनका पुत्र रायनसी जो मुसलमानों से लड़कर मारा गया शस्त्र वांधने योग्य न होता।

जवसे कि पृथ्वी राज संयुक्ता को लेकर दिल्ली आये तब से उन्हें रोज़ काज का कुछ ध्यान नरहा दिनरात अपनी इस नवोढा रानी के संग विषय-विलास में निरत रहने लगे। इसप्रकार वहुत समयआनन्दविलास में व्यतीत हो चुको तब राज दूतों ने आकर समाचार दियो किमहाराज, मोहम्मद गोरी की सेना चली आती है यह सुनकर महारानी ने उपदेश दिया है प्रियतम यह समय भोगविलास का नही है आप क्षत्रिय है अस्त्र शस्त्र संभालिये संग्राम की तैयारी कीजिये क्षत्रिय के लिये अपने वंश देश और मान मर्यादा के लिये प्राण देडालना मत्यु नही कहातो वरन संसार में सुयश प्राप्त करके अमर होना है।

संसार में क्षत्रिय के लिये कीर्ति और परलोक का विचार सर्वोपरि है। यदि रणभुमि में आप शरीर भी त्याग करदें तव मैं भी आपके साथ स्वर्ग चलूँगी अब आप युद्ध के लिये सन्नद्ध हूजिये और शत्रुओं का संहार कीजिये पृथ्वीराज रासों के लेखानुसार वह सात वार पृथ्वीराज से हार चुका था अव ८ वीं वार दो वर्ष तक सेना सँभाल और जयचन्द से मेल करके १२०००० सेना साथ लेकर वदला लेने के लिये फिर हिन्दुस्तान में आया था। मुसल्माननों की सेना केगर नदी के तट पर उतरी इधर पृथ्वी राज भी शीघ्रही संग्राम की तैतारी कर युद्ध के लिये उद्यत होगये। अपने मेल के सब राजाओं को सहायता के लिये बुला कर दिल्ली में सम्मति करने के लिये राज सभा की कि किस उपाय से शत्रु सेना को पराजित करें सबकी यह सम्मति हुई कि आगे चल कर ही रण में शत्रुओं को पराक्रम दिखावें युद्ध में जाते समय पृथ्वीराज क्षत्रिय कुल की रीत्यनुसार अपनी माता बहिन और स्त्री से युद्ध के लिये बिदा होने गये क्षत्रियों में रीति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि सब स्त्रियां अपने पुत्रों और पतियों को ऐसे समय में उप-देश देतीथीं कि देखो रण से न हटना यदि युद्ध से पीछे हटे तो संसार में मुख दिखाने योग्य न रहो गे फिर जीना संसार में कठिन हो जायगा सब हमारी निन्दा करेंगे, जिस से मृत्यु ही भली है।

जब पृथ्वी राज अपनी प्यारी रानी संयुक्ता से मिलने आये तो दोनों में बोलने की शक्ति न रही रानी स्थिर दृष्टि से राजा को देखती ही रही अपनी प्राण प्यारी के हाथ से सोने के पात्र में जल पीकर राजा युद्ध वाद्य को सुनकर चल दिये संयोगिता सती थी, उसे रणवाद्य का भयंकर शब्द सुनते ही भास गया था कि इस युद्ध में मेरे प्राण नाथ वीरगति को प्राप्त होंगे। उन्होंने धैर्य धारण करके पति को युद्ध के लिये विदा किया और चलते समय कहा युद्ध में अच्छी तरह पराक्रम दिखाईये विजय प्राप्त होने पर यहां आनन्द से मिलें गे वरन् स्वर्ग में जाकर मिलेंगे फिर अपने मनही मन में कहा हे योगनीपुर। (दिल्ली का यह एक पुराना नाम है)मैं तुझ से जल्द ही विदा होऊँगी अब मैं अपने प्रियतम से स्वर्ग में जाकर मिलूंगी यहां अब उनका दर्शन मिलना कठिन है। अन्त को वही बात हुई जिसको वह पहले समझी हुई थी। मुसल्मानों की जय हुई और पृथ्वीराज

शत्रुओं के हाथ में पड़ कर मारे गये यह खबर सुनकर रानी संयुक्ता तत्काल सती होने को तैयार हुई और सब के देखते ही देखते जलती हुई अग्नि में बैठ कर भस्म होगई।

जिस दिन से उन्हों ने पति के मारे जाने का समाचार सुना था उस दिन से सती होने तक के समय तक केवल ३ उतनाही जल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी कर जीवित रहीं जो राजा चलती बार जल्दी में सुवर्ण पात्र में पीकर छोड़ गये थे। कवि चन्द ने पृथ्वी राज रासो का एक खन्ड इस पतिव्रता रानी के सती होने और शरीरिक कष्ट सहने के वर्णन में लिखा है।

कुछ ऐतिहासिक पुरुषों की सम्मति है कि संयुक्ता अपने पति महाराज पृथ्वीराज का सिर गोद में लेकर सती हुई। किन्तु यह प्रमाणिक नहीं मालूम होता क्योंकि पृथ्वीराज रासो के अनुसार शहाबुउद्दीन गोरी पृथ्वीराज को क़ैद कर के ग़ज़नी को लेगया था और उन्हें अन्धा कर दिया था।

एक वार वहां पर पृथिवीराज की शब्दवेधी बाण की परीक्षा हुई तब जय चन्द से संकेत पाने पर पृथिवीराज ने शहाबुउद्दीन गोरी के तीर मारा जिस से वह तत्क्षण मर गया और पश्चात् पृथिवीराज मारे गए।

पृथिवीराज के साथ ही हिन्दुओं का राज्य सूर्य्य अस्त हो-गया और भारत में फ़िर यवन पताका फहराई।

श्रीयुत सम्पादक जी! अबला हितकारक

कृपा करके निम्न लिखित विषय को अपने अमूल्य पत्र में छाप कर कृतार्थ करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में दान का सुधार ।

इस में संदेह नहीं है कि भारतवर्ष में दान का विषय बहु
विगड़ा हुआ है । शास्त्रों में विद्या दान सब से उत्तम कहा
है, चूँकि साधुओं, ब्रह्मणों और अतिथियों का कर्तव्य विद्या
प्रचार और देश सेवा थी, इसलिये येही लोग दान के
माने गये हैं । जब तक इस देशमें विद्या की उन्नति रही
ये महात्मा लोग विद्वान होकर अपने सत्य कर्तव्य का पालन करते
परन्तु विद्या के लोप होजाने से ये लोग भी मूर्ख बनकर
कर्तव्य को भूल गये और केवल नाम के साधु ब्राह्मण रह
गत सन् १९११ की मनुष्यगणना के अनुसार ५९ लाख म
साधु या भिक्षुक बतलाये गये हैं जैसे कि साधारण लोगों
राजा और रईस हैं वैसे ही इस साधुमण्डली में भी बहु
धनवान् हैं जिनकी अमदनी लाखों रुपये साल की है जैसे
गया की सालाना आमदनी एक लाख से ज्यादा है लखनऊ
साधु हजारी बाग के रियासत की आमदनी साढे तीन लाख
सालाना है, इसी तरह स्वामी शंकराचार्य के मठों और अ
साधुओं के अखाड़े रियासतों और रईसों से लाखों रुपया दा
पाते हैं । क़रीब दो करोड़ भारतवर्ष में ब्रह्मणों की गणना
इस में से फी सैकड़ा ५ ऐसे हैं जो स्वयं व्यापारादि उत्तम
से धन उपार्जन कर आजीविका करते हैं बाकी सैकड़ा पौं
केवल दान ही पर निर्भर हैं । यदि ४) फी मनुष्य का माह
पोषण पालन का खर्च हो तो ८ करोड रुपया माहवारी ब्राह्म
लोग केवल दान में लेते हैं । इसके अतिरिक्त ५९ लाख सा
के पोषण में भी क़रीब २ तीन करोड रुपया माहवार हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्च करती है क्योंकि साधु लोग पोषण के अलावा भारतवर्ष के तमाम तीर्थों में प्राय: रेलगाड़ी के द्वारा भ्रमण करते हैं इसलिये हर एक साधु पर ३) माहवार से कम खर्च नही पड़ता क्योंकि प्राय: साधु लोग तमाकू गांजा, चरस, अफीम आदि पदार्थों के सेवन में लिप्त हैं। इस तौरपर दस करोड़ रुपया हर महीने भारत वर्ष का दान में खर्च होता है। अब प्रश्न यह है कि दस करोड़ रुपया माहवारी दान के बदले हिन्दू जाति को कितना लाभ पहुँ-चता है। इन साधु और ब्राह्मणों में सैकड़ा पीछे एक भी अपने शास्त्रोक्त कर्तव्य का पालन अर्थात् विद्या की उन्नति, स्वदेशी वस्तु का प्रचार और देश भक्ति नहीं करता। इन में साधु और ब्राह्मणों का इतना दोष नहीं है जितना कि दान देने वाले लोगों का, क्योंकि कुपात्रों और मूर्खों को दान देना इन लोगों को सुस्त और दुचारी बनाना है और इसी कारण कुपात्रों और मूर्खों को दान देनेवाले भी पापके भागी हैं, क्योंकि यदि दान देने वाले इन मूर्ख साधुओं और ब्राह्मणों को दान न देते तो कदापि यह लोग दूचारी न होते, निस्संनदेह वहुत से लोग भिखारी बन गये हैं, और भिक्षा मांगना इन्होंने अपना एक पेशा बना रक्खा है। अब ये लोग भिक्षा मांगते समय लोगोंको तंग और दिक करते हैं। यूरुप और अमेरिका आदि सभ्य देशोंमें नियम है कि भीख मां-गनेवाले को ६ महीने की कैद होती है क्योंकि वह सभ्य जातियां अपने देश में सुस्ती और दुराचार फैलाना नहीं चाहतीं। मगर भारतवर्ष में कानून के द्वारा भीख मांगना बन्द कराने का यत्न करना बहुत ही बुरा है, क्योंकि दानका विषय एक धार्मिक बात है इसलिये धर्म की बातों में सरकार कभी दखल न देगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार से धर्म के विषयोंमें प्रार्थना करना अपनी मूर्खता औ
अयोग्यता बतलाना है। इसके सिवाय यदि भीख मांगना, अ
सभ्य देशों की नाईं जुर्म माना जायगा तो पुलीसको जो अ
मूर्ख और असमर्थों पर बहुत जुल्म कर रही है इसको साधु
और ब्राम्हणों पर जुल्म करने का अधिक मौका मिलेगा।

इसके सिवाय भारतवर्ष में भिक्षुकों की गणना जियादा ह
का कारण यह भी है कि इस देश में सब प्रकार के लाभदा
व्यापार और कारखाने बिलकुल बंद होगये हैं जिससे य
के लोगों को आजीविका नहीं मिल सकती। और सब
देशों और जातियों में हर एक चीज़ के कारखाने कायम हैं
कारखानों की बनी हुई चीजे संसार के हर एक देशमें भेजी
हैं। और इन्हीं कारखानों में हर एक देश के सैंकड़ा पीछे द
आजीविका प्राप्त करते हैं इन्हीं कारखानों से यह सब देश
जातियां करोड़ों अरबों रुपये हर महीने पैदा करके धन पैदा
रहीं हैं परन्तु भारतवर्ष में विदेशी व्यापारियों ने यहां के
कारखानों और लाभदायक व्यापारों को नष्ट कर दिया है
से कि लोग या तो नौकरी करते हैं जो कि शास्त्रों में सब से
मानी गई है क्यों कि लिखा है "उत्तम खेती मध्यम
निकृष्ट चाकरी भीख निदान" या भीख मांगने से लोग
लन करते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि यहां के म
और रईस अन्य देश की बनी हुई चीजों के गुलाम बन
और इसी कारण यहां से हरसाल दो सौ करोड़ रुपया
विदेशी लोग बाहर ले जाकर इस भारतवर्ष को निर्धन
हैं। इसी से देशमें पाप जियादा बढ़नेके जिम्मेवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेशी चीजों को छोड़ विदेशी चीजें वर्तते हैं, बस निश्चय हुआ कि वे लोग धर्मात्मा या धर्म के रक्षक हैं जो केवल स्वदेशी चीजोंको वर्तते हैं, ताकि इस देशमें फिर सब प्रकार के कारखाने स्थापित होजावें जिनसे सब लोगों को आजीविका प्राप्त हो और फिर हमारा सारा दान विद्या की उन्नति अर्थात् ग्राम २ में पाठशालायें और हर एक मंदिर और धर्मशाला में पुस्तकालय और समाचार पत्रालयों के खोलने में लगे ताकि फिर भारतवर्ष जापान और अन्य देश और जातियों की न्याई स्वतन्त्र धनवान सभ्य और धर्मात्मा बने।

टहलराम, गंगाराम ज़मींदार,
डेराइस्माइल खां।

मेरा अत्याचारी जीवन

(गतांग से आगे)

बाबा जी की इस बात को सुनकर मैंनें कहा—बावाजी मै तो आपका दास हूँ जो मेरे करनें का जो काम होगा बडी प्रसन्नता से करूँगा।

यह सुनकर बाबाजी नें मेरी कमर ठोक कर स्य'वासी दी और कहा अच्छा म तुम को अपना आदमी समझकर अपने दिल की गुप्त बात तुम से कहता हूँ देखो किसी से कहना नहीं तुम जानते हो कुछ दिन से यहां पर सेठ लक्ष्मी दास की पुत्री नित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाकुर जी के दर्शन करनें के लिये आया करती है । वह बहुत खूबसूरत है, उसनें हमारा चित्त चुरालिया है देखो उसकी आंख कैसी सुन्दर है और होठ कैसे पतले हैं । तुम हमारी उससे एक बार बात करादो तो बड़ा ही अहसान हो । क्योंकि यह सुन्दरता के साथ ही बहुत मालदार है यदि यह वश में होगई तब खूब भोग विलास होगा ।

मैं पहिले ही से इसके सौन्दर्य्य पर मोहित था और इसके पाने के लिये चेष्टाएं कर रहा था; बाबाजी के इस प्रकार कहनें पर मेरा पापी चित्त और भी ज्यादा इस ओर होगया । बाबाजी की इस प्रकार की बातें सुनकर मैंने बाबाजी की हांमें हां मिला कर कहा ठीक है यदि यह सुन्दरी वश में आजाय तब बहुत ही अच्छा है परन्तु इसका वश में आना कठिन मालूम होता है क्योंकि वह रात दिन ईश्वर भजन में ही रहती है फिर भला वह क्यों माननें लगी है

यह सुनकर बाबाजी नें उत्तर दिया यह तो ठीक है मगर तुम जानते हो कि वह युवति है युवावस्थामें काम का वेग होता है और वह तो उत्तमोत्तम भोजन खाती होगी फिर क्यों न वह काम से पीडित होगी और यदि यह भी मानलो कि उसकी इच्छा न हो तब हमारी क्या चातुरी रही । इत्यादि ।

इस पर मैंनें बाबाजी से पूछा कि आप ही कोई युक्ति बताइये जिससे यह काम शीघ्र ही सिद्ध हो । बाबाजी ने कहा कि तुम अब मन्दिर में पूजा किया करो वह नित्य आकर ठाकुरजी की परिक्रमा करती है जब कभी अकेली पाओ परिक्रमा के अन्दर पकड़ लेना मैं भी इस ही की ताड़ में रहूँगा और कुछ देर बाद वहां आजाऊंगां बस तुम चले जाना फिर मैं भी आजाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार मैंनें और बावाजी नें उस बेचारी सती का बलात् सतित्व नष्ट किया। इस के पश्चात् कुछ दिन तो वह अखाड़े में न आई।

तब मुझे और बावाजी को अत्यन्त चिन्ता हुई कि कहीं उसनें जाकर अपने पिता से न कहदिया हो जिससे बदनामी हो और इस सुर सुन्दरी का दर्शन भी न हो। कई दिन हम इसही चिन्ता में रहे जब बावाजी और मैं अकेले होते तब यहही जिक्र होता था।

जब इसको न आए एक मास के क़रीब होगया और किसी प्रकार की कोई बात न सुननें में आई तब हमें पूर्ण विश्वास होगया कि उसनें लज्जा से किसी से कुछ नहीं कहा केवल आना ही छोड़ दिया है।

तब हम दुबारा इसके अखाडे में आनें कें लिये अनेक प्रयत्न करनें लगे। एक दिन इसके पिता सेठ लक्ष्मी चन्दजी बावाजी के पास आए तब बावाजी ने इनसे कहा तुम्हारी लड़की बड़ी ही सीदी है युवास्था में ईश्वर में कैसी प्रीति हैं यहां आकर ठाकुरजी की सौ २ परिक्रमा नित्य करती।

यह सुनकर सेठ लक्ष्मी चन्दनें कहां जी हा सब आपकी ही संगति का फल है मैं अभागा तो कहां इस योग्य हूँ। इसी प्रकार आपस में करीब दो घंटे तक वार्तालाप होता रहा जब यह चलनें को तैयार हुए तब बावाजी नें कहां सेठजी आजकल आपकी पुत्री कहां पर है कई दिन से देखी नहीं। सेठजी नें कहा आजकल यहां पर ही है शायद न आई होगी।

यह सुनकर बावाजी नें उन्हें बैठा लिया और नाना प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उपदेश देते हुए वोले देखो सेठजी यह समय बड़ा ही
इसमें बड़ी सावधानी से रहना चाहिये वह
है टाली रहना ठीक नहीं ऐसा करो जहां तक हो
समय भगवत्भजन में ही व्यतीत हो तो अच्छा है क्यों
बड़ा ही चँचल है न जानें कब किस तरफ चलाजाय
सत्संगति में रहना चाहिये इत्यादि ।

यह उपदेश सुनकर सेठजी ने कहा ठीक है
समय बड़ा ही खराब है मैं नित्य आपकी सेवा में
करूंगा शायद अब गर्मी वगैरा के कारण न आती
प्रकार कह कर सेठजी चले गए । तव हमको निश्च
कि अब काम वनगया ।

वह फिर अगले दिन से आने लगी किन्तु अपने
बूढ़ी स्त्री को नित्य लाती थी ।

इस समय केवल उसके दर्शन ही होते थे शेष
बुरी हालत रहती थीं ।

तव हमने सम्मति करके बुढ़िया को लालच
बेमारी का वहाना करके उसके साथ आना छोड़
अब हमारा काम वन गया दो चार दिन तो
किया फिर तो वह स्वयं आने लगी

और फिर इससे यहां तक प्रेम बढ़गया कि
आना जाना शुरु होगया ।

हाय मुझ अधम को यह अपना धर्मभ्राता
मैं पापी जैसा था परमात्मा किसी को न करे ।

कुछ दिन वाद इसको गर्भ रहगया तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितैषी समझ अपने साथ गर्भ गिराने के लिये तीर्थ यात्रा को चली। मैं महीना भर तो इसके साथ रहा एक दिन मौका पाकर उसका सब द्रव्य और आभूषण ले और उसे धर्मशाला में अकेली छोड़ कर काशीसे लखनऊ गाया।

हाय २ अब मेरे अत्याचार राक्षसरूप धारण किये मुझे सता रहे हैं हाय मैं अपनी मनो वेदना किस से कहूँ अरे रे मैंने क्या किया हाय उस वेचारी निरापराध अबला के ऊपर क्या २ आपत्तियां पड़ी होंगी हाय मैंने उस साध्वी का सतित्व भी नष्ट किया और उसका कुछ साथ भी न दिया। हाय मुझे याद आया मैंने सुनाथा कि फिर वह वेचारी मुसल्मान होगई थी।

अब मैं अपने और दो एक अत्याचारों को सुनाकर आपका समय बृथा खोना नहीं चाहता।

लखनऊ में आकर मैंने उस रुपए से खूब वेश्या गमन और मद्यपान कियाँ जब यह रुपया समाप्त होगया तब मैं फिर साधु होगया और इस वेष में मैंने संसार के सब बुरे काम किये।

एकबार तो एक विद्यार्थी के साथ मैं पकड़ा गया और मैंने डेढ साल की जेल भी काटी। किन्तु फिर साधु होगया और मैंने अनेक अत्याचार किये।

ऐ प्यारे पाठको मुझसे अधम आज साधु मंडल में लाखों हुए भरे हैं। अतः अपने धन और सन्तानों की इन दुष्टों से रक्षा करना।

आपका शुभचिन्तक

अत्याचारी साधु---

रूपधारी अधम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

कन्यासर्वस्व—यह मासिक पत्र श्रीमती यशोदा देवी सम्पादिका स्त्रीधर्मशिक्षक द्वारा सम्पादित और उनके पति श्रीराम शर्म्मा द्वारा प्रकाशित होता है । यह पत्र कन्याओं लिये अत्यन्त उपयोगी है । उक्त श्रीमतीजी ने जब से पुनर्विवाह किया है उसके कुछ दिन बाद से आपने स्त्रीधर्मशिक्षक निकाला तथा अनेक स्त्री शिक्षा बिषय की पुस्तकें लिखकर स्त्री जाति को अत्यन्त लाभ पहुँचाया है जिसके लिये श्रीमती जी को धन्यवाद दिया जाता है उक्त पत्र में चित्र भी रहते हैं इतने पर भी वार्षिक मूल्य ।||-)है ।

हम श्रीमती जी से अनुरोध करते हैं कृपाकर अपने पत्र में बिधवा विवाह विषयक लेखों को स्थान देकर अपनी बला विधवा बहिनों के सुधार का प्रयत्न करें ।

कन्यो मनारंज—यह पत्र पं० ओंकार नाथ बाजपेई प्रयाग द्वारा सम्पादित होता है । इस में कन्याओं के उपयोगी लेख और कविताएं रहती हैं । छपाई बहुत साफ होती है उक्त पं० जी ने और भी कई स्त्री शिक्षा विषयक पुस्तकें लिखी हैं । वार्षिक मूल्य केवल १)है ।

मैनेजर ओंकार प्रेस इलाहाबाद

सूचना

पचास रुपया इनाम

यह इनाम उनचार सज्जनों को दिया जायगा जिनके अबलाहितकारक में एक वर्षतक सब से ज्यादा और अच्छे लेख आवेंगे । पहिला इनाम १०) रु० और बाद के तीन इनाम पांच रुपया है । लेख सम्पादक अ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितकारज के नाम आने चाहिये । यह इनाम श्रोत्रिया पूर्णा देवी जीकी तरफ से दिया जायगा ।

अग्रवाल बाल विधवा कन्यों की आवश्यकता ॥

" हमारे यहां कई अग्रवाल लड़कों की दर्ख्वास्तें आई है उनके लिये कई बाल विधवा कन्याओं की आवश्यकता है । लड़कों की वार्षिक आमदनी ३००) रु० से ६००) रुपए तक है ।

जिन सज्जनो को अग्रवाल वरों की अवश्यकता हो वह मन्त्री बाल विधवा विवाह सभा से पत्र व्यवहार करे ।

पता--मंत्री बालविधवा विवाह

प्रचारणी सभा

बिजनौर

उपदेशकों की आवश्यकता

सभा को दो ऐसे उपदेशकों की आवश्यकता है जो हिन्दी उर्दू भलि भांति जानते हों और संस्कृत का भी बोध हो ताकि समय पर शास्त्रार्थ भी कर सकें । वेतन योग्यता नुसार दिया जायगा प्रार्थना पत्रके साथ प्रसंशा पत्र भी आने चाहिये ।

मंत्री संयुक्त प्रान्त बाल विधवा विवाह

प्रचारणी सभा बिजनौर

उपन्यास माला

सम्पादिका श्रोत्रिया पूर्णा देवी

हिन्दी भाषा में शिक्षाप्रद ऐतिहासिक तथा औपन्यासिक एक मात्र मासिक पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें हिन्दूशास्त्र और इतिहासके आधार के पर नाटक जीवन चरित्र प्रकाशित हुआ करेंगे। भारत के वीरों वीरता, धीरता, पराक्रम, राजाओं की राजनैज्ञता स्त्रियों का और चातुर्य्य आदि औपन्यासिक रूप में रहा करेगा। प्रसिद्ध कवियों की कविताएं भी प्रकाशित हुआ करेंगे।

इसमें लगभग ५० पृष्ठ प्रतिमास प्रकाशित हुआ करेंगे। प्रकार एक वर्ष में ६०० पृष्ठ की बड़ी पुस्तक होजायगी। मोत्तम पुस्तकें भी उपहार में दी जाया करेंगी। वार्षिक मूल्य १।।) मात्र है रामनवमी तक होने वालेग्राहकों को १।) मेंदीजा

मैनेजर

दीन बन्धु प्रेस बिज

हिमाद्रि तैल

यह तैल शिर सम्बधि रोगों के लिये कई वैद्यों की सम्मति तैयार करायागया है। इसके लगाने से शिरशूल [सिर मस्तक में भारीपन रहना धूप में चलने या पढ़ने लिखने से आना। बुरे स्वप्न दिखना, नीन्द कम आना, दिमाग की लता नेत्रों के सामने अंधेरा होना, शिर में खुश्की और खु बालों का सफेद होना या उखड़ २ कर गिरना चित्त की चंच आदि के लिये अद्वितीय तैल है।

ऐसा कौन पुरुष होगा जो इस के अपूर्व गुणों पर मोहि होजाय। इसकी अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है। एक बार ज़माइश कर के देखिये मूल्य प्रति शीशी १)

मिलने का पता

मैनेजर दीनवन्धु प्रेस बिजनौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ती और बढ़िया

शंकर सिलाई की मशीन

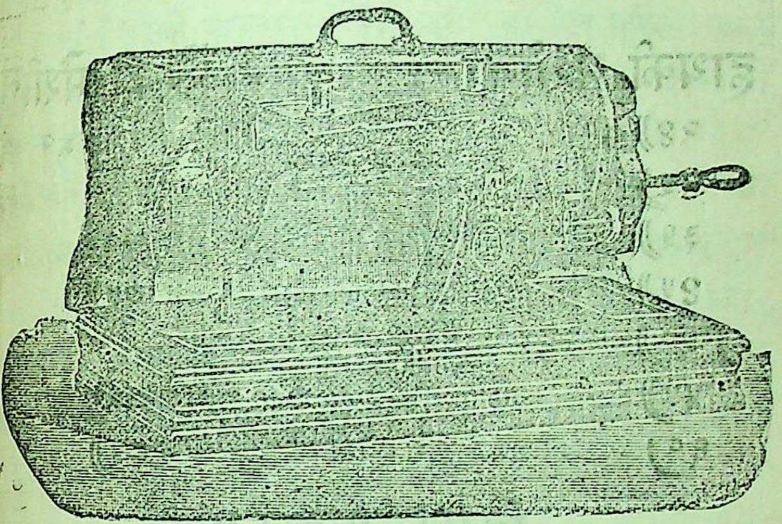

यह मशीने स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल जी की स्मारक स्वरूप हैं।

हर्ष समाचार।

यह मशीने विलायत से मंगाई गई हैं जों अन्य मशीनों के मुक़ाबलें वहुत सस्ती और बढ़िया हैं। इनकी अधिक प्रसंशा लिखना वृथा है।

केवल इतना लिखना काफी है कि इनकी उत्तमता पर अफ्रिका आदि की प्रदर्शनियों में पदक मिल चुके हैं। इन मशीनों पर काम करना वहुत ही सुगम है। काम जैसा उत्तम होता है देखने पर ही मलूम हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ और पैर की मशीनें दर्जी और गृहस्थ दोनों के
की हैं। आड़े तथा गोल दोनों प्रकार के सटल की हैं।
मूल्य निम्न प्रकार है।

हाथकी मशीन	पैरकी मशीन
२४)) रु०	६०) रु०
२५))	
३५))	७०))
४५))	७५))
५०))	
५५))	८०))
६०)	८५))

बिराट् उपहार ॥

क्या आप अबला हितकारक और उपन्यास माला को
में कई वर्ष पढ़ना चाहते हैं। यदि चाहते हो तो एक मशीन
लीजिये क्योंकि अबला हितकार और उपन्यास माला के
को १०) रु० सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

मैनेजर---

इण्डिया इम्पोर्ट आफिस

बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमसागर तैल

हिमसागर तैल—वालों को चमकीला और रेशम के लच्छे जैसा मुलायम करता है। वालों को खूब बढ़ता और जड़ों को दृढ़ करता है इसके व्यवहार से सिर दर्द भारीपन खुश्की खाज और बालों का गिरना बन्द होता है। इसे मस्तक पर लगाने से मस्तक में ठण्डक, तरावट और हलकापन होता है। आंखों में रोशनी और तरावट पैदा होती है चेहरे पर मलने से चेहरें की श्यामता झाईं आदि दूर होकर गोरापनचिकनाहट और सुर्खी आजाती है। इस लियेकितनी ही स्त्रियां इसका नित्य व्यवहार करती है। जो एकवार भी इसका सेवन करता है वह इसके गुणों पर मोहित हो जाता है मूल्य फी शीशी १) रु० दर्जन १०) रु०। ६ का ५॥) रु० ३ शीशी २॥) रु० १।

नयनामृतांजनसुरमा

यदि नेत्रों की रक्षा करनी है तब नयनामृत का नित्य व्यवहार करो। हमारे नयनामृत अंजन के प्रतिदिन सेवन से नजर की कमजोरी दूर की चीज का ठीक न दीखना आदि रोगों को लाभ होता है। थोड़ें दिनों का जाला, फूला, धुंध, ढलका, नजला आदि नेत्रों की सुर्खी आंखों का दुखना जलन आखों में चिप चिपाहट रतोधा आदि रोगों को फायदा करता है। इस के नित्य व्यवहार से बुढ़ापे तक ज्योति क़ायम रहती है। मूल्य फी १) रु० ६ शीशी ५॥) और तीन शीशी २॥।)

आयुर्वेद मार्तण्ड पण्डित सूर्य्य प्रसादशर्म्मा

मालिक भारत हितैषी औषधालय मेरठ शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिब्बी १
गोली ३२

आरोग्य देवी

आतङ्क निग्रह गोलियाँ

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारीरिक बल हो।

इन गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। यह गोलियां लाखों रु० की प्रतिवर्ष बिकती हैं। यह ही इनकी उत्तमता का प्रमाण है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बलकांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये
सूचीपत्र
मंगा लिजिये

वद्यै शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी
जामननगर-काठियावाढ़

मलेरिया का अर्क

जो कि प्लेग की हल्की शकल है बाटली वाले की बनाया मिक्स्चर या गोलियां १)

बाटली वाले का क्लोरल हैजे की एक मात्र दवा।

बाटलीवाले का खिजाव। यह खिजाव पहिले खिजाबों से अच्छा है जिससे सफेद बाल कुदरती बालों के समान हो जाते हैं।

बाटली वाले का दांतों का मंजन-यह दवा अंग्रेजी दवाओं से वैज्ञा-निक रीति से तैयार की गई है मयां फल और कारबोलिक एसिड।

बाटलीवाले का दाद का मलहम।)

यह दवा सब जगह मिलती है।

डा० बाटलीवाला

वरली लबोटेरी दादर बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के नामी डाक्तर एस, के, बर्म्मन की बनाई

स्त्रीरोगकीदवा

मोल ५।) सवा रुपया शीशी

डा० म० ।=)

स्त्री रोगों में विशेष गुणकारी मारकीन देशकी प्रसिद्ध दवा भाईवामन आदिक और वैद्यक प्राचीन काल की प्रसिद्ध दवाए अशोक और कई एक चीजों के संयोग से यह दवा बनी है! और यथा रीति इसकी परीक्षा भी होती आई है।

यह सब प्रकार के स्त्री रोग की दवा है। दुर्बल गर्भाशय को शुद्ध वा पुष्ट करती, है इस लिये गर्भस्थान के सब रोगों में काम देती है। मासिक धर्म वा ऋतु के विकार से अधिक वा कम दिनों में महीना होना, कमर पेडू जांघ में दर्द होना, सिर दर्द जी मिचलाना आदि मिटते हैं।

प्रदर रोग जिससे सफ़ेद वा लाल पानी (मवाद) जाता है खुन पतला वा जमा हूआ ज्यादा या कम जाना साथ दर्द आदिक क्लेश होना इस दवा से मिटते हैं।

गर्भ के शिथिल पड़ जाने से गर्भ अकाल में नष्ट हो जाता है। हमल तीसरे चौथे महीने गिर जाता है। इस हालत में इस दवा के कुछ दिन सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है। यह दवा गर्भ के दोषों को मिटाके दुर्बल शरीर को पुष्ट करती है।

डा: एस,के बर्म्मन। ५,ताराचन्द दत्त स्ट्रीट। कलकत्ता।

विशेष हाल प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मंगाकर पढ़िये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निम्न लिखित मुफ्त

अमृत

अमृत इस नाम की एक पुस्तक उर्दू, हिन्दी, अंगरेजी, गुरुमुखी, गुजराती या मराठी जिस भाषा की चाहें मुफ्त भेजी जावेगी, इस में सर्व रोगध्न औषध

अमृतधारा'का

पूरा २ वर्णन है। 'अमृतधारा' श्री पं० ठाकुरदत्त शर्मा जी की जगत भर में एक नई ईजाद है, क्योंकि यह एक ही औषध प्रायः सर्व रोगों को हितकर है। कीमत बड़ी शीशी अमृतधारा २॥) आधी शीशी १।) और नमूना की शीशी छोटी का ॥)

पुरुषों के विशेष रोग

आज कल लोगों में व्यसन बहुत बढ़जाने से विशेष रोगादि भी बढ़ गये हैं, इस पुस्तक के अन्दर उन रोगों के कारण लक्षण तथा चिकित्सा भलीप्रकार से वर्णन की है, जिसको पढ़ कर मनुष्य से आरोग्य तथा बलवान हो सकते हैं यह पुस्तक भी मुफ्त भेजी जाती हैं। हिन्दी उर्दू मराठी गुजराती में मिल सकती है।

"हिन्दी देशोपकारक,,

अपनी किस्म का भारतवर्ष में पहिला पक्षिक वैद्यक पत्र है जो एक बार देखता है यदि उस को जरा भी आयुर्वेद से प्रेम हो, इस पर मोहित हो जाता है। नमूना मुफ्त मिलता है।

पत्र तथा तार पता;—अमृतधारा (ब्रांच लाहोर।

श्री० जगदीशदत्त द्वारा दीनबन्धु प्रेस बिजनौर मे मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

वैशाख सम्वत् १९७१ वि०

(वर्ष ११) (अङ्क २

संस्थापक श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्मा

सम्पादक व प्रकाशक श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं नमः शिवाय

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित ।

अबला हितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥

एकादश वर्ष | वैसाख | अङ्क द्वितीय

अविद्या का फल

हा हा अविद्या हो तेरा बुरा ।
तुने भारत को खाके सियाह कर दिया ॥
तबाह कर दिया री तबाह कर दिया ।
गोया सोने की लंका को दाह कर दिया ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुने त्रेता में आकर जो डेरा किया।
कौरों पांडों के घर को जो घेरा दिया॥
तेरा ऐसा असर उनपे आकर पड़ा।
तुने भाईयों में फितना बपा कर दिया॥
जो द्रोपद सुता कहती न दुर बचन।
न पांडों भटकते कभी बन व बन॥
मगर यह अविद्या में है एक फन।
जिसने कौरों का हृदय कड़ा कर दिया॥
दुर्योधन ही पांच देता नगर।
कि पांडों करें जिस में अपनी गुज़र॥
मगर था अविद्या ने जो किया घर।
हुआ जंगो जद्ल चट सफ़ा कर दिया॥
फिर वहां जो तुझे कामयाबी हुई।
तेरे दिल को बड़ी इज़तराबी हुई॥
फिर तु आगे बढ़ी तो खराबी हुई।
तुने भाई से भाई जुदा कर दिया॥
तुने हर एक पे अपना जो क़बज़ा किया।
और विद्या विचारी को दिया भगा॥
हा पापन तुझे कुछ तरस न हुआ।
तुने सारा मज़ा किरकरा कर दिया॥
न वह राम और लक्षमण से भाई रहे।
न वह दसरथ जनक से पिताही रहे॥
न वह सीता सुलोचन सी नारी रहीं।
गोया सारा ज़माना हवा कर दिया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

बिजनौर में मार्च और अप्रैल में बहुत प्लेग रहा इस कारण अबला हितकारक का बैसाख का अङ्क बैसाख में आपकी सेवा में नहीं पहुंच सका। आशा है आप इस विवशता को क्षमा करेंगे क्योंकि इस समय में प्रेस बन्द रहा है।

यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि बड़ौदे में हिन्दू पुरोहितों के हितार्थ या यह कहो कि हिन्दू प्रजा और हिन्दू धर्म के हितार्थ राज्य की व्यवस्थापक सभा में शीघ्र ही यह बिल पेश होने वाला है कि संस्कार सम्बन्धी परीक्षा बिना पास किये कोई पुरोहताई नहीं कर सकेगा। कुछ अविचारशील पुरुषों के विरोध के कारण अबतक यह विषय शान्त था किन्तु अब आशा है यह शीघ्र प्रयोग में आने वाला है। क्या ही अच्छा हो यदि समस्त हिन्दू जातियां इसका अपनी २ बिरादरियों में प्रायोगिक प्रचार करें क्योंकि यह बात किसी से छिपी नहीं है कि आजकल के अनपढ़ पुरोहित संस्कारों में किस क़दर अँडबंड करते हैं। हमको कई बार विवाहादि सम्बन्धों में यह देखने का अवसर मिला है कि पुरोहित महाशय संस्कार कराते केवल टके का ही ध्यान रखते हैं। संस्कार किस मंत्र से करा रहे हैं और पुस्तक कहां खोल रहे हैं। एक मित्र ने हम से कहा कि अमुक ग्राम में मेरी देखी बात है कि बिवाह कराते समय पुरोहित जी के हाथ में सत्यनारायण की पुस्तक थी। इत्यादि

इस ही कारण आज अधिकांश पुरुषों की श्रद्धा संस्कारों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हटता जाती है ।

हमको ईसाइयों के पुरुषार्थ से शिक्षा लेनी चाहिये उनका पुरुषार्थ हम को यह बताता है यदि इनका पुरुषार्थ इस ही प्रकार जारी रहा और हिन्दू इस ही प्रकार सोते रहे तब एक दिन वह होगा जब भारत में भी हिन्दू जाति का केवल नाम ही शेष रह जायगा । निम्न लिखित हिसाब से उक्त वार्ता पूर्णत: सिद्ध होती है । बदायूं जिले में ३६००० मथुरा में ४०००० मेरठ में ४५००० और रुड़की में ५७००० केवल इन ही चार जिलों में पौने दो लाख हिन्दू भाई ही चोटी कटाकर ईसाई हुए हैं । इनमें अधिकतर अछूत और हिन्दू विधवा ही हामरे अत्याचारों से दुःखी होकर ईसाई धर्म की दीक्षा लेकर हिन्दुओं से केवल पृथक ही नहीं हुए हैं प्रत्युत हिन्दुओं के शत्रु बन गए हैं ।

साथही हमरा दान भी ऐसे बुरे तरीके से होता है जिससे जाति को बजाय लाभ के हानि होती है जैसे कि उन पंडों तथा साधुओं को दान देना जो वेश्यागमन और शराब आदि पीने के सिवाय देश या धर्म की कुछ भी सेवा नहीं करते । दूसरे ईसाई भाईयों का दान विद्या प्रचार और धर्म प्रचार में व्यय होता है केवल अम्रिका से तीन करोड़ पैंतालीस लाख रुपया भारत में ईसाई धर्म के प्रचार के लिये आता है । भारत में इस समय १८०० स्त्रियां और ५३००० पुरुष ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं किन्तु हिन्दू जाति के जैन आर्य सनातन धर्मी आदियों के १५० से अधिक उपदेशक नहीं हैं । ऐसी दशा में हम हिन्दू जाति के जीवित रहने की आशा कर सकते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक है प्रति दिन तभारवर्ष में स्वार्थपरता बढ़ती जाती है जिन सँस्थाओं पर सर्व साधारण का विश्वास यह है कि हमारी हित चिन्तक हैं वह ही गुप्त रीति से उन के साथ अपने स्वार्थ के लिये खूब प्रहार करती है। यह देख कर दुःख होता है कि आजतक नाई और ब्राह्मणों कोही यह कहा जाता था कि "जहां घी और बूरा उड़ाए वहां ही चट तिलक कर आए,, किन्तु शोक है इस समय पंजाब में कई एक बड़े पुरुषों ने यहां तक कि एक दो सम्पादक महाशय नें भी अपनी फीस लेकर योग्या-योग्य का विचारन करके विवाह कराने आरम्भ कर दिये हैं। हमारे कार्य्यालय में कई पत्रों में लोभ दिलाते हुए कहा गया है कि विवाह कराने पर आपकी अच्छी सेवा की जायगी। हाल में हमारे पास एक पत्र कान्यकुब्ज एजेन्सी लाहौर का आया है जिसमें कान्यकुब्ज बाल विधवा कन्या के प्रति पते के लिये चार-आने का वी० पी० भेजने को लिखा है हम नहीं समझते इस प्रकार पते मंगाने की क्या आवश्यकता है जब कि बाल विधवा विवाह सभा यथा शक्ति बाल विधवा विवाह के लिये बिना किसी प्रकार की फीस लिये ही पूर्ण परिश्रम कर रही है। हम कान्यकुब्ज एजेन्सी तथा सर्व साधारण से सविनय निवेदन करते हैं कि कृपाकर हमारे कार्य्यालय में इस प्रकार के पत्र न भेजा करें क्योंकि हम योग्य बर या कन्या मिलने पर स्वयं सम्बन्ध करा देते हैं। हमारे कार्य्यालय में जो पत्र विधवा विवाह सम्बन्धी आते हैं वे जबतक कि सम्बन्ध न हो गुप्त रीति से रक्खे जाते हैं अतः क्षमा प्रार्थना करते हैं कि कोई महाशय इस प्रकार से पूछनें की कृपा न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी कारावास कहानी

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रिका की संयुक्त पार्लिमेण्ट में एक ऐसा अयोग्य कायदा पास किया गया कि जो भारतवासियों के लिये अमंगल और अपमानजनक था। इस कायदे का यहां थोडासा वर्णन करदेना अप्रासंगिक न होगा। सन् १८०१ के बाद आये हुए भारतीय मजूरों को प्रति वर्ष ३ पौण्ड का कर देना पडता है। यह कर बडा ही अन्यायपूर्ण है। सन् १८०१ में यहां से एक डिपूटेशन भारत सरकार से मिलने गया। उस समय डिपूटेशन के सदस्यों ने गिरमिट रूप में आये हुए भारतवासियों पर २१ पौण्ड अर्थात् ३१५ रुपये वार्षिक कर लगाने का विचार प्रकट किया। इस द्वेषपूर्ण कुटिल विचार पर भारतसरकार और लोकमत ने घोर २ आपत्ति की। अन्ततः भारत सरकार और नेटाल सरकार ने मिलकर ऐसा कायदा बनाया कि अबसे जो भारतीय मजूर नेटाल को जाय, वह गिरमिट की अवधि समाप्त होने पर पुनः स्वदेश को लौट आवे। यदि वहां पर रहना चाहें तो ३ पौण्ड अर्थात् ४५ रुपये प्रति वर्ष कर दिया करें। यदि कोई भारतीय मजूर कर देने में असमर्थ हो तो उस को कारावास का दण्ड कदापि न दिया जाय। इस कर लगाने का अभिप्राय यह था कि भारतीय मजूर कर देने के अडचन से नेटाल में न रहने पावें। इस शर्त पर भारतीय मजदूर यहां आने लगे, पर यहां से स्वदेश लौटने का किसी नें नाम तक न लिया, अतएव यहां पर रहने वाले मजूरों से ४५ रुपये वार्षिक कर वसूल होने लगा। जो लोग कर देने में आगा पीछा करते अर्थात् धन के अभाव से कर देने में अशक्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे इस अयुक्त कर को समय पर न दे सकने में जेल में ठूस दिये जाते थे। इस निर्दयता का बडा घातक परिणाम होने लगा। जिनकी गिरमिट की अवधि समाप्त होगई, उनको पुनः गोरे किसानों के खेतों में काम करने के लिये दूसरा गिरमिट लिखाना पडता था विचित्रता तो यह थी कि गोरे किसानों के पास दूसरा गिरमिट लिखा देने से यह ३ पौण्ड का वार्षिक कर नहीं देना पडता था। इस अनोखे नियम से गोरे किसान भारतीय मज़ूरों को गुलामी के बन्धन में फंसाने लगे। उन बेचारे भारतीय मज़ूरों को केवल ७॥) रुपये मासिक वेतन मिलता था। मज़ूरों को दिन भर ऊख के खेत अथवा कोयले की खान में काम करना पडता था। काम में जरासी भूल होने पर दांत तोड दिये जाते थे। लातों, बेतों अथवा चाबुकों की भरपूर मार पडती थी। इन अभागे मज़ूरों को मैले के टोकरे शिर पर लेकर खेतों में डालना पडता है! बरसात होने पर टोकरी में से मैला चूचू कर उन अभागों के मुख तथा समस्त बदन पर टपकता जाता है। इस अमानुषी संकट पर मज़ूरों का जीना दुस्तर हो जाता था, कितने फांसी लगा कर मर गये, कितनों ने विष खाकर देह त्यागे और कितनोंही ने समुद्र में कूद कर इन आततायियों से अपना पिण्ड छुडाया। इस प्रकार भारतीय मज़ूर गुलामी की दलदल में फंस गये। एक के पीछे दुसरा दूसरे के पीछे तीसरा और तीसरे के पीछे चौथे को गिरमिट लिखाने पर बाधित होना पडता था, अथवा यों कहिये कि भारतीय मज़ूर गोरे किसानों के गुलाम बन गए। यहां पर पाठक कहेंगे कि क्या यह मज़ूर स्वतन्त्र जीवन नहीं बिता सकते थे? क्या कारण कि उन को बारबार गिरमिट लिखाना पडता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकवृन्द ! इस का मुख्य कारण ऊपर बतलाये हुए ४५) रूपयों का वार्षिक कर है । यदि स्वतन्त्र हो कर रहना चाहें तो उनको यह कर देने पर बाध्य होना पड़ता है । जिन लोगों ने स्वतन्त्र होकर रहना चाहा उनको यह अन्यायमुक्त कर देना पड़ा ।

एक तो यहां के स्वतन्त्र भारतीय मजूरों में १५) से अधिक वेतन किसी बिरले को ही मिलता होगा, दूसरे यहां खाने पीने की वस्तु महगी मिलती हैं, तिसपर ४५) रुपये का वार्षिक कर, इस कर रूपी बोझ से निर्धन भारतीय ऐसे दब गये कि उनके सम्हलने का कोई उपाय न रहा । न केवल भारतीय मजूरों को यह ४५) रुपये का वार्षिक कर देना पड़ता था, प्रत्युत उन की स्त्री, १३ वर्ष के उपरान्त कन्या और १६ वर्ष के बाद पुत्र को भी वार्षिक कर देना पडता था । मानलो कि एक मजूर के घर में उस की स्त्री और चार बच्चे हैं तो उस मजूर को ६ प्राणियों के लिये १८ पौण्ड अर्थात् २७०) रुपये वार्षिक कर देना होगा । इस कर को देकर सरकार से अपना जीव बचाने के लिये कई एक मजुर चोरी करने में प्रवृत्त हुए और बहुतों को स्त्रियों को व्यभिचार के समान नीच काम से पैसा इकट्ठा कर देना पड़ा ।

विगत वर्ष जब माननीय गोखले यहां के मजूरों की दशा देखने को आये तो आपने जनरल बोथा, स्मटस् और फिशर से मिलकर इस कर के सम्बन्ध में बात चीत की । उस समय इन तीनों मन्त्रियों ने माननीय गोखले से प्रतिज्ञा की कि पार्लियामेंट की आगामी बैठक में यह कर रद कर दिया जायगा और इमीग्रेशन नियम में सुधार कर दिया जायगा । माननीय गोखले थोड़े दिन के मेहमान थे, इसलिये उनको सुनाकर मन्त्रि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया। माननीय गोखले के यहां से चले जाने पर संयुक्त पार्लीमेण्ट की बैठक हुई। उस में यह कर ज्यों का त्यों क़ायम रहा। अतएव इमीग्रेशन नियम में सुधार करना तो दूर रहा प्रत्युत कठिनाई में और भी अधिकाई करदी गई।

एक ऐसा अनोखा क़ायदा बनाया गया कि जिस धर्म में एक से अधिक विवाह कर लेने की रीति है, उस धर्म से किये हुए विवाह को यहां की सरकार स्वीकार न करेगी। इसका अर्थ यह है कि हिन्दू और मुसलमानों की रीत्यनुसार किया विवाह एक बार ही निषिद्ध है। या तो क्रिश्चियनों की रीति से विवाह रजिस्टर्ड करावें अन्यथा हिन्दू और मुसलमानों की स्त्रियां रखेलीं और इनके सन्तान दोग़ले समझे जांयगे। अहा! क्या ही विचित्र क़ायदा है। क्या इस क़ायदे के जोड़ का दूसरा क़ायदा संसार में मिल सकता है? कदापि नहीं। दक्षिण अफरिका के जिन अधिकारियों ने यह क़ायदा बनाकर पास किया है वह सभ्य समाज और संसार के इतिहास में कैसे समझे जांयगे।

इस नवीन नियम में बेचारे ३ पौण्ड के कर भरने वाले मजूरों पर मनमाना अन्याय कियागया वेलोग यहां के नागरिक बिलकुल नहीं समझे जांयगे। स्वदेश जाने पर वह यहां लौट कर नहीं आसकते तथा उनको और उनके सन्तानों को जब सरकार चाहे तभी देश से निकाल बाहर कर सकती है। 'जले के ऊपर नमक' की कहावत यहां पर चरितार्थ होगई। अब तक दक्षिण अफ्रीका में जन्में हुए भारतवासी केवल जन्म की सनद दिखा कर केपटौन में प्रवेश कर सकते थे, पर इस नवीन नियम के अनुसार यह हक़ भी छीन लिया गया। अब कोई भारतवासी केपटौन में प्रवेश कर सकेगा जो अंग्रेज़ी की परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उत्तीर्ण होसकें। फ्रीस्टेट के सम्बन्ध में ऐसा क़ायदा बनाया गया कि जो भारतवासी वहां जाना चाहें, वे एक इस आशय के पत्र पर सही करके प्रवेश कर सकेंगे कि हम फ्रीस्टेट में गुलामी के अतिरिक्त न व्यापार करेंगे और न खेती करेंगे। वाह रे संयुक्त पार्लीमेण्ट ! अब पाठकों के समझ में आगया होगा कि यहां के अधिकारी कैसे उदार और सभ्यताभिमानी हैं।

जब यह क़ायदा पास होकर अमल में लाया गया तो यहां का भारतीय लोकमत एक दम क्षुब्ध और सन्तप्त हो उठा। कई एक बड़ी २ सभाएं कर सरकार से प्रार्थना की गई, पर कुछ भी सुनवाई न हुई। अन्त में यहां के भारतवासियों के प्रधान नेता लोकमान्य गान्धी ने राजसचिव की सेवा में एक पत्र लिख कर निम्न लिखित आवेदन किया—(१) सन् १९० के बाद आये हुए भारतीय मजूरों को यहां के नागरिक समझना चाहिये, (२) तीन पौण्ड अर्थात् ४५) रु० वाला कर रद्द होना चाहिये; (३) हिन्दू और मुसलमानी रीत्यनुसार किये हुए विवाह को स्वीकार कर लेना चाहिये; (४) दक्षिण अफ्रीका में जन्में हुए भारतवासियों को केप में जानें का हक़ क़ायम रखना चाहिये; (५) फ्रीस्टेट के विषय में जो अनुचित क़ायदा बनाया गया है, उसमें सुधार होना चाहिये। लोकमान्य गान्धी की इस प्रार्थना पर ध्यान न देकर यह क़ायदा ता० १ अगस्त सन् १९१३ ई० से अमल में लाया गया।

इस अन्यायपूर्ण क़ायदे के बन जाने से भारतीय जनता में घोर घबड़ाहट फैल गई, सर्वत्र हाहाकार मच गया, पर यहां के भारतवासियों ने इस क़ायदे के आगे शिर न झुका कर इसके विरुद्ध सत्याग्रह की लड़ाई आरम्भ करदी। सबसे पहिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष और ४ स्त्रियों की टोली जेल में गई । अब क्या ठिकाना था । यहां पर बड़ी ही उत्तेजना फैल गई । मेरी धर्मपत्नी ने मुझ से जेल जाने की आज्ञा मांगी । मैंने उत्तर दिया कि इस विषय पर लो० मा० गान्धी की सम्मति लेनी चाहिये । अतः ता० ३० सितम्बर को हमारी धर्मपत्नी लोकमान्य गान्धी से मिलने के लिये जो हांसबर्ग गई वहां पर। लो० मा० गान्धी ने इन को इस प्रकार उपदेश दिया । जेल में अच्छा कपड़ा नहीं मिलेगा, कठिन से कठिन काम करना पड़ेगा, अतएव तुम किस लिये इतना कष्ट सहने को उद्यत हो ? इसके उत्तर में मेरी धर्मपत्नी ने कहा कि" मैं जेलघर को महल समझूंगी । जेल के वस्त्र को रेशम और मखमल के समान जानूंगी, जेल के खाने को मोहन भोग के तुल्य मानूंगी । कड़े से कड़ा काम मैं प्रसन्नता पूर्वक करूंगी । नवीन नियम के अनुसार भारतीय महिलायें रखेली समझी जायगी, जो भारतीय वनिताओं के लिये बड़ा अपमानकारक है। अतः इस नियम के प्रतिकार में जितना कष्ट भोगना पड़े उतना कष्ट उठाने को हम तय्यार हैं" लोक० गान्धी ने मेरी धर्मपत्नी को आज्ञा दी कि तुम प्रसन्नतापूर्वक जेल जाकर भारत की मान मर्यादा की रक्षा करो । मेरी धर्मपत्नी टामिल बेनेफिट सोसाइटी के सभापति मि० नायडू के घर पर गई, वहां पर सत्याग्रही स्त्रियों को एक प्रीतिभोज दिया गया । इसके बाद इन सत्याग्रही स्त्रियों के चित्र 'इण्डियन ओपनियन' में प्रकाशित करने के लिये उतारा गया । यह चित्र इण्डियन ओपनियन पिक्टोरियल, माडर्नरिव्यू, भारतमित्र, कृष्णपत्रिका आदि समाचारपत्रों में प्रकाशित होचुका है ।

जोहांसबर्ग से मेरी धर्मपत्नी आदि सत्याग्रही स्त्रियां जेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के अभिप्राय से फ्री स्टेट को रवाना हुईं थीं। मास्टर मजा पु
की तरह इमीग्रेशन अफसरने इनको सत्यग्रही जानकर छोड़ दिया।
पर इन स्त्रियों को बड़ा शोक हुआ और इन्होंने वीर दासन
आकर माथे पर टोकरी रख बिना परवाने के फेरी का
आरम्भ किया। इधर मेरी स्त्री और एक वर्ष के बालक को
जाने का उद्योग करते देख हम से चुपचाप न बैठा गया।
पुरुष और ६ स्त्रियों के साथ शिर पर टोकरी लेकर बिना
के जेमिस्टन के रेलवे स्टेशन पर जाकर फल फूल बेचने लगे।
रेलवे कर्मचारियों ने हमको बारबार समझाया कि आप
पर यह बखेड़ा न मचाया करें दूसरी ओर चले जाइये। मैंने उ
दिया कि यदि पकड़ना हो तो पकड़ो, अन्यथा हम यहां
अवश्य फेरी का काम करेंगे। अन्त में विवश होकर स्टेशनमा
स्टर ने हम लोगों को पकड़ा और रेलवे विभाग का नियम भं
करने का दोष लगा कर थाने पर ले आया।

वहां पर दारोगा ने हम लोगों का नाम धाम पूछ कर हवालात
में भेज दिया। उस समय हम लोगों के आनन्द का वारापा
न रहा। हम लोग एक दूसरे से कहने लगे कि हमारा दल
भाग्यवान् है जो हम बिना किसी प्रकार के कष्ट उठाये पक
लिये गये। हम लोग वहीं हँसी खुशी से बात चीत कर रहे
पर यह किसी को खबर न थी कि थोड़ी देर के बाद यह आ
निराशारूप में परिणत हो जायगी। सायंकाल ५ बजे एक सि
पाही ने आकर हम लोगों को हवालात से बाहर निकाला औ
थाने पर ले चला। उस समय हम लोग फूले अंग न समा
थे। हम लोग विचार करते थे कि शायद आज ही हम लोगों
को सजा मिल जायगी, पर थाने पर आते ही हम लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाकरी देकर सिपाही ने वहां से निकाल बाहर किया । पूछने पर दारोगा ने कहा कि जेल में तुम लोगों के लिये स्थान नहीं है। इस पर हम लोग बड़े उदास होकर घर लौट आये । दूसरे दिन 'रेण्ड डेलीमेल' और 'लीडर' नामक अंग्रेजी दैनिकपत्र ने 'सत्याग्रहियों के लिये जेल में स्थान नहीं है' शीर्षक लेख में इस घटना को प्रकाशित किया । हम लोगों का इस दिवस टोकरी में फलादि बेचने के वेष में जो चित्र उतारा गया था वह ता० २—११—१४ के श्रीवेंकटेश्वर समाचार में प्रकाशित हुआ है ।

उधर जो सत्याग्रही स्त्रियां वीरीनिखिन में फेरी के काम पर अपने आपको पकड़वाना चाहती थीं, उन लोगों को जब सरकार ने नहीं पकड़ा तो वह निराश होकर नेटाल की सीमा पर लौटीं । इनके साथ मि० हेनरी पोलक था । जब यह गाड़ी जर्मिस्टन स्टेशन पर पहुँची तो वहां से हम ७ लोगोंने सत्याग्रही इस टोली के साथ होकर नेटाल की हद पार करने का निश्चय किया । अतएव हम लोग ता० १० अक्टूबर को सायंकाल वालकरस्ट में पहुँचे । ज्योंही गाड़ी स्टेशन पर पहुँची त्योंही इमीग्रेशन अमलदार ने हम लोगों से नेटाल में जाने का परवाना मांगा । परवाना न दिखाने पर हम लोगों को गाड़ी से उतार लिया और वह स्टेशन से हम लोगों को थाने पर लेगया । वहां पर हमारे नाम लिख कर हमें एक कैम्प कें भेज दिया गया, जो नगर से एक मील के फासलेपर है । उस रात हम लोगों को खाने के लिये केवल सूखी अंग्रेजी रोटी दी गई और मुरब्बा हम लोगों के पास ही था । खाना तो किसी प्रकार चल गया, पर सोने में बड़ा कष्ट हुआ । हम लोगों को सरकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर से उस रात को एक भी कम्बल न दिया गया, हालांकि वालक्रस्ट के भारतीय व्यापारी हम लोगों को ओढ़ने के लिये कम्बल देना चाहते थे; पर सरकार के पाहुने होने के कारण हम लोगों ने भारतीय व्यापारियों से कम्बल लेना अस्वीकार कर दिया। जाड़े का समय था, हम लोग रात भर जाड़े से खूब सताये गये। प्रातःकाल उठकर अग्नि प्रज्वलित की और उसी के आस पास बैठकर हम लोग ज़रा गरमा गये। उस दिन हम लोगों को पूरा विश्वास था कि आज हमारे ऊपर अभियोग चलाकर हमें दण्ड दिया जायगा। दोपहर के समय हम लोगों को थाने पर बुलाया गया। हम लोगों ने विचार किया कि शायद हमारे ऊपर मुक़दमा चलाने के लिये थाने पर बुलाया जाता है। पर वहां जाने पर एक नया गुल खिला। थानेदार ने हम लोगों को राज सचिव का तार दिखाकर कहा कि आप लोगों को सरकार पकड़ना नहीं चाहती है। जहां जी चाहे वहां जाओ। उस समय हम सबों के विषाद का ठिकाना नहीं रहा। हम सोचने लगे कि क्या इस महान् युद्ध में जेल जाना हमारे भाग्य में नहीं बदा है। निदान सायंकाल ६ बजे की गाड़ी से हम चार्लीस्टन में ही रहे। सोमवार ता० १३ अक्टूबर को दिन के ग्यारह बजे की गाड़ी से हम लोग न्यूकास्टल आये। स्टेशन पर सैकड़ों भारतवासी विद्यमान् थे। हमारी गाड़ी पहुँचते ही स्टेशन आनन्दध्वनि से गूँज उठा। स्टेशन पर कई एक बग्गी हम सबों को नगर में लेजाने के लियें खड़ी थीं। हम लोगों ने बग्गी पर चढ़कर नगर में जाना स्वीकार न किया, क्योंकि हमलोग सत्याग्रही बन कर जाति के हित भांति २ के कष्ट उठाने की प्रतिज्ञा करके घर से चले थे। यहां पर राजसी ठाठ अर्थात विलासिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यता का शिकार बनना हमारे लिये सर्वथा अनुचित था। अस्तु हम लोग पैदल चलकर मि० लाजरस के घर पर आये। इसी दिन रात को न्यूकास्टल में एक सार्वजनिक सभा हुई। सभा में नगर और बाहर के प्रायः समस्त प्रतिष्ठित भारतवासी उपस्थित थे। मि० रोबिन्सन आदि यूरोपियन भी सभा में सम्मिलित थे। सभा में मि० थम्बीनायडू और मैंने अंग्रेजी, हिन्दी और टामिल में भाषण देकर उपस्थित जनसमुदाय से इस सत्याग्रहरूपी महानयुद्ध में भाग लेने की प्रार्थना की। सभा में बड़ा प्रभाव हुआ। इसी समय एक सत्याग्रह कमेटी स्थापित होगई और कुछ चन्दा भी इकट्ठा होगया। कई एक मनुष्यों ने जेल जाने की प्रतिज्ञा की।

ता० १४ अक्टूबर की सायंकाल को हम लोग ८ पुरुष और ११ सत्याग्रही स्त्रियों के साथ न्यूकास्टल के रेलवे बारक्स में गये। यहां पर बहुत से भारतीय मजूर काम करते थे। वहां मि० नायडू ने टामिल और मैंने हिन्दी में व्याख्यान देकर भारतीय मजूरों को समझाया कि जब तक सरकार ४५) रु० वार्षिक का कर रद्द न करदे तब तक तुम लोग गोरों के काम को छोड दो। यहीं दक्षिण अफ्रिका में हडताल का काम आरम्भ हुआ। इधर हम लोग उपदेश कर रहे थे, उधर किसी दुष्ट ने जाकर स्टेशनमास्टर को खबर दे दी कि भवानीदयाल और मि० थम्बीनायडू रेलवे मजूरों को बहका कर हडताल कराना चाहते हैं। खबर पाकर स्टेशनमास्टर तुरन्त वहां पहुंच गया, जहां हम लोग हडताल करने के लिये मजूरों को उपदेश कर रहे थे। स्टेशनमास्टर आकर हम लोगों को भांति २ की धमकी देने लगा, पर इधर से उनको मुंह तोड उत्तर मिलता गया

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ गर्भ रक्षा ॥

(लेखक डाक्टर बलदेव सहाय वैद्य)

(२)

स—यदि किसी को ज्वर होगया हो तो क्या चिकित्सा क
चाहिये ।

गं—सुनो ज्वर में मुलहठी मा० ३ चंदन मा० ३ खस मा०
सारिवा मा० ३ पद्माक मा० ३ इन के क्वाथ में
मिला कर देवे तो ज्वर में मुक्त होजावेगी या चंदन
लोध और मुनक्का मा० ३-३ लेकर क्वाथ करके पिला

स०—क्यों जी अगर किसी को दस्त आते हों तो क्या
करना चाहिये ।

गं०—जिस किसी को दस्त आते हों तो उसको सुगंधवाला
३ अरलू मा० ३ खरैंटी मा० ३ धनया मा० ३
मा० ३ नागरमोथा मा० ३ खस मा० ३ जवाखार
२ पित्तपापडा मा० ३ और अतीस मा० २ इनका
बना कर गर्भणी को पिलावे इस से अनेक प्रकार के
सार रक्त स्राव और ज्वर सब दूर होजाते हैं ।

स०—क्यों दया तुम आज सुस्त क्यों बैठी हो जो दुख हो
कहो मैं अभी जाकर गंगादेवी से बूझ आऊँगी ।

दया—सवेरे को जब में सोती उठती हूँ तो मेरा जी ऐसा
चलाता है कि कुछ भी भला नहीं लगता ।

स०—दया का जी जब वह सोते से उठती है तो मितला
रता है और दिन भर सुस्त सी बैठी रहती है इस बा
कोई उपाय बता दीजिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गं०—यह तो सहज ही बात है सुबह को जरा चिरायता कर के दूध पिला दिया करो या चिरायता मा० ३ का क्वाथ बना कर उसमें खांड मिला कर पिलावे कै आना और जी मिचलाना बन्द होजाता है दयावती को अभी नौ मास तो पूरे नहीं हुये या नीबू के ३ बीज घोट छान कर पिला दिया करो।

स०—होने वाले हैं परन्तु यह बात तुमने अभी क्यों पूछी।

गं०—मैंने इस लिये यह बात बूझी है कि अभी से सूतिका गृह (जच्चाखानें) का प्रबंध करना चाहये

स—सूतिकागृह का यदि ठीक प्रबंध न होगा तो उस से क्या हानि है।

गं—हानि तो है ही हमारे देश में जितने बच्चे मरते हैं वह सब जच्चाखाने के ठीक न होने से और दाई के होशयार न होने से मरते हैं

स०—तो यह बात तो जरूर ही बताइयें जिससे उन नन्हे प्यारे लालों की जान बचे

गं—एक २ करके सुनती जाओ मैं यह सब बातें बताती हूं जच्चाखाना साफ सुथरी जगह होना चाहिये--उस के आस पास कोई जगह बदबू दार न हो चारों तरफ अच्छी खुली जगह हो और जगह भी खुश्क हो गीले पनका नाम न हो कोठरी अच्छी खुली हो कमसे कम दस बार हाथ लम्बी और छै हाथ चौड़ी हो सर्दी और बरसात के मौसम में उसका दरवाजा पूर्व की ओर होना चाहिये और ग्रीष्म ऋतु में दक्षिण की ओर दरवाजे का मुख होना चाहिये समझ गई ना और जरूरी चीजें उस में तैय्यार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखनी चाहिये दयावती जीजी मेरे उदर (पेट) में भ
कुछ हलचल सी मालूम होती है

स०—ऐसाही हुआ करता है पूरे दिन हैं ना शायद दर्द शु
अब दाई को बुलाना चाहिये कृष्णा को बुलाओ कृष्णा

स०—तुम मेरा नाम लेकर ज़रा गंगादेवी को बुलाओ

कृष्णा—अच्छा जी जाती हूं

स—दयावती के तो दर्द शुरू होगया है

कृष्णा—लो जी गंगादेवी आगई हैं

स०—चलो देखो कि दयावती के कैसा दर्द है

गं—अच्छा क्यों जी क्या हाल है

दया—मेरे पहलू फहटे जाते हैं

गं०—क्या डर है बीबी घबराओ मत कुछ डर नहीं है

स०—क्योंजी अब क्या करोगी

गं०—अब यह कपडे उतार कर दूसरे पहिन लेती हूं

स०—क्योंजी इन कपडों में कुछ ऐब है

गं०—हां ऐब यह है कि इन कपडों से कई जगह आती जाती
छूत की लगने वाली बीमारी से मेरे कपडे कहीं छूगये हों
इस लिये सावधानी अच्छी होती है जो दाई ऐसी अह
यात न करे तो जच्चा को कई प्रकार की बीमारी होने
का डर रहता है

स०—अब क्या करोगी

गं०—उंगलियों से ना खून उतारूंगी

स०—क्योंजी इसकी क्या जरूरत है

गं०—इसकी जरूरत यह है कि हाथ से देखना पडना है कि क
नाखून न लगजाय यह बात खूब याद रखनी चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ग्रह में दाखिल होने से पहिले दाईके नाखून कटवा देने चाहिये और हाथ अच्छी तरह से साफ करा देने चाहिये

स०--अब क्या करोगी

ग०-दयावती के पास जाकर यह देखती हूं कि बच्चा पेट में किस आकार से (सूरत से) है

स०-पेट में सूरत कैसी इसका क्या मतलब

ग०--यह देखूंगी बच्चे का सर ऊपर को या नीचे को या एक तरफ को है लो अब मैं स्नातकाग्रह में जाती हूं और जरूरी जो बात होगी वह तुमको बतादीजावेगी—

चलो सूतिकाग्रह में चलें दयावती की अब क्याहालत है

दयावती—बीबी अबतो बहुतही ज्यादा तकलीफ है

ग०-बीबी उमरावती अब तुम बाहर चली आओ

स०-क्यों जी उमरावती को यहां से क्यों अलहदा कर दिया

ग०-इस कारण से हटाया है कि वह भी गर्भवती है

स०-गर्भवती स्त्री का सूतिकाग्रह में रहना अच्छा नहीं है

स०-क्यों अच्छा नहीं है

ग०--इस कारण से अच्छा नहीं है कि यदि उमरावती दयाकी जनने की हालत देखेगी तो उस से यह हालत न देखी जावेगी और उसे जनने का खौफ (भय) अभी से हो जायगा और इस भय से यह हानि होगी कि गर्भपात होजाय और यदि बच्चा पूरा भी होजाय तो निर्बल पैदा होगा

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(श्री जय दुर्गादेवी)

बाला विवाह नाटक

गली के आगे

गुसाऊँ--पण्डितजी वहां से मिलने पर आपको रुपए दूंगा

कुबुद्धदेव--भाई देखो ऐसा न हो कि पीछे धोखा हो ।

गुसाऊँ--अजी राम कहो पं० जी भला तुमसे ही धोखा करेंगे तो रहेंगे कहाँ चलो उठो अब देर हो रही है ।

कुबु०--(पोथी पत्रा सम्भालता हुवा) हां चलो पर भाई मोधूराम के छोटे भाई तो बड़े नालयक हैं जो उन्हें इन बातों की खबर होगई तब न जाने क्या कर डालेंगे । एक दिन मैं मोधूराम के यहां बैठा तुला दान करवा रहा था सो भाई वह मुझे देखकर बड़े रुष्ट हुवे पर बड़े भाई मोधूराम के सामने उनकी कुछ पार न बसाई नहीं तो ईश्वर जाने वह मुझे क्या कहते ? भाई मैं तो उसके नाम से काँपता हूँ ।

गुसाऊँ---अजी क्या बाते करते हो पंडित जी उनके पीर को तो खबर हो जाय वह तो वही है । मैं ऐसा कच्चा काम नहीं करता (खड़ा हो) चलो बहुत देर होगई ।

कुबुद्ध०--(खड़ा हो) चलो ।

(दोनो जाते हैं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद ॥

फिर वही लाला मोधूराम की बैठक ।

(गुसाऊँ नाई और कुयुद्धदेव का प्रवेश)

गुसाऊँ—लालाजी लो यह चावली की जन्म पत्री है और यह ५० जां भी आगयें ।

मोधू—जन्म पत्री लेकर (आइये पण्डितजी महाराज पालागन विराजिये (आसन देता है) पण्डित (बैठकर आशीर्वाद देता हुवा) कहो लाला कैसे याद किया ।

मोधू—महाराज याद क्या किया वही चावली की जन्म पत्री मिलाने को फिर आप को कष्ट दिया प्रथम आप यह देखिये आज का दिन जन्म पत्री मिलाने को कैसा है यदि आज दिन उत्तम हो तब यह दोनो जन्म पत्री मिलाइये । (जन्म पत्री देता है)

पं०—(पत्रा देख व जन्म पत्री ले) जजमान आज दिन बहुत उत्तम है अच्छा मैं अभी जन्म पत्री देखता हूँ । दोनों जन्म पत्री और फिर अपना पत्रा देख और अंगुली पर भी न मेष आदि गिनकर लीजिये लाला यह दोनों जन्म पत्र बहुत ही उत्तमता से मिल गये हैं ।

लाला—(प्रसन्नतासे) अच्छा महाराज आज रामजी के व तुम्हारे चरणो के प्रताप से मेरा सब दुःख दूर हो गया मराराज मुझे कन्या के ब्याह का रात दिन फिकर रहता था अब कृपा करके यह भी बताओ सम्बन्ध के वास्ते कौन सा दिन अच्छा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं०—(पत्रा देख) लाला सम्बन्ध भेजने को कलका दिन उत्तम है अब शीघ्र कन्या का विवाह कर अपार कन्या दान का फल प्राप्त करिये क्योंकि शुभ कामों अनेक विघ्न हुवा करते हैं।

लाला—महाराज आप सत्य कहते हैं इस संसार में पल का भी भरोसा नहीं अब अच्छे बैठे हैं न जाने कल क्या हो इस कारण लगे हाथों आप विवाह का भी कब का सूझता है।

पं०—(फिर पत्रा देख) लो यजमान इसी बैशाख सुदी का ब्याह सूझता है और आषाढ़ सुदी पंचमी का सूझता है अब तुम जिसे उत्तम समझो रक्खो॥

लाला—नहीं महाराज आषाढ़ का नहीं बैसाख का ही (नाईसे) लेभाई कलको सगाई लेकर जाना तैय्यार होजा।

नाई—लालाजी मैं तो सदैव ही तैय्यार रहता हूँ आप सब तैय्यारी करलीजिये।

पं०—अच्छा लाला कुछ और पूछना है।

लाला—(हाथ जोड़) नहीं महाराज सब तुम्हारी (कुछ देता है)

पं०—(खड़ा हो) अच्छा लाला सुखी रहो।

लाला—(खड़ाहो) अच्छा महाराज प्रणाम।

(पंडितजी का प्रस्थान)

नाई—लालाजी मैं भी जाता हूँ कलको फिर आऊँगा।

लाला—अच्छा कलको जल्दी आइयो।

नाई—अच्छा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(नाई जाता है)

लाला—(स्वगत) देखो जब नारायण कृपा करते हैं तब सब काम आपही बन जाते हैं चलें घर में चलकर चावली की मां को यह खुशी की खबर सुनाऊँ ।

[प्रस्थान]

चतुर्थ परिच्छेद

स्थान मोधूराम का गृह ।

मोधूराम की स्त्री मनोरी बैठी चर्खा कात रही है ।

[मोधूराम का प्रवेश]

मोधूराम—आज बड़ी खुशी का दिन है रामजी की दया से चावली की जन्म पत्री एक बहुत धनी के पुत्र से मिल गई है अब कलको जो कुछ रिवाज होता हो उसके माफिक सगाई भेज दो।

चावलीकीमा—(प्रसन्नता के साथ जल्दी से चर्खे को हटाकर) क्या जन्म पत्री मिल गई ।

लाला–हां मिलगई अभी पं॰जी जन्म पत्री मिलाकर अपने घर गये है और मैं यहां तुमको खुश खबरी सुनाने आया हूँ ।

चावलीकीमा–बड़ी खुशी की बात है अभी घण्टा भर रहता गुसाऊँ चावली की पत्री लेकर गया था और तुम्हारे सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धी के घर की व लड़के की बड़ाई करता था। ना
जाने के थोड़ी देर बाद तुम्हारा छोटा भाई आया
चावली की सगाई को मनह करै था वह तो बहुत
बक गया बहुत सी बात मेरी समझ में भी नहीं आई
यहही मतलब था कि चावली का व्याह सगाई कुछना
करों और उसे पढ़ाओ।

सोधू—वह बड़ा पागल है मेरे पास भी सिर खया
उसे भौंकने दो। जब उसने अपने बड़ों की सारी
छोड़ दी तब उसकी बातो पर क्या ध्यान दें। देखो
लालाजीने पकौड़ीमल क्या अच्छा नाम रक्खा था।
उस नाम को छोड़ अब दूसरा ही नाम रख लिया
तो जल्दी वह नाम याद भी नहीं आता अब तो पकौड़ी
मल के नाम से उसे शर्म्म आती है।

मनोरी—हैं नाम से शर्म आती है यह क्या बात है।

लाल--हां एक दिन की बात सुनाऊं। वह रोज आकर मुझे
कहता था कि तुम एक बार समाज में आना कई बार
मैं टालगया पर एक दिन मेरे जीमें आया कि चलो देख
आवें समाज में क्यों बात है जिसकी यह कई वार
कर चुका है। मैं डरता २ अपनी बिरादरी वालों से बच
एक दिन समाज में गया।

मनोरी--क्यों समाज में जाने से किस का डरथा

लाला-•समाज में आर्य्य ही जाते हैं सो कहीं कोई मुझे
आर्य्य न समझ बैठे।

मनोरी--हां तब क्या हुआ।

लाला--वहां पहुंच कर मैने देखा कि एक बहुत बड़े से मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से आदमी चुपचाप बैठे हैं। और एक मेज के पीछे एक आदमी खड़ा हुआ जोर से कुछ कह रहा है। मैं उसका रक्खा नाम आर्य्य बन्धु तो भूल गया और पकौडीमल पकौडीमल कह कर दरवाजे के अन्दर जाकर बैठे हुये आदमियों के बीच में खड़ा होकर आवाज देने लगा कई आदमी मुझे हाथ से पकड़ कर बैठानें लगे मैं घबरा कर बैठगया मैंने देखा कि पकौडीमल मेरे पास ही बैठा है। मैंने उस से पूछा कि तू क्यों नहीं बोला। उसने चुपके से कहा भाई यहां चुप रहो बाहर जाकर मुझसे बोलना। बस मैं जान गया कि इसने अपना नाम आर्य्य बन्धु बताया था। और मै वह नाम लेना भूल गया बस यह इस ही शरम के मारे मुझसे यहां बोलना नहीं चाहता। सोथोड़ी देर तक तो मैं वहां बैठा रहा फिर मैं वहां जी न लगने के कारण अपनी दुकान पर चला आया तभी से जानता हूँ कि इसे पकौडीमल नाम से शरम आती है।

मनौरी [मुस्करा कर] खूब यह आपने अच्छी सुनाई। खैर जाने भी दो उसकी जो खुशीहो वह करे और हमारी जो खुशी होगी हम करेंगे तब वह हमारे बस में न हम उस के बस में। वह अपनी लड़की का व्याह सगाई हमारे कहने से नहीं करता हम उस के कहने से अपनी लडकी का व्याह सगाई क्या न करें

[शेष फिर]

हरिद्वार कुंभ

भारतवर्ष में हिन्दुओं का सब से बड़ा मेला कुम्भ होता है इस में भारत के लगभग समस्त जिलों और क़सबों के मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकत्रित होते हैं ।

पूर्व समय में हिन्दुओं का यह वह पवित्र पर्व था जिसमें भारत के समस्त विद्वान् एकत्रित होते थे। और वहां पर अनेक धार्मिक और राजनैतिक विषयों को निर्णय करते थे किन्तु शोक है काल की कुटिल गति से आज यह पवित्र पर्व बिलकुल ग बकल गया अर्थात् अब लकीर के फकीर पण्डित और मुसण्डे साधु एकत्रित होकर निर्धन प्रजा का रुपया ऐसे कामों में व्यय करते हैं जिससे लाभ के स्थान पर देश को अत्यन्त हानि होती है जिसको यहां पर लिखकर पाठकों का वृथा समय नष्ट करना नहीं चाहते हैं क्योंकि आज इस बातको कौन विचारशील पुरुष नहीं जानता कि भारत में साधु रूपधरी मंडल देश का धन सुलफे, गांजे, आदि नशें तथा अय्यासी मे व्यय कर देश में अकाल, आलस्य, दंभ, और पाखण्ड को बढा रहा है ।

किन्तु परमात्मा को धन्यवाद है जिसकी कृपा से आज इस कुम्भ के पवित्र अवसर में कुछ परिवर्तन दिखाई देता है अर्थात् इस अवसरपर धार्मिक संस्थाए वहां जाकर अपने २ धर्म का प्रचार करने लगी हैं । इस लिये हमारा भी विचार है कि इस पुनीत अवसर को हाथ से न जाने दिया जाय और बाल विधवा विवाह प्रचारणी सभा भी अपना प्रचार करे क्यों कि इस अवसर पर सब प्रान्त के मनुष्यों में बडी आसानी से निरापराध बाल विधवाओं के दुःख से छूटने के मार्ग शास्त्रोक्त पुनर्विवाह का प्रचार भली भांति होसकता है इसलिये प्रत्येक सहृदय बाल विधवा विवाह के हितैषियों से प्रार्थना है आगामी वैसाख में हरिद्वारकुम्भ अवसर को वृथा न जाने दिया जाय और यथा शक्ति अवश्य प्रचार किया जाय । इस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये ५००—६०० रुपया पर्य्याप्त होगा । आशा है आपलोग यथाशक्ति दान देकर अक्षय पुण्य के भागी बनोगे ।

भवदीय निवेदक

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

मन्त्री

बिजनौर में नवीन विधवा विवाह ॥

१५ अप्रैल सं. १९१४ को चान्दपुर जिला बिजनौर निवासी प्रतिष्ठित धनाढ्य लाला कुँवरसेन वकील की बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह रामपुर निवासी लाला ज्वालाप्रसाद वकील के चिरंजीवि पुत्र लालता प्रसाद से बड़ी धूमधाम के साथ हुआ है। यह कन्या सामाजिक कुरीति के कारण १२ वर्ष की आयु में विधवा होगई थी। लाला काशी नाथ बी० ए० मुंसिफ बदायूं तथा अन्य पुत्रों नें बड़ी प्रसन्नता और परिश्रम से इस कार्य्य को किया इस विवाह में लालाजी के कुटुम्बी तथा राय बहादुर किदारनाथ पिनश्नर जज राय ज्वाला प्रसाद बी० ए० इंजिनियर लाला सीता राम एम्० ए० आदि अनेक सज्जन सम्मिलित हुए। इनके एलावा शहर के पण्डित वेनी प्रसाद मिश्र एम्० ए० डिप्टी कलेक्टर कुँवर हिम्मत सिंह जी एम्० ए० डिप्टी कलैटर लाला प्यारे लाल असिस्टैन्ट सर्जन लाला बुद्धराम इंजिनियर बाबू शारदा प्रसाद मुखत्यार लाला ठाकुरदास जी रईस आदि अनेक सज्जन उपस्थित थे जिनका नाम स्थानाभाव से नहीं लिखा जाता। १६ अप्रैल को सहसपुर वालों की कोठी पर बड़े समारोह से एक सभा हुई जिस में लाला सीताराम एम्० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि के व्याख्यान विधवा विवाह पर जिनका सभा पर बड़ा असर हुआ इस सभा में लगभग १००० मनुष्य थे यूँ तो नित्य ही पुनर्विवाह होते हैं किन्तु ऐसी धूमधाम से अग्रवालों में यह प्रथम विवाह हुआ है। इस विवाह में बाल विधवा विवाह सभा को ५)) रु० दान मिला है जिस के लिये सभा लाला कुँवरसेन रईस वकील साहब को अत्यन्त धन्यबाद देती है।

इस विवाह के समय रामपुर निवासी लाला ज्वाला प्रसाद वकील को बिरादरी वालों ने अत्यन्त दुखी किया किन्तु लाला साहब अपने पथ से विचलित न हुए।

रामपुर के एक दो हठी पंडितों ने शास्त्रार्थ की बहुत धमकी दिखाई जिसका पूरा हाल आगामी अङ्क में होगा।

सूचना
पचास रुपया इनाम

यह इनाम उनसात सज्जनों को दिया जायगा जिनके अबलाहितकारक में एक वर्षतक सब से ज्यादा और अच्छे लेख आवेंगे। पहिले तीन कोइनाम १०) रू० और बाद के तीन इनाम पांच रुपया है लेख सम्पादक अबलाहितकारक के नाम आने चाहिये। यह इनाम श्रीमती पूर्णा देवी जीकी तरफ से दिया जायगा।

उपदेशकों की आवश्यक

सभा को दो ऐसे उपदेशकों की आवश्यकता है जो हिन्दी उर्दू भली भांति जानते हों और संस्कृत का भी बोध हो ताकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय पर शास्त्रार्थ भी कर सकें। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा प्रर्थना पत्रके साथ प्रसंशा पत्र भी आने चाहिये।

मंत्री संयुक्त प्रान्त बाल विधवा विवाह

प्रचारणी सभा बिजनौर

च्यवनप्राश

यह एक प्रसिद्ध औषध है। जिसके चमत्कारिक गुणों को समस्त वैद्य और हकीम जानते हैं। यह औषधी सब प्रकार के प्रमेह (जिरयान) दुर्बलता और मस्तिष्क की दुर्बलता नेत्र रोग सिर दर्द खांसी दमा और स्मरण शक्ति को अत्यन्त लाभ पहुँचाती है। दिमागी काम करने वालों के लिये संसार में एक ही चीज़ हैं। इस मौके को हाथसे न जाने दीजिये देखिये उत्तम और कितनी सस्ती मिलती है। मूल्य केवल ८) रुपये सेर

पता--पं० बलभद्र वैद्य

पास दीनबंधु प्रेस बिजनौर

आवश्यकता

एक राजवंशी कुलीन २३ वर्ष युवा वैश्य के लिये बाल-विधवा कन्या की आवश्यकता है। लडके की मासिक आमदनी ४०) माहवारी दूकान दारी से है। लडका हृष्ट पुष्ट सर्वांग पूर्ण है। पत्र व्यवहार मंत्री बालविधवा विवाह प्रचारणी सभा बिजनौर से करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमाद्रि तैल

यह तैल शिर सम्बन्धि रोगों के लिये कई वैद्यों की सम्मतिद्वारा तैयार कराया है । इसके लगाने से शिरशूल [सिरदर्द] मस्तक में भारीपन रहना धूप में चलने या पढने लिखने से चक्कर आना । बुरे स्वप्न देखना, नींद कम आना। दिमाग की दुर्बलता नेत्रों के सामने अंधेरा होना, शिर में खुश्की और खुजली बालों का सफेद होना या उखड़ २ कर गिरना चित्त की चंचलता आदि के लिये अद्वितीय तैल है

ऐसा कौन पुरुष होगा जो इस के अपूर्व गुणों पर मोहित न होजाय । इसकी अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है । एक बार अज़माइश कर के देखिये मूल्य प्रति शीशी १)

मिलने का पता

मैनेजर दीनबन्धु प्रेस बिजनौर

सर्वोपकारी समाचार

तपेदिक सिल खाँसी दमा अतिसार बवासीर लिफ दर्द रीह कब्ज़ दर्द गुरदा सूज़ाक बहुमूत्र और सर्व स्त्री रोग की दवा गुण कारी दवाई है "अबलाहितकारक पत्र" के ग्राहकों कों (जो बाकी सब इलाज से निराश हैं) मुफ्त दिया जाता है सिर्फ डाक खर्च उनके जिम्में ।

पता----

मैनेजर भारत औषधालय ॥

सूत्रमंडी लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ती और बढ़िया

शंकर सिलाई की मशीन

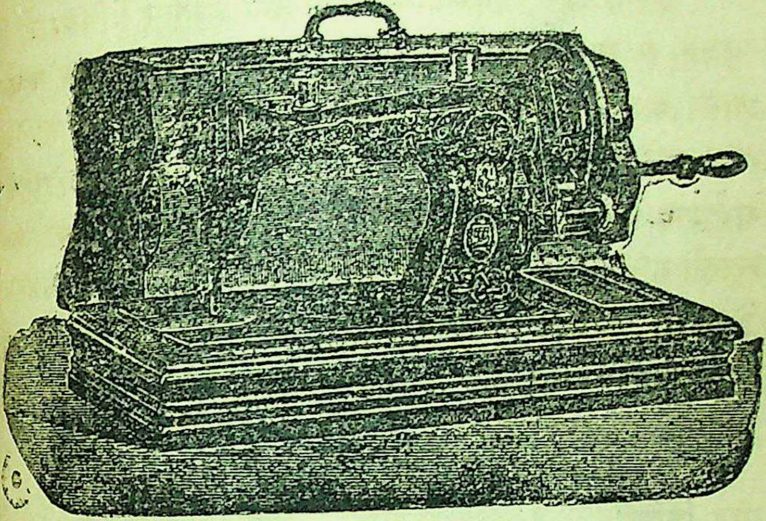

यह मशीने स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल जी की स्मारक स्वरूप हैं

हर्ष समाचार ।

यह मशीन विलायत से मंगाई गई है जो अन्य मशीनों के मुक़ाबले मे बहुत सस्ती और बढ़िया हैं । इनकी अधिक प्रसंशा लिखना वृथा है सूचीपत्र मंगाकर देखिये ।

अबलाहितकारक के ग्राहकों को १०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा ।

पता—

मैनेजर इंडिया इम्पोर्ट आफिस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिब्बी १ गोली ३२

आरोग्य देवी

आतंक निग्रह गोलियां

मूल्य १)

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारीरिक बल हो।

इन गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है। गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। यह गोलियां लाखों रु० की प्रतिवर्ष बिकती हैं। यह ही इनकी उत्तमता का प्रमाण है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बलकांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये सूचीपत्र मंगा लिजिये — वैद्य शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी, जामननगर-काठियावाढ़

मलेरिया का अर्क

जो कि प्लेग की हब्सी शकल है बाटली वाले की बनाया मि क्चर या गोलियां १)

बाटली वाले का क्लोरल हैजे की एक मात्र दवा १)

बाटलीवाले का खिजाव। यह खिजाव पहिले खिजाव से अच्छा है जिससे सफेद बाल कुदरती बालों के समान हो जाते हैं।

बाटली वाले का दांतों का मंजन-यह दवा अंग्रेजी दवाओं से वैज्ञानिक रीति से तैयार की गई है मयां फल और कारबोलिक एसिड

बाटलीवाले का दाद का मलहम।)

यह दवा सब जगह मिलती है।

डा० बाटलीवाला

वरली लबोटरी दादर बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबाल वृद्ध स्त्री पुरुषों की शिक्षाकी पुस्तकें

डाक व्यय सहित

एक रु० में ६०० पृ० की १८ पुस्तकें ॥

यह वह पुस्तकें नहीं जिनको पढ़कर रखदोगे । इस में अंग्रेजी और हिन्दी के प्रसिद्ध लेखकों की लिखी पुस्तकें हैं जैसे मेरी कुरैली की प्रसिद्धनीति की पुस्तक "ब्यूटीज आफ मेरी कुरैली,, का हिन्दी अनुवाद नीति सोन्दर्य है इस में प्रत्येक विषय की अच्छी व्याख्या की गई है ।

१ नीति सौन्दर्य
२ माता पिता का कर्तव्य
३ बाबा का विवाह
४ कान्यकुब्जअबला विलाप
५ विधवा विवाह विवरण
६ लक्ष्मी उपन्यास
७ मन की उमंग
८ रजनी चरित्र
९ कुमार रक्षा
१० मोहब्बत का फंदा
११ भारत के आदर्श बालक
१२ वनिता बन्धु
१३ अबलासुधारभजन बत्तीसी चारोंभाग
१७ विधवा भजन वाटका
१८ विधवा विलाप

अबलाहितकारक ग्राहकों को ।।।) में दीजायगी

मिलनें का पता—मैनेजर दीनबन्धु मेल विजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर एस, के, बर्म्मनका वही प्रसिद्ध बिना मूल्य

१९७१का ... नये रूपमें छपा है, इसवार भी नये नये मनोहर चित्र दिये गये हैं पीछे हता... होगा

कांत

चाहे तो ... कार्ड ... नाम वो ठिकाना (भिन्न भिन्न स्थानोंसे लिख भेजिये आपको सेवामें भेजा जायेगा। न० १

डाक्टर एस, के, बर्म्मन की बनाई प्रसिद्ध—

प्लेग रोकनेवाली गोली।

बचो

बचो

बचो

प्लेग

प्लेग

प्लेग

प्लेग के साथ एक प्रकार अति सुक्ष्म जीव वा कीड़ोंका सम्बन्ध है। प्लेग के खून, खखार, थूक वो मल में ये पाये जाते हैं। यही खून में विकार पैदा करते हैं; जिससे आदमी जल्द मर जाते हैं। इनका असर पहुंच जाने पर फिर रोगीका बचना कठिन है। इसलिये कहीं प्लेगका डर होते ही जहांतक जल्द होसके प्लेग रोकनेवाली गोली मंगा रक्खो। इस गोलीका शरीर के खून पर ऐसा असर होता है कि जिससे प्लेगके कीड़े फिर वहां ठहर नहीं सकते न अपना विष फैला सकते हैं। समय रहते इस गोलीके सेवन से सैकड़ों आदमी प्लेगके विपद से बचे हैं। आपभी न चुकें।

मीताज—१ गोली रोज ठण्डे पानी से निगल जाना बच्चों को आधी चौथाई

मो० १—२८ गोलीकी डिबिया ॥)आने १ से ८ डिबियातक डा:म: ।-)आने ५८ डिबिया तक ।=) आने

६० गोलियोंकी बड़ी डिबिया ॥।)आना १ से ६ डिबिया तक डा: म: ।-) आने १२ डिबिया तक ।३) आने।

डा: एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

श्रीश्रीप जदीकादत्त दीन बन्धु प्रेस में छपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

ज्येष्ठ सम्वत् १९७१ वै० (अङ्क ३ वर्ष ११)

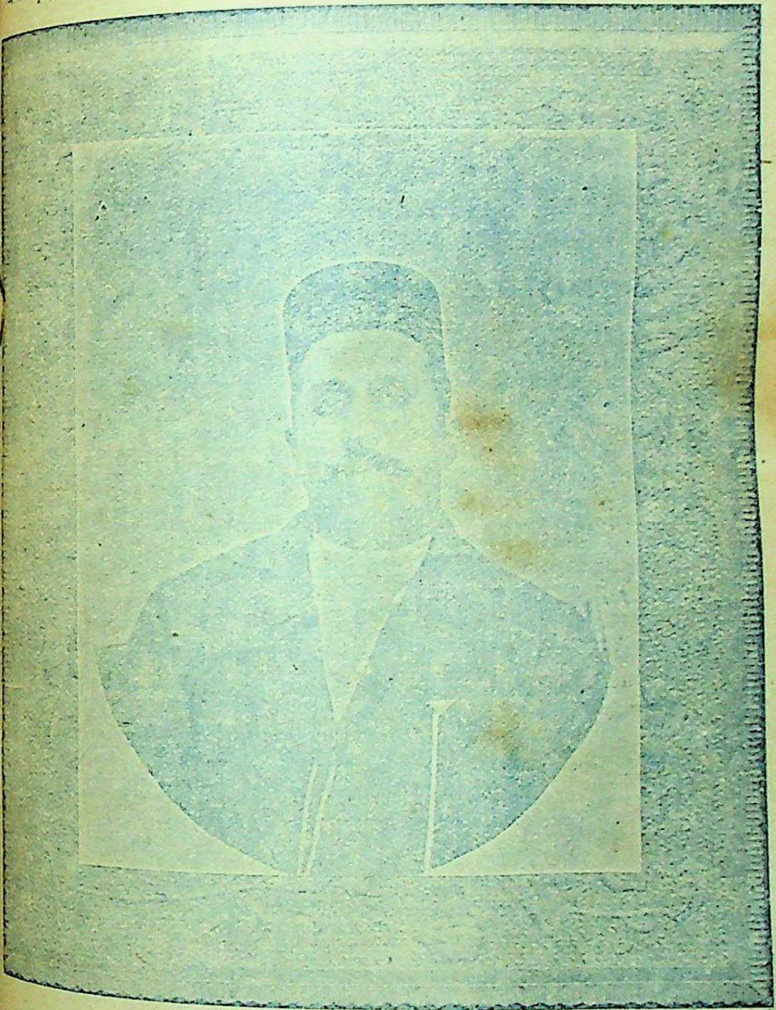

संस्थापक श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्मा

सम्पादक व प्रकाशक श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ओं नमः शिवाय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित।

अबला हितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥

एकादश वर्ष | जेष्ठ सम्वत् १९७१ | अङ्क तृतीय

ईश्वर-प्रार्थना

(अरबी छन्द के अधार पर)

जो मेरी वाणी के रूप में भी।
बदन की रोमावलि हों सारी॥
न होसके मुझ से न'थ वर्णन।
दयालुता जो कि है तुम्हारी॥ १ ॥
अनिल अनल मृत्तिका व जल को।
मिला के आकाश साथ क्षण में॥
बनाया पुतला यह कैसी पुतली।
है नाटिकाकृति ममाण कारी॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिच्छ हो और अरूप हो तुम ।
हो निर्विकार और सर्वव्यापी ॥
जगत् पिता तुम जगत् की माता ।
अनादि है प्रकृति तुम्हारी ॥ ३ ॥
जो कार्य्य भक्तों के कुछ बिगड़ते ।
दिखाई देते जिस समय पर ॥
दयालुता से कृपालु होकर ।
सशक्ति होते हो रूपधारी ॥ ४ ॥
हैं जितने संसार बीच प्राणी ।
यति सती और ब्रह्मचारी ॥
गृहस्थी सन्यस्थी वानप्रस्थी ।
समस्त मत धारी और भिखारी ॥ ५ ॥
तुम्हारी करुणा के हैं सहारे ।
हो तुम जगन्नाथ विश्व धारी ॥
उद्धारते हो सभी को स्वामिन् ।
कृपा की दृष्टि के वारि वारी ॥ ६ ॥
मेरी भी अब "लौ" तुम्हारी करुणा ।
की लहर में जाके तररही है ॥
कृपा की दृष्टि से पार तारो ।
है नाथ खेवे की मेरे वारी ॥ ७ ॥
बस अब तो मेरी तरफ निहारो ।
दया की दृष्टि से आज स्वामिन् ॥
क्षमा करो निज दयालुता से ।
हुए जो अपराध मुझ से भारी ॥ ८ ॥

कविराज हीरालाल शर्म्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

अमेरिका स्त्रियों की सभ्यता का जन्म-स्थान है। इङ्गलैण्ड की औरतें मर्दुमी के जिन बाकी अधिकारों के पाने के लिये तरह तरहकी आफतें मचाती हुई अकलमन्द मर्दों के नाकों में दम कर रही हैं वे सभी अधिकार अमेरिका की स्त्रियें प्राप्त किये हुए हैं। वहाँ बीवी राबिसन नाम की एक स्त्री कोलरेडोकी कानूनी-कौंसिल में मेम्बरी करती है। वह खूब योग्यता के साथ अपना कार्य्य करती है और बड़े बड़े कामों के करने में किसी मनुष्य से पीछे नहीं रहती।

किन्तु भारत की स्त्रियां परदे के अन्दर बैठीं कूप मंडूक ही बनी हुई है यह बेचारी देश सेवा या राजनीति किसे कहते हैं यह भी नहीं जानतीं। और पुरुषोंने यह समझ रक्खा है कि यह तो हमारे पैरों की जूती हैं और इनका जन्म केवल हमारी सेवा सुश्रुसा के ही लिये है। बाकी इनको संसार से कुछ मतलब ही नहीं। तबही तो देश रसातल को जारहा है।

इस मास में कई पत्र अवला हितकारक कार्य्यालय में इस विषय के आए है कि फलाने की विधवा लड़की ईसाई हो गई अमुक की विधवा कन्या कसाई के साथ भागी फलानी नें गर्भ गिराया इत्यादि २ शोक हैं ऐसे२ अत्याचारों के होते हुए भी हिन्दू आंख मींचे बैठे हैं। सनातनधर्म महामंडल तथा सनातनी अखबार मौन धारण किये हुए हैं और विधवा आश्रम आदि द्वाराइसका कुछ प्रबन्ध नहीं करते। जो महाशय हमारे पास ऐसे पत्र भेजा करें कृपा करकेएकपत्र सनातनधर्म महामंडल को बनारसतथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित दीनदयालजी पर भी भेजदिया करें ताकि वह भी जान जांय विधवा विवाह न होने से जाति को कितना धक्का लगता है

जारी का फल—प्रकाश से ज्ञात हुआ कि एवटा में एक मनुष्य ने अपनी भावज को जार के साथ रात्रि में पद्दरि के समय देखक्रोध बान्ध हो जार को मार डाला और भावज की नाक काटली। साहब मेजिस्टेट हजारा नें (५ मई का फैसला) अपराधी पर एक पैसा जुरमाना और नाक काटे पर एक पाई जुरमाना किया यदि जुरमाना न दे सके तो १५ मिनट की कैद। यह दण्ड नाम मात्र है। हमारी राय में उसको कुछ सजा नहीं मिलनी चाहिये क्योंकि उसने जोश में ऐसा किया

श्रीवेंकटेश्वर समाचार बम्बई से निकलने वाला बहुत पुराना हिंदी पत्र है प्रायः यह बडे २ विद्वान् सम्पादकों द्वारा सम्पादित होता रहा है किन्तु अब कुछ दिनसे इसका ढग बदलने लगा है जिन कार्योंको देश हित और जाति हित के लिये जातीय और विजातीय विद्वान मुक्त कंठ से कह रहे हैं जिनको कोई भी बिचारवान नहीं कह सकता कि इन उपायों के बिना जाति की रक्षा होसकती है। जैसे अछूत जातियों के प्रति घृणा त्याग कर अपने पिछडे भाइयों को छाती से लगाना बिधर्मियों के हाथों से उनकी रक्षा करनी और बाल बिधवा कन्या का पुनर्विबाह कराकर उनको भ्रूणहत्या और विधर्मी होने से बचाना तथा बाल्यावस्था में कन्याओं की शादी न करके उनको ब्रह्मचर्य पालन करनें आदि के प्रायः विरुद्ध ही लिखता है सम्पादकजी यह कहनें मात्र से हिन्दुओं की संख्या घटने से नहीं रुकेगी कि मत घबराओ हमारी संख्या घटेगी नहीं हम अजर हैं हम अमर हैं। मिट्टी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनका राज्य है जो मृत्यु को अपनी चीज़ समझते हैं वही मृत्यु को आलिंगन करते हैं और अविनश्वर आत्मा मृत्यु के अतीत है। उसकी मृत्यु की कल्पना करना निरापागलपन है पृथिवी के जीवों में हम भारतवासी हिन्दू आत्मस्वरूप हैं। क्या १८८१ से १९११ तक की मनुष्य गणना रिपोर्ट नहीं देखी हिन्दू कितने घटे और ईसाई ३० लाख बढे यदि हिन्दू इसही प्रकार होते रहे तब क्या आप आशा कर सकते हैं हिन्दू जाति जीवित रहेगी आठ वर्ष की कन्याओं का विवाह १६ वर्ष के लडकों से करके ब्रह्मचर्य की २५ वर्षतक अवधि में कभी करोगे। या शास्त्र में समावर्तन से प्रथमभी विवाह होसकता है। बाल विधवाओं के विवाह न करके उनको ईसाई और मुसल्मानों के घरमें रखोगे या भ्रूण हत्या कराओगे। प्राय- अदालतों में इस प्रकार के झगडे होते हैं क्या वह आपकी दृष्टि से नहीं गुजरते पाठकों के दिग्दर्शनार्थ आगे एक पत्र २९ मई १४ के फसले का प्रकाशित करते हैं।

लाला लाजपतराय ने पंजाब हिन्दू सभा में जो व्याख्यान दिया था उस में ईसाइयों का पांच सालका काम नीचे लिखे अनुसार दिखाया था। यह भी कहा था कि डाक्टर डेनिंग का कहना है कि धन जन की सहायता मिले तो पांच वर्ष में १ जिले से ५० हजार ईसाई बनाये जा सकते हैं।

पांच साल का ईसाइयों का काम

नाम जिला	जो ईसाई हुए	जो होने वाले हैं
बदायूं	१३०००	४६८०००
मथुरा	२४०००	३४००००
रुडकी	१७०००	५०००००
अम्बाला	१५०००	२०००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरट	४५०००	६०००००
	११४०००	२१०८०००

ऊपर के हिसाब से १ लाख १४ हजार ईसाई हो गए और २१ लाख ८ हजार होने वाले हैं । धर्म कैसे रहेगा यह चिन्ता किस धर्म प्रिय भारतवासी को न होगी —शोक है इस प्रकार ईसाइयों की नित्य वृद्धि होते भी हिन्दू मौन धारण किये बैठे हैं इन ईसाई होनेवालों में अछूत और विधवा ही अधिक हैं क्योंकि हमारे यहां इनको आश्रय नहीं है सनातन धर्म महामंडल से पूछते हैं कि मंडल ने विधवा और अछूतों की रक्षा के लिये क्या २ उपाय किये ।

अभ्युदय को उस के सम्वाद दाता नें लिखा कि शाहाबाद के मुहर्रिरमी झगडे की समाप्ति हाते देर नहीं हुई कि छूटे हुए मुसल्मानों में से दो एक नें हिन्दू देवस्थान को खोद डाला उसपर जो पीपल का पेड़ था उस की डालें काटडालीं । यह देस्थान बहुत प्राचीन था और पूजा होती थी हिन्दूओं ने ज्वाइण्ट मेजिस्टेट के पास फरियाद की । साहब बहादुर तुरंत आए और जैसा हिन्दूओं ने बताया था स्थान भग्न और विच्छन्न पीपल पाया । तहकीकात होरही है

नित्य हिन्दू और मुसलमानोंके झगड़े बढ़ते ही जातेहैं। एक देश में रहने वाली दो जातियों के बीच ऐसी घटनाएं शोक जनक है । हम मुसल्मान नेताओं का इस ओर विशेष ध्यान दिलाते हैं वह अपने अनपढ़ मूर्ख भाईयों को ऐसी भयानक बातों से रोकें । और गवर्नमेन्ट से प्रार्थना है ऐसे अत्याचारियों को कठिन दण्ड दें

गत अढ़ाई वर्ष में सियालकोटजिले में मिशनरियों ने १५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अधिक ईसाई बनाये हैं। परन्तु वे न तो गिरज में जाते हैं न अमली धार्मिक कार्यवाई करते हैं। इसका अफसोस पादरी साहब को है। क्या पादरी साहब नहीं जानते कि ये किस लिये ईसाई हुए हैं। कितने आदमी पेट के लिए ईसाई होते हैं

हिन्दुओं को ऐसे फंड और कारखाने खोलने चाहिये। पेटके कारण अन्य धर्मों में जाने वाले भाइयों को आश्रय मिले जिस से हमारे भाई ही हमारे शत्रु न बने।

सवातीन करोड़ का धुंवा

भारत वर्ष भर में मोटरों की संख्या गत मार्च के हिन्दी चित्रमय जगत में मुख्य २ नगरों तक की दीगई थी परन्तु हम भारत सुदशा प्रवर्तक के अनुसार प्रान्त २ की नीचे देते हैं।

बंगाल	१९४०
बिहार व उड़ीसा	२४४
ब्रह्मदेश	४५४
संयुक्त देश	३५०
राजपुताना	११३
मध्य प्रदेश	११६
बंबई इलाका	१८७०
दक्षिणी रियासतें	३९
मध्याहिन्द की रियासतें	२४
अजमेर मारवाड़	२८
मदरास प्रान्त	६६८
आसाम	१४९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलोचिस्तान	२१
शायठय सराहिन्द	५१
योग	६७७१

यद्यपि पूर्वोक्त सूची पूर्ण नहीं है कारण कि पंजाब कश्मीर हैदराबाद मैसूर आदि अनेक स्थानों की मोटर संख्या इसमें नही आई है। मोटरों का शौक बढ़ रहा है। यदि एक मोटर का मोल ५ हजार लगावे तो ३५५००० सवा तीन करोड़ रुपया यूरुप को निकल गया। उसी कदर भारत दरिद्र हुवा मोटर देश में दरिद्रता और अनारोग्य मूलक है इस से उत्पन्न कारबन वायु को अवश्य ही दुषित करता है। तेज चाल में टकराकर मनुष्यों का प्राण नाश भी होताहै यदि तेज नहीं चलाते तो माटर के रखने का मजा ही क्या है यह भी एक सभ्य का चोचला है जो मील के लिये मोटर की आवश्कता प्रतीत होने लगी है।

माननीय मदनमोहन मालवी चारवर्ष से हिन्दू युनिवर्सिटी के लिये भिक्षुक बने फिरते हैं किन्तु अबतक एक करोडकी भी नहीं हुआ और विदेश का मोटरों के जरिये सवातीन करोड़ धुवे के रूपमें गया। ईश्वर देश के धनियों को बुद्धि दे।

हिन्दुओ जागो

प्रोफेसर बालकृष्ण एम्० ए० नें सहयोगी प्रचारक में एक लेख मनुष्य गणना के अधार पर लिखा है जिसमें दिखाया है कि ईसाई अपनी संख्या हमसे बढ़ा रहे हैं और हिन्दूजाति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्रास होरहा है । ईसाई ही नहीं मुसलमान भी बढ़ रहे हैं यदि इसी प्रकार शिखाधारियों की घटती होती रही तो भविष्य में हिन्दुत्व की क्या दशा होगी । तीन धर्म भारत में मुख्यरूप से हैं । हिन्दू मुसलमान और ईसाई उनकी १८८१ व १८९१ ई० की स्थिति इस प्रकार है ।

नाम थोक	१८८१	१८९१	प्रतिशतवृद्धि
हिन्दू	१८७९३७४४०	२०७७३१७२७	१०.५
मुसलमान	५०७२१५८५	५७३२११६४	१४.४
ईसाई	१८६२६३४	२१८४३४०	२२.४

ऊपर के चित्र में सभी धर्म बढ़े हैं परन्तु १८९१ से १९०१ तक में हिन्दुओं की वृद्धि बन्द होगई ।

	१८९१	१९०१	वृद्धि प्रतिशत
हिन्दू	२०७७३१७२७	२०७१४७०२६	०
मुसलमान	५७३२११६४	६२४५८०७७	८.९
ईसाई	२२८४३४०	२९२३२४१	१२.९

	१९०१	१९११	वृद्धि प्रतिशत
हिन्दू	२०७१४७०२६	२१७५८६९२०	५
मुसलमान	६२४५८०७७	६६६२३४१२	६६
ईसाई	२९२३२४१	३८७६७२०	३३.५

ईसाईयों की प्रान्तवार सैकड़ा पीछे वृद्धि

पञ्जाब २०० मध्यप्रदेश ६३९३ हैदराबाद १६३ कश्मीर १३१ सिकम १११ आसाम ८५ युक्तप्रान्त ७४.५ बिहार ५६ मद्रास में १६

यह लिखकर आप ने दिखाया है कि मद्रास में जो बहुत बढ़ती की खबर थी वह ठीक नहीं और पंजाबी आर्य्य जो फूले थे कि हमारी पवित्र आर्य्य भूमि में किरानी धर्म का बास नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होसकता वहां उनकी दिन दूनी उन्नति होरही है । पंजाब सब से गिरगया है । दशवर्षों में १३३१३० पंजावी ईसाइयों की गोदमें बैठगए । जहां २ आर्य्य समाज का जोर है वहां २ ईसाईमत का भी खूब प्रचार है ।

आर्य्यसमाजकी शिथिलता और पंजाब में ईसाइयों कीवृद्धि

स्यालकोट में	३६६८१	ईसाई बढे
लायलपुर में	२२३५१	,,
गुरुदासपुर में	१८८९४	,,
लाहोर में	१४४८५	,,
शाहपुर में	८५२५	,,
गुजरानवाला में	१३४६४	,,

प्रोफेसर महाशय आश्चर्य से कहते हैं कि क्या इन इलाकों में इतने आर्य्य भी बढे हैं ? यदि नहीं तो आर्य्यसमाज क्या काम करता है । सप्ताहिक अधिवेशनों में प्रार्थना करले या अधिकार पाले को लडने से वैदिक धर्म नहीं फैलसकता । यह तो स्वार्थ त्याग और ईसाइयों के समान अपने तन को स्वाहा करने से होसकता था परन्तु ईसाइयों के से ऐसे गुण हमारे में नहीं हमने परस्पर के लडाई झगडों में अपना उद्देश्य गमा दिया है इस प्रकार प्रोफेसर महाशय ने आर्यों को चुटकी लेकर जगाया है

१८८१ से १९११ तक ३० वर्ष में ईसाइयों की वृद्धि

नाम देश	प्रतिशत वृद्धि
आसाम में	८३८५
बडौदा राज्य	८१४
पंजाब	६१२
मध्यप्रदेश	४५७
बिहार उडीसा	३७९.५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद	२९९
युक्तप्रान्त	२७७
राजपूताना	२२९
बंगाल	७०.५
मद्रास	७०
बम्बई	६०

इस के उपरान्त योग्य लेखक ने आर्य जाति की मृत्यु का चित्र दिया है।

दस हजार निवासियों में प्रान्तवार
हिन्दुवों की संख्या

नाम प्रान्त	१८८१ ई० की संख्या	१९११ ई घटाव	कितनेवर्षों में इस प्रकार घटने से हिन्दू न रहेंगे
बंगाल	४८५५	४४८०	३१२
पश्चिमउत्तर सीमाप्रान्त पंजाब	७०८	५४६	१०१
	४१३०	३२९७	११९
आसाम	६२७३	५४१८	१९०
कुर्ग	९११३	७९३९	२०३
मद्रास	९१४७	८८८९	१०५८
अजमेर मारवाड़	८१६२	७७५०	५६४
बिहार	८४३०	८२२३	११९१
युक्तप्रान्त	८६२७	८५०४	१०७४
भारत वर्ष	७४३२	६९३१	५६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर साहब की ऊपर लिखी हिन्दु जाति की जीवन अवधि को देखकर हिन्दू जागो और संसार में अपने अस्तित्व की रक्षा करो । क्या आप विचार सकते हैं यदि इस ही प्रकार हिन्दुओं की क्षति होती रही तब एक हजार वर्ष के बाद तुम्हारा संसार में नाम निशान न रहेगा । अब आपको परस्पर सांप्रदायिक झगड़े छोड़ कर हिन्दु जाति की रक्षा के लिये एकत्रित होकर काम करना चाहिए । कितने शोक और पश्चात्ताप का अवसर है कि संयुक्त प्रान्त में यदि मैं गलती पर नहीं हूं तब कह सकता हूं कि एक हिन्दू सभा की शाखा नहीं जिस में वैश्य, शैव, आर्य्य जैन, आदि हिन्दू मिलकर अपनी रक्षाके उपाय सोचते हों दूसरी तरफ मुसलमान लोग और ईसाइयों की कितनी शाखा महा सभाएं हैं । हिन्दू जाति की क्षति के मुख्य कारण को अग्रिम अंक में लिखेंगे ।

हिन्दू जाति का मान रक्खो
क्या अब भी न होश करोगे क्या यवनों-के घर में धरोगे ।

हाय २ परमात्मा क्या संसार में अब हिन्दू जाति अपमान ही सहने के लिये रहगई है । हन्त ! जिन हमारी बहिनों ने मुसल्मानों की बेगम तक बनना स्वीकार न किया और अपने अमूल्य शरीरों को प्रचण्ड अग्नि में भस्म किया । जिन से परे शास्त्रकारों ने कोई नीच नहीं माना जैसा कि लिखा है कि "न नीचो यवनात् परः,, अर्थात् यवनों से परे कोई नीच नहीं शोक है हाय २ मूर्खता के कारण वह ही प्यारी बहिनें उन मुस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लमानों की बीबी बनी। प्यारे भाइयों जब कभी आपको ध्यान आता है कि अत्याचारी और जालिमों वगैरा के समय में हमारी बहिनों और बेटियों के साथ अत्याचार होते थे तब आप को कैसी मर्माहत पीड़ा होती है किन्तु हाय २ प्यारे हिन्दू भाइयों आज जब बृटिश गवर्नमैन्ट का राज्य है जिस में भेड बकरी एक ही घाट पानी पीती हैं। उस समय में भी हमारी निद्रा और मूर्खता के कारण हमारी बहिनें और बेटियें उनहीं मुसल्मानों की भोग्य बनें जोकि हमारी गौमाता के हिंसक हिन्दू धर्म के शत्रु हैं। इस से अधिक हमारे लिये कौन सी शोक और लज्जा की बात हो सकती है।

प्यारे धर्म प्राण हिन्दुवों जब आप के सामने ऐसी घटना आती होगी तब आप को कितना दुःख होता होगा। और दूसरी जातियों के सामने कैसी लज्जा आती होगी। प्यारे भाईयों आपको आज ऐसीही अपमान जनक और दुःखदाई घटना सुनाता हूं। २९ मई १४ को अलीगढ़ से दुःखित हृदय भाई का पत्र आया है वह पाठकों के दिग्दर्शनार्थ प्रकाशित करता हूं। जिस से आपको पूर्णतः विदित होजायगा कि हमारी निद्रा और हठधर्मी के कारण ही हिन्दू जाति रसातल को जा रही है।

श्रीमान् संपादक अबला हितकारक नमस्कार—
कृपा करके इस लेख को अपने पत्र में स्थान दीजिये पंडित झंडालाल मुहल्ला कुतब की सराय शहर अलीगढ़ के सारस्वत ब्राह्मण हैं इनकी पुत्री की उम्र २० साल की होगई यह लड़की १२साल की आयू में बेवा होगई थी अब यह लड़की एक कसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी दिन पिक्टोरियल के सम्बाद दाता ने हम में से समस्त सत्याग्रही स्त्री और पुरुषों का चित्र लिया, जो ३० अक्टूबर के पिक्टोरियल, में छापा गया। हम लोग अपनी धुन में लगे थे। उस दिन शाम को हम लोग कोयले की खान में गये और हड़ताल कराना आरम्भ किया। समय रात और दिन हम लोगों का बराबर था। एक रात को मैं, मि० नायडू और मि० केलन बेंक बैलंगी कोयले की खान में हड़ताल कराने को गये। हम लोगों को जाते देख कर किसी गोरे ने उस खान के मैनेजर को 'टेलीफोन' द्वारा खबर दे दी। उस खान का मैनेजर चाबुक लेकर मार्ग में बैठा हुआ हम लोगों के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। हमारे पहुँचने पर हमको बहुत सी उलटी सीधी सुनाई खैर, उसरात को हम लोग न्यूकास्टल लौट आये और हड़ताल कराने के लिये यथा शक्ति प्रयत्न करने लगे। निदान न्यूकास्ल के आस पास हड़ताल की आग भभक उठी। रेलवे में काम करने वाले मजूरों ने काम छोड़ा कोयले की खानें, लौण्डरी, अस्पताल, हॉटल, शराबखाना आदि में काम करने वाले भारतीय मजूरों ने हड़ताल कर दी यहां तक हड़ताल की उत्तेजना फैली कि मैला उठाने वाले भंगियों नें भी हड़ताल बोल दी।

जिधर आंख उठा कर देखो उधर ही हड़तालियों का दल दिखाई देता था। कितने मजूरों को कोड़े मारे गये, कितने बन्दूक के निशान बनाये गये, कितने संगीनों से बींधे गये और कितनों पर अमानुषी अत्याचार किया गया। पर 'मरज़ बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की' वाली कहावत के अनुसार हड़ताल की आग फैलती ही गई। कितने हजार मनुष्य काम धन्धा छोड़कर हड़ताली बन गये। इस के जोड़े का दुसरा उदहारण संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। ऐसे तो छोटे मोटे अनेक हड़ताल हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके हैं पर ऐसा सच्चा देश प्रेम स्वार्थ त्याग और एकता अन्य हड़तालों में सवर्था अभाव रहा होगा।

क्रमश:

भवानी दयाल

(भास्कर से)

गर्भ रक्षा

(लेखक डाक्टर बलदेव सहाय वैद्य)

स० इसमें तो मुझे संदेह मालूम होता है प्राय: गर्भवती स्त्रियां ऐसे समय पर होती हैं और उनको कुछ हानि नहीं होती है।

गं०—उन्हीं स्त्रियों को कुछ हानी नहीं पहुँती जो एक दो बार जन लेती हैं परन्तु पहलोठी स्त्रियों को अवश्य ही होती है।

स०—अच्छा दया की क्या हालत है।

गं०—बच्चा पैदा होने का समय बिलकुल ही निकट है।

स०—अबतो दया को बहुत ही कष्ट है बसती और रान फटी जाती हैं।

गं०—लो जी बेटा हुआ अब फ़ीता और कैंची उठादो।

स०—क्या करोगी।

गं०—नाल काटूंगी और बाधूंगी।

स०—हमारी दाइयां तो चाकू से काटा करती हैं और डोरे से या तांत से बांधती हैं इससे क्या नुकसान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गं°—नुकसान तो बड़ा है प्रायः नाभि में जख़म पड़ जाता है इस से रुधिर जारी होकर बच्चे के मरजाने का अंदेशा रहता है।

लीलावती—बहूजी बधाई बधाई बधाई।

गं°—अब जच्चा को नींद आजानी चाहिये नींद का आना अच्छा है इससे जनने की तकलीफ़ कम हो जाती है।

स°—क्या उपाय करनी चाहिये।

गं°—ऐसी कोई खास तदबीर नहीं बस यहां शोर गुल नहीं होना चाहिये अब मैं जाती हूँ जच्चा को दसमूल का काढ़ा पकवाकर देदीजिये।

स°—इससे क्या लाभ होगा।

गं°—इस काढ़े के पीने से दया को कोई रोग नहीं होगा और शीघ्र ही ताक़त आजायगी।

स°—क्या कोई रोग भी हो जाता है।

गं°—हां होता है।

स°—उसका क्या नाम है।

गं°—वह प्रसूत रोग है जिस की वजह से वर्ष में हजारों की जान जाती है

स°—तो उसका कोई उपाय भी है।

गं°—उपाय तो है अब संध्या का समय होने लगा है इस लिये मैं अब जाती हूँ कल आकर बताऊँगी दया को काढ़ा और बच्चे को जन्म घूटी पिलाना और दोनों की खबर रखना अच्छा मैं नमस्ते करती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स०—कृष्ण बजार से दस मूल ले आओ।

कृष्ण०—बहुत अच्छा अभी जाकर ले आता हूँ।

लीला० भावी जी दस मूल आगया।

स०—कृष्ण यह काढ़ा गंगा देवी जी को दिखा लाओ ठीक है या कोई औषधी इस में कम है।

कृष्ण०—देवी जी मैं आप को यह औषधी दिखलाने के लिये लाया हूँ इनको देख लीजिये।

गं० औषधी सब अच्छी हैं परन्तु इसमें जो वेल गिरी है इसकी जगह वेल की जड़ होनी चाहिये।

स०—कृष्ण गङ्गा देवी जी से प्रार्थना करनी कि आपको बहू जी याद कररहीं हैं अवकाश हो तो आप चलें बच्चा रोरहा है।

कृष्ण—देवी जी नमस्ते आपको बहूजी नें बुलाया है कोई बात जरूरी बूझनी है।

गं०—अच्छा थोड़ी देर में आऊँगी।

स०—देवी जी नमस्ते मैं तो आप की बहुत देर से बाट देख रही थी।

गं०—दयावती और बच्चा तो राजी खुशी है।

स०—दयावती आप की कृपा से बिलकुल राजी खुशी है परन्तु नन्हा रात से रोरहा है किसी २ वक्त चुप हो जाता है। नहीं तो रोता ही रहता है भगतू माली और मगलू शाह को दिखाया था तो उन्हों ने कहा कि ऊपर वालियों का खलिश है वह कुछ छुः छुः भी कर गये परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ और रोताही जाता है।

गं०—चलो चलकर देखें तो सही।

स०—चलिये और नन्हें पर कृपा कीजिये।

दयावती—देवी जी नमस्ते।

गं०—आनन्द से रहो नन्हा चिरंजीवी हो कहो बच्चे को क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करदिया।

दया०-देवी रात से रोरहा है मैंनें कुछ नहीं किया इस की वजह से मैं भी रात से बेकल हूँ।

गं०-अच्छा नन्हें को मेरी गोद में दो।

दया०-लीजिये और कृपाकर इसका कष्ट निवारण कीजिये।

गं०-सरस्वती इस बच्चे के ऊपर वालियों का तो खलिश नहीं है परन्तु घर वालियों का खलिश जरूर है। देखो अभी नन्हा राजी खुशी हो होजावेगा थोड़ा घृत लाओ।

स०-घृत का क्या करोगी।

गं०—इसकी हंसली उतर गई है मैं घी की मदद से उस हड्डी को उसी जगह बिठाऊँगी।

स०—घी यह लीजिये।

गं०—(घी मलकर) देखो अबतो यह नहीं रोता।

स०—अबतो नहीं रोता आपने जो कहा था कि घरवालियों का खलिश है तो क्या घर में भी हमारे भूतनी रहती है।

गं०—हां हां तुम्हारे घर में भी प्रेनती भूनती हैं।

स०—हैं: कहां हैं और कैसी हैं।

गं०—यहां ही हैं और तुम्हीं जैसी हैं।

स०—देवी जी मैं तो बड़े ही भ्रम जाल में पड़गई कृपा करके बताइये क्या बात है।

गं०—देखो मैंने इस वजह घर वालियों का का खलिश बतलया था जो तुम होशयारी और हिफाजत से बच्चे को उठाती तो क्यों बच्चे की हंसली उतरती और क्योंइस समय नन्हा तकलीफ उठाता समझ गई घरवालियों का खलिश।

स०—समझगई परन्तु ऊपर वाली कैसी होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गं०-बाहर के रहने वाले स्त्री पुरुषों को ही ऊपर वाली कहते हैं न तो कोई भूत है न प्रेत है ।

स०-जब भूत नहीं है तो यह मशहूर क्यों है ।

गं०-देखो भूत के अर्थ गुजरने के हैं न आज तक किसी ने देखा है खाली बकवास है ।

स०—जो कोई चीज़ न होती तो उसके इलाज करने वाले कहां से आजाते हम क्या जानें जैसा किसी ने कहदिया वैसा मान लिया ।

गं०—तुमने उनके इलाज करने वालों से कभी यह भी बूझा है कि वह कहां रहते हैं और उनकी कैसी शकल है यह सिर्फ विद्या न होने से तुम को बहका लेते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं तुमसे धन भी लेते और तुम्हारे पतिव्रत धर्म पर भी हमला करते हैं और जो लोग दुनिया में कुछ काम नहीं कर सकते वह ही उनके पुजारी होते हैं और दुनिया को लूटते हैं मूर्ख लोग इनके हाथों खूब लुटते हैं अब भी समझीं ।

स०—मैं अच्छी तरह से समझ गई और मैं इन निपूतों को आज से कभी भी अपने घर में नहीं घुसने दूंगी ।

गं०—अच्छा मैं जाती हूँ नमस्ते ।

स०—नमस्ते अब कब तक दर्शन दोगी ।

यदि आपने कोई बात दरयाफ्त करनी हो तो डा० बलदेव सहाय मालिक गोपाल आयुर्वेदि औषधालय धामपुर से पत्र द्वारा दरयाफ्त करो ।

चन्द्रवती—देवी जी नमस्ते ।

गं०—आज कैसे आना हुआ

च०—देवी जी बहू की छाती बड़ी दर्द कर रही है और सूजन भी है थनेला होगया है और बुखार भी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कृपा कर के कोई उपाय बता दीजिये जिस से उसकी तकलीफ दूर हो

गं०—मैं एक दवाई देती हूं इसे पत्थर पर घिस कर और अग्नि पर गर्म कर के दिन में चार बार लिया करना

सुतानन्द

दोहा—व्यापक ब्रह्म अनादि जो, घट घट देखन हार।
जाकी कृपा कटाक्ष से, उपजत सब संसार॥१॥
सोरठा—मन महं परम हुलास, बन्दि चरण जगदीश के।
सुतानन्दप्रकाश पुस्तक, गणपति द्विजरचत॥२॥

(चौपाई १)

सुतासकलमिलिसुनहुसुवानी। जाते होंइ धरम गुण खानी॥
देखहु प्रातकाल जब आवत। पक्षीगण सब जनहिं जगावत॥
उठहु प्रात निजधर्म विचारी। लहहु स्वास्थ्य सुख सम्पतिसारी॥
प्रथम लेहु ईश्वर करनामा। पुनि उठि विमल करहु निजधामा॥
निर्मल जलते करि असनाना। स्वच्छ वस्त्र पहिरहु मनमाना॥
बैठहु सदा कुसंगति जानी। सदा लाभ जह कछु नाहि हानी॥
लिखहुपढहु सीखहुगुणढंगा। निसिदिन सुता गुणिनके संगा॥
विद्या पाठ सीखहु चतुराई। जाते सकल काज बनिजाई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवैया

विद्या पढावन की गति सुन्दर, वर्णतिरी * सठिगोटी इनावै ।
कादिकवर्ण लिखैइक और दूजे, गिनती शुभ अङ्क जनावै ॥
तीजे सुपाई कीरेखा लिखै चुचुकारि सुताकह दर्श चिन्हावै ।
गिनती को गिनाय पहाड़ा पढाय के आनन्द में यह लेख लिखावै १

॥ दोहा ॥

तुम सोई पोथी पढो जामें उत्तम ज्ञान ।
बुद्धि बढै संशय घटै मिलै सदा सनमान ॥

[चौपाई २]

सरल स्वभाव शील युत रहऊ ।
मित भाषिणि है तुम सुख लहऊ ॥
सदा गुरुन की आज्ञा मानहु ।
जनि अपने मनउर अरु कछु आनहु ॥
मात पिता भावज वड़ भ्रात ।
जे कछु उचित कहै सोइबाता ॥
सदा चरण सीखहु जगमाही ।
जाते एको विधि दुख नाही ॥
मिय अरु सत्य बचन नित भाखहु ।

* वर्णमाला में कितने वर्ण हैं–तिरीसठि–ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अआ अ३ इईइ३ उऊउ३ ऋॠऋ३ ऌॡऌ३ एए३ ऐऐ३ ओओ३ औऔ३ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह; ऽ, ≈, ᳲ, ᳳ, ँ, –वर्णो च्चरणशिक्षा–७–३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा झूठते नाता त्यागहु ॥
विविधि भांति की करन रसोई ।
चितदे सीखहु पुनि सुख होई ॥
विधि सब जानहु व्यंजन केरी ।
लहिहो कीरति जग बहु तेरी ॥
लहु पुनि इतर गुणन की शिक्षा ।
जाते काज सरै सोइ दीक्षा ॥

॥ सवैया ॥

सीसधरो गुरु बैन सदा अमियभाषि बनो सबके सुखदाई ।
नीच संगति त्यागि रहो जेहिते यश तेरो रहै पुरछाई ॥
सुई के कार विचित्र सुवेलि व बूटहि मोहि लहो निपुणाई ।
एहि भांति सुदक्ष बनो गृह कारज होइ है तेरो जगदीश सहाई ॥

दोहा ।

पर घर व्यर्थ न जाइए सुनहु सुता यों बात ।
बार बार नहि ताकिये जो हो भोजन खात ॥ ३ ॥

चोरी कर्म महा अधमाई ! लोक और परलोक नसाई ॥
लेन देन व्यवहार प्रयोजन । सब महा सत्य कहत नित सज्जन ।
वाद विवाद लड़ाई त्यागहु । जहं हो रारि तहां ते भागहु ॥
जह तक बनै दया उर आनहु । भूखे को दीजे कछु दानहु ॥
पुत्री रहु पिता घर जवलों । गुण विद्या ढंग सीखहु तवलों ॥

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* श्रोत्रिया पूर्णादेवी *

बाला विवाह नाटक

गताङ्क से आगे

(३)

लाला—हां ठीक है जब वह हमारी नहीं मानता तब हम उसकी क्यों मानें।

मनोहरी—अच्छा पण्डित जी को दुबारा बुलाकर ब्याह सुझवा लीजिये।

लाला—नहीं दुबारा पं० जी को बुलाने से क्या होगा क्योंकि मैंने ब्याह भी सुझवा लिया है एक ब्याह वैसाख सुदी दोयज का सुझता है और दूसरा आषाढ़ बदी पंचमी का सूझता है जिसे तुम उत्तम समझो वही रक्खो।

मनोहरी—वैसाख का ही ब्याह ठीक है आषाढ़ तक बैठे रहने से क्या काम लड़की के ब्याह रूप ऋण से जिस समय उऋण होजाय तभी अच्छा है।

लाला—हां मेरी भी यही इच्छा है अच्छा कलको सगाई जायगी और वैसाख में ब्याह होना चाहिये मैं बाहर काम करूँ और तुम अन्दर प्रबन्ध करो।

मनोहरी—किन्तु मेरी एक बात तुम्हे माननीपड़ेगी मैं पहले ही सब बातों को खोल कर कहदेना चाहती हूँ।

लाला—हां हां बेखटके कहो मैं सुनने को तैय्यार हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहरी–देखो मेरे एक ही यह चावली है तुम अपने यहां किसी प्रकार की कंजूसी न करना क्योंकि फिर ऐसा मौका हाथ नहीं आवेगा समय बीत जाता है। और बात याद रहे इस वास्ते तुम समधी को चिट्ठी में लिखदेना के बारात बढ़िया लावे कम से कम १० हाथी तो अवश्य ही हों और यह एक लड़की है। इस कारण हमारे यहां पैसा की कसर न रु० और सावरन की कसर हो और बढ़िया २ आठ दस भी हों देखो मेरे यहां ऐसी बारात आवे जो आजतक शहर में किसी के न आई हो॥

और तुम भी अपने यहां खाने पीने का सामान ऐसा बनवा जैसे आजतक किसी के यहां न हुवा हो और जो जो चीज कहूं वही हो नहीं तो तुम जानो मैं अपने बाप के चली जाऊँ मेरे पीछे तुम्हारी जो इच्छा हो वही करना॥

लाला—नहीं नहीं तुम नाराज़ न हो मैं तुम्हारी जो होगी वही करूँगा भला मेरे और दुसरी कौनसी कन्या है जिस का ब्याह फिर करके मैं अपने मन की निकालूँगा तुम धैर्य रखो तुम्हारे दरवाजे पर जब बारात आवेगी तभी तुम देखकर खुश हो जाओगी अच्छा मैं बाहर जाता हूँ रु० पैस की तुम्हे आवश्यकता होगी तब मैं भेज दूँगा।

मनोहरी–अच्छा मै भी यहां से जाऊं और नायन को बुला कर कल के वास्ते तैय्यारी करूँ।

पञ्चम परिच्छेद

(स्थान आर्य्य बन्धु की बैटक)

(सुन्दर सजी हुई बैठके में आर्य्य बन्धू अकेला बैठा है।)

आर्य्यबन्धु–(स्वगत) क्या करूँ मैंने चावली का व्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत रोकना चाहा पर मेरी पार न बसाई देखो मूर्खता इसका नाम है मैंने उनके भले के वास्ते बहुत उपाय किये किन्तु वह उलटे मेरे शत्रु हो गये। हाय जब हमारा समझाना हमारे घर-वाले ही नहीं मानते तब हम देश का क्या सुधार कर सकते हैं। जब हमारे घर में ही अनर्थ होरहा है तब हम औरों को क्या सिखादेंगे हमें प्रथम अपने को सुधारना चाहिये तब दूसरे भी हमारी बातों पर विश्वास करेंगे। किन्तु क्या करूँ मैंने तो अपने विचार में कोई बात चावली के विवाह रोकने में व उसे शिक्षा देने में नहीं छोड़ी। मैंने भाई साहब को भी समझाया भाभी (मनोरी) को भी समझाया यहां तक कि लाला टीडूमल को भी पत्र द्वारा शिक्षा दी किन्तु मूढ़ को वास्तव में मूढ़ ही मिला है। जो मेरे पत्र का उत्तर तक नहीं दिया पत्रकी शिक्षा तो माननी दूर रही अब मैं....

[आर्य्य हितैषी का प्रवेश]

आर्य्यहितैषी-(आर्य्यबन्धू से) मित्र किस चिन्ता में बैठे हो।

आर्य्यबन्धू-(चौंककर व आर्य्यहितैषी का हाथ पकड़) आइये २ मित्र विराजिये कहिये कहां से आना हुवा।

आर्य्यहितैषी-[आर्य्यबन्धु के पास बैठकर] अरे भाई मैं बजार की ओर कुछ सौदा खरीदने गया था किन्तु भीड़भाड़ देख एक ओर खड़ा हो देखने लगा थोड़ी देर पश्चात् क्या देखता हूं कि एक बड़ी भारी बारात बड़ी धूम धाम से चली आरही है। नाच मुजरा वखेर सभी देखा किन्तु वरको देख कर बड़ा आश्चर्य हुवा भाई उस बरात में सभी बात बड़ी २ थी किन्तु वर बहुत ही छोटा था एक आदमी वरको सम्भाले हुवे हाथी पर सहित बैठा था और पिछले हाथी पर एक बूढ़ा मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठा बखेग की भर मार कर रहा था । मित्र मेरे देखते २ अनु-
मान से सौ सवा सौ रुपया धूल में मिल चुका होगा ।

[शेष फिर]

समालोचना

नमक सुलेमानी=यह नमक लाला प्यारे लाल वैश्य कि-
राना जि॰ मुज़फ्फरनगर नें समालोचनार्थ भेजा है । हमनें निरं-
तर इसकी तीन चार मास कितने ही रोगियों पर परीक्षा की। यह उदर
सम्बन्धी रोगों के लिये अत्यन्त गुणकारी सिद्ध हुआ है। खाने
में स्वादिष्ट है । एक शीशी का मूल्य ।) मात्र है ।

आरोग्यता प्राप्त करनें की नवीन विद्या—यह जर्मन के प्रसिद्ध
जलचिकित्सा के आविस्कर्त्ता डाक्टर लुई कूनें की "साइन्स
आफ फेशियल एक्स प्रेशन" का हिन्दी अनुवाद । उक्त
डाक्टर साहव एक बार अत्यन्त वीमार होगए थे रोग असाध्य-
ता को पहुच गया था । जर्मन के समस्त चिकित्सक आपके जी-
वन से निराश हो गए । तव आपनें चिकित्सकों की सभाओं में
जाना आरंभ किया वहां पर वारम्बार यह सुनकर कि समस्त
रोग पेट से ही उत्पन्न होते हैं और सब रोगों का कारण मल का
कुपित होना ही है । यह विचार उत्पन्न हुआ जब कि सब रोगों का एक
कारण मल कुपित होना मात्र ही है तब सब की चिकित्सा भी एक
होनी चाहिये । इस ही अटल सिद्धान्त पर विचार करते २ आपने
चार प्रकार के स्नानो का आविस्कार किया । जिन के द्वारा
मनुष्य शरीर में उत्पन्न होने वाले समस्त रोग दूर होजाते हैं
हमने इस चिकित्सा का स्वयं प्लेगादि भयंकर रोगों में देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कि बड़े २ योग्य चिकित्सकों से निराश हो गए तब साधारण ऐसे पुरुषों नें जिन्हों ने कि एक बार भी उक्त डाक्टर साहब की पुस्तक पढ़ी है केवल स्नानों द्वारा यही उनके जीवन की रक्षा की हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं वे एक प्रति इस अपूर्व सुख दायिनी चिकित्सा की अवश्य मंगाकर देखें। क्योंकि संसार में ही ऐसी चिकित्सा है जिसके द्वारा निदान की बिना परीक्षा किये ही प्रत्येक मनुष्य कठिन से कठिन रोगों की चिकित्सा कर सकता है। निम्न लिखित चार स्नान ही इस चिकित्सा के मुख्य स्तम्भ हैं मेहन स्नान उदर स्नान, वास्प स्नान, और सूर्य्य स्नान।

इस वर्ष बिजनौर में अत्यन्त प्लेग रहा यहां पर ४० मनुष्यों की चिकित्सा इसके द्वारा की गई जिनमें से ३८ रोगियों को आरोग्यता प्राप्त हुई। इस चिकित्सानें उन्माद और स्त्री रोगों पर अद्भुद चमत्कार दिखाया।

यह अत्यन्त संतोष और आनन्द दायक बात है कि अब हिन्दी संसार में भी ऐसी उत्तम २ पुस्तक लिखी जानें लगीं।

हिन्दी हितैषियों को अनुवादकर्ता श्रीमान् पूज्यपाद श्रोत्रिय कृष्णस्वरूप जी बी०ए० एल्०एल०बी०.का अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिये। जिन्होंनें अपनें अनेक काम छोड़ कर मातृभाषा भंडार को उक्त अमूल्य रत्न दिया। श्रीयुत श्रोत्रिय जी मकान पर मुरादाबाद बिना कुछ लिये इलाज करते हैं। जो महाशय किसी रोग को असाध्य समझ कर इलाज कराते २ हार गए हों, वे एक बार श्रोत्रिय जीके अवश्य दर्शन करके उक्त चिकित्सा से लाभ उठावें। ४१४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिब्बा १ गोली ३२

आरोग्य देवी

आतंक निग्रह गोलियां

मूल्य रु०१

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारीरिक बल हो।

इन गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। यह गोलियां लाखों रु० की प्रतिवर्ष बिकती हैं। यह ही इनकी उत्तमता का प्रमाण है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बलकांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये सूचीपत्र मंगा लिजिये

वैद्य शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी
जामननगर-काठियावाढ़

मलेरिया का अर्क

जो कि प्लेग की हल्की शकल है बाटली वाले की बनाया मिक्चर या गोलियां १)

बाटली वाले का क्लोरल हैजे की एक मात्र दवा)

बाटलीवाले का खिजाब। यह खिजाव पहिले खिजावों से अच्छा है जिससे सफेद बाल कुदरती बालों के समान हो जाते हैं।

बाटली वाले का दांतों का मंजन-यह दवा अंग्रेजी दवाओं से वैज्ञानिक रीति से तैयार की गई है मयो फल और कारवोलिक ऐसिड

बाटलीवाले का दाद का मलहम।)

यह दवा सब जगह मिलती हैं।

डा० बाटलीवाला

वरली लबोटरी दादर बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर बर्म्मन की

कठिन रोगों की सहज दवाएं।

गत ३० वर्ष से सारे हिन्दुस्थान में घर घर प्रचलित हैं। विज्ञापन की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल कई एक दवाइयों का नाम नीचे देते हैं।

हैजा गर्मी के दस्त में

असल अर्क कपुर

मूल्य ।) डा०म०।-) १से४ शीशो तक

पेचिश, मरोड़, ऐंठनशूल, आंवके दस्त में

क्लोरोडिन।

मूल्य ।=) दर्जन ४) रुपया।

कलेजे की कमजोरी मिटाने में और बल बढ़ाने में—

कोला टानिक

मोल १) डा: ।-) आने।

पेट दर्द, वादीके लक्षण मिटाने में—

अर्क पुदीना (सब्ज़)

मूल्य ॥) डा० म० ।-) आने।

अन्दरूनी अथवा बाहरी दर्द मिटाने में

पेन हीलर।

मूल्य ॥।) डा० म० ।-) आने

सहज और हलका जुलाबके लिये—

जुलाबकी गोली।

२ गोली रातको खाकर सोवो सवेरे खुलासा दस्त होगा।
१६ गोलियों की डिबी ।-) डा० म० २ से ६ तक ।-) आने।

पूरे हाल की पुस्तक विना मूल्य मिलती है। दवा सब जगह हमारे एजेण्ट और दवाफरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डा: एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छापा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार २ धन्यवाद है ।

उस दयानिधि परमात्मन् का जिसकी कृपा से "अमृतधारा" ने थोड़े काल में इतनी प्रसिद्धि पाई है, कि 'अमृतधारा बिल्डिंगस्' के भीतर एक खास डाकखाना 'अमृतधारा डाकखाना' नामी खोला गया है, अमृतधारा कारखाना के पास से जो सड़क माल्गमंडी को निकाली गई है उसका नाम अमृतधारा रोड' रक्खा गया है, कार्यालय अमृतधारा की औषधियों के सम्बन्ध में पदक मिले, प्रसंसा पत्र मिले, और चारों ओर से 'अमृतधारा' २ की ही पुकार है । कार्यालय अमृतधारा को अपनी बढ़ती हुई आवश्यकता को पूर्ण करने के वास्ते एक और बड़े मकान की आवश्यकता हुई, जो अभी ईश्वर की कृपा से अति सुन्दर तय्यार हुआ है । इस—

अमृतधारा भवन के खुलने की रीति

श्रीमान मिस्टर ऐफ डबल्यू कैनवे साहिब आई. सी. ऐस. डिप्टी कमिश्नर लाहौर के हाथों ९ मई १९१४ को शहर लाहौर तथा पंजाब के भी प्रायः प्रतिष्ठितों के बड़े जलसे के भीतर पूर्ण हुई ।

जिस में आनरेबल राए बहादर सर डाक्टर परतूल चन्द्र सी.आई. ई. भूतपूर्व जज्ज चीफकोर्ट पंजाब और खान बहादर आनरेबल मियां महम्मद शफी बेरिस्टर एट ला की देशी चिकित्सा के विषय उच्च वक्तृतएं हुई

इस आह्लादीय हर्ष के प्रकाश में,

और अपने हजारों ग्राहकों भी खुशी में सम्मिलित करने के वास्ते, प्रकाशित किया जाता है कि २७ मई १९१४ से २४ जौलाई १९१४ तक अमृतधारा व कारखाना की अन्य औषधियां व पुस्तकें $\frac{3}{4}$ मूल्य पर मिलेंगी

अर्थात् प्रति रुपया ।) की रियायत होगी ॥

नोट—जलसे का वृतान्त जिन्होंने न पढ़ा हो हम से मंगवालें ॥

सूचीपत्र जिसके पास न हो मंगावें, एक पैसा का कार्ड सूचीपत्र के वास्ते लिखने से सब पहुंच जावेंगी ॥

इस हिसाब से प्रसिद्धौषधि अमृतधारा की बड़ी शीशी २।) के स्थान में १॥=) में, और नमूना की छोटी शीशी ॥) के स्थान में ।=) मे मिलेगी, जिन श्रीमानों को किसी कारण से अद्यावधि आज़माने का अवसर नहीं हुआ उनके वास्ते अच्छा अवसर है ॥

पता--"अमृतधारा" (प्र० ब्रांच) लाहौर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

वर्ष ११) अषाढ़ सम्वत् १९७१ वै० (अङ्क ४

संस्थापक श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्मा

सम्पादक व प्रकाशक श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओम् नमः शिवाय *

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित।

अबला हितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥

एकादश वर्ष.	अषाढ़ सम्वत् १९७१	अङ्क चतुर्थ

रुद्ररोष।

(दोहा)

करता है जो पातकी, विधि निषेध का लोप।
होता है उस नीच पै, शंकर प्रभु का कोप॥ १॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्र दण्ड ।

(शृङ्गारात्मक--राजगीत)

खलों में खेलते खाते, भलों को जो जलाते हैं।
विधाता न्यायकारी से, सदा वे दण्ड पाते हैं॥
प्रतापी तीन तापों से, प्रमत्तों को तपाता है।
कुटुम्बी, मित्र, प्यारे भी, बचाने को न आते हैं।
अज़ी जो अङ्ग-रक्षा पै, न पूरा ध्यान देते हैं।
मरें वे नारकी पीड़ा, न रोगों से छुड़ाते हैं॥
प्रमादी, पोच, पाखंडी, अधर्मी, अन्ध-विश्वासी।
अविद्या के अंधेरे में, मतों की मार खाते हैं॥
अभागी, आलसी, ओछे, अनुत्साही, अनुद्योगी।
पड़े दुर्दैव को कोसें, मरे जीते कहाते हैं॥
पराये माल से मोधू, बने प्रारब्ध के पूरे।
मिलाते धूलि में पूंजी, कुकर्मों को कमाते हैं॥
दुराचारी, दुरारंभी, कृतघ्नी, जालिया ज्वारी।
घमण्डी, जार, अन्यायी, कुलों को भी लजाते हैं॥
हठीले, हीज़, अज्ञानी, निकम्मे मादकी, कामी।
गपोड़ू, दुर्गुणी, गुण्डे, प्रतिष्ठा को डुबाते हैं॥
कुचाली, चोर हत्यारे, खिसासी, राज विद्रोही।
प्रजा, राजा, किसीकी भी, न सत्ता में समाते हैं॥
बिचारी बालिकाओं को, वृथा वैधव्य के द्वारा।
घरों में जो रुलाते हैं, न वे खाते अघाते हैं॥
गिराते गर्भ रांडों के, बिगोते जो अहिंसाको।
गिरें वे ज्ञान-गंगा के, प्रवाहों में न न्हाते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न पालें जी अनाथों को, खिलाते माल संडों को ।
गढ़े में पुण्य की ऊँची, प्रथा को वे गिराते हैं ।।
किसी भी आततायी का, कभी पीछा न छूटेगा ।
हरें जो प्राण औरों के, गले वे भी कटाते हैं ।।
बचेंगे शंकरागामी, दिनों में वे कुचालों से ।
जिन्हें ये दण्ड के थोड़े, नमूने भी डराते हैं ।।१।।

(अनुराग रत्न से)

विविध विषय

विधवा विवाह के न होने से जो हिन्दू जाति का ह्रास हो रहा है और हिन्दु जाति जैसी कलँकित हो रही है उसका स्मरण मात्र करनें से रोमाँच होता है। गत अङ्क में आप झँडा लाल जी की कन्या के मुसलमान होने का दुःखदाई समाचार पढ़ ही चुके हैं। आज और ऐसा ही नवीन शोक समाचार सुनकर दुःख हुआ सहयोगी औदुम्बर लिखता है। सहारनपुर जिले में एक निःसंतान हिन्दु बिधवा रहती थी। और इस के पास लग भग ३००) मासिक आमदनी की सम्पत्ति है। इस ने ऐहिक कीर्ति और पारलौकिक सुख के लिये एक कुवा और शिवालय बनवानें का निश्चय किया अबदुलअज़ीज़ नामक खांसाहब किसी कारण से इस में आपत्ति की। अदालत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारवती के अनुकूल फैसला हुआ। खांसाहब नें जज्जी में अपील की। अपील के फैसले से प्रथम ही पारवती मुसल्मान होगई और वलीमुहम्मद नामक मुसल्मान से निकाह कर लिया। तब पारवती की सास ने अदालत में दरख्वास्त दी कि मेरी पुत्रबधू नें धर्मान्तर कर लिया है इस से उसे दस्त बरदारी दाखिल करनें का अधिकार नहीं था फैसला मेरे अनुकूल होना चाहिये। जज सहाब नें फ़ैसला अनुकूल कर दिया। इस फैसले का इलाहाबाद हाई कोर्ट में अपील हुआ। जस्टिस बनर्जी और जस्टिस रिचर्डस ने अपील मंजुर किया और जज के फैसले को मंसुख कर दिया। इस के बाद सहयोगी लिखता है "एक्ट नँ० २१—१८५० के अनुसार कोई मनुष्य धर्मान्तर करनें के कारण किसी ऐसी जायदाद के पाने से विमुख नहीं रहसकता जो उस को उसके रिश्तेदार से मिलनें वाली हो। इसी से पारवती धर्मान्तर कर लेने पर भी जायदाद पागई। हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार पुर्नीववाहता स्त्री अपने पति की सम्पत्ति पर आधिकार नहीं पा सकती परन्तु पारवती का मामला बिलकुल इस के बिरुद्ध हुवा। उसनें पहिले मुसल्मानी धर्म स्वीकार किया और फिर उस धर्म के स्वीकार करने पर फिर उस धर्म के अनुसार निकाह कर लिया। जिस का यथा शास्त्र होना समस्त मुस्लिम धर्म अधिकारियों नें स्वीकार किया। इसी से वह पहले पति की जायदाद पासकी। यदि वह हिन्दु रह कर ही पुनर्विवाह करती तौ अवश्य ही इस जायदाद पर अधिकार न पास करती। अब जबतक पारवती जीवित रहेगी तब तक उसका इस जायदाद पर अधिकार होगा मृत्यु पश्चात् जायदाद उसके पहिलें पति के उत्तराधिकारियो को मिलेगी सहयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना लिखकर टिप्पणी करता है एक और हिन्दू लोग अपनी उन्नति के लिये एक से एक नया प्रयत्न करते हैं दुसरी और प्रकृति के गर्भ से एक न नया मार्ग हमारेधर्म के ह्रास का निकल पड़ता है हम नहीं समझते कि जिस गवर्नमेन्ट नें हिन्दू धर्मशास्त्र का दाय विभाग मान्य किया है वही सरकार ऐक्ट नं० २१—१८६० के विरुद्ध नियम बनाना किसी तरह उचित समझी। क्योंकि चाहे अपने धर्म को थामे रहे जो स्त्री जिस जगह और धर्म में जाकर दुसरी बार विवाह करेगी पुनः शब्द उस के विवाह के साथ वहीं लग जायगा। वह किसी के रोकने से रुक नहीं सकता।

हमे अत्यन्त शोक है ऐसे सत्यानाशी एक्ट के होनें पर जिससे जाति का करोडों रुपया विधर्म्मियों के हाथ में जा रहा है और विधर्मि होनें के लिये निस्कंटक मार्ग कररहा है। किसी सनातनधर्म पत्र या पण्डित ने इसके विरुध लेखनी नहीं उठाई। जब कोई विधवा विवाह होता है तब सनातनधर्मपातका में घोर कलियुग २ शीर्षक लेख और विज्ञापन निकलते है किन्तु इस प्रकार जन और धन दोनों के ह्रासहोनें पर पताका जी नें कुछ न लिखा।

विधवा विवाह होनें पर घोर कलियुग आता है और पताका अपनी फर फराहट बिना किये नहीं रह सकती और ऐसे उत्पात होने पर "राम,रम" पताका का स्वरूप भी नहीं दिखाई देता। न महामंडल के मुख्य पत्र में ही कुछ दखिता है यह कैसी धार्मिकसंस्था हैं जो जातिके इस प्रकार हा होते भी चुप है एक पंडितजी से पारवती के मुसल्मान होनें का जिक्र आया तब उन्होने उत्तर दिया आप से गई जगत से गई दुष्टा का नाम न लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम से चली भली जा उनका नाम नहीं लेते और आगे के लिये उनका कुछ प्रबन्ध ही करते हैं। पाठक याद रक्खो जबतक विधवा विवाह न होंगे कदापि यह मुसलमान होनें से न रुकेंगी। यदि कुछ मान मर्यादा या धर्म से प्रेम है तब विधवा विवाह में देरी न करो।

अत्यन्य शोक और पश्चाताप से लिखा जाता है कि कि २२ जून १९१४ को देश भक्त बाबू गंगाप्रसाद बर्म्मा इस संसार को छोड़ गए। आपकी मृत्यु से भारत को विशेष कर संयुक्त प्रान्त को कठिनता से पूर्ण होनें वाली हानि पहुँची है। हाय! भारत का जो हितैषी खड़ा होता है वही दैव से नहीं देखा जाता। इस दुःख में हम उनके कुटम्बियों से हार्दिक सहानुभूति रखते हैं! और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि बर्म्मा जी की आत्मा को शान्ति दे।

महात्मा हंसराज बी० ए० भूत पूर्व प्रिंन्सिपिल दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज की धर्म्मपत्नी का देहान्त होगया इन का लड़का बलराज देहली षड़यन्त्र के मुकद्दमें में सम्मिलित है। माता से मिलने की आज्ञा सरकार से मिल चुकी थी परन्तु लाहोर पुलिस के अस्वीकार करनें पर नहीं मिलसका। हमारी समझ में नहीं आता कि पुलिस को उसके मिलनें से इतना भय क्यों हुआ यदि मान लिया जाय वह ब्रिटिश साम्राज्य को छोड़ कर भाग जाता तब क्या हम यह पूछ सकते हैं—पुलिस एक उसको नहीं रोक सकती थी। खैर जो हो हमें महात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी के दुःख से हार्दिक सहानुभूति है परमात्मा पत्नी की आत्मा को शान्ति दे ।

हाय शोक जो भारत का हितैषी खड़ा होता है दैव से नहीं देखा जाता जिस प्रकार होता है उसको महा कष्टदेता है। भारत के सौभाग्य से लार्ड हार्जिंग इसके हितैषी खड़े हुए थे दुःख है वह दैव से न देखे गए और उनकी भी धर्मपत्नी को संसार से उठालिया । किसी नें सच कहा है "दुर्बलो दैव घातकः" परमात्मा लेड़ी हार्जिंग की आत्मा को शान्ति दें । और वाइसराय को शान्ति दे ।

महाराज रीवां नें अपने राज्य में आज्ञा पत्र निकाला है । जिसका आशय यह है कि रीवां राज्य में १३ वर्ष से कम अवस्था की कन्या और १६ वर्ष की अवस्था से कम बालक का गौना न किया जाय । आज्ञा उल्लंघन करनें वालों को ५०)रु० जुर्माना होगा । श्रीमान् का यह कार्य्य अत्यन्त प्रसंशनीय है । इससे राज्य के बालकों को लाभ होगा । किन्तु यदि वजाए गौनें के विवाह के लिये यह आज्ञा होती तब अच्छा था ।

देहजकी कुप्रथाओं से पीडित होकर देवी स्नेह लता आदियों नें आत्म घात किया । इसदेवी के पश्चात् कई कन्याओं नें अपनी छोटी आयु में संसार का विना सुखदेखे ही मिट्टी के तैल से जलकर आत्मघातकर संसार से बिदा हुई । इतने पर भी हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश वासियों के स्त्रियों पर अत्याचारों की कमी नहीं दिखाई देती अबतक कन्याओंनें ही आत्म घात किये थे किन्तु अब विवाहिता स्त्रियां भी आत्मघात पर उतारू हैं ! हाल में मुजफ्फर पुर निवासी बाबू बसन्त कुमार की पत्नी जलमरी। समाजिक नेतागणों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

यहां से कुछ भारतीय केनाड़ा गए थे उनको केनाड़ा गवर्नमेन्ट नें अपनें यहां नहीं घुसने दिया और वापिस होनें की आज्ञा दी। निदान इनको वापिस आना पड़ा हिंदुस्तानियोंनें किराए की प्रार्थना की थी किन्तु बड़ी कठिनता से उनको किराया मात्र वापसी के लिये दिया गया। शोक हैं जिस ब्रिटिश गवर्नमैन्ट की हम प्रजा हैं उसकी ही प्रजा कनाडियन हैं फिर भी हम वहां न घुसने पावें। इससे ज्यादा हमारे और गवर्नमैन्ट के लिये कौन अपमान हो सकता है। हम गवर्नमैन्ट से प्रार्थना करते हैं कि कृपाकर किसी कनाडियन को हमारे देश में न बढ़नें दें।

कलकत्ता निवासी पण्डित शिवनारायण जी की कन्या का विवाह ६ वर्ष हुए पण्डित खुड्डीमलजी के पुत्र से हुआ था तीन वर्ष हुए जब खुड्डीमल जी के पुत्र का देहान्त होगया। और शिवनारायणजी का भी देहान्त होगया। जमाई के देहान्त के बाद लड़की की मातानें कई बार अपनी लड़की के लेनें के लिये आदमी भेजा। किन्तु खुड्डीमल नें अपनी पुत्रवधू को नहीं भेजा। निदान माता की तरफ से उसके भाई पण्डित लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपालजी वकील नें मुरादाबाद में माजिस्ट्रेट के यहां लड़की और खुड्डीमल को अदालत में हाज़िर होनें के लिये दर्ख्वास्त दी। जिस पर खुड्डीमल को मय पुत्रवधू के बज़रिये वारन्ट हाज़िर होनें की आज्ञा हुई। सिपाही वारन्ट लेकर खुड्डीमल के पास पहुँचे खुड्डीमल उस समय हजामत बनवा रहा था, वान्ट देखते ही उस्तरा लेकर अन्दर चला गया।

और जाते ही अपनी पुत्र वधू के पेट में उस्तरा मारा खुड्डीमल की माता से अत्याचार न देखा गया वह छुटानें गई तव खुड्डी-मल नें उसको भी उस्तरे से मार डाला। दोनों मर गई। मुकद मा चल रहा है। कहा जाता है कि लड़की से खुड्डी मल का अनुचित सम्बन्ध था इसलिये वह भेजना नहीं चाहता था और यह भी सुना है कि उसकी माता उसका पं० हरनाम दास से पुर्नाबवाह करना चातीथी। जो हो किन्तु यह बिधवा विवाह के न होनें काही परिणाम है यदि उसका विवाह होजाता तव ऐसी कदापि संभावना न होती। लड़की की आयु १६—१७ वर्ष की है।

हमारी कोई नहीं सुनता।

संसार में कोई जाति या व्यक्ति ऐसी नहीं है जिसके सुख दुःख की उसके राजा, विद्वान् और हितचिन्तक न सुनते हों। प्रायः यहां तक देखा जाता है प्रत्येक जीव अपनी जाति और आश्रितों के सुख दुःख की सुनते हैं और यथा शक्ति उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही हुई अवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं। आपने देखा होगा जब किसी पक्षी का भी बच्चा चें चें करता है तब उसके माता पिता उसको दाना खिलाते हैं और जब कोई कव्वा पकड़ लिया जाता है तब उसके कांय २ करनें पर सैकड़ों कव्वे एकत्रित हो जाते हैं और कांय २ करके उसके छुटानें का प्रयत्न करते हैं। एक बार मैनें देखा कुछ लड़कों नें एक बन्दर को पकड़ लिया बन्दर पकड़तेही चिल्लाया फिर क्या था बात की बात में सैकड़ों बन्दरोंनें मकान घेरलिया यहांतक कि कुछ देरतक उस तरफका रास्ता भी बन्द रहा। निदान करीब एक घंटे बाद लड़कों नें उसको छोड़ दिया। बन्दर के स्वतंत्र होते ही समस्त बन्दर भाग गए।

यह देखकर मेरी दृष्टि मनुष्य जाति पर गई सब से प्रथम क्या देखता हूँ एक अम्रिकन संसार में स्वतंत्रता के साथ अपनें मनोंभावों को प्रकट करता हुवा भ्रमण करता फिरता है किसी की शक्ति नहीं जब तक एक भी अम्रिकन जीवित है कोई उसको परतंत्र कर सके। फिर इंग्लैण्ड पर मेरी दृष्टि गई वहां पर अपनी जाति के सुख के लिये आबाल बृद्ध को आत्म समर्पण करते देखा। इस प्रकार जापान आदि देशों में अपने आश्रितों और हितचिन्तकों के कहनें को सुनते और उसके उपाय में आत्म समर्पण करते देखती हुई मेरी दृष्टि भारतवर्ष की हिन्दू विधाओं पर गई तब शोक और सन्तोप का ठिकाना न रहा एक दम दुःख सागर में निमग्न हो गई जो दृष्टि इस समय तक संसार की सैर कर रही थी। अब उसकी यह सामर्थ नहीं जो दूसरी तरफ देख भी ले अब उससे अश्रुधारा वह निकली कि हा! यहां इन बेचारियां के दुःखों की सुनता तो कौन इनको कोई दुःख को कहनें भी नहीं देता। हाय २ संसार में यदि कोई ऐसी अभा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनी है जिनकी कोई न सुनता हो तब एक अभाग्या हिन्दू विधवाएं ही हैं। हाय इन में से सैकड़ों नहीं हजारों की संख्या में नित्य मुसलमान और ईसाई होनें पर भी इनकी तो क्या अन्य शेष विधावों की भी इनके हितचिन्तक नहीं सुनते। मेरे पास एक पत्र एक दुःखित विधवा का है जिसमें वह लिखती है मैनें अपनी व्यथा स्त्री शिक्षा के अमुक..................पत्र को लिखकर भेजी सम्पादिका महाशय नें उसको लौटा दिया और लिख दिया कि जिस प्रकार हो अपने वैधव्य को काटो इत्यादिं और साथ ही एक विधवा धर्म विषयक पुस्तक भेज दी। हालां मैनें यह भी लिख दिया था कि इस दशा में मुझ से दुःख नहीं सहा जाता। इस लिये संभव है मुझे अत्मघात या अन्य कोई कार्य्य इस दुःख से छुटनें के लिये करना पड़े किन्तु इतने पर भी उन्होंनें कुछ न सुना।

पाठकों के दिग्दर्शनार्थ वह व्यर्था पत्र उद्धृत करते हैं जोकि इसनें सम्पादिका महाशया पर भेजा था।

सिद्ध श्री सर्वो पमायोग्य शुभस्थान से रम्पो की राम २ पहुँचे! आगेहाल यह है मैं तुम्हारा अखबार बहुत दिन से पढ़ती हूं जिसमें स्त्रियो के लिये अच्छे २ उपदेश होते हैं इस से तुमको स्त्रियों की हितैषी समझकर अपने दुःख लिखती हूँ जैसे हो आप मुझे ऐसा उपाय बताइये जो इस दुःख से छुट जाऊँ।

मेरी आयु १७वर्ष है माता को मरे तीन वर्ष होगए ११वर्ष की आयु में मैं विधवा होगई थी मेरे दो भाई हैं पितानें दो तीन वर्ष हुए ४३ वर्ष की आयु में अपना दुसरा विवाह किया है बड़े भाई की आयु २४ वर्ष छोटे की २० वर्ष हैं। दोनों का विवाह हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुका है राम जी की दया से घर में किसी चीज की कमी नहीं है पर मेरे भाग में यहां मीठे बोल भी नहीं मेरी सौतेली माता और भावज मुझे देख नहीं सकती यहां तक कि जब कभी मैं उन की तीर सी बातों से दुःखित हो कर रोनें लगती हूँ तब कहती हैं "जा रान्ड अपने घर चली जा कमबख्त तुने अपनें को इसलिया खसमा रवानी यहां किस को निगलेगी हमारे भरे पूरे घर में डायन क्यों कुसगन करती है" । आदि बहुतसी बातें कहती हैं जिनको सुन कर यह ही दिलमें आता है कि कहां जामरूँ हाय हमको धीरज तो कोई क्या देता हमारी कोई सुनने वाला भी नहीं । मेरें पिता कभी २ मेरी तरफ दारी करते हैं तब भावजें कहती हैं रांड मर भी नही जाती रात दित घर में क़लेश (क्लेश) रखती है ।

मेरा काम घर के वरतन मांजना और भाई के लड़के को खिलाना है । जब सुसराल जाती हूँ वहां सास और नन्द बात २ मे यह कहती हैं इस डायन नें आकर हमारे लाल को निगल लिया इस से तो हमारा क़ारा हीं अच्छा था इस नागन को मौत भी नहीं आती ।

अपने दुख कहां तक लिखूँ थोड़े को बहुत समझना और जवाब जल्दी देना ।

हाय २ हम बन्दर और कव्वों से भी गए जो अपनी बहिनों तक के दु.ख का उपाय करना तो अलग रहा उन की व्यथा सुनते तक भी नहीं ।

मुझको अच्छी तरह स्मरण है पिताजी (श्रोत्रियशकरलाल जी) नें लखनऊ में एक कायस्थ जो कि शायद वहां डिप्टी थे । या किसी बड़े पदपर थे कहा तुम अपनी विधवा कन्या का विवाह करादो तब उन्होनें साफ मना कर दिया कुछ दिन वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी लड़की नें स्वयं कहा कि मेरा विवाह कर दो तब भी पूर्ववत् मना किया और उसको बहुत कुछ डाटा परिणाम यह हुआ कुछ दिन बाद वह वेश्या होगई । गत अङ्क में अलीगढ़ में एक सास्वत ब्राह्मण की कन्या का कसाई के साथ भगनें का वृत्तान्त प्रकाशित हो चुका है इस को भी लालामथुरादास वुद्धसैन नें और पिता जी नें समझाया था किन्तु यह न माने परिणाम वह ही हुआ । पं० ईश्वचन्द्र विद्यासागर से लेकर मातः स्मरणीय श्रोत्रिय शंकर लाल जी तक हठियों को समझाते २ स्वर्ग सिधारे किन्तु स्वार्थियों के कानों पर जूं तक न रेंगी । इस लिये हम कहते हैं "हमारी कोई नहीं सुनता" ।

एक साधुका

(गुप्त पत्र)

श्रीमान् सम्पादक जी..

मैं कुछ दिनो से एक प्रस्ताव को सोचता रहता हूँ सो आज आप की सेवामें उपस्थित करता हूँ इस पर आप की सलाह चाहता हूँ और इसे आप प्राइवेट रक्खे क्योंकि यदि इस प्रस्ताव पर अमल न किया गया तो इसे किसी पर प्रगट करना उचित नहीं है:—

वह यह है कि मैंनें तीन चार वर्ष हुये सन्यास ग्रहण किया सो वह कुछ योग तप आदि निमित्त नहीं किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन दिनों स्वदेशी का प्रचार अधिक था सुना गया कि दहूतों ने स्वदेश सेवा निमित्त काषाय वस्त्र धारण कर लिया है। और ऐसा करने से प्रचार अधिक होता है अस्तु वह किया गया कुछ दिनों पीछे समुद्र पार आफ्रिका देश को चला गया था वहां स्वदेशी प्रचार तथा धर्म प्रचार करता रहा और कुछ शुद्धि सभा को चन्दा भिजवाया जिसके मन्त्री आगरा वाले पं० भोजदत्तशर्मा हैं। फिर वापस आकर साधु सभा का प्रस्ताव उठाया परन्तु थोड़े मास में मुझे पता लग गया कि यह काम मेरे द्वारा हो नहीं सकेगा वरन् लाभ के स्थान में उस कार्य की हानि हो जायगी क्योंकि यही प्रस्ताव श्री गङ्गाराम टहलराम ने उठाया था परन्तु क्या हुआ पता न लगा (उनका ठीक पता आपको मालूम होगा सो उनके नाम पर पत्र इसी साथ भेजता हूँ आप आगे बढ़ा दें)! मेरे द्वारा हानिकारक होने का कारण यह हुआ कि मैं संन्यास लेने से पूर्व कुछ काल मुसल्मानों का साथी रहा था (जन्म से कायस्थ हूँ) सो यद्यपि वह कार्य मैंनें हिन्दू जाति की एक भलाई निमित्त किया था परन्तु उसे कौन ध्यान में लाता है खैर।

अब निस्सन्देह मुझे दिलो जान से विधवा सुधार में दत्त चित्त हो जाने की अभिलाषा है। परन्तु मैं यह विचार कर रहा हूँ कि यदि मैं गृहस्थी बन कर यह कार्य करूँ तो उत्तम हो।

वह इसप्रकार कि किसी विधवा के साथ पुर्नविवाह करालूँ यहां कलकत्ता में निवास करूं निज निर्वाह निमित्त एक स्वदेशी कम्पनी का काम कर के पचास साठ मासिक या और अधिक प्राप्त कर लूँगा जो कि अबभी करता ही हूँ—मैंनें गत तीन वर्षों से साधु भेष में किसी दूसरे पर अपना बोझ नहीं डाला। और फिर जैसा मेरा प्रस्ताव है विधवा आश्रम यहां वनायां आय में उस को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलानें का प्रयत्न करता हुआ यहां हीं जम कर रहूंगा। विधवाओं को दो तीन घन्टे प्रति दिन मैं स्वयं सँस्कृत भी पढ़ा सकता हूं। जब मैं विवाहित स्त्री सहित रहूँ तो स्त्री पाठशाला में पढ़ाने पर कोई शङ्का अनुचित व्यवहारकी नहीं हो सकती(अविवाहितों से तो यह काम लेना मेरी भी संमति नहीं है)तथा दूसरे जो अध्यापक या अध्यापिकायें होंगी उन पर देख भाल भी रक्खूंगा। इस प्रकार मैं समझता हूं कि विधवा आश्रम को मैं गृहस्थी होनें पर चला सकूंगा।

मैं साधुओं में घूमा और यह पाया गया कि मेरे अपने रङ्गढङ्ग आदतें उनसे टक्कर नहीं खाती सो मैं केवल नाम मात्र ही कषाय वस्त्र धारी हूं। अतः उसे उतार कर श्वेतवस्त्र धारण कर लेना उचित है। फिर धन गृहास्थियों की ही भांतिं मिहनत कर के उपार्जन करता हूँ इत्यादि होनें पर मेरे मन में यह ख्याल आरहा है। कि मैं गृहस्थी बनूँ अब आप लिखिये आप क्या समझते हैं। इस विषय पर यद्यपि कई मास से सोचरहा हूँ परन्तु सिवाय इस के और किसी से कुछ कहा सुना नहीं गया। यदि आप की सलाह हो तो ऐसा ही करूँ। और मेरा भविष्य सम्बन्ध किसी जाति बिरादरी से न रहेगा पर खान पान पृथक है अतः जात पात की तनिक भी परवाह न करते हुए जो विधवा (बाल विधवा या क्षत योनि)तैयार हो उस से आप प्रबँध करावें और यदि आप जात पात के बाहर न कराते हो तो मैं स्वयं तलाश करूँ।

यह प्रस्ताव है आप का उत्तर आने व कुछ दिनों विचार कर लेनें पर होगा। मेरी आयु अब ३८ साल की है। मेरी स्त्री जब मैं २२ वर्ष का था परलोक चली गई उस समय माता पिता मौजूद थे प्रयाग नगर ही में मेरा घर है। वे किसी क्वारी कन्या से बिरादरी मैं री दूसरा बिवाह करनें की बात चला रहे थे मैं उन दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाजी था मेरा ख्याल पक्का यह था कि रँडुवे का कोई स्वत्व क्वारी से विवाह करने का नहीं है। और हमारी जाति में विधवा से विवाह होता नहीं आप की इस सभा का उस समय नामोनिशान भी न था। या मुझे ज्ञान न था अतः मैंने माता पिता को वर्जित कर दिया कि मैं विवाह नहीं करनें का फिर उन के पीछे पड़े रहनें पर मैंने प्रयाग से बाहर २ ही नौकरी चाकरी की कि दूर रहूं। पश्चात जब मुझे सन १९०२ में शाहजहांपुर के बाबू बख्तावर सिंह का पता मिला तो उन से विधवा विवाह की बात चलाई और १९०६ में पंजाब की एक आर्यसमाज के प्रबंध से एक ब्राह्मणी विधवा के साथ विवाह कर लाहोर जा रहा। वह स्त्री मेरे साथ केवल १५ दिन रही थी कारण यह कि वह ऐय्याश मिज़ाज थी उसनें स्वयं मुझ से कहा कि तुम्हारे साथ मेरा गुज़ार न होगा (उस के पूरे शब्द आप सुनना चाहेंगे तो दूसरे पत्र में सुना दूँगा) सो मैंने उसे कह दिया कि अच्छा हम तुम्हारे लिये दुःखदायी न बनेंगे तुम जिस से राज़ी हो उस के साथ फ़िर विवाह करा लो अतः उस का सम्बन्ध छूट गया। यह है मेरा इतिहास इस सम्बन्ध में इसी से आप समझ लें कि मैं बिधवा विवाह का कितना पक्षपाती हूँ। उक्त घटना पर दूसरों ने तो कहा कि अजी आप तो यह खब्त छोड़ो विधवायें जो शरीफ हैं वे स्वयं दूसरा विवाह नहीं चहातीं और जो आवारा व ख्वाईशा हैं बे सारी ऐसी ही होंगी जैसी उक्त थी" ———परन्तु तथापि मैं ऐसा नहीं मानता एक के खराब होने से सब खराब नहीं। और खराब भी क्या यह तो शारीरिक अवस्थाएं हैं किसी को बिषय में अधिक प्रवृत्ति है किसी को कम सो बेमेल जोड़ा मिलने पर तो ऐसे ही अनर्थ होंयगे ही अस्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात मैं ब्रह्मा देश की एक नौकरी पर चला गया था फिर माता पिता के देहान्त वश और बड़े भाई के भी प्लेग में देहान्त हो जाने से उन प्रबंधों में पड़ा रहा सो उधर से ख्याल हटगया था।

मैं गत तीन वर्ष से यद्यपि साधु भेष में हूँ तथापि मृत भाई की विधवा और उन की दो लड़की व एक लड़के के पालन पोषण निमित्त धन सदाही भेजता रहता हूं। मेरा ख्याल यह है कि मैं धर्म बृद्धि के लिये काषाय वस्त्र धारण करता हूं तो यह अधर्म क्यों सिर पर लूं कि उक्त चार प्राणियों का भार दूसरों पर डाला तथा उन्हें कष्ट में रक्खा जाय। मेरी एक भौजाई अच्छी पढ़ी लिखी है यदि मैं ऊपर के प्रस्तावानुसार किसी विधवा से विवाह कर के कलकत्ता में जम कर रहूँ और आश्रम का प्रबंध करूं तो उन्हें भी बुला कर आश्रम का कोई काम उन के सिपुर्द किया जासकता है।

ऊपर के सब हाल लिखने का आशय यह है कि आप मुझे पूरा २ छान सकें यद्यपि अब भी अनेक बातें और होंगी जो प्रबंधानुसार कही जा सक्ती हैं।

इसे पढ़ कर फाड़ डालियेगा। इति शम्

नोट—यह सच्चा पत्र इस लिये प्रकाशित किया है। जिससे पाठकों को विदित होजाय कि साधु समाज में कैसे २ पुरुष हैं। आशा है साधु महाशय क्षमा करेंगे।

शुभेच्छु——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भ रक्षा

(लेखक—डाक्टर बलदेव सहाय वैद्य)

चन्द्रवती—देवी जी नमस्ते थोड़ी सी औषधि उस में की और देदीजये।

गं०—नमस्ते क्या अभी तक आप की बहू को फ़ायदा नहीं हुआ।

चं०—उसको तो आप की कृपा से तीन लेप से ही फ़ायदा होगया था। जो औषधि बाक़ी बची थी उस से कई और को फायदा हो गया मेरी एक रिश्तेदार की बधू को भी यह ही तकलीफ थी और वहुत कुछ उस की दवाई होचुकी है परन्तु कुछ फ़ायदा नहीं होता था।

गं०—क्या पक गई है।

चं०—हां कुछ एक तरफ़ से पक भी गई है।

लो सुनों यह औषधियां बाज़ार से मँगा लो लगाते ही फायदा हो जायगा गिरी बादाम तो० २ मुनक्का का बीज निकालकर २ तो० पिस्ता तो २ तीनों को पानी में घोट कर और गरम कर के लेप करदो और ऐसे ही दिन में तीन लेप करो बिलकुल फायदा हो जायगा और किसी दूसरी दवाई की जरूरत नहीं होगी।

चं०—तो यह ही औषधियां मँगा कर लेप करा हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गं०—हाँ—हाँ बस यह ही काफी है।

चं०—तो क्या यह दवाई है।

चं०—देवी जी नमस्ते।

गं०—नमस्ते सुनाओ क्या हाल है।

चं०—वह ही हाल सुनानें आई हूँ जिस समय वह लेपकरा था उसके थोड़ी ही सी देर के पीछे वह सोगई और जब की सोई हूई अवही उठी है।

गं०—बहुत देर तक सोई।

चं०—देवीजी कई रात्रि से दुःख के मारे नींद नहीं आई थी। परन्तु मैं कहना भूल गई थी वह जगह जो सूज रही थी फूट गई और उस्में दो छटाँक के लगभग पीप और रुधिर मिला हुआ निकला है परन्तु किसी तरह की पीड़ा नहीं है अब उस जखम पर क्या लगावें।

गं०—किसी औषधी की आवश्कता नहीं उसही लेप से जखम भी भरजावेगा और जो कसर मसर होगी सब ठीक हो जा वेगी।

चं०—देवी जी उस जड़ी का क्या नाम है जो आपने हमारी वधु को दी थी कृपा करके उसका नाम भी बता दीजिये।

गं०—वह इन्द्रायणाँ की जड़ है ग्राम के मनुष्य इस को फल फेंदवा कहते हैं पंसारियों के यहां से मिलजाती है।

चं०—इस में और कोई भी गुण है।

गं०—गुण इस में बहुत हैं।

चं०—देवी जी एक दो गुण तो बताइये जिससे स्त्री जाति का उद्धार हो।

गं०—इन्द्रायण की जड़ एक छटाँक पानी कुएें का दो सेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्की जड़ को कुचल कर पानी में डाल कर आग पर पकावें जब पानी एक सेर अर्थात् आधा रहजावे तो उतार कर छान लें फिर कोरी हांडी में नौसादर चढ़ा कर उस में एक छटांक डाल देवें। फिर पकावें और बरतन का मुँह ढक देवें जब पानी पकते ? सूकजावे नीचे उतार कर रक्खे जब ठडा होजावे उसको निकाल कर एक शीशी बंद करके रक्खे जब बच्चों को कोई भी तकलीफ हो ? रत्ती माता के दुध में घिसकर पिलावें आराम होगा डाक्टर साहिब की बड़ी ही मशहूर औषधी है इस का मुकाबला अच्छी अच्छी दवाई नहीं करतीं सौ दवा एक तरफ और एक तरफ है गृहस्थियों को अवश्य बना कर रखनी चाहिये।

चं०—देवी जी डाक्टर साहिब की सफेद चुटकी जो महशूर है।

गं०—हां हां यह ही है।

चं०—डाक्टर साहिब को यदि हम कुछ लिखकर दर्याफ्त करें तो उत्तर देते हैं या नहीं।

गं०—यदि तुम कुछ बूझोगी तो अवश्य देंगे।

चं०—आप की सेवा में कल को फिर आऊगीं अब आज्ञा हो

सरस्वती—कृष्ण ज़रा तुम देवी जी को बुला लाओ।

कृष्ण—देवीज़ी नमस्ते आपको बडी जीनें बुलातीं हैं।

गं०—नमस्ते तुम अच्छे हो।

कृष्ण—आपकी कृपा है आपको बुलाया है।

गं०—मैं तीसरे पहर को आऊँगी इस समय कुछ कार्य है।

कृष्ण—तीसरे पहर को आवेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती—देवी जी नमस्ते आपतो हम को बिलकुल ही भूल गईं ।

गं०—नमस्ते आप जानती है कामों की वजह से मेरा आना नहीं हुआ नन्हा और उसकी माता सानन्द हैं और सब बाल गोपाल कुशल हैं ।

(शेष फिर)

सुतानन्द

(गताङ्क से आगे)

(२)

होइ है तुम्हैं ससुर घर जाना ।
बिनु गुण तहपै हैं दुख नाना ॥
मेला भीड होय जहँ भारी ।
तहन जाहु निज उचित बिचारी ॥
नाहिं तब योग्य याग तप पूजा ।
सेवा पति की और न दूजा ॥

सवैया ।

पति देव तिहारो है ब्रह्मस्वरूप न तीरथवर्त में बुद्धि भ्रमावो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो पति बैन कहे तुमसो हठ छाड़ि हृदय धरि ध्यान लगावो ॥
काज करो घर के सबही मृदु बैन सुनाय भरि प्रमोद मचावो ।
नारिन को परलोकहु लोक में भाख्यो नहीं श्रुतिआन उपावो ॥३॥

दोहा ।

उत्तम मध्य नीच लघु कहो सकल समझाय ।
जाहि सुनेत भय तरहि सुनहु सुता मन लाय ॥

(चौपाई ४)

उत्तम के अस बस मन मांही ।
सपनेहु अन्य पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे ।
माता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझिकुल रहहीं ।
सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं ॥
विनु अवसर भयते रहै जोई ।
जानहु अधम नारि जग सोई ॥
पति बंचक पर पति राति करही ।
रौरव नरक कल्पशत परहीं ॥
पति प्रतिकूल जनम जह होई ।
तरुनाई में विधवा सोई ॥
बृद्ध रोगबश जड़ धन हीना ।
अन्धवधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना ।
सुता बसत यमपुर दुखनाना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवैया !

अनसूया सिया दमयन्तीसुकन्या हि रुक्मिणिमाद्रीकी चालसवारो
दारिद्र दुख लह्यो कितनो पर धीरजते दुःख काटि निवारो ॥
पतिमें नित लीन संतोष धरो मन मांहि सुवेद को धर्म विचारो ।
बालक वृद्ध युवा घरको सबको तुमसेवहु बैन हमारो ॥ ४ ॥

दोहा ।

कौड़ी कौड़ी जोरिकै, धनी होत धनवान ।
धनते धर्म कमाय वो, धनको है सनमान ॥ ५ ॥

[चौपाई ५]

सबकी सेवा पतिके नाते ।
दर्शा वह गुण गण की बाते ॥
प्रथम बार ससुरारि की नारी ।
छेड़त हैं सब जानि अनारी ॥
भांति भांति की करत परिक्षा ।
बूझत हैं तेहि मनकी इच्छा ॥
कहु द्रव्य कहु धरै मिठाई ।
पूछहि मातु पिता समुदाई ॥
जो खावै कछु वस्तु चोरावै ।
मात पिता कहँ नाम धरावै ॥
कुछ विश्वास रहत ना तेहिघर ।
आदर पुनि पावै ना तेहिं पर ॥
जो गुणवन्ती लखै कुमारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकित होंहिपतिपुर की नारी ॥
जस जस देखत मति निपुणाई ।
घर घर तसतस होत बड़ाई ॥

सवैया ।

आवहि जो पुर नारि सुशील घरे तुम्हरे उठि आदर कीजे।
आसन दै मृदु बैन सुनाय सदा सब के मन को हर लीजे॥
जो शुभ धर्म कहै तुमसे सुनि के पतिसे पुनि पूछि करीजै।
कवहूँ धरके नर नारिन को मृदु बैन सुनाय नहीं दुख दीजे॥

दोहा ।

दयाधर्म का मूल है पाप मूल अभिमान ।
दयाधर्म नहि छोड़िए जब लगि घटमें मान ॥६॥

[चौपाई ६]

दुलहिन नई चतुर है ज्ञानी ।
पढ़ी लिखी विद्या गुण खानी ॥
सुनि ससुराल गांव की कन्या ।
गुण सीखै मानै अति धन्या ॥
सम्मति करै नाहि सन नारी ।
अपने को कहि मूरख अनारी ॥
विद्या गुणकर लखहु प्रभावा ।
जसहम शास्त्र लेख लखि पावा ॥

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रार्थ की धमकी

और

नीचता

रामपुर के कुछ सज्जनों नें बाबू ज्वालाप्रसाद वकील को उन के पुत्र लाला ललताप्रसाद के पुनर्विवाह के समय (जो कि १५ अप्रैल को लाला कुँवर सैन रईस व वकील की बाल विधवा कन्या से हुआ था) उक्त बाबू साहब को नाना प्रकार की धमकियां दीं। जिस से बाबू साहब डरजाँयें जिन में हमारे मान नीय पंडित गंगा प्रसाद जी शर्म्मा भी हैं आपने उस समय शास्त्रार्थ के लिये एक विज्ञापन दिया। उस के उत्तर में निवेदन किया था कि मैं पिता जी का नियत एक हजार पारितोषिक दूंगा यदि आप बाल विधवा विवाह को शास्त्र विरुद्ध सिद्ध कर देंगें। पाठकों के दिग्दर्शनार्थ अपना विज्ञापन और रामपुर से आया हुआ उत्तर प्रकाशित करते हैं। जिस से पाठकों को उत्तर दाता की नीचता और योग्यता का भली भांति पता लग जायगा क्या ऐसी ही योग्यता से शास्त्रार्थ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनें में सुहागा

मुझे रामपुर निवसी पं० गंगामासाद जी शर्म्मा का विज्ञापन पढ़कर बड़ा हर्ष हुआ मैं उनसे सविनय निवेदन करता हूँ यदि उनके हाथ कोई युक्ति अक्षत योनि वाल विधवा कन्याओं के के विवाह के मतिकूल शास्त्रों में से मिल गई हो तो वहशीघ्र सर्व साधारण के सन्मुख लेखबद्ध मध्यस्थों के के होते हुए शास्त्रार्थ में मकट करें। मैं अपने स्वर्ग वासी पिता जी का नियत किया हुआ एक हजार रु० पारितोषिक दूँगा।

किन्तु जरा संभलकर मैदान में आंए कभी नगाड़े की चोट खाली जाय। और मदारी की झोली खाली निकले।

निवेदक

श्रोत्रिय शङ्करलालत्मज

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

बिजनौर

रामपुर का जवाब।

१२:४:१९१४

महाशय जी..................................

आप का उपहार देख कर मैं बड़ा ही खुश हुआ 'कृपा कर के पहिले अक्षत योनि का डाक्टरी सार्टीफिकट भेजदी जियेगा उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बाद आप शास्त्रार्थ करने का इरादा करें हम हमेशा तैयार थे और हैं और रहेंगे।

मैं हूं आप का

एक बिधवा का

शुभ चिन्तक

हमको शोक है पंडितजीने कुछ उत्तर न दिया और "मौनं सर्वार्थ साधकम्" मंत्र का अवलम्बन किया हमतो पहिलेही जानते थे मदारी की झोली खाली निकलेगी क्यों कि आज तक किसी पंडित का उक्त पारितोषिक लेनें की हिम्मत न हुई। तब उक्त पंडित जी को ही क्या होती। किन्तु वहां के किसी नीचात्मानें उसका उत्तर कैसे मधुर शब्दों में दिया है। उक्त महात्मानें अपना नाम नहीं लिखा जिससे शास्त्रार्थ की तैयारी और मैदानी बहादुरी जाहिर होती है।

कहिये पाठक क्या ऐसे ही शास्त्रार्थ होता है जो उत्तर दाता महाशय अपना नाम भी न लिखें।

बाल बिधवा कन्या की आवश्य क्ता

अग्रवाल बाल विधवा कन्या की आवश्यकता है। आयु १४से १८वर्ष तक हो। मंगल गोत्र की न हो और पढ़ी लिखी हो।

मेरी अवस्था २६ बर्ष की है नागरी पढ़ा हूं अपनी जात खास से आमदनी ४०) रुपए महावार की है २० बिघे पुख्ता जायदाद है तीन दुकान तीन मकान पुख्ता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४०) रुपये महावार की आमदनी जायदाद से अलावे है।

दुर्गाप्रसाद मंत्री

आर्य्य समाज परीक्षितगढ़ जिला मेरठ

मेरे एक मित्र को जिन की आयु ३८ वर्ष की है दुकानदारी का काम करते हैं मासिक आय ६०—७० रुपया है आरोग्य हैं और कोई अंग भंग नहीं वैश्य वर्ण के हैं जाति के बन्धनों की परवाह न कर पुनर्विवाह करना चहाते हैं पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से हो ।

श्रीयुतनरसिंहलाल

प्रधान आर्य्य समाज

ठट्ठा [सिन्ध]

मैनपुरी निवासी लाला दम्मा मल को अपने पुत्र के लिये एक अग्रवाल बाल विधवा कन्या की आवश्यकता है कन्या की आयु १४वर्ष से २०वर्ष तक होनी चाहिये। और वक्षल गौत्र न होना चाहिये लड़का भी गल्ले की आढ़त का काम करता है जिस से महावारी आमनी ३०)रु० है पत्र व्यवहार लाला दम्मालाल मैनपुरी इस पते पर होना चाहिये ।

समालोचना ।

अबला रक्षक—यह पुस्तक माननीय पंडित श्याम जी शर्म्मा काव्य तीर्थ सम्पादक आर्य्यवर्त ने बनाई है। इस से विधवा विवाह न होने से जो देश और जाति को हानि पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है उस का वर्णन और विधवा विवाह और नियोग के विषय मे अनेक शास्त्रीय प्रमाण दिये हैं । प्रत्येक विधवा विवाह के पक्ष पाती को इस की एक प्राति अवश्य रखनी चाहिये . मूल्य केवल ॥) मात्र है उक्त पंडित जी द्वारा भागलपुर से प्राप्त होगी ।

नया बाल विधवा विवाह

हल्दौर जि० विजनौर मे २७ जून १९१४ को लाला ठाकुर दास और लाला भवानी प्रसाद जी रईस के परिश्राम से पं० नन्दराम पुरोहित की बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह मुहम्मद पुर जि० विजनौर निवासी पं० भगतरामजी भूतपूर्व उपदेशक ऋषि कुल हरिद्वार के साथ बड़ी धूमधाम से निर्विघ्न समाप्त हुआ । इस में पण्डितलाल मणिजी वैद्य आदि अनेक ब्राह्मण साम्मलित थे । निम्न लिखित दान हुआ ।

१) बाल विधवा विवाह सभा विजनौर ।

२) ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार ।

३) देव नागरी पाठशाला हल्दौर ।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे सनातनधर्मी भाई भी विधवा विवाह की आवश्यकता समझने लगे हैं ।

विशेष सूचना

टाईटिल पेज पर हज़ार धन्यवाद शीर्षक में अमृतधारा भवन की खुशी पं० ठकुरदत्तशर्म्मा वैद्यनें ३१ अगस्त तकके लिये अपनी औषधियों $\frac{1}{4}$ कीमत कम करदी है किन्तु गलती से २० जुलाई तक छपगया है इसलिये सूचना दी जाती है कि बजाय २० जुलई के ३१ अगस्त तक वैद्य जी की मूल्य की कमी समझें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस समय भारत वर्ष में स्वार्थी मिट्टी के तैल को रंग कर सुगन्धी गेर कर चटकीले २ विज्ञापनों द्वारा देशका धन लूट रहें हैं। मिट्टी के तैल दीमाग के लिये महाहानि कारक हैं नजला पैदा करते हैं। जिस से बाल सफेद होजाते हैं और नाना प्रकार के शिरो रोग उत्पन्न होते हैं। इस लिये बड़ी सावधानी से तैल खरीदने चाहियें।

सिर दर्द की क्यों तकलीफ उठाते हो

हिमाद्रि तैल

यह तैल शिर सम्बान्धि रोगों के लिये कई वैद्यों की सम्मति द्वारा तैयार कराया है। इसके लगाने से शिरशूल [सिरदर्द] मस्तक में भारीपन रहना धूप में चलने या पढने लिखने से चक्कर आना। बुरे स्वप्न दिखना, नींद कम आना। दिमाग की दुर्बलता नेत्रों के सामने अंधेरा होना, शिर में खुश्की और खुजली बालोंका सफेद होना या उखड़ २ कर गिरना चित्त की चंचलता आदि के लिये अद्वितीय तैल है।

ऐसा कौन पुरुष होगा जो इस के अपूर्व गुणों पर मोहित न होजाय। इसकी अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है एक बार अजमाइश कर के देखिये मूल्य प्रति शीशी १)

मिलने का पता----

मैंनेजर दीनबन्धु प्रेस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ती और बढ़िया

शंकर सिलाई की मशीन

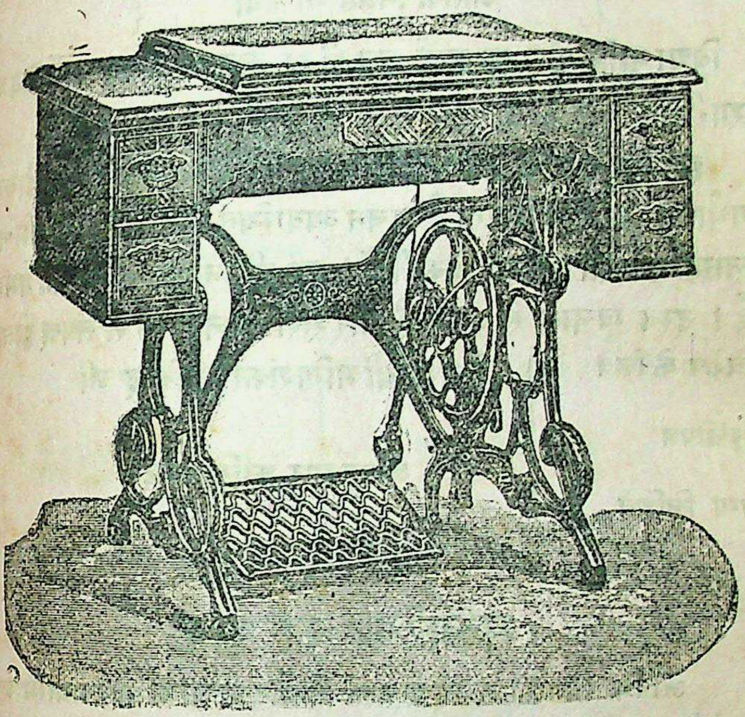

यह मशीनें स्वर्गबासी श्रोत्रिय शंकरलाल जी की स्मारक स्वरूप हैं

हर्ष समाचार ।

यह मशीन विलायत से मंगाई गई है जो अन्य मशीनों के मुक़ाबले में बहुत सस्ती और बढ़िया है। इनकी अधिक प्रशंसा लिखना वृथा है सूचीपत्र मंगाकर देखिये ।

अबलाहितकारक के ग्राहकों को १०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा ।

पता—

मैनेजर इंडिया इम्पोर्ट आफिस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डब्बा १
गोली ३२

आरोग्य देवी

आतंक निग्रह गोलियां

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारीरिक बल हो।

इन गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। यह गोलियां लाखों रु० की प्रतिवर्ष बिकती हैं। यह ही इनकी उत्तमता का प्रमाण है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बलकांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये सूचीपत्र मंगा लिजिये

वैद्य शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी

जामननगर काठियावाढ़

मलेरिया का अर्क

जो कि पतेन की हल्की शक्ल है बाटली वाले को बनाया मिक्श्चर या गोलियां १)

बाटली वाले का क्लोरल हैजे की एक मात्र दवा)

बाटलीवाले का खिजाब। यह खिजाब पहिले खिजाब से अच्छा है जिससे सफेद बाल कुदरती बालों के समान हो जाते हैं।

बाटली वाले का दांतों का मंजन-यह दवा अङ्गरेजी दवाओं से वैज्ञानिक रीति से तैयार की गई है मयाफल और कारबोलिक एसिड

बाटलीवाले का दाद का मलहम।)

यह दवा सब जगह मिलती हैं।

डा० बाटलीवाला

बरली लबोटरी दादर बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्तर बर्मन की

कठिन रोगों की सहज दवाएं ।

गत ३० वर्ष से सारे हिन्दुस्थान में घर घर प्रचलित है । विशेष विज्ञापन की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल कई एक दवाइयों का नाम दे देते हैं ।

हैजा गर्मी के दस्त में

असल अर्क कपुर

मूल्य ।) डा०म० ।-) १ से ४ शीशी तक ।

———

पेचिश, मरोड़, एंठन शूल, आंव के दस्त में

क्लोरोडिन ।

मूल्य ।=) दर्जन ४) रुपया ।

———

कलेजे की कमजोरी मिटाने में और बल बढ़ाने में—

कोला टानिक

मोल १) डा: ।-) आने ।

पेट दर्द, वादी के लक्षण मिटाने में—

अर्क पुदीना (सब्ज़)

मूल्य ॥) डा० म० ।-) आने ।

———

अन्दर के अथवा बाहरी दर्द मिटाने में

पेन हीलर ।

मूल्य ।॥) डा० म० ।-) आने

———

सहज और हलका जुलाब के लिये—

जुलाब की गोली ।

२ गोली रात को खाकर सोवो सबेरे खुलासा दस्त होगा ।
१६ गोलियों की डिबी ।-) डा० म० १ से ६ तक ।-) आने ।

पूरे हाल की पुस्तक बिना मूल्य मिलती है । दवा सब जगह हमारे ऐजण्ट और दवाफरोशों के पास मिलेगी अथवा—

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता ।

श्रीचिरंजीवशर्मा के प्रबन्ध से [illegible] प्रिंटिंग प्रेस बिजनौर में छपा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार २ धन्यवाद है।

उस दयानिधि परमात्मन् का जिसकी कृपा से "अमृतधारा" ने थोड़े काल में इतनी प्रसिद्धि पाई है, कि 'अमृतधारा बिल्डिंगस्' के भीतर खास डाकखाना 'अमृतधारा डाकखाना' नामी खोला गया है, अमृतधारा कारखाना के पास से जो सड़क माल्मंडी को निकाली गई है उसका नाम 'अमृतधारा रोड' रक्खा गया है, कार्यालय अमृतधारा को औषधियों के सम्बन्ध में पदक मिले, प्रसंसा पत्र मिले, और चारों ओर से 'अमृतधारा' २ की ही पुकार है। कार्यालय अमृतधारा की अपनी बढ़ती हुई आवश्यकता को पूर्ण करने के वास्ते एक और बड़े मकान की आवश्यकता हुई, जो अभी ईश्वर की कृपा से अति सुन्दर तय्यार हुआ है। इस-

अमृतधारा भवन के खुलने की रीति

श्रीमान् मिस्टर एफ़ डबलू कैनवे साहिब आई. सी. एस. डिप्टी कमिश्नर लाहौर के हाथों ९ मई १९१४ को शहर लाहौर तथा पंजाब के भी ... प्रतिष्ठितों के बड़े जलसे के भीतर पूर्ण हुई।

जिस में आनरेबल राय बहादर सर डाक्टर परतुल चन्द्र सी. आई. ई. भूतपूर्व जज्ज चीफ़ कोर्ट पंजाब और खान बहादर आनरेबल मियां मुहम्मद शफ़ी बैरिस्टर ऐट ला की देशी चिकित्सा के विषय उत्तम वक्तृता ...

इस अद्वितीय हर्ष के प्रकाश में,

और अपने हज़ारों ग्राहकों को भी खुशी में सम्मिलित करने के वास्ते प्रकाशित किया जाता है कि २७ मई १९१४ से २४ जौलाई १९१४ तक अमृतधारा व कारखाना की अन्य औषधियां व पुस्तकें $\frac{3}{4}$ मूल्य पर मिलेंगी

अर्थात् ... रुपया ।) की रियायत होगी॥

नोट— ... जिन्होंने न ... हो हम से मंगवालें ... सूचीपत्र ... न ही मंगावें, एक पैसा का कार्ड सूचीपत्र के वास्ते लिखने से ... पहुंच जावेगी॥

इस हिसाब से प्रसिद्ध औषधि अमृतधारा की बड़ी शीशी २।) के स्थान में १॥=) में, और नमूना की छोटी शीशी ॥) के स्थान में ।=) में मिलेगी। जिन श्रीमानों को किसी कारण से अद्यावधि आज़माने का अवसर नहीं हुआ उनके वास्ते अच्छा अवसर है॥

पता—"अमृतधारा" (प्र०ब्रां०) लाहौर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

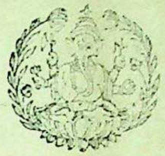

॥ ओ३म् नमः शिवाय ॥

अबलाहितकारक

संस्थापक

श्रोत्रिय शङ्करलाल

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं,
गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं,
पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥

(ऋक्) मंत्र ३१

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥

(पाराशर:)

सम्पादक व प्रकाशक—

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रु० में ६०० पृ० की १८ पुस्तकें ॥

१ नीति सौन्दर्य
२ माता पिता का कर्त्तव्य
३ बाबा का विवाह
४ कान्यकुब्ज अबला विलाप
५ लक्ष्मी उपन्यास
६ विधवा विवाह विवरण
७ मन की उमंग
८ रजनी चरित
९ कुमार रक्षा
१० मोहब्बत का फाँदा
११ भारत के आदर्श बालक
१२ वनिता बन्धु
१३ अबला सुधार भजन वली
१४ विधवा भजन वाटिका
१५ विधवा विलाप

अबला हितकारक के ग्राहकों को ॥।) में दी जांयगी

मिलने का पता—मैनेजर दीन बन्धु प्रेस बिजनौर

भूल संशोधन

आषाढ़ १९७१ के अङ्क पेज १२४ पर लाला दम्मामल के पुत्र के लिये बाल विधवा की आवश्यकता छपी है। प्रेस की गलती से सेठ दम्मामल का पता गलत छप गया है इस लिये सूचित किया जाता है निम्न लिखित पते से पत्र व्यवहार करें और उक्त लाला साहब को बरनाहल जि० मैनपुरी निवासी समझें।

पता—सेठ दम्मामल जी
बरनाहल मैनपुरी

निवेदन

मैनेजर अबला हितकारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

※ ओम् नमः शिवाय ※

श्रोत्रिय शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित।

अबलाहित कारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥१॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥२॥

एकादश वर्ष | श्रावण सम्वत् १९७१ | अङ्क पंचम

शोक--संवाद।

[दोहा]

ऊँची पदवी से गिरा, गौरव रहा न सङ्ग।
प्यारे भारतवर्ष का, हाय! हुआ रस भङ्ग ॥१॥

–:–:※:–:–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मुखोद्गार।

त्रोटकात्मक--मिलिन्दपाद

प्रभु शङ्कर ! तू यदि शङ्कर है। फिर क्यों विपरीत भयङ्कर है॥
करतार—उदार सुधार इसे। कर प्यार निहार न मार इसे॥
मृगराज कहाय कुरङ्ग हुआ।
सब भारत का रस भङ्ग हुआ॥

धरणी, धनेष, जनेश रहा। अनुकूल सदा अखिलेश रहा॥
सबसे बढ़िया, घटिया कब था। इस भांति बड़ा जब था तब था॥
अब तो यह नङ्गमनङ्ग हुआ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ॥ २॥

जिसने सुविचार विकाश किया ! रच ग्रन्थ-समूह प्रकाश किया॥
कबि-नायक, पण्डित-राज बना। वह अज्ञ, अशिक्षित आज बना॥
बिन पक्ष बिवेक-विहङ्ग हुआ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ॥३॥

अबलों न कहीं वह देश मिला। इसका न जिसे उपदेश मिला॥
उस गौरव के गुण अस्त हुये। गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुये॥
कितना प्रतिकूल प्रसङ्ग हुआ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ॥४॥

जिस के जन-रक्षक शस्त्र रहे। उस के कर हाय ! निरस्त्र रहे॥
रण-जीत शराशन टूटगया। इषु—वर्ग यशोधर छूट गया॥
रिपु-रक्त-निमग्न निषङ्ग हुआ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ॥५॥

बिगड़ी गति वैदिक-धर्म बिना। सुख-हीन हुआ शुभ-कर्म बिना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हठने जड़श्री अविकाश किया । फिर आलसने बल नाश किया ॥
हरिचन्दन हाय ! पतङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥६॥

मिल मोह-महा-तम छाय रहा । लग लोभ कुचाल चलाय रहा ॥
मद-मन्द कुदृश्य दिखाय रहा । कटुभाषण क्रोध सिखाय रहा ॥
नय-नाशक नीच अनङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥७॥

घनघोर-अमंगल गाज रहा । भरपूर विरोध विराज रहा ॥
घर घेर दरिद्र दहाड़ रहा । उर शोक-महासुर फाड़ रहा ॥
रिपु-रूप कराल-कुसङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥८॥

असमाप्त

(अनुरागरत्न से)

विविध विषय

जिस हिन्दू युनिवर्सिटी के लिये हिन्दू जाति चिर काल से टक टकी लगाए देख रही थी, जिस हिन्दू विश्व विद्यालय के लिये हिन्दू जाति नें अपना पेट काट २ कर पचास लाख रूपया इकठ्ठा किया था, जिस हिन्दू विश्य विद्यालय के लिये महाराज दर्भङ्गा और माननीय पंडित मदन मोहनमाल वीय अपना घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ कर दर २ भिक्षा माँगते फिरते थे। जिस हिन्दू विश्व विद्यालय के लिये नाना प्रकार की आशा लताएं लहलहारही थीं। सर हारकोर्ट बटलर का पत्र आते ही एक दम सबै आशाओं पर पानी पड़गया। क्योंकि बटलर साहब नें हिन्दू विश्वविद्यालय के विषय में जो कुछ लिखा है वैसा होनें से हिन्दू विश्वविद्यालय का होना न होना बराबर है। बटलर साहब के वाक्यों को पढ़कर जो कि महाराज दर्भगा को लिखे हैं पाठकों को स्वयं विदित होजायगा कि ऐसी दशा में चारटर का न लेना अथवा विश्व विद्यालय संस्थापित न करना ही अच्छा है।

हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम "बनारस युनिर्सिटी ही होना चाहिये क्योंकि यह अत्यन्त व्यापक नाम है॥ इसका सम्बन्ध बाहर के स्कूल और कालिजों से न होना चाहिये क्योंकि बनारस की मिट्टी बनारस के बाहर नहीं जाती।

इसके चाँसलर भी युक्त प्रान्त के छोटे लाटसाहब को ही बनना चाहिये क्योंकि इसी के लिये तो इतना उद्योग करके रुपए इकट्ठे किए गए हैं। यदि छोटेलाट चासन्लर न हुए तो गुड़ ही मिट्टी होजायगा।

"मौजी" भा० भि०

हिन्दूओं नें अपनी जातीयता के लिये हिन्दू विश्वविद्यालय खोलना निश्चित किया था। जब हिन्दू विश्वविद्यालय नाम ही न रहा और प्रत्येक प्रान्त और शहरों के स्कूल और कालिजों से सम्बन्ध न रखसका तब शिक्षा प्रचार में इससे क्या विशेष लाभ होगा क्यों कि भारत में सर्व साधारण की ऐसी आर्थिकदशा नहीं है जो मद्रास आदि प्रान्तों से आकर विद्यार्थी यहां शिक्षा प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकें।

हमारी क्षुद्र बुद्धि में यह नहीं आता कि बटलर साहब को हिन्दू विश्व विद्यालय ही नाम रखनें और अन्यत्र के कालिजों से सम्बन्ध रखनें में क्या आपात्ति प्रतीत होगी है। अस्तु

अब हिन्दू युनिवर्सिटी कमेटी का कर्तव्य होना चाहिये या तो दान दाताओं का रुपया लौटा दे। या लाहोर में कहे लोकमान्य लाला लाजपत राय जी के इन शब्दों के अनुसार काम करें चारटर मिले या न मिले हिन्दू युनिवर्सिटी अवश्य हो" क्यों कि चार्टर के न मिलने से सिवाय इस के कि हिन्दू विश्व विद्यालय के विद्यार्थीयों को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी और कोई हानि नहीं मालूम होती है—सो न सही क्यों कि हमारी दयालू और हितैषी गवर्नमैन्ट नें प्रथम ही हमारे लिये पांच विश्व विद्यालय खोल रक्खें है। जिन में पढ़कर हम को नौकरयां मिल रहीं हैं और मिलेंगी। जब हमारे विद्यार्थी योग्य होंगें और अपनें राजा की सेवा ही करना चाहेगें तब हितैषी गवर्नमैन्ट क्यों न आश्रय देगी।

हम बटलर साहब की इस दया के अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि श्रीमान् अब भी हमारी शिक्षा का प्रबन्ध स्वयं करना चाहते हैं और हमें प्रबन्ध के कष्ट से दूर रखना चाहते हैं। अर्थात् छोटे लाट ही चान्सलर रहेंगे।

हम बटलर साहब की दया का धन्यवाद करते हुए अत्यन्त नम्र भाव से प्रर्थना करते हैं। कृपाकरके अब हमको भी अपनें पैरों पर खडे होना सिखावें। और लाट साहब को कष्ट न दें और हम से ही उनकी कुछ सेवालें।

—÷:*:+—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रावणशुक्ला चतुर्दशी को हमें सिकन्दराबाद पतित पावनी पाठशाला का निरीक्षण करने का शुभ अवसरप्राप्त हुआ। यह पाठशाला चैत्र मास के शुरु में स्थापित हुई है। इसमें चमारों के लड़के पढ़ते हैं और दो श्रेणियां हैं दोनों में २९ लड़के पढ़ते हैं। पाठशालाका स्थान चमारोंका अपना १२०० रुपए लागतका बना है और खर्च इस समयतक चमारो ही के ऊपर है। हाल में यहां की म्युनिस्पिलटीने भी ६) रुपए मासिक देना स्वीकार किया है म्युनिस्पिल्टी का यह कार्य्य प्रसंशनीय है। अन्य म्युनिसिपलटियों को अनुकरण करना चाहिये।

कार्य्य संतोषप्रद है। किन्तु यहां पर यह सुनकर दुःख हुआ कि कुछ चमारो के लड़के इस पाठशाला में नहीं आते और पादरीयों द्वारा भंगियों की पाठशाला में शिक्षा पाते हैं क्योंकि इस पाठशाला में आर्य्यसामाजिक शिक्षा दीजाती है।

सिकन्दराबाद निवासी सनातनधर्मी भाईयों का इस ओर ध्यान दिलाते हैं वह भी समाजी भाईयों की तरह अपने बिछडे भाईयों को छाती से लगावें और ईसाईयों के फन्दे से निकालें।

———————

यह देखकर हर्ष होता है भारत में क्रमशः स्त्री शिक्षा का प्रचार बढ़ता जाता है जो जाति और देश के यह सौभाग्य की बात है। मेरी शारदा सदन युक्त प्रान्त में कन्याओं को शिक्षा देही रहा था एक काशी में कन्यागुरुकुल भी खुलगया। पं॰ तुलसीरामजी की सम्मति से कार्य्य अत्यन्त संतोषप्रद मालूम होते है परमेश्वर इसकी दिनों दिन उन्नति करे सनातनधर्मी भाईयों को भी स्त्री शिक्षा की तरफ ध्यान देना चाहिये।

—÷:※:+—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत वर्ष में बहु स्त्री रखनें से नित्य नाना प्रकार के उत्पात सुनने में आते हैं । किन्तु शोक है इतनें पर भी लोग दोर और चार २ विवाह करनें से नहीं रुकते । हाल में इस ही घृणित व्यवहार से गनपाडा (बंगाल) के बाबू हीरालाल सेन नें दूसरा विवाह कर लिया था और प्रथम पत्नी सुखदा की कुछ खबर न ली अतःवह कपड़ों में आग लगा कर जल गई मृत्यु से प्रथम जो पत्र व पद्य अपनें पति को भेंजे थे वे "खुलना वासी ,,पत्र में छप चुके हैं ।

श्री मती एनी बेसन्ट (बसन्ती)देवी नें फिर रंग बदला है और लोगों का फसानें का नया ढंग निकाला है। जे०व० सुब्रह्मण्य नें मद्रास के हिन्दू नामक पत्र में लिखा है । कि जे० प्कृष्ण मूर्ति में जो क्राइस्ट वा मैत्रेय का अवतार होनें वाला था वहां न होगा क्योंकि एक समाचार पत्र को उक्त बीबी महोदयानें सूचना दी है कि राजधानी पैरिस में क्राइस्ट का अवतार होगा मालूम होता है कि बीबी सहाब उन की प्रतिनिधि हैं। जो सीधी खबर अवतारों की आपको मिलती रहती है । नव युवाओं को बीबी के जाल से सावधान रहना चाहिये ।

विज्ञान द्वारा नित्यप्रति सैकड़ों नवीन आविष्कार संसारको चकित कर रहे हैं । डाक्टर फोरानियर डी० एल० वी०का कथन है बिजली के द्वारा कान से देखकर पढ़ सकते हैं पिछे आप नें एक बिजल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यंत्र ब्रिटिश एसो सिएशन में रक्खा था। जिस से अन्धे कानों से देख सकते थे। विदेशी विज्ञान से संसार में आशातीत लाभ उठार रहे हैं किन्तु हमारे भारतीय भाई केवल भाग्य के भरोसे पड़े हैं। यदि किसी के घर कोई बेमार होजाय तब कभी २ इलाज नहीं करते और कहते हैं भाग्य में होगा स्वयं अच्छा होजायगा। इत्यादि।

कविराज पण्डित हीरालाल जी वैद्य द्वारा हमको अमृत-जीवनवटी प्राप्त हुई है। यह वटी हैज़ा प्लेग, और सांप के काटे को तत्क्षण फायदा करती हैं। वैद्यजी नें विषमज्वर और अजीर्ण आदि अनेक रोगों पर इसकी परीक्षा की है। अबलाहितकारक कार्य्यालय से केवल डाकव्यय और पैकिङ्ग खर्च आनें पर श्रोत्रिय शङ्करलाल जी के स्मारक में विना मूल्य भेजी जाती हैं। आज़कल सांप और हैजे के दिन हैं इस लिये निवेदन है प्रत्येक मनुष्य को यह सन्देश सुना दिया। वैद्यजी को एक वार सांपनें काट लिया था तब आपको अनेक औषधी दी गई किसी से लाभ न हुआ तब एक सज्जन नें कोई जड़ी आंख के पास लगा दी थोड़ी देर के बाद आंख से पानी बहना शुरू हुआ कई घंटे तक पानी इस कदर बहा कि कपड़े पानी से भीज गए निद्रा न आई और आराम हो गया। यह औषधी भी आपनें बता दी है जिन को आवश्कता हो इसकी पौद मुफ़्त मंगा कर अपनें यहां लगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष में अविद्या के कारण जो २ नित्य उत्पात होते हैं। उनको सुनकर आश्चर्य तथा शोक का परावार नहीं रहता और कहना पड़ता है ऐसी ही मूर्खताओं के कारण देश पराधीनता की बेड़ी न पहिने तब और क्या हो। पाठकों को सुनकर आश्चर्य होगा औरय्या जि० इटावा निवासी लाला लल्लूलाल खरौआनें अपनें गुड्डे का विवाह लाला गौरी शङ्कर अग्रवाल की गुड़िया से किया। बरात बड़ी ही धूम धाम से चढ़ी। वेश्या का नाच हुआ और आतशबाजी में भी खूब धन फूंका गया। छाक पिराक बड़ी पत्तल बड़े ठाट से हुई। जाति वालों नें इस फजूल खर्ची के कारण लाला लल्लूमल को १ वर्ष और लाला गौरीशङ्कर को ६ मास के लिये जाति से त्याग दिया। ऐसी ही फजूल खर्ची को देखकर भारतवर्ष को कोई २ विदेशी धनवान कहते हैं। हम पूछते हैं विवाह करानें वाले ब्राह्मणों को भी किसी नें जाति च्युत किया या नहीं। प्रजाहितैषी गवर्नमेन्ट से प्रार्थना है ऐसे अपव्ययी पुरुषों के लिये कोई एक्ट बनावे।

इस मास में सिकन्दराबाद गया वहां गुरुकुल से वापिस आते समय लग भग नौ बज गए। रास्ते में लड़कियां झूल रही थीं। झूलनें वालीं लड़कियोके गानें का यह पद मेरे कान में पड़ा "सासनें दीनी लौंड़िया झटकती आऊं पटकती आऊं कद्दू से रूड़ काती आऊं,,। मुझे यह सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ और प्रसंग वश इस पदका जिक्र दो एक मित्रों से हुआ तब एक ब्राह्मण मित्र बोले भाई तुम इसही को रोते हो हमारे यहां रस्म है जब लड़का विवाह करके घर के द्वारपर आता है तब यह मंगल गाया जाता है"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या सासू तू अटकै मटकै क्या मटकावे कुल्हे होले में से मैं जब उतरूँगी अलग धरूँगी चुल्हे" क्या ही सभ्यता है क्या ही योग्यता है क्या ही मंगल है क्या ही उत्तम शिक्षा है। हाय शोक साम के गायन करने वाली देवियों के मुख से यह घृणितशब्द क्या उत्तम लगते होंगे। इन शब्दों को सुनकर विदेशी हम को जंगली कहें तो क्या आश्चर्य है।

गर्भ रक्षा

(लेखक—डाक्टर बलदेव सहाय वैद्य)

(४)

सं०—आप की दया और ईश्वर की कृपा से आनन्द मङ्गल हो रहा है।

गं०—मुझे आप ने किस लिये याद किया है।

सं०—देवी जी इस लिये आप को कष्ट दिया है कि आप के दर्शन हुए कई दिन बीत गये थे दूसरे एक कार्य भी है।

गं०—वह कार्य्य क्या है शीघ्र ही बताओ।

सं०—यह कि छोटी बधू की भगिनी आई है और वह बहुत ही दुखी है।

गं०—क्या हाल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं०—देवी जी दो मास हुए कि लड़की पैदा हुई है आज एक मास से अधिक हुआ कि कभी २ ज्वर हो जाता है कभी २ आंतड़ियों में दर्द हो जाता है। दस्त कच्चे पक्के आते हैं। भूक बिलकुल बंद है पेट अफरा रहता है कोई २ तो पुराना ज्वर बताता है कोई बदहज़मी का ज्वर कहता है कृपा करके देख कर उसका उपाय भी बताइये।

गं०—बहुत अच्छा बुला लो मैं देख लूगीं।

सं०—वह यहां तक तो नहीं आसकती वहीं चलने की कृपा कीजिये दूसरे कमरे में है।

गं०—चलो।

राम कुमारी देवी नमस्ते।

गं०—पुत्री जी नमस्ते कहो क्या हाल है।

रामकुमारी—ऐसे जीवन से तो मौत अच्छी है इस से अधिक क्या बताऊँ।

सं०—पुत्री घबराओ मत जरा अपना हाल सुनाओ तो सही।

राम०—माता जी यह बच्चा २० दिन का था रात्री के समय ज्वर हो गया हकीमजी नें औषधी दी उस से पेट पर अफारा हो गया और जब ही से इसके गले में दर्द है रात को नींद भी नहीं आती है।

गं०—यह तो कोई मुश्किल बात ही नहीं है दो तीन दिन में आराम होनें लगे गा अच्छा यह काम करो इस समय दस मूल का काढ़ा तैयार कर के पिलादो और गले पर एलवा तो० शहद तो० ॥ मिला कर खूब घोटो जब अच्छी तरह घुट जावे तो० १ कपड़े पर लगा कर गले चिप का दो और पीने के लिये पानी कच्चा मत दो पकार एक बरतन में ठंडा करो वह पानी पिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ और फलफंदवे का फल जला कर उस का राख को थोड़ी से शहद के मिला कर और मोटी बत्ती पर लगा कर गर्भाशय पर रक्खे सबेरे जैसा हाल होगा वैसा उपाय किया जावेगा।

सं०—देवी जी नमस्ते।

गं०—नमस्ते सुनाओ क्या हाल है।

सं०— देवी जी ज्वर तो अभी वैसा ही प्रतीत होता है परन्तु गले का दर्द कुछ कम है पेट पर अफरा भी कम रहा है कृपा करके आप ही चल कर देख लीजिये मुझे तो जैसा बताया था वैसा ही निवेदन किया गया है।

गं०—अच्छा।

सं०—पुत्री लीलावती देवी जी आगई हैं।

लीलावती०—देवी नमस्ते।

गं०—नमस्ते आनन्द हो।

लीलावती०—आपकी कृपा होगी तो आनन्द से हो जाऊँगी

गं०— अच्छा रात्री में तुम्हारी कैसी दशा रही।

लीला०—पहले से कुछ अच्छी रही है परन्तु नींद नहीं आई।

गं०—लो इसको बगल में लगाओ तो देखूं कितना ज्वर है।

लीला०—अच्छा किधर से लगाऊं जिधर से यह चमकता है।

गं०—हां हां लो मैं ही लगाय देती हूं अब बगल को दबा लो नीचे न गिरे।

सं०—देवी जी यह क्या चीज है।

गं०—इस का नाम थरमामेटर है।

सं०—इस से बुखार कैसे मालूम होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गं०—जिस कदर ज्वर होगा उतना ही पारा चढ़ जावेगा पुत्री लाओ निकालो वख्त पुरा होगया।

लीला०—देखिये ज्वर है।

गं--ज्वर तो १$\frac{1}{4}$ ही है ईश्वर को मंजूर है तो कल या परसों तक दूर होजावेगा।

सं०—अच्छा तो अब क्या औषधी देनी चाहिये।

गं०—जो उपाय मैं ने कल बताये थे वह ही करो और वह दो पुडिया लो एक इस समय खिलाकर ऊपर से दसमूल का काढ़ा पिलाओ और ऐसेही संध्याको पिलादो और संध्या के समय खबर देना।

सं०—खबर तो अवश्य दूँगी उसमें तो हमारा फायदा है।

गं०—नमस्ते।

सं०—नमस्ते कृष्ण देवी जी को पहुचा जाओ।

कृष्ण०— बहुत अच्छा।

(शेष फिर)

संसार समराग्नि

युरोप में इंग्लैण्ड 'जर्म्मनी' रूस अस्ट्रिया फ्रांस और इटली महाशक्ति हैं। समस्त संसार में इन महाशक्तियों का प्रताप सूर्य्य के प्रकाश के समान है। कोई देश ऐसा नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां उक्त देशों की बनी वस्तु आदि न मिलती हों। केवल रूस को छोड़कर इन देशों को करोड़ों रुपए आमदनी बालकन देशों से व्यापार द्वारा प्राप्त होती है आज शोक के साथ लिखना पड़ता है इन शक्तियों में घोर युद्ध प्रारम्भ होगया।

—=———

सर्विया परिचय

सर्विया के उत्तर और पश्चिम में आस्ट्रिया राज्य है। केवल थोड़ा भाग पश्चिम का थोड़ा मान्टीनिग्रो नामक राज के साथ से सटा हुआ है। पूर्व के आधे से कुछ अधिक भाग में रूमानिया और लग भग आधे से कुछ कम बलगेरियो सटी हुई है। १४५९ से ३४५ वर्ष तक सर्विया रूम के माहतत रह चुका है किन्तु सन् १८७८ ई० की बर्लिया की सन्धि से सर्विया को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई थी। यह स्वाभाविक नियम है दुर्बल सदैव सबल की शरण लिया करते हैं। इस ही के अनुसार सर्विया कभी रूस और कभी आस्ट्रिया को खुश और नाराज करती रही है। सन् १९०८ में बलगेरिया के साथ सर्विया की सन्धि होने पर आस्ट्रिया ने स्वार्थ हानि समझ कर सर्विया की पश्चिम सीमा बास्निया और हर्ज गोविना नामक प्रान्तों को अपने राज्य में कर लिया।

इन दोनों प्रान्तों के सिवाय सर्विया मान्टीनिग्रो नोवी बाजार के संजक और मकदुनिया मिला कर एक बड़ा सर्विया राज्य स्थापित करना चाहती थी। इन सब स्थानों में सर्विया निवासी ही रहते थे। किन्तु इङ्गलैण्ड रूस इटली और फ्रांस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस को लड़ाई से रोका और उस को अपना नुकसान कर पाने को प्रवृत्त किया । इस प्रकार सर्बिया का प्रयत्न सफल न हुआ तब से आस्ट्रियासे सर्बिया जलती है । और रूस इस घटनासे मुर्खीन होने के कारण कहीं आस्ट्रिया की ओर भूमि न छीन लें ।

आस्ट्रिया

आस्ट्रिया राज्य का नाम अस्ट्रिया हङ्गरी है । क्योंकि अस्ट्रिया और हङ्गरी दोनों देश एक सम्राट के राज्य में हैं । हंगरी निवासी प्रजा होकर भी अस्ट्रिया सम्राट में आस्ट्रिया वालों की तरह भक्ति नहीं रखते । ऊपर कहे हुए दो प्रान्तों (बोस्निया और हर्जगोविना) में प्रायः सर्वियन अधिक बसते हैं ।

आस्ट्रियन युद्ध का कारण

सर्विया भारतवर्ष की तरह कृषिप्रधान देश है । किन्तु अब वहां पर कुछ शिल्पका भी कार्य्य होने लगा है । सर्विया अपना खेती का माल सदासे आस्ट्रिया के रास्ते से दुनिया के लोगों में बेचने के लिये माल भेजती थी । क्यों कि बाहर माल भेजने के लिये कोई दूसरा रास्ता नहीं था । बलगेरिया से १९०८ ई० में सन्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनें के पश्चात् एक नवीन मार्ग मिल गया। जिससे अब स- र्विया नए मार्ग से अत्यन्त सुगमता से बाहर माल भेजती है जिस से आस्ट्रिया की आमदनी को बहुत हानि हुई।

आस्ट्रिया की नाराजी का एक कारण यह भी है कि सर्विया अपनें पास के रहने वाले सर्वियनों को अपनें राज्य में डाल कर बड़ा सर्विया राज्य स्थापित करना चाहते है।

उपरोक्त कारणों से १९०८में आस्ट्रिया नें बोस्निया और गोविना को अपनें राज्य में मिला लिया ! इस सेरूस का प्रेम सर्विया पर अधिक होगया। बलकन युद्ध में सर्विया अत्यन्त वीरता से लड़ी। इस के फल में सर्विया को रूम का एक बड़ा हिस्सा अपनें में मिलानें में सफल हुई। यह उन्नति आस्ट्रिया को सह न हुई। जुलाई १९१४ के प्रारंभ में आस्ट्रिया युराज बोस्निया की शहर करते हुए उसी प्रान्त के सराजीवो में पत्नी सहित मारें गए। मारने वाला वास्नया जाति का एक सर्वियन निकला उसका सहायक भी एक सरब ही पाया गया। इस से आस्ट्रिया महाराज को निश्चित हुआ कि साहजिस सर्विया में हुई और वहां ही से बम आया।

प्रथम ही सर्विया के वैभव की उन्नति को आस्ट्रिया नहीं देख सकता था दूसरे युवराज़ के मारे जानें का कारण हो गया आस्ट्रियन बड़े सज्जन और उदार पूरुष थे। इन से आस्ट्रिया निवासियों को पुर्ण आशा थी कि इनकी साम्राज्य काल में अवश्य स्व- तंत्रता प्राप्त हो गी। ऐसे सर्वजन प्रिय युराज के मारे जानें के कारण प्रजा के हृदय में भी क्रोध उतपन्न होगया।

———————

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न नौ मन तैल होगा नराधा नाचेंगी ॥

युवराजकी हत्या पर अस्ट्रिया के सम्राट उनके मन्त्री वर्ग तथा प्रजाके विज्ञजन सबने मिलकर एक बड़ा ही कड़ा पत्र सर्वि-यका-सरकार को भेजा अपने राज्यके अस्ट्रिया-विरोधी षड्यन्त्रपर घृणा और उसके लिये हार्दिका खेद भी प्रकट करे जो जो अप राधी निकलें उनको दण्ड दिया जाय स्कूलों में जो अस्ट्रिया विरोधी शिक्षा दी जाती है, उसको जड़ खोद डाले अस्ट्रिया-सरकारकी ओरसे सर्वियाके जिन जिन अफसरोंके नाम लिख कर भेजे जायें उनको बर्खास्त करे, सर्वियाकी अस्ट्रिया-विरोधी मण्डलियों को दबाने में अस्ट्रिया अफसरोंसे मिलकर काम करें। और सराजेवोमें युवराजकी हत्या होनेके अपराधके साथ जो जो लोग मिले हुए हैं। उनका विचार अस्ट्रियाके प्रतिनिधियों के साथ मिलकर करे। इसके उपरान्त खरीतेमें यह आदेश भी है, कि सर्वियाकी सेनाके एक मेजर और अन्य सरकारी कर्म चारियों पकड़ कर अस्ट्रिया के हवाले किया जाय। ये दोनाम ही आदमी सराजेवों वाले अपराध का अनुसन्धान कर नें पर उस में शराकत रखने वाले समझे गये हैं। खरीते में यह भी कहा गया कि अस्ट्रिया के हुक्मों को मानते हो या नहीं इस का जबाव शनि वार २५ जुलाई तक जरूर दो इस खरीते का तार पृथ्वी भर में जहां कहीं गया वहीं लोग इस की कड़ाई पर घबरा गऐ।

अस्ट्रिया के इस अपमान जनक खरिते को सर्विया नें स्वी-कार न किया क्यों कि इस का स्वीकार करना सर्विया को परतं त्रता की बेड़ियों में पड़नें के बराबर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्विया की उन्नति से जलनें वाले अस्ट्रिया को पहिले अनुमान होगा कि जीवित सर्विया इस कड़े खरीते को स्वीकार कर परतंत्रता की बेड़ी में कदापि पड़ना स्वीकार न करेगी और युद्ध होगा इस लिये कहा जाता है न नौ मन तैल होगा न राधा नाचेगी।

ललकार से हल।

अस्ट्रिया के नादिरशाही खरीतेके भेजे जाते ही यूरोप भर में ऐसी हलहल मच गयी थी। जैसी पहले कभी नहीं देखी गयी थी। बलकान युद्ध के पहले भी एक बार अस्त्र शस्त्र से नख शिख सजे हुए युरोप में युद्ध का दावानल भड़क उठने का भय उठ खड़ा हुआ था। और सब बलवानों नें बड़ी ही धीरता के साथ लड़ाई में कूद पड़ने की विपद को समझने में समर्थ होनें पर उस से बच जानें की सुबुद्धि आई थी। किन्तु प्रथम जोश के समय उस अवसर पर इतनी गहरी हल चल नहीं मची थी। युरोप में तो हल चल मची ही है जिसका प्रभाव सुदूर हिन्दुस्थान और अमेरिका में भी भरपूर प्रत्यक्ष होनें लगा है। बङ्कों को लेन देन के विषय में सावधान चेत होना पड़ा है। रुपये के बाज़ार में खिंचाव खींच होने लगी है। अब हम युरोप के भिन्न भिन्न देशों की हल चल के समाचार नीचे प्रकाशित करते हैं।

सर्विया

मन्त्री सभा बाजार बैठ रही है। युवराज न मँत्रियों के विरोधी दल से कहा है कि इस समय कोई विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिमत प्रकाशित न किये बिना गवर्नमेन्ट की राय से सहमत होना आवश्यक है। राज्य का धन भण्डार राज धानी से हटा कर दक्षिण प्रान्त में भेज दिया गया क्योंकि राजधानी बलगेरिया अस्ट्रिया राज्य की सरहद के बहुत ही निकट है। आज अस्ट्रिया का खरीता मिलते ही यह सब सावधानियां सोची गई। सर्विया के अखबार बार बार विशेष अङ्क निकालने लगे और लोग ठौर २ इकट्ठे हो कर उन को पढ़ने लगे। और मंत्री प्रभृति सब लोग और राजा राज धानी को खाली कर चले गये।

पार्लिमेण्ट राज्यके दक्षिण प्रान्त के नाश नामके स्थान में बुलाई गई है। पार्लि मेण्ट का नाम कुप्सालन है। आज आस्ट्रिया के खरिते का उत्तर दिया गया है। सर्विया ने अस्ट्रिया की और सब बातें मान लीं लेकिन षडयन्त्र की खोज अस्ट्रिया के प्रतिनि धियों को शरीक करनें से इन्कार किया। अपनें अफसरों को कार्य च्युत करनें के विषय में लिखा कि अस्ट्रिया के कहनें से नहीं न्यायानुकुल विचार से यदि वे दोषी ठहरे, यदि मालूम हो, कि उन्होंने अस्ट्रियाकी राज्यव्यवस्थाको बिगाड़नेका कोई काम किया है, तो वे कर्यच्युत किये जायेंगे।

सर्विया बड़ी भारी सेना एकत्र की गई है। सर्विया के आकाशयान अस्टिया के सीमाओं पर चक्कर लगा रहे हैं पड़ोस के मारटीनिग्रो राज्य ने अपनी कई पल्टनों की ब्रिगेड सर्विया की मदद में भेजा है। उस के साथ तोपें भी हैं।

सहायक

एक युवराज की हत्या पर बिना अपराध प्रजा को दुःख न देनें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली निर्बल सर्विया को न्याय परायण हमारी गवर्नमन्टने सत्य पर दृढ़ रहने के लिये सहायता देने का प्रण किया। इंगलैण्ड के साथ ही फ्रांस और रूस ने भी सहायता देनी आरम्भ की है क्यों उक्त महा शक्तियों से अस्ट्रिया का यह अत्याचार न देखा गया। इस समय अस्ट्रिया का सहायक जुल्मी जर्म्मन ही हुआ है

संसार की सैन्य शक्ति।

ऐसी दशा में जबकि युरोप में भयंकर युद्ध हो रहा है तब युरोप और अमेरिका तथा जापानके पूरे सैन्यबलसे परिचित होना आवश्यक है। नीचे प्रत्येक देशकी स्थल सेना, जलसेना और आकाशी सेनाका लेखा दिया जाता है:—

स्थल सेना।

नाम देश	सेना	तोपें
अस्ट्रिया	२५०००००	२०००
जर्म्मनी	५५०००००	४०००
इटाली	२००००००	२२००
रूस	४५०००००	३५००
फ्रांस	४००००००	३०००
इङ्गलैण्ड	३८००००	६४०
हिन्दुस्थान	१९५०००	
बेल्जियम	३०००००	२०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालैण्ड	....	....	१७५०००	....	१२०
डेनमार्क	...	...	१०००००	... ...	०८
सर्विया	...	...	३०००००	... ...	४००
बलगारिया	...	...	५५००००	... ...	८००
रूमानिया	...	...	७०००००	... ...	४००
यूनान	...	...	२००००	... ...	२००
माण्टीनिग्रो	...	...	३००००	... ...	३०
टर्की	...	...	५०००००	... ...	६००
स्वीडन	...	...	६००००	... ...	५००
स्वीजरलैण्ड	...	...	३०००००	... ...	४५०
अमेरिका युक्तराज्य	...	...	०५०००	... ...	१४४
जापान	...	...	२००००००	... ...	२०००

जल सेना ।

	इङ्गलैण्ड	जर्मनी	फ्रांस	अमेरिका युक्तराज्य	आस्ट्रिया	इटाली	जापान
बड़े जङ्गी जहाज	७२	३९	३२	३६	१७	२१	१९
छोटेजङ्गी जहाज	९३	४३	२१	१७	७	१३	२१
ध्वंसकारी जहाज	१६२	११६	७४	४६	३६	४०	४१
तारपेडो नावें	३६	०	९५	०	१२	६८	११
जलमग्न नावें	९१	४०	९४	४७	१४	२८	१५
जहाजी सेना	२१८९,००	१५२८९८	१३३००	६२५५०८	३२०००	७७०००	१०१०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाशी सेना ।

नामदेश	जल और स्थलके एरोप्लेन	हवाई जहाज	व्योमयात्री
इङ्गलैण्ड	१३०	५	२३[illegible]
फ्रांस	७५४	२१	५[illegible]
रूस	३८९	८	[illegible]
जर्मनी	७५०	२१	२०० चगु[illegible]
आस्ट्रिया	१५९	६	[illegible]
इटाली	२००	५	१२[illegible]

दोनों पक्ष ।

महायुद्ध में इङ्गलैंड, फ्रांस, रूस और सर्वियाएकओर हैं, और जर्मनी तथा आस्ट्रिया दूसरी ओर। इन दोनों पक्षोंके सैन्यबलका मुकाबला यह है:—

पहिला पक्ष ।

	सेना	तोप	जङ्गीजहाज
१—इङ्गलेण्ड	८लाख	६४०	४५४
२—फ्रांस	४० लाख	३०००	३०६
३—रूस	४५ लाख	३५००	२१६
४—सर्विया	३लाख	४००	
४—कुल जोड़	९६ लाख	७५४०	९७६

दूसरा पक्ष ।

१—जर्मनी	५५ लाख	४०००	२३८
२—आस्ट्रिया	२५लाख	२०००	८६
कुल जोड़	८०लाख	६०००	३२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गरेजी और जर्म्मन।

इङ्गलैण्ड और जर्म्मनी के बीच में उत्तरिय समुद्र है। वहाँ इस समय दोनों के जङ्गी जहाजी बड़े घोर संग्राम कर रहे हैं दोनों के उत्तरीय समुद्र वाले जहाजों के नाम और संख्या यह हैं:—

बड़े जहाज

अङ्गरेजी

जल सेना पति का जहाज आयर्न ड्यूक

पहला दल।

१—मार्लबरो
२—सेण्ट विंसेण्ट
३—कालूसस
४—हर्क्यूलस
५—नेप्च्युन
६—वाङ्गार्ड
७—कालिङ्गउड
८—सुर्ब

दूसरा दल

१—किङ्ग जार्ज पञ्चम
२—ऑरियन
३—एजाक्स
४—आईरन्स
५—सेण्टूरियन
६—काङ्करर
७—मानर्क

जर्मन

जल—सेना पति का जहाज फ्रेडि डर ग्रोस

पहला दल।

१—ओस्ट्फ्रीसलैण्ड
२—थुरिन्जन
३—हलगोलैण्ड
४—ओल्डेनबर्ग
५—नसाऊ
६—रीनलैण्ड
७—वोजेन
८वेस्टफालेन

दूसरा दल।

१.. प्रश्नेन
२... श्लोस्विग
३... पोम्मर्न
४... हैनोवर
५.. हेस्हेन
६—ड्वेसियन
७—लाथिंजेन
८—श्लेशलेण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८—थण्डरर

तीसरा दल

१—किङ्ग एडवर्ड सप्तम

२—हाइबर्निया

३—अफ्रीका

४—ब्रिटानिया

५—कामनवेल्थ

६—डोमिनियन

७—हिन्दुस्थान

जीलेण्डिया

चौथा दल

१—डुडनाट

२—टिमिरेर

३—बेलरोफन

४—अजिंकून

तीसरा दल ।

१—कैसर

२—कैसरन

३—कोनिग अलबर्ट

४—ल्युटपोल्ड

चौथा दल ।

१—विटेल्स बाख

२—ब्रांसवग

३—एल्ज सास

४—जहरिंजन

अङ्गरेजी जहाज़

पहला दल ।

१—लायन

२—क्वीन मेरी

६—न्यूलेण्ड

४—प्रिंसेस रायल

दूसरा दल ।

२—शेन्न

२—आकिलेस

३—काच रेन

४—नेटाल

जर्मन जहाज

पहला दल ।

१—सडलिज

२—गोबिन

६—वानडटान

४—मोल्के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा दल।

१—अरिटुम
२—अर्गाइन
डेवन शायर
नाक्सवर्ग

चौथा दल

१—सफाक
२—र्विक
३—ऋसक्स
४—लङ्का टर
५—बिस्टल

श्रोत्रिय दुर्गा देवी

बाला विवाह नाटक

(गताङ्क से आगे)

(४)

उस वर पर बखेर इत्यादि की फजूल खर्ची को देख मेरी दोनो आखों में आंसू आगये। कि हाय इस अबोध बालक को यह भी नहीं मालुम कि मेरी सारी आयु का नाश होरहा है। हा सम्बन्धी जन बर फूक तमासा देख रहे हैं। मैंने एक मनुष्य से पूछा यह बारात किस मूर्ख के यहां आई है। मुझे उस मनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दय का उत्तर सुनकर बहुत ही दुःख और आश्चर्य हुवा क्योंकि मुझे मालुम हुवा कि वह बारात आपके बड़े भाई के यहां आई है ।

क्या मित्र आपनें अपने भाई को इस विषय में कुछ नहीं समझाया आप से सज्जन व देशहितैषी भाई होने पर भी यह कुरीति दूर नहो इससे ज्यादा दुःख की कौन सी बात है । इसी सन्देह ने मुझे आप के यहां इस समय उपस्थित होने को उत्सुक किया है ।

आर्य्यबन्धु—(आखों में आंसूभर) क्या कहूँ मित्र मैं इस दुखसे ही दुःखी इस समय यहां एकान्त में बैठा हूँ । मित्र अब मैं इस योग्य नहीं कि अपने को देशहितैषी के नाम से पुकारे जाने के दुख को सहन करसकूँ । मित्र अब मैं इष्ट मित्रों में क्या मुंह लेकर बैठूँगा और उनके पूछने पर क्या उत्तर देकर सबोंको सन्तोषित करूँगा ।

मित्र इस विवाह को रोकने के निमित्त मैंने कोई बात नही उठा छोड़ी यहां तक कि भाई साहब नें मुझे अपने नौकरों से दुर्बचन कहलाकर मुझे घर से चलेजाने को कहा स्वयं मुझे मारने को तैय्यार हो गये । भाभी ने मुझे बहुत कठोर वचन कहे किन्तु मैं फिर भी इस विवाह को रोकने का उपाय करता रहा और अब भी तैय्यार हूं । किन्तु हार कर अब यही कहता हूं कि—मुर्ख हृदय नें चेत यदपि गुरू मिले बिरंचीसम ॥

आर्य्यहितैषी—मित्र क्यों इतना दुख मानते हो क्योंकि यत्न करना मनुष्य का काम है और सफलता परमात्माके हाथ है। आप अपना कार्य्य कर चुके । सफलता न हुई इस में आप का क्या वश है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य्यबन्धु—हां भाई ठीक कहते हो किन्तु मुझ से बेटी चावली के जीवन का दुःख नहीं देखा जाता। हाय? न जानें कब हिन्दू जाति से यह कुरीतियां दूर होंगी।

आर्य्य हितैषी—अच्छा इन बातों को जानें दो चलो संध्या करें।

(दोनों जाते हैं)

षष्ट परिच्छेद

(स्थान विवाह मंडप मोघूराम आदि बैठे हैं और पं० संस्कार करवा रहे हैं)

नायन—लाला जी चावली नहीं मानती घर में जानें को ज़िद कर रही है।

मोघूराम(जल्दी से चावली को पकड़कर)बेटी ज़रा ठहर जा वह देख लल्लू (चावली का भाई)तेरे खानें को खील लेकर खड़ा है पहले खील खाले तब जाना ;

बर—(जल्दी से) क्या मुझे भी खील मिलेगी।

माघू०-(प्रसन्नहोकर)हां हां तुम्हारे और चावली के वास्ते ही तो यह सब खील हैं।

चावली—अच्छा जल्दी मुझे खील देदो मैं मा के पास जाऊँगी चेयसावर को और नायन कन्या को पकड़ कर भावरी फिररहें हैं और फिरखील लल्लूसे कन्याके हाथमें दिलवाकर अग्नि में डलवाना चाहतें हैं। किन्तु कन्या खील अग्नि में डालना नहीं चाहती दोचार दानें खील जमीन से उठा कर बर खानें लगता है। कन्या बर को मारना चाहती है और वहीं बैठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस समय भारत वर्ष में स्वार्थी मिट्टी के तैल को रंग कर सुगन्धी गेर कर चटकीले २ विज्ञापनों द्वारा देशका धन लूट रहें हैं। मिट्टी के तैल दीमाग़ के लिये महाहानि कारक हैं नजला पैदा करते हैं। जिस से बाल सफेद होजाते हैं और नाना प्रकार के शिरो रोग उत्पन्न होते हैं। इस लिये बड़ी सावधानी से तैल खरीदनें चाहियें।

सिर दर्द की क्यों तकलीफ उठाते हो

हिमाद्रि तैल

यह तैल शिर सम्बन्धि रोगों के लिये कई वैद्यों की सम्मति द्वारा तैयार कराया है। इसके लगाने से शिरशूल [सिरदर्द] मस्तक में भारीपन रहना धूप में चलने या पढने लिखने से चक्कर आना। बुरे स्वप्न दिखना, नींद कम आना। दिमाग़ की दुर्बलता नेत्रों के सामने अंधेरा होना, शिर में खुश्की और खुजली बालोंका सफेद होना या उखड़ २ कर गिरना चित्त की चंचलता आदि के लिये अद्वितीय तैल है।

ऐसा कौन पुरुष होगा जो इस के अपूर्व गुणों पर मोहित न होजाय। इसकी अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है एक बार अजमाइश कर के देखिये मूल्य प्रति शीशी १)

मिलने का पता----

मैनेजर दीनबन्धु प्रेस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्तेके नामी डाक्तर एस, के, बर्म्मनकी ३० वर्षकी

प्रसिद्ध दवायों का विज्ञापन।

कफ वो खांसी की दवा

(१) पी हो खांसी को दबाती है।

कफ वो खांसी की दवा।

(२)२ — ३ खुराक पीनेसे कफ निकाल कर आराम करती है

कफ वो खांसी की दवा।

(३)दवा बच्चे से बुढ़े तक समान गुण करती है।

मोल बड़ी शीशी का १) छोटी ॥)

डा: म:।=) और ।-) आने।

दाद की मलहम।

(१) एक बार के लगाने से खुजली मिटती है।

दाद का मलहम

(२) दो चार बार लगाने से एक दम आराम होती हैं।

दाद का मलहम।

लाखों आदमी अजमा चुके हैं आप क्यों बाकी हैं

मोल चार आने डिबिया

डा:म:१ से ६ डिबिया तक।-)

असली बुखार वो तिल्ली की दवा

(१) इन के दो तीन हीखुराक बुखार का आना बन्द होता है।

असली बुखार वो तिल्लीकी दवा

यह तिल्ली को जल्द गला देती है।

असली बुखार वो तिल्ली की दवा

(३) यह खून को गाढ़ा करती है और उसकी खराबी को मिटाता है

मोल बड़ी शीशी का ॥।=) छोटी ॥)

डा: म' ।=) और ।-) आने

पुरानेंमलेरियाबुखारकी गोलियां

(१)इन गोलियों में कुइनैन नहीं

पुरानेंमलेरियाबुखारकी गोलियां

(२)जब हाथ पैरों में सुजन आ जाती है और आराम होनें की आस नहीं रहती है ऐसे हालत में भी यह गोलियाँ गुण करती हैं।

पुरानेंमलेरियाबुखार कीगोलियां

इन गोलियों का पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मंगा कर पढ़िये

मोल—२४ गोलियों की डिबिया ॥)

डा:म' १ से ६ डिबिया तक ।-)

दवा सब जगह दुकानदार और हमारे एजेन्टों के पास मिलेंगी।

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजि० नं० ६३३ ए

निम्न लिखित मुफ्त

अमृत

'अमृत:-इस नाम की एक पुस्तक उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, गुरुमुखी, गुजराती या मराठी जिस भाषा की चाहें मुफ्त भेजी जावेगी, इस में सर्व रोगहन औषध'

'अमृतधारा का'

पूरा २ वर्णन है। 'अमृतधारा' श्री पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की जगत भर में एक नई ईजाद है, क्योंकि यह एक ही औषधि प्रायः सर्व रोगों को हितकर है। कीमत बड़ी शीशी अमृतधारा २॥) आधी शीशी १।) और नमूना की शीशी छोटी का ॥)

पुरुषों के विशेष रोग

आज कल लोगों में व्यसन बहुत बढ़ जाने से विशेष रोग बहुत ही बढ़ गये हैं, इस पुस्तक के अन्दर उन रोगों के कारण लक्षण तथा चिकित्सा भली प्रकार से वर्णन की, जिस को पढ़कर फिर से आरोग्य तथा बलवान हो सकते हैं यह पुस्तक भी मुफ्त भेजी जाती है। हिन्दी उर्दू मराठी गुजराती में मिल सकती है।

"हिन्दी के देशोपकारक,,

अपनी किस्म का भारतवर्ष में पहिला मासिक वैद्यक पत्र है जो एक बार देखता है, यदि उसको जरा भी आयुर्वेद से प्रेम होता है। इस पर मोहित हो जाता है। नमूना मुफ्त मिलता है।

पत्र तथा तार का पता:--अमृतधारा (ब्रांच) लाहौर।

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने दीनबन्धु प्रेस बिजनौर में छापा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म नमः शिवाय ॥

अबलाहितकारक

* सं॰ १९७७

श्रोत्रिय शङ्करलाल

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं,
गतासुमेतमुप शेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं,
पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥

(ऋक्) मंत्र ३८

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥

(पाराशरः)

सम्पादक व प्रकाशक—

श्रोत्रिय जगदीशदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रु० में ६०० ए की १८ पुस्तकें ॥

१ नीति सौन्दर्य — ११ भारत के आदर्श बालक
२ माता पिता का कर्त्तव्य — १२ वनिता बन्धु
३ बाबा का विवाह
४ कान्यकुब्ज अबला विलाप — १३ अबला सुधार भजन दर्शन
५ लक्ष्मी उपन्यास — १४ ... भाजन वाटिका
जायगी, इस में सर्व रोगघ्न औषध' ... विधवा विलाप
'अमृतधारा का' ... हितकारक के
पूरा २ वर्णन है। 'अमृतधारा' ...
९ कुमार रक्षा ... ग्राहकों को ॥।) में दी जायगी
१० मोहब्बत का फंदा

मिलने का पता—मैनेजर दीन बन्धु प्रेस बिजनौर

अबला हितकारक के नियम

[१] अबला हितकारक प्रति मास प्रकाशित होता है।

[२] डाक व्ययसहित इस का अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है और स्त्रियों से ॥=) मात्र है

[३] नमूने की कापी बिना मूल्य भेजी जाती है

[४] ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता साफ २ देवनागरी वा अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

[५] विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा लेना चाहिये।

[६] पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड व टिकिट बिना नहीं दिया जायगा।

[७] लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया, तथा सब प्रकार के अबला हितकारक सम्बन्धी पत्र ... पर आना चाहिये।

मैनेजर——

अबला हितकारक—कार्यालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओम् नमः शिवाय *

श्रीमिश्र शङ्करलाल शर्म्मणा संस्थापित ।

अबलाहितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रिया ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

एकादश वर्ष | भाद्रपद–आश्विन सम्वत् १९७१ | अङ्क ६–७

शोक संवाद

(आठ कालक–मालिन्द पाद)

[गताङ्क से आगे]

(२)

[illegible]न करे म नंज पल को । अपना यरहा खल–मण्डल को ॥
[illegible]न कलङ्क–[illegible]षण के । अनुराग–[illegible] गायक–ग[illegible] के ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दग-दीपक देख पतङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ ९ ॥

कुल भापण को अनखाय सुने । पर शब्द-समूह सुनाय सुने ॥
जिन को गुरु मान मनाय रहा । उन की धज्ज आप बनाय रहा ॥
पर श्यामल से न सुरङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ १० ॥

अनरीति कटा कट काट रही । पशु-पद्धति शोणित चाट रही ॥
पल खाय अपव्यय खेल रहा । ऋण-बूचड़ खाल उधेल रहा ॥
ससके सब घायल अङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ ११ ॥

बिन शक्ति समृद्धि-सुधा न रही। अधिकार गया वसुधा न रही॥
दल साहस हीन हताश हुआ । कुछ भी न रहा सब नाश हुआ॥
रजनीश प्रताप-पतङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ १२ ।

चिर सञ्चित वैभव नष्ट हुआ। उर-दाहक-दारुण-कष्ट हुआ॥
सुख वास न भोग-विलास नहीं। उपवास करे धन पास नहीं॥
बिगड़ा सब ढङ्ग कुढङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ १३ ॥

सब ठौर बड़े व्यवहार नहीं । फिर शिल्प-कला पर प्यार नहीं॥
कुछ दीन किसान कमाय रहे । हलका हलका फल पाय रहे॥
उन को कर—भार भुजङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥ १४ ॥

कस पेट अकिञ्चन सोये रहे । बिन भोजन बालक रोय रहे॥
चिथड़े तक भी न रहे तन पै ! धिक् धूलि पड़े इस जीवन पै ॥
अवलोक अमङ्गल ढङ्ग हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥१५॥

मत-भेद भयानक-पाप रहा । बिन प्रेम न मेल-मिलाप रहा ॥
अभिमान अधोमुख ठेल रहा । अधमाधम ढोंग ढकेल रहा ॥
सुख-जीवन का मग तङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥१६॥

मत,पन्थ असंख्य असार बने । गुरु लोलुप,लम्पट,लबार बने ॥
शठ सिद्ध कुधी कवि राज-बने । अनमेल अनेक समाज बने ॥
इस हुल्लड़ का हुरदङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥१७॥

सरके विधि ! वेद रसातल को । सिर धार अनर्थ-महाचल को ।
अब दर्शन-रूप न दर्शन है । नव-तंत्र प्रभात-निदर्शन है ॥
बकवाद विविध-प्रसङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥१८॥

अब सिद्धमनोरथ-सिद्ध नहीं । मुनि-मुक्त-मनीषि-प्रसिद्ध नहीं
अविकल्प अनुष्ठित-योग नहीं । विधि-मूलक-मंत्र-प्रयोग नहीं ॥
फल संयम का शश-शृङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥१९॥

अवधेश-धनुर्धर-राम नहीं । ब्रज=नायक श्रीघनश्याम नहीं ।
अब कौन पुकार सुने इस की । परमाकुल गैल गहै किस की ॥
तड़पै मृग=तोय=तरङ्ग हुआ ।
बस भारत का रस भङ्ग हुआ ॥२०॥

(अनुरागरत्न से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

संसार में वैज्ञानिकों को बिजली एक बड़ी एक विचित्र शक्ति प्राप्त हुई है। जेष्ठ मास की प्रचण्ड गर्मी में इसके द्वारा शीतल पवन का आनन्द मिलता है। इस के द्वारा लाखों कोश से बात चीत करते हैं। इस समय हजारों कोश युरोप के महायुद्ध के समाचार दिनके दिन इसके द्वाराही मालूम होते हैं। युरोप के वैज्ञानिक इस से पृथिवी में नवीन उर्वराशक्ति उत्पन्न कर के लाभ उठाते हैं सारांश यह है संसार के इस विद्युच्छक्ति द्वारा अनेक आश्चर्य जनक महान् कार्य शीघ्र और सुगमता से होते हैं। किन्तु बिजली के कारखाने खोलने में बहुत रुपया व्यय होता है क्योंकि इस में बहुमूल्य यन्त्रों की आवश्यकता होती है। अब वैज्ञानिक मेलर ब्लाकों ने एक यंत्र वायु मंडल से बिजली निकालने को बनाया है। इस के द्वारा बहुत सस्ती बिजली मिलेगी। इस यन्त्र की परीक्षा स्पेन नरेश के प्रतिनिधि अलफांजो आदि मान्य पुरुषों के सामने हुई। और परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

पाठकों को स्मरण होगा कि सन् १९१२ मई जून के अंक में पण्डित ब्रह्मदेव जी लिखित विधवोद्वाह निषेध का खंडन छपना आरम्भ हुआ था, किन्तु पण्डित जी ने उसका कुछ उत्तर नहीं दिया अतः आगे खंडन न छपा। हाल में मालूम हुआ है पण्डित जी ने अपनी उक्त पुस्तक इटावा आर्य्य समाज के मंत्री पर खंडन को भेजी है हम पंडित जी से निवेदन करते हैं। कि प्रथम अबला हित कारक के खंडन का उत्तर देकर ही अन्यत्र पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजें क्योंकि प्रथम शास्त्र विधवा विवाह प्र० सभा जो कि किन्तु सनातनधर्मी वैकुंठवासी पूज्य श्रोत्रिय शंकरलाल जी द्वारा संस्थापित है उससे शास्त्रार्थ करके निपटलें तब पीछे अन्य संप्रदाय आर्य्य समाज आदि से बातें करें। उक्त स्वर्गीय श्रोत्रिय जी के काशी में बार २ ललकारनें पर १०००० रु० तक पारितोषिक देनें पर भी किसी पण्डित को हिम्मत न हुई। तब पण्डित जी का अब प्रलाप करना वृथा है। और यदि अब इच्छा है तब हम तैयार हैं।

———

इस समय हमारे सामने जून १९१४ की निगमागम चन्द्रिका "जो कि भारतधर्म महामंडल की मुख्य पत्रिका है" है। कार्य्य कुशलता शीर्षक में लिखा है वक्ता चाहे सन्यासी हों चाहे गृहस्थ वे जबतक स्वयं चरित्रवान् न होंगे तबतक उन के वचनों का स्थायी फल न होगा। शोक के साथ लिखा जाता है हमारे सनातनधर्म की एक मात्र संस्था भारतधर्म महामंडल है। उस के प्रधान परिचालक यज्ञेश्वर मुकर्जी जिनको कि ज्ञानानन्द कहा जाता है क्या चरित्रवान् पुरुष है जिनका मंडल इतना मान करता है जो ऐसी बड़ी संस्था का प्रधान परिचालक बना दिया। शोक है सनातनधर्म पताका जो कि विधवा विवाह के समय घोर कलियुग कह कर आकाश पाताल एक कर देता है वह विधवा के साथ एक शैय्या पर शयन करनें वाले अपनें को अवतार कहनें वाले ऐसे पुरुष को जिसनें डब्बे में बन्द गोमांस बेचा हो। दूकान में टोटा आनें पर कर्ज़दारों का रुपया न देकर सन्यासी वस्त्र धारण करें हों महा मंडलके अधिष्ठाता होनें पर मौन धारण करें बैठा है क्या पताका का कर्त्तव्य केवल उन सुधार कार्य्यों का खंडन करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र है जिन से जाति का सुधार और उन्नति हो। इस विषय में यहां अधिक नहीं लिखा गया। भविष्य में महात्मा शीर्षक में ज्ञानानन्दजी का हाल लिखेंगे।

— — —

किसी कवि ने ठीक कहा है "भवती ईश्वरेच्छायाममृतं विषवत्" अर्थात् ईश्वर की इच्छा से अमृत विष होजाता है। ठीक यह दशा इस समय भारत वर्षकी है क्योंकि जो युक्तियां युरोप में व्यापारोन्नति के लिये अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हो चुकी हैं और जिन युक्तियों से युरोप स्वर्ग तुल्य होगया शोक वही युक्तियां भारत के लिये विष का काम कर रहीं है। उदाहरण के लिये पाठकों के दिग्दर्शनार्थ विज्ञापन के विषय में यहां कुछ लिखते हैं। विज्ञापनों द्वारा ही युरोप में विज्ञापन और व्यापार की उन्नति हुई। क्योकि कारखानोंके मालिकोंने वैज्ञानिकों को पुष्कल पारितोषिक दे दे कर उन के उत्साह को बढ़ाया जिस से सर्वदा नवीन आविस्कार होते जाते हैं जिस से योरोप के व्यापार की आश्चर्यजनक उन्नति हुई।

भारत में भी विज्ञापनों के द्वारा व्यापारो उन्नति का अंकुर जमता जाता है किन्तु शोक है यहां झूटें २ सार्टीफिकेट झूटी प्रसंशाओं के कारण लोगों का विश्वास विज्ञापनिक औषधि आदियों से हटता जाता है। इस समय हमारे सामने सम्वत् १९३९ का सारस्वत का सप्तम अङ्क है इस के सम्पादकीय स्तम्भ में लिखा है हाल में हमें भी अलीगढ़ के एक विज्ञापनी वैद्य पं० रामचन्द्र जी की लीला विदित हुई है। आप अपने को गवर्नमैन्ट परीक्षा पास (कौन परिक्षा) वैद्य शास्त्री (अप्रकाशित) गृहस्थचर्य्या चिकित्सा सर्वस्व (और सरकार द्वारा नष्ट कराई)भारत नर रत्न चरित वली आदि ग्रन्थों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचयिता (वैद्य गुरुमुख अपठित आयुर्वेद विद्या विशारद आदि प्रभाव शाली उपाधियों से विभूषित प्रकाशित करते हैं आपने सूचीपत्र में अनेक प्रशंसा पत्रों को प्रकाशित करते हुए हमारे नाम का भी झूठा पत्र प्रकाशित किया है। जो नीचे लिखे अनुसार हैं।

श्रीमान् पं० ज्योतिः स्वरूप जी सहभावज्ञ सम्पादक निगमा गम चन्द्रिका बनारस—महादेय: आपका दाद उड़ाने का साबुन दद्रुनाशक" यथार्थ में दाद खोनें की उत्तम (फैशनेबिल) तत्काल गुण कारी दवा है। इस की भारत वर्ष में कदर होना चाहिये।

इस प्रकार इस समय अनेके झूठे प्रशंसा पत्र और प्रशंसाएं छाप कर भोली पब्लिक ठगी जारही है। इस समय विद्वान वैद्यों की गुणाकारी औषधि और उत्तम वस्तुए कहां पर मिलती हैं इस का पता लगना अत्यन्त कठिन होगया है। यह ही कारण है अब विज्ञापन वालों को लाभ कम होता जाता है। औषधियां बहुत सावधानी के साथ बाहर से मंगानी चाहिये।

—*=*—

युरोप का युद्ध युरोप को ही नहीं बल्कि समस्त भूमंडल को कपांने वाला या यह कहो संसार का युगान्तर करने वाला है। इस में संसार की लगभग समस्त महाशक्तियां लड़रही हैं इस युद्ध में ५०००००० पौंड नित्य का अकेले जर्मन का खर्च है। एक पौंड पन्द्रह रुपए का होता है। इस से पाठक पता लगा सकेंगे समस्त युद्ध का कितना व्यय होगा। इस युद्ध में धन और जन दोनो का धुंआ होरहाहै। नित्य जर्मन का पराजित नगरों पर अत्याचार पढ़ २ कर हृदय करुणाय मान होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे समय दयालु सरकार की सहायता करनी चाहिये । और सरकार को भी उचित है कि वह हमको हत्यार देकर अपनी दया प्रकट करे। जिससे हम सरकार की अड़े समय सहायता और आत्मा रक्षा करसकें

—❋++❋—

दीर्घ दृष्टि से हिन्दु जाति की दुर्दशा देख कर महा दुख होता है । दुर्भाग्य वश जैसा अन्धकार इस जाति में दिखाई देता है । ऐसा महा अन्धकार या दुर्बुद्धि किसी भी जाति या देश में नहीं दिखाई देती । क्योंकि जिस कार्य्य को हम महा पाप समझते हैं उस को ही नित्य करते जाते हैं । हमें हाल में बैल गाड़ी के रास्ते से कुछ दूर जाने का अवसर मिला । गाड़ी वाला मुसलमान था । एक कस्बे के समीप जलाशय पर जहां पर कुछ झाड़ियां और कहीं २ मिट्टी के ढेर थे । और उन पर छोटी २ झंडी लग रहीं थीं वहां थोड़ासा मेला था । मैंने तांगे से उतर कर एक आदमीसे पूछा यह क्या है । उसने उत्तर दिया यह लाल खोड़ों माई है प्रश्न करने पर कहा यहां लाल खोड़ों माई की पूजा होती है और चढ़ावा कस्बे का कसाई लेजाता है । यह उत्तर सुन दुखी होकर चल दिया कि हाय हिन्दु जाति कौन तेरी पूर्व महत्ता का विश्वास करेगा शोक जो धर्म संसार में सबसे पहला है उसकी कैसी दुर्गति है । कि अपनी पूज्या गौमाता के हिंसकों को अपना पूजा देते हैं कौन अनुमान करेगा कि अब तू संसार में जीवित रहेगी मैथिली शरण गुप्तने ठीक कहा है "हा ! किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति सी बढ़ी, जैसी चढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या पड़ी" हमें अनेकबार सनातन धर्म सभाओं में जानेका अवसर मिला है । हमनें कभी ऐसे कल्पित देवताओं के विरुद्ध वक्तृता नहीं सुनी । हमको शोक इस ओर सनातन धर्मियों का बिलकुल ध्यान नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध का इतिहास

महाभारत को आरम्भ हुए एक मास व्यतीत होगया हम जुलाई मास का अपने प्रेमियों को इतिहास सुनाते हैं।

नोट—यह इतिहास सैनश्योर अथवा बन्दी के तारों के अनुसार ही लिखा गया है। और तार जैसे इस देश में आये हैं वह तारीखें दी गई हैं। २८ जून सन १९१४ई० — अस्ट्रिया के राजकुमार का वध हुआ।

२९ जून से २४ जुलाई तक—आस्ट्रिया में सर्विया के विरुद्ध क्रोध प्रकट किया गया।

२४ जुलाई—अस्ट्रिया ने सर्विया को अन्तिम वकाया देदिया।

२५ जुलाई—सर्विया ने उत्तर दिया। अस्ट्रिया को शान्ति नहीं हुई।

यूरोप युद्ध का आरम्भ

२८ जुलाई —अस्ट्रिया ने सर्विया पर युद्ध आरम्भ कर दिया।

२९ जुलाई —रूस ने अस्ट्रिया की हद पर सेना एकत्र करना आरम्भ किया।

३० जुलाई —अस्ट्रिया नें सर्विया की राजधानी पर गोले बरसाये। दूसरे देशों में सेना एकत्र होना प्रारम्भ हुआ! अंग्रेजों के लड़ाई के जहाज रवाना हुए।

३१ जुलाई—जरमनी में लड़ाई का कानून कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्ट्रिया सार्विया में घुस गया।

१अगस्त —जरमनी ने रूस पर युद्ध आरम्भ किया। इटली ने न लड़नें की घोषणा की।

२अगस्त —जरमनों ने लक्सबर्ग ले लिया और बैलजियम को अन्तिम सूचना दे दी।

३अगस्त —बैजियम ने जरमनी की बात अस्वीकार की। जरमनी नें फ़िर बैलजियम से कहा कि तुम स्वीकार नहीं करो तो जरमनी बलात स्वीकार करवावेगी। रूसियों के जंगी जहाजों को जरमन जहाजों नें भगा दिया। अंग्रेजों नें जरमनों को अन्तिमवाक्य कह दिया।

४अगस्त —जरमनी ने अंग्रेज़ों को सन्तोष जनक उत्तर नहीं दिया। अंग्रेज़ों नें ज़रमनी पर युद्ध आरम्भ कर दिया। जरमन के जंगी जहाज़ विलायत की ओर चले। टरकी ने सेना एकत्र करना आरम्भ किया। जरमन सेना वैलजियम में घुस गई रूस और जरमनी में युद्ध हुआ।

५अगस्त —जरमनी ने लीज नामूरपर गोले वरसाये। जापान ने अंग्रेज़ों की सहाता करनें की घोषणा की। जरमनी और विलायत का एक २ जहाज़ डूबा।

६अगस्त—लीज के पास की लड़ाई में जरमनों को बहुत हानी पंहुची। आस्ट्रिया ने रूस पर लड़ाई ठानी।

७अगस्त—एक अङ्गरेज़ी तेल का का जहाज़ डूबा।

८अगस्त— फरांसीसियों ने आस्ट्रिया वा मलहसन ले लिया। अंग्रेज़ वा फरांसीसियों ने ज़रमनों का एफ्रीका में एक छोटा सा देश टोगो लेन्ड ले लिया। जरमनों का एक समुद्र के नीचे चलने वाला जहाज़ डूबा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९अगस्त —रूसी आस्ट्रिया में घुस गये। जापानी जंगी जहाज़ रवाना होगये।

१०अगस्त—आस्ट्रिया और फरांस में युद्ध छिड़ गया। मौन्टी निग्रोज ने तीन नगर लिये। आस्ट्रिया के जहाज़ों में आन्त वारी पर गोले बरसाये।

११अगस्त—मौन्टी नीग्रो ने जरमनी पर लड़ाई कर दी। जरमनी के दो जंगी जहाज़ टरकी के समुद्र में घुस गये। जरमन लीज से आगे बढ़े।

१२अगस्त—अंग्रेज़ों ने अस्ट्रिया पर युद्ध ठान दिया। जरमनी को बैलजियम ने खूब रोका और एगजी पर पीछे हठा दिया।

१४अगस्त—फरांसीसियों ने साले लिया। रूस ने पौलैन्ड को स्वतन्त्रता दी।

१६अगस्त—फरांसासी उत्तरी अलमास की और बढ़े फरांसी और अस्ट्रिया के जहाज लड़े। अस्ट्रिया का एक जहाज डूबा गया।

१७अगस्त—जापान ने जरमनी को अन्तिम सूचना देदी। अंग्रेजी की सेना फ्रांस पहुचं गई। जरमनों ने एफ्रीका में अंग्रेजो का टवीटा ले लिया। तीन दिन लड़ कर सार्विया ने शशवाटन के स्थान अस्ट्रिया को हराया।

१८अगस्त—रूसियों ने जरमनी के पांच स्थान लिये। आज तक ११० व्योपारी नौ का जरमनी वा आस्ट्रिया के पकड़े गये बैलजियम ड्रलीमो की लड़ाई से पीछे हठे।

१९ अगस्त— रूसियों ने गमबीनन ले लिया।

२०अगस्त—जरमनों ने बैलजियम की राजधानी पर अधिकार जमाया। फ्रांसीसियों ने मलहसन फ़िर से लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूसियों ने लिक लिया ।

२१ अगस्त—सरविया ने आस्ट्रिया को हराया ।

२२ अगस्त—दो अंग्रेजी व्योपारी जहाज़ों को जरमनों ने डुबो दिया ।

२३ अगस्त—जापान ने जरमनों पर युद्ध कर दिया ।

२४ अगस्त—जरमनों ने नामूर ले लिया । फरांस की सेना दोनों बा साले से पीछे हटी । रूसी सेना २० कोस जरमनी में घुस गई । रूसियों ने इसट बर्ग ले लिया ।

२५ अगस्त—अंग्रेजो को पीछे हटना पड़ा । और जरमन निवासियों ने एन्टवर्प पर गोले डाले ।

२६ अगस्त—ल्युज पर युद्ध हुआ । अन्त में फरांसी और अंग्रेज़ों को हटना पड़ा । रूसियों के सामने जरमन हटे । आस्ट्रिया और जापान में युद्ध होगया ।

२७ अगस्त—अंग्रेज़ी समुद्री सय्याहों ने औस्टंड लिया ।

रूसियों ने आस्ट्रिया को स्लोटिलिया नदी के पार कर दिया अंग्रेज़ों ने जरमनी की एक नौका डुबोयी ।

२८ अगस्त—अंग्रेज़ी सेना को फिर पीछे हटना पड़ा । वोसेज फरांसी कुछ आगे बढ़े जरमन फरांस में घुस गये । जरमनों ने पोटमार्क और मर सीनें ले लिये । जरमन ५ म्बर पर युद्ध कर रहे हैं । यहां से फरांस की राजधानी कोई सत्तर कोश है । रूसी कोनिस बर्ग पर बढ़ रहे हैं ।

इति यरोप युद्ध प्रथम सर्ग

(शीघ कर बदलकर निर्बल सेवक उद्धृत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में जर्मन व्यापार ।

मिस्टर हारकोर्ट साहब ने इस बात का अनुसंधान किया है कि जर्म्मन से कौन २ सी वस्तुएं भारत में व्यापार के लिये आती रहीं । नीचे की सूची देखकर पाठकों को मालूम होगा कि भारत से बहुत सा धन जर्म्मनी व्यापार के द्वारा ले जाता था । जर्म्मनी और आस्ट्रिया का व्यापार भारत में बन्द होने पर अब अंगरेज लोग उन वस्तुओं के यहां लाने का यथासाध्य उद्योग करेंगे । सन् १९१२—१३ ई: की रपोर्ट से यह सूची यहां प्रकाशित की जाती है । इस वर्ष जर्म्मन से भारत में ६८६८९३ पौण्ड की वस्तुएं बिकने आई थीं ।

जर्म्मनी से भारत में आने वाले वस्तुओं की सूची निम्न भांति है:—

वस्तु	कितने मूल्य की (पन्द्रह परुये) पौण्ड
वस्त्र	१०६६०४
मकान बनाने के समान	६८७३७
गाड़ियाँ	२३३६०
रसायनी चीजें	८५१३७
औषधियां	३८८६१
रङ्गने के सामान	६८०२०५
साइकिल	१४९५६
मिट्टी के बरतन	६८३१९
काठ की बनी हुई चीजें	६७८६०
शीशे की बनी हुई चीजें	१७२११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहे पीतल वगैरा की बनी हुई चीजें	४२७३२२
औजार वगैरा	१०६६२७
हाथी दांत की बनी हुई चीजें	४७८७१
चमड़े और हड्डियां	१८७२७
शराब	१५३३८५
कल कारखाने की चीजें	१९७५६९
दीया सलाइआं	२२३५०
धातु	१७९३८
मोटर गाड़ियां	११७७३
मोटर गाड़ियों के टुकड़े	४१४३७
तैल	१८६०११
नक्काशी के सामान	३६३८९
कागज़ और दफ्ती	१६४४२७
तेली के सामान	४०९७१
खिलौने	७४७०४
रेलवे सम्बन्धी औजार	१००९४१
नमक	६३९५१
कलप करने के सामान	४४८३२
लेख सामग्री (कागज़ छोड़कर)	३६६५२
चीनी	५०७५८
कच्ची रुई	६२२६७
रुई के माल	६७४२७६
बिसाती के सामान	१४५५९०
रेशम की चीजें	११६७२२
ऊनी चीजें	६३२७८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाते के सामान	४७४३८

आस्ट्रिया से निम्न भारत .र्ष में बिकने के लिये उसी वर्ष इस भांति आई

	पौण्ड
वस्त्र	६०४०२
कांच की चीजें	४६०४८२
लोहे व पीतल की चीजें	२२०१५६
औजार	१४२२३
पक्का चमड़ा	७४६८
कलकारख़ाने के सामान	१२६२८
धातु	७४६९१
दियासलाइयां	५४६५९
कागज और दफ्ती	६७४७९
चीनी	७११४५८
रूई की चीजें	१८३४५९
बिसाती के सामान	१८५५८४
ऊनीचीजें	५५९८८
खिलौने	२१४१७
लड़की की चीजें	१७८६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामंडल में महात्मा।

ईश्वर जानें संसार में हिन्दू जाति की क्या दुर्गति होनी शेष है, क्यों कि जिन संस्थाओं से हिन्दू अपनी उन्नति की आशा करते हैं वहां दरिद्री हिन्दूओं को धन नष्ट होकर उल्टी हानि होती है समस्त हिन्दू मात्र के हृदय में भारत धर्म महामंडल से यह पूर्ण आशा थी और बहुतों को अब भी है कि इससे देश और जाति को महान् लाभ होगा किन्तु शोक के साथ लिखना पड़ता है कि हिन्दुओं की यह आशा निराशारूप हुई। हम पहिले ही जानते थे कि भारतधर्म महामंडल से सिवाय उत्तमोत्तम प्रस्तावों और विपुल चन्दा करने के और कुछ नहीं होसकता है। आज यह बात प्रत्यक्ष दीख रही है। इस समय हमारे सामने "त्रिशूल" से उद्धृत महामंडल परपरिवर्तन और अप्रिय प्रश्नावली दो पुस्तकें महामंडल शास्त्र प्रकाशक समिति लिमिटेड प्रेस बनारस में मुद्रित हैं। उनमें से कुछ अंश उद्धृत करते हैं जिससे पाठकों को यह भली भांति विदित हो जाय कि क्या ऐसी संस्थाओं द्वारा जहां पर ज्ञानानन्द जैसे महानुभाव उपस्थित हैं स्वप्न में भी किसी जाति को लाभ नहीं हो सकती है।

अप्रिय प्रश्नावली में स्वामी जी से प्रश्न किया है कि स्वामी जी नें कब और किस सन्यासी से सन्यास मंत्र ग्रहण किया। जिस से मालूम होता है विधिपूर्वक संन्यासी नहीं हुए। दूसरा प्रश्न ब्रह्मचारी या संन्यासी को स्त्री सहवास मना है या नहीं। यदि मना है वह भारत धर्म महा मंडल की कोठरी में उमा देवी प्रभृति नवीना विधवा स्त्रियों को अपने पास बुला अनेक समय एक ही शय्या पर रहनें का अधिकार करते हैं या नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामंडल के दानभंडार से ज्ञानानन्द जी द्वारा आत्मीया कम उम्र वाली विधवा अन्न पूर्णा देवी को रुपए देते रहनें पर राजा शशि शेखरेश्वर नें ज्ञानानन्द जी से यह बात कही थी या नहीं कि अब उस विधवा के पिता यथेष्ट पैंशन पाते और उन के हाथ में यथेष्ट रुपए हैं तब ऐसी अवस्था में ऐसे मनुष्य की कन्या के सुख सन्तोष विधान के लिये दानभाण्डार के रुपये खर्च न कर के सच्चे दुःखिया अन्धे आतुर को सहायता देना चाहिये, राजा शशिशेखरेश्वर के इस प्रतिवाद पर ज्ञानानन्दजी नें कहा था या नहीं भगवान जिन्हें अन्धा और आतुर बना शास्ति देरहे हैं उन का कष्ट दूर करने की चेष्टा करना बृथा है बल्कि भले घर की विधवाओं को सुखिनी बनाने की चेष्टा कर ने पर उन से ही भगवान अधिक सुप्रसन्न होंगे। वाह क्या कहने है। महाराज आखिर तो कालि के अवतार ही हैं—

जैसा कि महामंडल पटपरिवर्तन पेज १७ पर लिखा है कि महामंडल के प्रधान परिचालक यज्ञेश्वर बाबू नें महा मंडल की रंग भूमि पर स्वामी जी महाराज ज्ञानानन्द जी की उपाधि— ग्रहण कर ने से पहले मधुसूदन संहिता नामक पुस्तक प्रकाशित की थी इस अपूर्वग्रन्थ में उन के पिता मधु सूदन नें उन की माता वामा सुन्दरी के साथ धर्मतत्व की अनेक बातों की आलोचना कर अन्त में कहा है कि इस वार तुम्हारे गर्भ से जिन महा पुरुष का आविर्भाव होगा वही इन सब पेचीली बातों को बिशद रूप से लोगों को समझावेंगे। इस के बाद ही ज्ञानानन्द जी के जन्म और उन के रूप बर्णनादि की कितनी ही बातें लिखी हैं। इस ग्रन्थ की भविष्य वाणी को कार्य्य रूपमें परिणत करनें के लिये ज्ञानानन्द जी नें भारतधर्म महामंडल के सहाय्य से महामंडल शास्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक प्रेस की प्रतिष्ठा की और इसी प्रेस से उन का साम दर्शन देवी मीमांसा दर्शन प्रकाशित किया। इस से स्वामी जी कलि अवतार होना सिद्ध होता है अच्छा होता यदि संहिता में भी लिख दिया कि स्वामी जी अमुक देवता के अवतार हैं।

भास्कर से यह जानकर अत्यन्त शोक होता है कि महामंडल के वर्तमान उपदेशक स्वामी दयानन्दजी को मंडल के स्वर्गीय स्वामी दयानन्द का अवतार इस लिये कहते हैं कि धर्म रक्षित के लिये अवतार लेकर सनातनधर्म का प्रचार करने आए हैं।

साम्प्रदायिक भेद होते हुए भी कहना पड़ता है स्वामी दयानन्द की दया ही से भारत धर्म महामंडल की स्थापना हुई क्यों कि स्वामी जी की ही कृपा से समस्त हिन्दू जाति जागृत हुई है। जहां तक मुझे मालूम है सनातधर्म सभाओं नें आर्य समाज के खडंन के सिवाय ईसाई, मुसल्मान, राधा स्वामी, का देव गुरु, आगाखां, आदि के कल्पित और भ्रमित मतोंका खंडन लेख, या वक्तृता द्वारा नहीं किया। जो कुछ इस लेख में हमने लिखा है सनातन धर्मी होने के कारण समालोचकभाव से लिखा है। इस लेखको समाप्त करते हुए महामंडल के सभ्यों से और सनातन धर्मी भाइयों का इस ओर ध्यान दिलाते हैं कि केवल भारत में बल्कि भूमंडलमें सनातन धर्म काप्रचारकर शान्ति स्थापन करनेका प्रयत्नकरें और उक्त स्वामीजी को मंडल से विदा दें क्योकि यह विलायतसे आए हुए साहबोंके खाद्य द्रव्य में गौमांस और शूकरादि का मास बेच चुके हैं। इनके मंडलमें रहते हुए कोई आशा मंडल की उन्नति की नहीं हो सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावणाङ्गद सम्बाद ।

॥ दोहा ॥

है मदान्ध सब रजनिचर, रहे मारि शठ गाल ।
यह नहिं जानत शीश पर, नाचत काल कराल ॥
ताहि समय रणबांकुरा, कपिवर बालि कुमार ।
करत दृष्टि यमराज सम, चलेहु सभा के द्वार ।

॥ चौपाई ॥

मन्द २ गति गवनत ऐसे, ।
पुर्वाचल बिकसत रवि जैसे ॥
मेरु शृंग तनु लाग अकाशा ।
नेत्र मनहुँ नभ दीप प्रकाशा ॥
रहे वीर जे रक्षक द्वारा ।
लखि अंगदहिं पर्वता कारा ॥
द्वार छांड़ि इत उतहि पराने ।
रवि प्रकाश जिमि नखत छिपाने ॥
घोर गरजि कपि बालि कुमारा ।
कियक द्वार पै पाद प्रहारा ॥
एक योजन सुमेरु प्राचीरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरयो द्वार घहराय गंभीरा ॥
मरे अनेक चाप निशि चारी ।
पुरजन सकल बिकल भये भारी ॥
कूदि बालि सुत बली अपारा ।
प्रविशहु दश मुख सभा मझारा ॥

सो०--सिंहासन सुबिशाल,
मणि माणिक मुक्ता जटित ।
राजत लंक भुपाल,
सचिव मित्र सामंत युत ॥

॥ चौपाई ॥

देखि तासु सिंहासन शोभा ।
अंगद उर आयो अति छोभा ॥
करि निज पुच्छ मंडला कारा ।
बैठेहु तेहिपर बालि कुमारा ॥
शोभित भयो वीर वर कैसे ।
सुना सीर करि वर पर जैसे ॥
लखि हरि बराहि भीम आकारा ।
यातु धान सब चाकित अपारा ।
सकल वीरता गई हेराई ।
जिमित सकल खिमूप उराई ॥
कराहिं विचार चित्त के माहीं ।
यहि क्षण कुशल देखि पव नाहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कपि प्रथम दह्यो पुर आई ।
यह क्यों यहां कराहि कुटिलाई ।।
अधो बदन मन शंकित भारी ।
मौन शाधि बैठे निशि चारी ।।

।। दोहा ।।

अंगद कह लखि दश बदन, किय माया बिस्तार ।
निज मूरति शत २ प्रकट, बैठो सभा मझार ।।
ह्वै विस्मित अंगद तबहिं, दृष्टि करत जे हियांय ।
बिश बाहु दश मुंड युत, तित रावणहिं लखांय ।।

।। चौपाई ।।

करत बिचार कीश अपने मन ।
उचित करन का संग संभाषन ।।
दशमुख जो माया विस्तारी ।
तासन पृथक रहो शक्तारी ।।
इंद्रजीत करि हृदय विचारा ।
लाज बिबश पितु देह न धारा ।।
करि अभिचार यज्ञसों आयो ।
तिलक लिलाट बिशाल सुहायो ।।
चकित लखत अंगद चहुँधाई ।
परी दृष्टि तेहि ऊपर जाई ।।
करि अनुमान गयहु पहिचानी ।
यह शठ इंद्रजीत अभिमानी ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का

जीवनचरित्र

अब उस कर्म योगी महात्मा का जीवन चरित्र लिख कर अपनी लेखनी और पाठकों के हृदय को पवित्र करते हैं जिस महात्मा नें एक निर्धन ब्राह्मण के यहां जन्म लेकर अपनी आत्मिक और आर्थिक उन्नति कर के यह दिखा दिया कि संसार में पुरुषार्थके बराबर दूसरा कोई पदार्थ नहीं है और पुरुषार्थसे किस प्रकार मनुष्य संसारिक समस्त पदार्थ उत्पन्नकर सकता है। पं० ईश्वर चन्द्र विद्यासागर केवल विद्यासागर ही नहीं थे किन्तु दया आदि समस्त गुणोंके सागर थे। यह उन महापुरुषों में थे जिनका जीवन अपने लिये नहीं किन्तु दूसरों के लिये होता है इन का प्रत्येक कार्य्य इस लोकोक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि "भवन्ति नम्रा स्तरवः फलोद्गमैः अर्थात् वृक्ष फल के आने पर नम्र होजाते हैं। ठीक इस ही प्रकार इस जीवनी के नायक पं० ईश्वर चन्द्र जी का विद्यासागर और धनी होनें पर भी ऐसा सादा पहिनावा सादी बातालाप थी कि उन को देख कर यह कोई नहीं कह सकता था कि यह कुछ पढ़े लिखे और धनी होंगे।

बंगाल प्रान्त में हुगली ज़िले बनमाली पुर नामक ग्राम में पं० भुनेश्वर बन्द्योपाध्याय ज़ी रहते थे। इन के पांच पुत्र थे; पांचो ही संस्कृत के पूर्ण विद्वान थे इन के तृतीय पुत्र का नाम रामजय बन्धोपाध्याय था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन के दो पुत्र थे, जेष्ठ पुत्र का नाम ठाकुरदास और कनिष्ट पुत्र का नाम कालीदास। पं० भुवनेश्वर वन्धो पाध्याय के देहान्त होने पर पुत्रों में सम्पत्ति के बांटने में अत्यन्त झगड़ा हुआ। इन सब में रामजय धर्मात्मा और उदार थे। इतनी छोटी सी बात के लिये इन्हों ने परस्पर झगड़ा करना पसन्द न कर के घर को छोड़ सन्यासी वेष में तीर्थ यात्रा के लिये चले गए।

परस्पर झगड़े के कारण रामजय की स्त्री दुर्गा देवी अपने बालकों सहित पिता के यहां वीरसिंह ग्राम में चली गई। इस के पिता ने इस को बालकों के साथ आदर पूर्वक अपने घर रख लिया। इस समय दुर्गा के दोनो पुत्रों की आयू दस और सात वर्ष थी।

इन के नाना नें इन को उसी ग्राम के पं० केनाराम तर्क वाचस्पति के पास पढ़नें के के लिये छोड़ दिया। पं० जी शीघ्र ही दोनों बालकों को बंग भाषा अङ्क गणित और जमींदारी सम्बन्धी शिक्षा दें कर व्याकरण पढ़ानें लगे। इन के नाना नें बिचार कर कि मेरी आयू बहुत होगई है अपने पुत्र रामसुन्दर को गृहस्थ भार सौंप दिया। इस के कुछ दिन पश्चात् राम सुन्दर की स्त्री और दुर्गा देवी का झगड़ा रहनें लगा ऐसे समय में प्रायः पुरुष स्वाभिव स्त्रियों का ही पक्ष लिया करते हैं वैसा ही राम सुन्दर और उन की स्त्री ने एक दिन दुर्गा देवी से यह कहा कि हम तुम्हारे बालकों का पालन नहीं कर सकते इस लिये अब तुम दूसरा ठिकाना ढूंडो। दुर्गा देवी ऐसे कठोर वाक्यों को सुनकर कुछ देर के लिये शोक सागर की लहरों का दृश्य देखने लगी। इस के कुछ देर उपरान्त दुर्गा नें यह वृत्तान्त अपने वृद्ध पिता से जाकर कहा। इस बात को सुनते ही उस के पिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नें कहा मैं इस बात को भली भांति जानता हूँ कि अब तुम्हारा और रामसुन्दर के कुटम्ब का एकत्रित रहना असंभव है। इस लिये मेरी राय में तुम्हें इन से पृथक रहना चाहिये इस बात को दुर्गा देवी ने भी स्वीकार किया। अगले दिन इस के पिता पं० उमापति तर्क सिद्धान्त ने ग्राम के प्रतिष्ठित पुरुषों को एकत्रित कर के उन के सन्मुख इस प्रस्ताव को रक्खा कि रामसुन्दर और दुर्गा का एक गृह में रहना अत्यन्त कठिन होरहा है। इस लिये मैंने निश्चय किया है कि दुर्गा के रहनेके लिये एक पृथक स्थान बनवा दूं यह प्रस्ताव सब लोगों ने पसन्द किया उस ही दिन दुर्गा के पिता नें ग्राम के ज़मीदार से प्रार्थना कर के इस किराए को भी कुछ दिन बाद छुटवा लूगा। इस के थोड़े ही दिन बाद दुर्गा के पिता पं० उमापति तर्क सिद्धान्त का देहान्त होगया परन्तु दुर्गा के घर का किराया माफ न करासके।

दुर्गा को यह किराया माहवरी देना पड़ता था। दुर्गा के पास कोई सम्पत्ति न थी इस कारण वह अपने बालकों तथा अपना पालन सूत कातकर कठिनता से करती थी।

जिस समय ठाकुरदास की आयु चौदह वर्ष की हुई तब दुर्गा के हितैषियों ने सलाह दी कि अब ठाकुरदास को ऐसी विद्या पढ़ानी चाहिये जिस सें यह शीघ्र ही धन कमाने लगे।

उधर पं० रामजय बन्द्योपाध्याय जी को तीर्थ पर्यटन करते हुए एक तीर्थ के किनारे बैठे २ यह ध्यान आया कि अपने बालकों को ऐसी आपत्ति में छोड़ कर जब कि मेरे भाई ही सम्पत्ति के लोभ में उनके शत्रु होगए थे मैं कर्तव्य से बिमुख होकर चला आया हूँ न जानें उन बेचारों को कितना कष्ट होगा हाय २ ऐसी दशा में मेरा कैसे कल्याण हो सकता है। इत्यादि बिचार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच वर्ष पश्चात यह अपनी जन्म भूमि बन मालीपुर को वापिस आए। वहां आकर इन्हों ने देखा कि भाई सब अलग होगए और पत्नी दुखी होकर वीर सिंह के ग्राम में अपने पिता के यहां चली गई है। इस लिये यह गेरुआ वस्त्र पहिने ही वीरसिंह ग्राम में पत्नी आदि को लेने के लिये चले गए। वहां जाकर दो चार दिन के बाद इन्होने पत्नी और बालकों को बन माली पुर लाने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु इनकी पत्नी दुर्गा देवी नें न माना क्योंकि उनके भाइया नें इस के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार किया था और इतने दिन उसनें बहुत कष्ट से काटे थे किन्तु किसी नें नाम मात्र को खबर भी नहीं ली इस लिये पं० रामजय जी को वीरसिंह से पत्नी आदि के ले जा ने में सफलता प्राप्त न हुई।

पं० रामजय का जब यह विदित हुआ कि ठाकुरदास बंग भाषा गणित और जिमीदारी की शिक्षा में प्रवीण होगया है। तब उस को वह कलकत्ते लेगए वहां पर बाल बाजार में वह सभा राम वाचस्पति के यहां ठहरे।

वाचस्पति जी नें रामजय से कहा कि तुम ठाकुरददास को व्याकरण पढ़ाओ इस पर रामजय नें अनुरोध किया कि इस को शीघ्र ही धन कमाने वाली विद्या पढ़ानी चाहिये क्योंकि हमारी आर्थिक दशा इस समय बहुत ही खराब है।

उस समय कलकत्ते में कोई अंग्रेजी स्कूल या कालिज न था वाचस्पति महाशय नें दलाल से कहा कि यदि तुम ठाकुरदास को अंग्रेज़ी पढ़ा दो तब बहुत ही अच्छा हो। दलाल महाशय नें स्वयं पढ़ाना स्वीकार न किया किन्तु सीप सरकार नामक कायस्थ से अंग्रेज़ी पढ़ानें का प्रबन्ध कर दिया सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशय नें ठाकुरदास को दोनों समय बड़ी ही उत्तमता से पढ़ाई अंग्रेज़ी । जिस से वह थोड़े ही समय में काम करने योग्य अंग्रेजी ज्ञान गया । ठाकुरदास के पढ़ने का प्रबन्ध कर के पं० रामजय जी ठाकुरदास को आशीर्वाद देकर फिर तीर्थ यात्रा को चले गए उन के जाने से ठाकुरदास को बहुत ही दुःख हुआ । थोड़े ही दिन पश्चात् शिक्षक नें उन को दुर्बल देख कर उन की दुर्बलता का कारण पूछा ।

ठाकुरदास ने कहा महाराज मुझ को भोजन एक ही समय मिलता है क्योंकि रात्रि को दस बजे पश्चात् आप के पास से बाचस्पति के पास जाता हूं और उन के यहां भोजन सात बजे होता है इस लिये देर होने के कारण रात्रि को भोजन नहीं मिलता यह मेरी दुर्बलता का कारण है । शिक्षक नें कहा यदि तुम रसोई बनाना जानते हो तब यहां पर रहा करो और अपने मेरे लिये भोजन बना लिया करो । ठाकुरदास ने शिक्षक की अज्ञानुसा उन के घर रहना स्वीकार किया ।

शिक्षक को प्राय रात्रि को काम समाप्त कर के आने में देर होजाती थी ठाकुरदास उन के आने से प्रथम भोजन नहीं करते थे इस कारण वह तब तक भूके ही रहते थे । उन के पास जल पान के लिये एक पैसा तक न था केवल एक पीतल की थाली ही उन के पास थी । वह क्षुधार्त हो कर एक दिन अपनी थाली को बेचना बिचार कर के सारे बाजार में घूमे किन्तु दुर्भाग्य बश किसी नें थाली को खरीदना स्वीकार न किया ।

एक दिन शिक्षक महाशय के देर होने के कारण ठाकुरदास क्षुधा से पीड़ित घर के बाहर जहां पर कि बुढ़िया की एक दुकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी निकल कर उस के सामने खड़े होगए कुछ देर सोच कर ठाकुरदास ने बुढ़िया से बड़ी करुणां के साथ कहा भाई ? क्या कुछ जल दोगी । यह सुनकर बुढ़िया एक मुट्ठी खील और जल दिया। उस को खाते २ ठाकुरदास की आँखों में आंसु आगए। ठारकुदास को रोता देख कर बुढ़िया ने पूछा कि तुम क्यो रो रहे हो।

इस के उत्तर में ठाकुरदास नें कहा कि भाई ! आज मुझे प्रात काल से भोजन नहीं मिला इस पर बुढ़िया ने कहा कि क्या कारण है जो आज तुम को अभी तक भोजन नहीं मिला। ठाकुरदास नें कहा कि आज प्रातः काल से सरकार नहीं आए इस पर बुढ़िया को अत्यन्त दया आई और उस ने ठाकुदास को खील और जल दिया और कहा कि जब तुम्हें भूक लगा करे तब यहां आकर कुछ खा जाया करो एक दिन शिक्षक महाशय को खबर मिलि कि आज प्रातः काल से ठाकुदास को भोजन नहीं मिला यह सुनकर उन्हो ने ठाकुदास से कहा कि तुम को यहां पर बहुत ही कष्ट होता है और अब तुम्हरी शिक्षा भी इस योग्य होगई है कि तुम भली भातिं कार्य्य कर सको इसलिये बाचस्पति जी से मिकर तुम्हारे सम्बन्धमें बातें करेगें अगले दिन वे बाचस्पति जी से मिले कहा कि अब ठाकुरदास कार्य्य करनें योग्य अगेगी जान गया है और वह सदाचारी भी है। इस लिये अब इस को किसी कार्य्य में लगामा उचित जान पड़ता है। यह बात बाचस्पति जी नें भी सहर्ष स्वीकार की।

बाचस्पति जी उडीसा ग्राम में अपने कुटुम्बी के यहां उस की जायदाद और लेन देन आदि के प्रबन्ध के लिये ठाकुरदास को नियुक्त किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या--उवाच

"रूपक"

(चौथे के अङ्क से आगे)

दोहा

इहि विधि होही रहा था जहं ये वाद विवाद ।
आ पहुँची कई देवियां लखत बढ़ेर अल्हाद ॥
प्रथम "दया" कह खड़ी हो सुनो बहिन मम बात ।
मैंने आ संसार में रोके बहु उत्पात ॥

दया देवी--उवाच

भजन गजल

हरेक ज़बां पर हरेक २ मकां पर दया ही पुकार पाओ
मेरा ज़माना है वह ज़माना,
कि जिस का तुम नहीं शुमार पाओ ।
छुरी गिरी है क्यों वह ज़मी पर,
क्यों रोता जल्लाद आंसू भर भर ।
वह कह रहा था बिलख बिलख कर,
दया मेरा यह सितम छुड़ाओ । हरे० ॥१॥
जहां पै नारा है बे गुनाह का,
या शोर होता सितम ज़दा का ।
वहां पै है आज राज मेरा,
न जालिमों से डरो डराओ । हरे० ॥ २ ॥
बे वालों पर का हो जब कि बच्चा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिस का हर एक अङ्ग कच्चा ।
मेरे सब्ब से ही पाले जच्चा,
हरेक आफत से तुम बचाओ । हरे० ॥ ३ ॥
जो खून के दरिया बह रहे थे,
धरम २ जिस को कह रहे थे ।
उठे यां गौतम से मेरे प्यारे,
कहा दया के अलम उठाओ । हरे० ॥ ४ ॥
गरज जो कोई है मेरा दुशमन,
अशान्ती होती उस के तन मन ।
विनय ये मेरी लो ध्यान से सुन,
जगत में "पाठक" सुख बढ़ाओ । हरे० ॥ ५ ॥

दोहा

दया निकट लज्जा खड़ी, नीची दृष्टि निहार ।
लक्षमी बोली ऐ बहिन, तू भी कछुक उचार ॥
तब लज्जा कहने लगी, सुनहु मातु मम बात ।
मुझ दासी को पाय कर, देवीगण हुल साथ ॥

लज्जादेवी—उवाच

"रूपक"

मैं हूं भूषण कुलवधु मुझे प्यार करती हैं देवियां,
मान करती हैं देवियां, मेरा ध्यान धरती हैं देवियां ।
लज्जा मेरा नाम है, दोऊ चक्षु मेरा धाम है,
कैसा शुभ मम काम है, जगसिंधु तरती हैं देवियां ॥
रूप चाहे हो न हो, गहना भी चाहे हो न हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे कारन देखलों सम्मान करती हैं देवियां।
देखलो परिवार में मैं शांति स्थापन करूं,
मेरे कारन पाप से भी नित्य डरती हैं देवियां॥
बाणी मेरे सामने चुप रहती या होती मृदु;
शील भी पीछे चले पाप हरती हैं देवियां।
देव पूजा ईश भजन देखो पाठक ने तहां,
देखिलज्जा जहं बसे सुख से विचरती हैं देवियां॥

डिब्बी १ } **आरोग्य देवी** { मूल्य
गोली ३२ } आतंक निग्रह गोलियां { रु०

विद्या प्राप्ति और गृहकार्य तब ही हो सकता है जब आरोग्य और शारीरिक बल हो।

इस गोलियों के सेवन से स्त्रियों को मासिकधर्म नियमित होता है गर्भाशय का दोष मिटता है पाचन व्यवस्थित होता है। यह गोलियां लाखों रु० की प्रतिवर्ष बिकती हैं। यह ही इनकी उत्तमता का प्रमाण है। दस्त खुलासे से आता है और शरीर बलकांति से संपन्न होता है।

विशेष के लिये सूचीपत्र मंगा लिजिये } वैद्य शास्त्री मणिशंकर गोविन्द जी जामनगर-काठियावाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ती और बढ़िया

शंकर सिलाई की मशीन

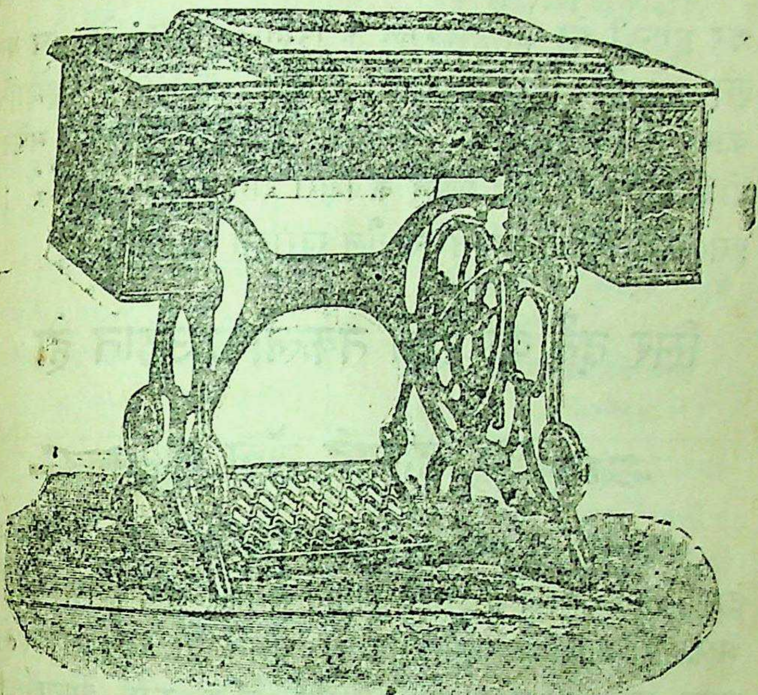

यह मशीनें स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल जी की स्मारक स्वरूप हैं.

हर्ष समाचार ।

यह मशीन विलायत से मंगाई गई हैं जो अन्य मशीनों के मुक़ाबले में बहुत सस्ती और बढ़िया हैं । इनकी अधिक प्रशंसा लिखना वृथा है सूचीपत्र मंगाकर देखिये ।

अबलाहितकारक के ग्राहकों को १०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा ।

पता—

मैनेजर इंडिया इम्पोर्ट आफिस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस समय भारत वर्ष में स्वार्थी मिट्टी के तैल को रंग कर सुगन्धी गेर कर चटकीले २ विज्ञापनों द्वारा देश का धन लूट रहे हैं । मिट्टी के तैल दीमाग़ के लिये महाहानि कारक हैं नजला पैदा करते हैं । जिस से बाल सफेद होजाते हैं और नाना प्रकार के शिरो रोग उत्पन्न होते हैं । इस लिये बड़ी सावधानी से तैल खरीदनें चाहियें ।

सिर दर्द की क्यों तकलीफ उठाते हो

हिमाद्रि तैल

यह तैल शिर सम्बन्धि रोगों के लिये कई वैद्यों की सम्मति द्वारा तैयार कराया है इस के लगाने से शिर शुल [शिर दर्द] मस्तक में भारीपन रहना धूप में चलनें या पढ़ने लिखने से चक्कर आना । बुरे स्वप्न दिखना नींद कम आना । दिमाग़ की दुर्बलता नेत्रों के सामने अंधेरा होना शिर में खुश्की और खुजली बालों का सफेद होना या उखड़ २ कर गिरना चित्त की चंचलता आदि के लिये अद्वितीय तैल है। ऐसा कौन पुरुष होगा जो इस के अपूर्व गुणों पर मोहित न होजाय । इस से अधिक प्रशंसा लिखना व्यर्थ है। एक वार अजमाइश कर के देखिये मूल्य प्रति शीशी १)

मिलने का पता —

मैनेजर दीनबन्धु प्रेस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्तेके नामी डाक्तर एस, के, बर्मनकी ३० वर्षकी

प्रसिद्ध दवायों का विज्ञापन।

कफ वो खांसी की दवा

(१) ने हो खांसीको दबाती है।

कफ वो खांसी की दवा।

(२) २—३ खुराक पीने से कफ निकाल कर आराम करती है

कफ वो खांसी की दवा।

(३) दवा बच्चे से बूढ़े तक समान गुण करती है।

बड़ी शीशी का १) छोटी ॥)

डा: म:॥=) और ।–) आने।

दाद की मलहम।

(१) एक बार के लगाने से खुजली मिटती है।

दाद का मलहम

(२) दो चार बार लगाने से एक दम आराम होती हैं।

दाद का मलहम।

लाखों आदमी अजमा चुके हैं आप क्यों बाकी हैं

मोल चार आने डिबिया

डा:म:१ से ६ डिबियातक।–)

असली बुखार वो तिल्ली कीदवा

(१) इस के दो तीन हीखुराक से बुखार का आना बन्द होता है।

असली बुखार वो तिल्लीकी दवा

यह तिल्ली को जल्द गला देती है।

असली बुखार वो तिल्ली की दवा

(३) यह खून को गाढ़ा करती है और उसकी हर वो कोमिटाता है

बड़ी शीशी का ॥।=) छोटी ॥)

डा: म: ।=) और ।–) आने

पुरानेंमलेरियाबुखारकी गोलियां

(१) इन गोलियों में कुइनैन नहीं है

पुरानेंमलेरियाबुखारकी गोलियां

(२) जब हाथ पैरों में सूजन आ जाती है और आराम होनें की आस नहीं रहती है ऐसे हालत में भी यह गोलियाँ गुण करती हैं।

पुरानेंमलेरियाबुखार कीगोलियां

इन गोलियों [illegible] हाल जानने [illegible] मंगा कर पढ़िये

मोल — २४ गोलियों की डिबिया ॥)

डा:म' १से ६ डिबिया तक ।–)

दवा सब जगह दुकानदार और हमारे एजेन्टों के पास मिलेंगी।

डा: एस, के बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिष्टर नं० १३३ ए

निम्न लिखित मुफ्त

अमृत

'अमृत:—इस नाम की एक पुस्तक उर्दू, हिन्दी, अंग्रे गुरुमुखी, गुजराती या मराठी जिस भाषा की चाहें मुफ्त जावेगी, इस में सर्व रोगन औषध'

'अमृतधारा का'

पूरा २ वर्णन है। 'अमृतधारा' श्री पं० ठाकुर दत्त शर्मा की जगत भर में एक नई ईजाद है, क्योंकि यह एक ही औष प्राय: सर्व रोगों को हितकर है। कीमत बड़ी शीशी अमृतधारा आधी शीशी १।) और नमूना की शीशी छोटी का ॥

पुरुषों के विशेष रोग

आज कल लोगों में व्यसन बहुत बढ़ जाने से विशेष रोग ही बढ़ गये हैं, इस पुस्तक के अन्दर उन रोगों के कारण तथा चिकित्सा भली प्रकार से वर्णन की, जिस को पढ़ कर से आरोग्य तथा बलवान हो सकते हैं यह पुस्तक भी मु जाती है। हिन्दी उर्दू मराठी गुजराती में मिल सकती

"हिन्दी के देशोपकारक,,

अपनी किस्म का भारतवर्ष में पहिला पाक्षिक वैद्यक जो एक बार देखता है, यदि उसको जरा भी आयुर्वेद से हित होता इस पर मोहित हो जाता है। नमूना मुफ्त मिलता है

पत्र तथा तार का पता:—अमृतधारा (ब्रांच) लाहौर

श्रोत्रिय जगदीशदत्त ने दासबन्धुप्रेस बिजनौर में छापा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिकपत्र

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल
सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सब से सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची।

विषय	पृष्ठ	लेखक
स्त्रियां	१	श्री० मैथलीशरण गुप्त
सम्पादकीय वक्तव्य	३	..
विधवाओं की आवश्यकता	८	..
गोखले का स्वर्गगमन	६	सम्पादक
दिवालिये का दावा	१६	प्रेम
पारिवारिक दृश्य	२२	शकुन्तला देवी
वियोगनी	२५	श्री० चम्पालाल जौहरी

Printed and published by Soti jagdish Datt at
IinTandhu Press . Bijnor

वार्षिक मूल्य १।) स्त्रियों से ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना ।

प्रिय पाठक ! आज "अबलाहितकारक" ग्यारह वर्ष पूरा करके बारहवें वर्ष में आप की सेवा में पदार्पण करता है। अनेक आपत्तियों के कारण यह गत वर्ष आपकी सेवा भली भांति नहीं कर सका जिसके लिये वारम्वार क्षमा मांगता हुआ गतवर्ष का मूल्य नहीं लेगा। अतः प्रार्थना है यदि आगे के लिये किसी सज्जन को लेना स्वीकार न हो तब पत्र द्वारा सूचना दें। वरन् अग्रिम अङ्क ।।=) का वी० पो० छ मास के लिये भेजा जायगा। आशा है वो० पी० छुडा कर अवला पत्र की सहायता करेंगे ताकि आगे पंच और चित्रों से सुसज्जित हो आपकी सेवा कर सके।

निवेदक

अवला हितकारक के नियम

(१) अवला हितकारक प्रति मास प्रकाशित होता है;

(२) डाक व्यय सहित इस का अग्रिम वार्षिक मूल्य १) है और स्त्रियों से ।।=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी विना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता साफ २ देव नागरी या अंग्रेज़ी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर लेना चाहिये।

(६) पत्र का उत्तर जवाबी कार्ड या टिकट विना नहीं दिया जावेगा

(७) लेख परिर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया तथा सब प्रकार के अवला हित कारक सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहिये।

मैनेजर—अवलाहितकारक कार्य्यालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओम् नमः शिवाय *

अबलाहितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रिया ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष | चैत्र सम्बत् १९७२ | अङ्क १

स्त्रियां

(लेखक—मैथली शरण गुप्त)

(१)

होगी यहां तक कर्कशा क्या लेखनी ! तू पर वशा—
गृहदेवियों की जो हमारी लिख सके तू दुर्दशा ?
किस भांति देखोगे यहां, दर्शक ! दृगों का मींच लो,
यह दृश्य है क्या देखनें का, दृष्टि अपनी खींच लो ॥

(२)

अनुकूल अद्याशक्ति की सुखदायिनी जो स्फूर्ति है,
सद्धर्म्म की जो मूर्ति और पवित्रता की पूर्ति है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर–जाति की जननी तथा शुभ शान्ति की स्रोतस्वती,
हा दैव ! नारी–जाति की कैसी यहां है दुर्गती !

(३)

होती अनेकों रहीं गार्गी और मैत्रेयी जहाँ,
हैं अब अविद्या–मूर्ति–सी कुल नारियां होती वहां !
क्या दोष उनके किन्तु जो उन में गुणों की है कमीं ?
हा क्या करें वे जब कि उनको मूर्ख रखते हैं हमीं !

(४)

बी. ए. विदित हैं गृहस्वामी, किन्तु क्या हैं स्वामिनी ?
कैसे कहें हा ! हैं अशिक्षारूपिणी वे भामिनी !
अत्युक्ति क्या, दिन–रात का--सा भेद जो इस को कहें,
दाम्पत्यभाव भला हमारे धाम में कैसे रहें ?

(५)

बहु कुशलता--सूचक कलाएं जानती थीं जो कभी,
हैं अब कलह--कुशला हमारी गृहिणियाँ प्राय: सभी।
हा ! बन रहे हैं गृह हमारे विग्रहस्थल-- से यहाँ,
दो नारियाँ भी हैं जहाँ वाग्यबाण बरसेंगे वहाँ !

(६)

रखतीं यही गुण वे कि गन्दे गीत गाना जानतीं।
कुल, शील, लज्जा उस समय कुछ भी नहीं वे मानतीं।
हँसते हुए हम भी अहो ! वे गीत सुनते सब कहीं,
रोदन करो हे भाइयो ! यह बात हँसने की नहीं ॥

(७)

है ध्यान पति से भी अधिक आभूषणों का अब उन्हें,
तब तुष्ट हों तो हों कि मढ़ दो मण्डनों से जब उन्हें !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है यह उचित ही, क्योंकि जब अज्ञान से हैं दूषिता—
क्या फिर भला आभूषणों से भी न हों वे भूषिता ?

(शेषफिर)

सम्पादकीय वक्तव्य ।

प्रिय पाठक आज 'अबलाहितकारक' अनेक आपत्तियों से छुटकारा पाकर १२ वें वर्ष में पदार्पण करता है। यद्यपि प्रारम्भ से ही यह ठीक समय पर अपने पाठकों की सेवा प्रायः कम कर सका है। किन्तु इसके द्वारा स्त्रीजाति को विशेष कर विधवाओं को जो लाभ पहुंचा है वह किसी से छिपा नहीं है। क्योंकि इसका जन्म स्वर्गीय उन महात्मा के द्वारा हुआ है जिन्होंने अपना तन, मन, धन, अबलाओं के दुःख से दुःखी हो विधवाओं के उपकार में लगा दिया और अन्त समय २० हज़ार के ऋणी होकर स्वर्गयात्रा की किन्तु इस विपरीत समय में भी अबलाहितकारक को हज़ारों का घाटा उठाने पर भी बन्द नहीं किया। बारह वर्ष में 'कड़ी का भी भाग्योदय होता है' यह समझ कर एक बार फिर भी आपकी सेवा के लिये उपस्थित होता है।

———

इस समय तक "अबलाहितकारक" की नीति केवल विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा मात्र थी किन्तु अब यह राजनीति. बाल विधवा विवाह प्रचार, हिंन्दू समाज सुधार, हिन्दी साहित्य और स्त्री शिक्षा का भी निर्भीकता के साथ प्रचार करेगा। इस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांप्रदायिक विरोध उत्पन्न करने वाले लेख प्रकाशित न होंगे। अब पंच और चित्र भी प्रकाशित हुआ करेंगे।

———

मुझे अत्यन्त खेद तथा लज्जा है कि श्रीमान् पूज्यपाद पिता जी (श्रोत्रिय शङ्कर लाल जी) की वैकुंठयात्रा के पश्चात् मैं बाल विधवा विवाह प्रचारणी सभा के द्वारा अपनी दुःखिया विधवा बहिनों की सेवा नहीं कर सका। और "अबलाहित-कारक" द्वारा भी पाठकों की सेवा समय पर नहीं कर सका। जिसके अनेक दैविक कारण हैं। गतवर्ष अर्थात् सं० १९७१ में मुझे श्रावण में हैज़ा होगया था, और छोटे भाई की एक आंख बिलकुल जाती रही थी तथा बहिन के भी हाथ पैर मारे गये थे। और "अबलाहितकारक" पर मैनपुरी के दिवालिया ला[illegible] दम्मी लाल ने दफा ५०० ताज़ीरात हिन्द के अनुसार मान-हानि का दावा कर दिया था। जिसके कारण मैं सभा और पत्र का कुछ काम न कर सका और पत्र की दशा ऐसी न थी जो वैतनिक सम्पादक रक्खा जाता। किन्तु परमेश्वर की दया से मेरे और बहिन के प्राण बच गए तथा भाईकी आंख भी अच्छी होगई और उक्त दिवालिया ने भी मुकदमें से दस्तबरदारी दे दी। आशा है कि पाठक और विधवा बहिन मेरी कौटुम्बिक आपत्ति पर ध्यान देकर इस अनुपस्थित को क्षमा करेंगी। इस अनुपस्थिति के कारण पाठकों से इसका १९७१ का कुछ मूल्य नहीं लिया जायगा।

———

समस्त पृथिवी पर एक अरब और पछत्तर करोड़ मनुष्य [illegible] रहते हैं इन में प्रति वर्ष एक करोड़ पच्चीस लाख मनुष्य [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि होती है क्योंकि एक वर्ष में आठ करोड़ बालक पैदा होते हैं और पौने सात करोड़ पुरुष मरते हैं अर्थात् नित्य एक लाख पछत्तर हज़ार की मृत्यु और दो लाख पच्चीस हज़ार का जन्म होता है। इस हिसाब से पचास हज़ार की नित्य वृद्धि होती है। इस मृत्यु संख्या के सामने युद्ध की मृत्यु संख्या अत्यन्त न्यून है। इस युरोप युद्ध के प्रथम चार मास में पच्चीस लाख सैनिक बीरगति को प्राप्त हुए बताए जाते हैं। यदि इस ही तरह प्रलयाग्नि रूप युद्धाग्नि एक वर्ष जलती रहे तब सवा लाख के स्थान में पच्चीस लाख जन संख्या बढ़ सकेगी। रूस जापान के युद्ध में एक सैनिक के मारने के लिये १०५३ गोलियां खर्च हुई थीं रूस और टर्की के युद्ध में एक सिपाही के मारने में ४७ हजार रुपया खर्च हुआ था।

इस समय युरोप में यह अपूर्व युद्ध हो रहा है ईश्वर जाने इस युद्ध में कितना खर्च पड़ेगा।

———

बृटिश गवर्नमेन्ट की छत्र छाया में भारत वर्ष में जो उन्नति और शान्ति का सुख भोग है वह हमको सैकड़ों वर्षों से नहीं प्राप्त हुआ था। शेर और बकरी के एक घाट पानी पीने वाली कहावत को बृटिश बीरों की कृपा से ही भारत को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। किन्तु यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य होता है कि इस सुख और शान्ति के समय में भी दौरों में मनुष्यों को मुकदमों के कारण अत्यन्त कष्ट उठाना पड़ता है। जैसे कि फर्ज़ करो कि एक आदमी किसी कस्बे का रहने वाला है और उसका मुकदमा दौरे में वहां से १२ मील पर है वह रास्ते के कष्टों को उठाता हुआ वहां पहुंचता है और मुकदमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तारीख यदि अधिक काम के कारण दस दिन आगे को बढ़ गई तब बेचारे का मार्ग व्यय और कष्ट वृथा ही जाता है। कैसा अच्छा हो यदि उस कस्बे के समीप के ही ग्रामों के मुकदमें उस तारीख में हों जहां पर कि न्यायाधीश विराजमान हों हमें आशा है कि बृटिश गवर्नमेंट हमारी इस क्षुद्र प्रार्थना पर ध्यान देगी।

यह सुनकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि सहारनपुर में विधवा विवाह प्रचारणी सभा स्थापित हुई है जिस के प्रधान बाबू अलख मुरारी लाल बी० ए० वकील और बाबू कुन्दन लाल जी गुप्त मन्त्री तथा बाबू खेमचन्दजी खजांची नियत हुऐ हैं। सन्तोष का विषय है कि हमारे देश बासियों का ध्यान अब अपनी दुःखिया बहिनों की तरफ आकर्षित होने लगा है। परमात्मा करे यह सभा विधवा बहिनों की सेवा में सफलता प्राप्त करे। किन्तु अच्छा था यदि यह सभा भी संयुक्त प्रान्त वाला विधवा विवाह प्रचारणी सभा अथवा सार्वदेशिक विधवा सहायक मंडल के साथ ही मिलकर काम करती क्योंकि भारत में काम करने वाली शक्तियां बहुत कम हैं उनका अलग अलग होकर काम करना देश के लिये विशेष लाभदायक नहीं होता।

—— ० ——

परमेश्वर जाने हिंन्दूजाति की संसार में क्यादुर्गति होनी शेष है। क्योंकि प्रतिदिन हिन्दूजाति में अनेक कुरीतियां बढ़ती जाती हैं। हाल में कानपुर की प्रदार्शिनी में एक दर्शक ने देखा कि किसी महाराज (राजा) ने अकबर की कबर पर चद्दर और चिराग़ चढ़या चद्दर पर लिखा था "अल्ला हो अकबर जल्ल जलाल,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक है जिस अकबर की आधिनता स्वीकार न करने के लिये हिन्दूपति महाराणा प्रताप सिंह २५ वर्ष तक पहाड़ों में मारे २ फिरे और अपने प्यारे पुत्रों को टोकरों में रख रख कर पाला कन्दमूलों से उदर पालन करते हुए स्वतंत्रता देवी की भेट में अपने शूर समान्तो को अर्पण किया। किन्तु आज हिन्दू राजा बृटिश छत्रछाया में आनन्द करता हुआ भी उस की कबर को चादर चढ़ाता है इस से ज्यादा हमारे लिये लज्जा की कौन बात होसकती है।

इस समय जब कि दयालू गवर्नमैंन्ट जर्मन के साथ घोर संग्राम में लीन है खेद है हम (हिन्दू मुसल्मान) परस्पर प्रेम नहीं रखसकते और आपस में लड़कर गवर्नमैन्ट को ही कष्ट देते हैं! फरुखाबाद हिन्दू मुसल्मानों में ईद पर खूब झगड़ा हुआ ही था यहां तक कई दिन बाज़ार बन्द रहे। इधर नजीबाबाद में देवी का झन्डा इस कारण नहीं निकला कि नजीबाबाद के कुछ रईसों की जमानत बिजनौर के मजिस्ट्रेट ने झगड़े के भय से ले ली थी। हमारी राय में ज़मानते दोनों तरफ के पुरुषों से लेनी चाहिये थी क्योंकि एक हाथ से ताली नहीं बजती। अस्तु किन्तु खेद है नजीबाबादियों ने इस क्षुद्र बात के लिये झन्डा क्यों नहीं निकाला यह समझ में नहीं आता। अपने अधिक कार्य्य के लिये न्यायमूर्ति गवर्नमेंट से बारम्बार प्रार्थना करते किन्तु झन्डा अवश्य निकालना चाहिये था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवाओं की आवश्यकता

हमारे मित्र एक कान्य कु० ज ब्राह्मण उम्र २८ साल पेशा नौकरी वार्षिक आय२००रु०निरोग शरीर हैं।

एक वैश्य उम्र ३६साल पेंशा दूकानदारी बजाजी लेने देने वार्षिक आय अंदाजन ५००) रु० के लिये है विधवाओं की आवश्यकता अतः जिन महानुभावों को यह सम्बन्ध करना स्वीकार हों निम्नलिखित पतेपर पत्र व्यौहार करें।

पं० सिद्धिनाथ शर्म्मा——नवाबगंज कानपुर

कलकत्ता निवासी एक मैथिल ब्राह्मण वालविधवा को अपनी कन्या के लिये आवश्वकता है। जिसकी आयु लगभग १५ वर्ष है लड़की पढ़ी लिखी चतुर तथा आरोग्य है वरकी आयु २७ वर्ष से अधिक न होंनी चाहिये। दनी ४०) रु० मासिक से कम न हो।

हमारे पास सूचना कई अग्रवाल लड़कों तथा भटनागर कायस्थों के विवाह के लिये प्राथर्थना पत्र आए हुए हैं। जिन में १५)रु० मासिक से ६०) रु० मासिक तक के लड़के हैं। जिनको आवश्यकता हो पत्र व्यहार करें। स्थानाभाव इस वार अन्य आवश्यकताएं नहीं प्रकाशित की गई

निवेदक

श्रोत्रिय जगदीशदत्त बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति उपासक युरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

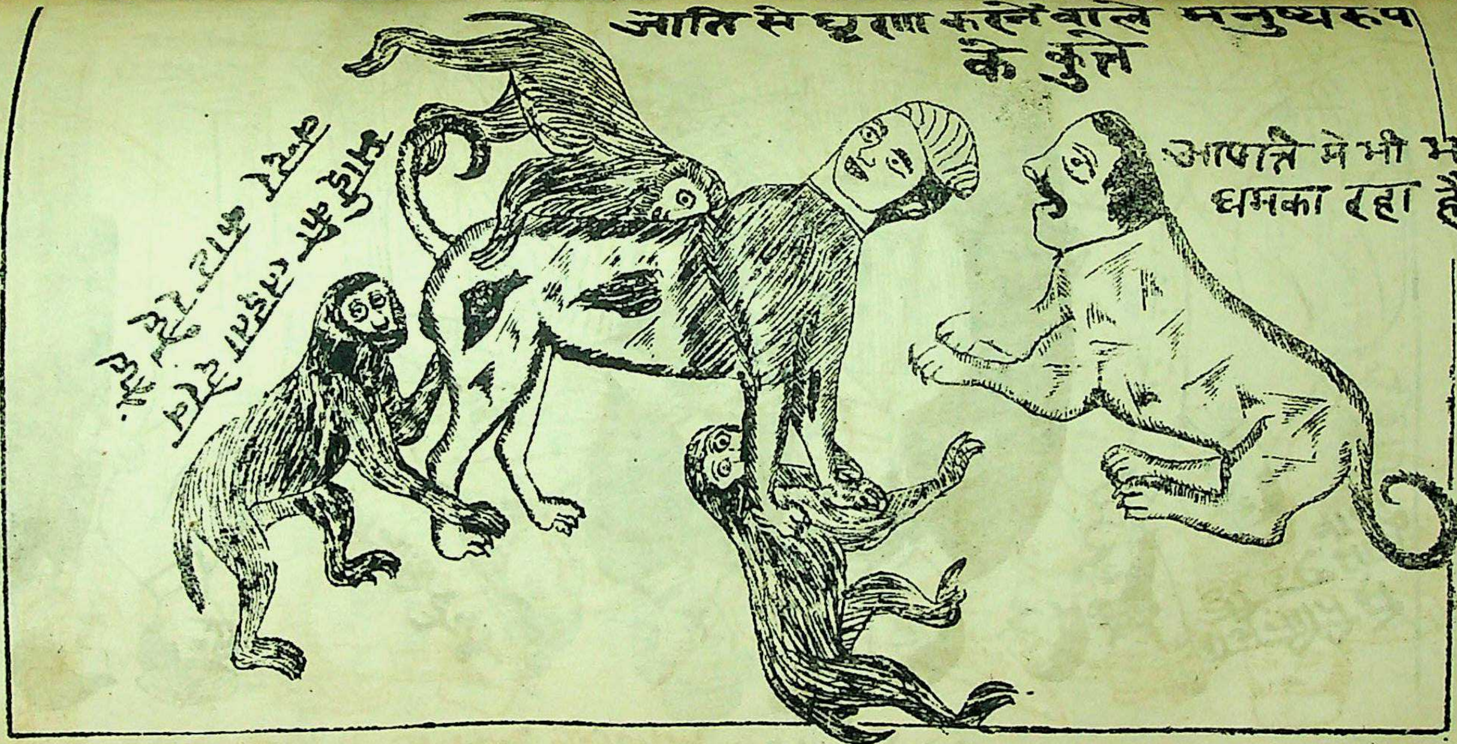

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू कुल कलंक जैयचन्द मुसलमान

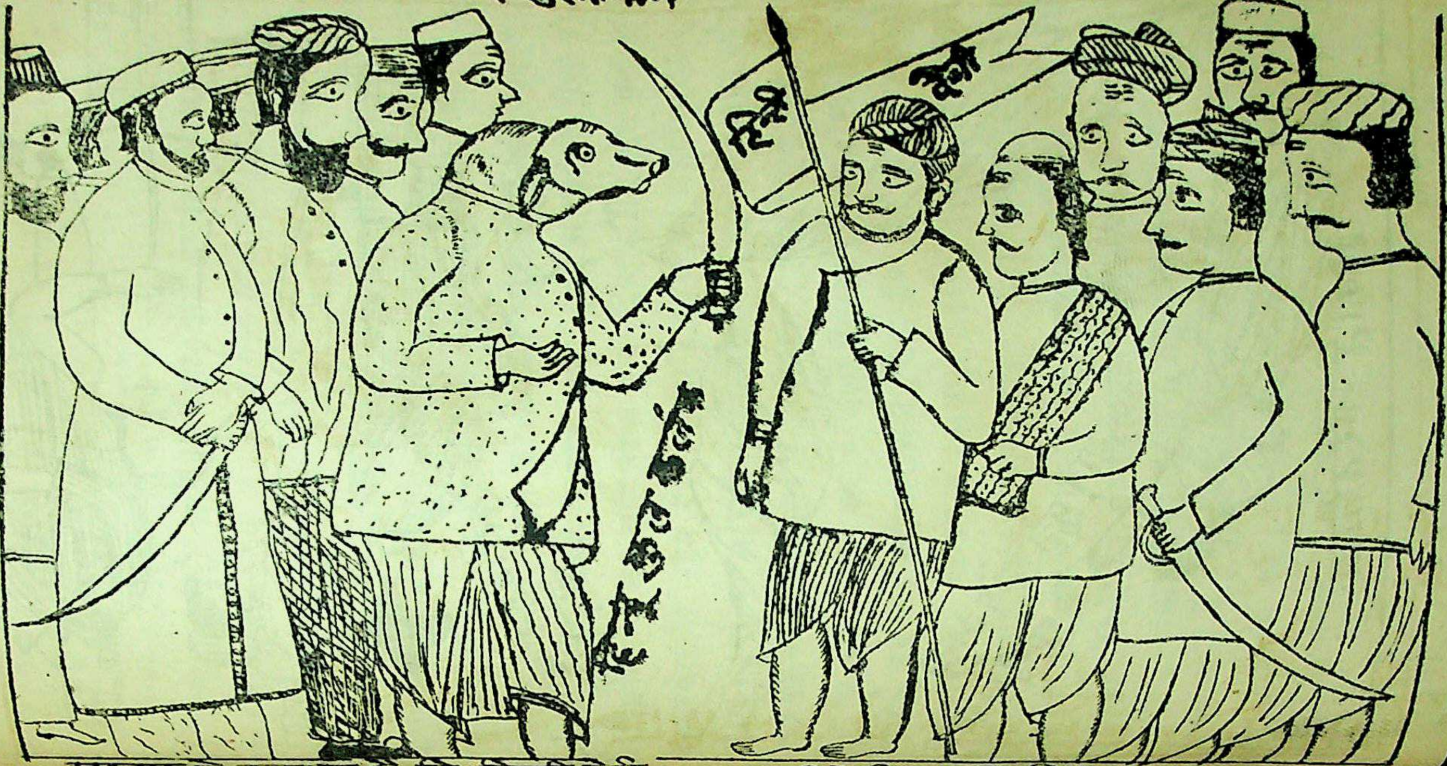

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

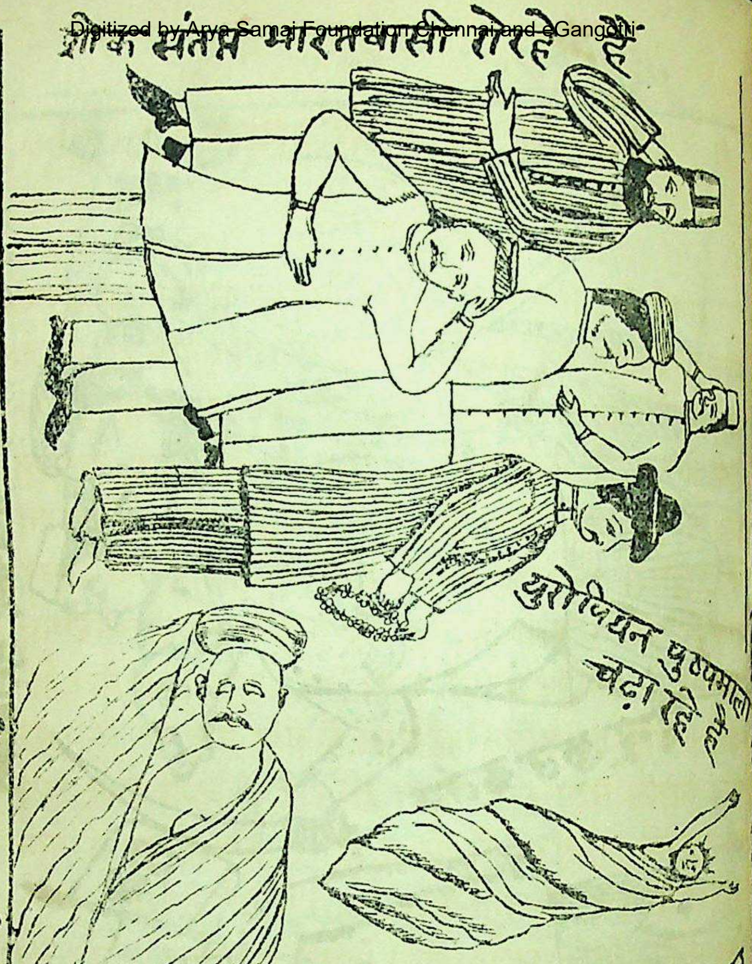

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोखले का स्वर्ग गमन ।

हाय ! हाय !! हाय !!! भारत तेरा सच्चा पुत्र तेरा सच्चा सेवक व तेरा आत्मज जो तेरे अभागे मूर्ख एवं दुखिया पुत्र के लिये अपने रक्त को वहा रहा था जो तुझे परतंत्रता की बेड़ियों से छुटने के लिये ब्रिटिश सिंह से बारम्बार स्वराज्य प्राप्ति के लिके प्रार्थना कर रहा था। हाय ! हाय !! जो महात्मा खाट पर पड़ा भी हमारे लिये मृत्यु के सप्ताह में भी सुदूर बम्बई के मार्ग से दिल्ली जा कर बड़े लाट साहब की व्यवस्थापक सभा में सम्मिलित होने वाला था। आह ! जो तेरा सेवक रत्न जन्म भर सांसारिक सुखों में लात मार कर जन्म भर अनेक आपत्ति सहन करता हुआ हाईकोर्ट की जजी आदि उच्च हज़ारों रुपयों की नौकरीयों को छोड़ तेरी सेवा में अपना जन्म ३०) की पेंशन पर व्यतीत करता था। जिसने गुणग्राही गवर्नमेंट से सी० एस० आई० जैसी मिलती हुई उच्च पदवी को भी यह कह कर स्वीकार नहीं किया कि इस के कारण मेरी देश सेवा में अन्तर न आजाय। हाय ! हाय !! तेरा सेवक हमारा सच्चा सहारा गवर्नमैन्ट का प्यारा गोखले १६ फरवरी को दस बज कर २५ मिनट पर भारतवासियों को नहीं नहीं युरोपियन मित्रों को भी बिलखता छोड़ संसार से विदा हुआ।

हे ! परमात्मन् !! तुम्हारा शङ्कर नाम आज क्यों भयंकर हो रहा है ; ऐ ! दुष्ट ! काल क्या तेरे लिये भारत का चमकता तारा ही था। ऐ ! मृत्यु ! तू ऐसी कठोर हृदय क्यों है संसार तो कहता है स्त्री अत्यन्त कोमल हृदय होती है फिर तू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत कठोर हृदय क्यों हो रही है ? ऐ ! पृथिवी !! तेरा कठोर वक्षस्थल 'क्यों न फट गया' ऐ ! देवी ! भारतभूमि सीता के समान अपने पुत्र को फट कर क्यों न अपनी ही गोद में ले लिया ?

पाठको कब तक रोओगे हृदय थाम कर परमात्मा से प्रार्थना करो कि उक्त महात्मा की आत्मा को शान्ति दे और वियोगी भाइयों को धैर्य्य दे।

बिजली के समान मृत्यु समाचार थोड़े समय में ही सारे नगर में फैलगया। हजारों नर नारी आपके अन्तिम दर्शन के लिये हाय ! हाय !! करते आने लगे। आप की रथी पूना सेवक समिति के भवन में रक्खी गई सब ने वहीं दर्शन किये। लोकमान्य भारत सिंह तिलक भी अपने भाई की मृत्यु सुन सिंहगढ़ से दौड़े आए।

अंग्रेज़ों में यह रस्म है कि अपने प्रिय मित्रों मान्य लोगों की रथी के उठाने के समय अपनी तरफ़ से फूलों की माला भेजते हैं। तदनुसार युरोपियन सज्जनों तथा अन्य मित्रों ने पुष्पमालायें भेजीं।

मि० गोखले का जन्म सन् १८६६ ई० में कोलापुर जिले के कागल गांव में हुआ था। यद्यपि वे धनवान घराने के न थे किन्तु उच्चवंश सम्भूत थे। आपने राजाराम कालेज से इन्ट्रेंस की परीक्षा पास की थी। बुद्धि के इतने तीव्र थे कि १८ वर्ष की आयु में (सन् १८८४) में बी० ए० पास किया था। बाल्यावस्था ही से उनकी धारणाशक्ति की प्रशंसा थी। वे सहपाठियों में बहुत चतुर थे। उनके बड़ों की इच्छा थी कि गोखले इञ्जीनियरी सीख कर धनकी प्राप्ति की ओर झुकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु उदार चरित्र, गोखले के हृदयने देशहितका दृढ़ संकल्प कर लिया था वह कब अर्थसंग्रह की ओर कैसे झुकता। सबसे प्रथम आप "साउथएजुकेशनल सुसाइटी में सम्मिलित होकर कर फर्गसन कालेज के लाइफ मेम्बर हुये।

इस कालेज की लाइफ मेम्बरी धन कमाने को नहीं होती निर्वाहमात्र पर २० वर्ष उसकी सेवा करने की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है। यहां आपको ७५) रु० मासिक निर्वाहार्थ मिलते थे। २० वर्ष आपने स्कूलों की देखभाल व शिक्षादि जो काम सन्मुख आया भली भांति किया। अङ्गरेजी और गणित की शिक्षा आपने कुछ दिन तक दी; पुनः पोलीटिकल एकानोमी के प्रोफेसर नियत हुये अपनीड्यूटी के अन्त समय में कालेज के प्रिंसिपल भी कुछ काल तक रहे। आपने कालेज की आर्थिक दशाका बहुत अच्छा सुधार किया। वरन् आजन्म चेष्टित रहे अपनी छुट्टी के समय आप कालेज फंड बढ़ाने में व्यतीत करते थे। कालेज की जो उत्तम बिल्डिङ्ग आज दिखाई देती है आप ही के परिश्रम का फल है। कार्यकाल से २ वर्ष पर्व कालेज की सेवा से आप इस लिये पृथक् होगये कि सार्वजनिक भलाई करने के लिये समय कम मिलता था; १९०२ ई० में कालेज से पृथक् होने पर ३०) मासिक आपको पिंशन मिलने लगी।

आनरेबिल प्रिंसिल पराञ्जये जैसे योग्यउदार सज्जन आपके शिष्य थे।

मि० गोखले २७—२८ वर्ष की आयु में बंबई की यूनीवर्सिटी के फेलो हुये। और पूने की सार्वजनिक सभा के मन्त्री नियत हुये। आपका सर्वसाधारण में यह कहना बड़े प्रेम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर से था कि कि "मैंने १२ श्रीमान् वर्ष रानडे (पं०महा देव गोविन्द) महाशय की चरण बंदना की है।

मि० गोखले २२ वर्ष की आयु में (१८८८ ई०) बंबई प्राविंशल कानफ्रेन्स में सम्मिलित हुये और दूसरे ही वर्ष नेशनल कांग्रेस में शरीक हुये और एक प्रभाव पूर्ण उदार वक्तृता दी। जिसे सुन पवलिक मुग्ध होगई। आपने नेशनल कांग्रेस की सच्ची सेवा की सन् १९०३ और १९०४ ई० को मद्रास की कांग्रेस और सन् १९०३ ई० में कराची की कांग्रेस इन तीन अधिवेशनों को छोड़ कर और जहां २ नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन हुये। उन सब में आप बराबर शरीक हुए। पूर्वोक्त ३ अधिवेशनों में सम्मिलित न होने का हेतु था।

१९०३ ई० में तो वाइसरायकी कौंसिल की सिलेक्ट कमेटी (जो यूनीवर्सिटी विल पर बनी थी) में शरीक होने के कारण नहीं पधार सके थे और दो वार आपका स्वास्थ्य अच्छा न था। आप कांग्रेस के ज्वाइन्ट जनरल सेक्रेटरी नियत हुये थे। इसको बड़ी योग्यता से निवाहते हुये १९०८ ई० में यह पद त्यागा था।

सन् १९०५ ई० में ३९ वर्ष की आयु में आप भारत की राजनैतिक महासभा (नेशनल कांग्रेस) के सभापति निर्वाचित हुये।

इङ्गलैंड व अफ्रीका में आप भारत माता की भलाई के लिये कई वार पधारे।

प्रथम वार १८९७ ई० में वलायत के रायलकमीशन में गवाही देने गए। तब आपकी अवस्था ३१ वरस की थी जिस में आपने वड़ी योग्यता से साक्षी दी थी और सर्वसाधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रण में १ प्रभावोत्पादक वक्तृता देकर इङ्गलेन्ड वासियों को चकित कर दिया था। दूसरी बार १९०५ ई० इङ्गलेन्ड गए! वहां ४६ दिन रह कर ४१ व्याख्यान दिए: और मि० आसक्वीथ प्रभृति गण्यमान्य सज्जनों से भेंट की।

तीसरी बार १९०६ ई० में बनारस से डेलीगेट होकर वलायत गये। इस वार उनका अधिक समय लार्ड मारले से वार २ मिलने में व्यतीत हुआ। लार्ड साहब आप को बहुत विश्वास पात्र समझते थे। चौथी बार १९०८ ई० में आपने लार्ड मारले से पुनः भेंट की। इस वर्ष मानो जीवन पर्य्यन्त के काम का निचोड़ कर दिया। इसके पश्चात् सन् १९१२-१३-१४ ई० में भी आप वलायत पधारे रायल पवलिक् सरविस कमीशन से दो वरस आपका सम्बन्ध रहा जबकि भारत के वकील होकर आप वलायत गए थे सन् १९१२ ई० में दक्षिण अफ्रीका भारत का मान रखने पधारे थे वहां जैसा अच्छा कार्य किया वह भारत कभी न भूलेगा।

१८९९ ई० में मि० गोखले बम्बई की लेजिस्लेटिव कौंसिल के सभासद हुए। सन् १९०१ई० में सर्व सम्मति से लाटसाहब की बड़ी व्यवस्थापक सभा के सभासद (सर फीरोज शाह महता के स्थान में) चुने गए और पश्चात् तब से यथावसर सभासद निर्वाचित होते रहे। स्वर्गारोहण समय तक सभासद ही रहे।

आप का कार्य क्रम इस सचाई और बुद्धिमता से होता था राजा और प्रजा दोनों आप के काम से प्रसन्न थे। यह धैर्य और धारण विरले जनों में होता है। सरकार आप से इतनी प्रसन्न थी कि १९०४ ई० में आप को सी, आई, 'ई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पदवी प्रदान की और गत वर्ष के० सी० एस, आई, की प्रतिष्ठा मिलती रही किन्तु उन्हों ने इस कारण स्वीकृत नहीं की कि इस के कारण उनके देश सेवा में कुछ अन्तर न आजाय— धन्य यह स्वार्थ त्याग।

मि० गोखले की योग्यता असाधारण थी लार्ड कर्जन जैसे प्रतिभाशाली को कहना पड़ा था कि 'गोखले बड़े योग्य पुरुष हैं' मि० ब्राडिक ने गवर्नमेन्ट जनरल में (१६१४ ई० में) लिखा था कि 'जहां तक सम्भव हो इस्टीमेट तय्यार करने में मि० गोखले की सम्मति पर ध्यान दिया जाय।'

लार्ड मिण्टो ने १६०६ ई० को आप की स्पीच सुनकर कहा था कि "मि० गोखले की स्पीच बड़ी २ स्पीचों में गण्य है। इंगलेन्ड में भी थोड़े आदमी इस कोटि के हैं।"

सर एडवर्ड बेकर का कथन है कि "मैं इस से ज्यादा उत्तम बात की क्या इच्छा कर सकता हूं कि मि० गोखले मेरी जगह फाइनन्स मेम्बर हों।"

सरवेंट आफ इण्डिया सुसाइटी की बुनियाद डालने वाले भी आप ही हैं। बस यही तो आखरी वसीयत करगए हैं कि भारतवासी दर्शित सुसाइटी को (जो यथार्थ में उन्हीं की भलाई का मूल है) अपनावें।

(चरित्र भारत सुदशा प्रवर्तक से)

सँयुक्ता की पृथ्वीराज को रणबिदा।

प्राणनाथ ! सहर्ष रिपु संहार को तुम जाइये
शोच मेरी ओर का निज उर में कुछ न लाइये
धर्म अपना मैं विभो ! पालन करूंगी सर्वदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतीत्व को मेरे प्रभो न डिगा सके कोई आपदा
प्राण सम प्यारी प्रजा को यवन रिपु दुःख दे रहा
धन धान्य सारे देश का हा! हा! रिपु है लेरहा
प्राणेश! जल्दी जाइये संहार रिपु का कीजिये
निज वैरी को यमपुर पठा जग में बड़ाई लीजिये
हा! पिता जी ने यह काम कैसा है किया
लाये रिपु को यहां लिवा जग में महा अपयश लिया
आर्य वीर हे क्षत्री पुत्र कर में गहो अपनी कुठार
ले सैन्य अपनी जाइये और कीजिये रिपुका संहार
सत्य के संग में हरे रहती विजय लक्ष्मी सदा
फिर पराजय का अहो है शब्द अनुचित सर्वथा
उठो उठो हे वीरवर! नहिं देर का कुछ नाम लो
मार कर निज शत्रुओं को सुख से फिर विश्राम लो
वीर गति को प्राप्त होकर स्वर्ग को यदि जाओगे
प्राणेश मुझको प्रथम ही वहां पर उपस्थित पाओगे
सहर्ष मैं देती विदा रण में गमन अब कीजिये
संहार रिपु का कीजिये जग में बड़ाई कीजिये
(सूर्य्यबल विद्यार्थी)

नया विधवा विवाह

श्रीमती रामा बाई का पुनर्विवाह बिहारी लाल जी कान्यकुब्ज ब्रह्मण के साथ वैदिक रित्यानुसार ११-१-१५ ई० सोमवार को पं० भगवानदत्त जी शर्म्मा लखनऊ के मकान पर सानंद हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवालिये का दावा।

मैनपुरी के एक दिवालिया लाला दम्मीलाल जी ने अबलाहितकारक पर दफा ५०० ताजीरात हिन्द के अनुसार दावा किया था। क्योंकि उक्त दिवालिया साहब की बेईजती अबलाहितकारक में यह छपने से होगई है कि मेरे पुत्रके लिये बालविधवा की आवश्यकता है। उक्त समदर्शी दिवालिया दम्मीलालजी के कोई पुत्र नहीं और आप ने अपने भतीजे श्रीदयाल को गोद भी नहीं लिया किन्तु पुत्र के समान पाला है। बालविधवा की आवश्यकता का विज्ञापन आषाढ़ १९७१ के अङ्क में छपा था जिस में बरनाहल शब्द रहगया जिस की भूल संशोध श्रावण १९७१ के अङ्क में हो चुकी थी।

आषाढ़ के अबला हितकारक में सेठ लाला दम्मामल के पुत्र के लिये विज्ञापन है। मैनपुरी निवासी दिवालिया दम्मीलाल साहब ने दावा इस लिये भी किया था कि आप के भतीजे श्रीदयाल की सगाई कहीं से आने वाली थी जिस जगह और लड़की के पिता का आप को नाम मालूम नहीं" किन्तु वह उक्त विज्ञापन छपनें से नहीं आई। और बिरादरी वालों ने आप को अपने गिलास में पानी नहीं दिया हुक्का भी हटा लिया जिस से अपमानित होकर आप ने अबलाहित कारक पर दावा कर दिया क्योंकि दिवालिया लाला दम्मीलाल पहिले अपने विवाह के कारण एक वर्ष बिरादरी में से पतित रहचुके हैं यह विवाह आप का ३० वर्ष की आयु के पश्चात् बारह सौ रुपया देकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। उस समय आप को बिरादरी ने पतित कर दिया था कि लड़की में ठगी है(ठगी शब्द का अर्थ हमारी समझ में नहीं आया कि इस से मुस्तगीस दिवालिया का क्या अभीप्राय है) मुस्तगीस दम्मीलाल से पूछा गया कि लड़की में क्या ठगी है किन्तु आप को यह मालूम नहीं था क्या ठगी है। इस लिये आप नें केवल बिरादरी के यह कहने पर कि की लड़की में ठगी है बेचारी अबला को छोड़ दिया था। ईश्वर जाने जन्म भर कहां रही होगी और उस का धर्म किसी प्रकार रहा होगा। हमारे सीधे सत्यवादी दिवालिया को ३०बर्ष से अधिक आयु में इतना भी पता न था कि उस में क्या ठगी थी। जैसा बिरादरी ने कह दिया बस वैसा ही दिवालिया दम्मीलाल ने सच जान कर अपनी बारहसौ रुपए की पत्नी को त्याग दिया प्रथम दिवालिया होने से जो शेष इज्ज़त रही थी वह अब गई जान कर दोषी सम्पाकदक पर दावा करदिया।

अब आप का दिवाले का घाटा पूरा हो गया मालूम होताहै क्यों कि अब आप के यहां आढ़त की दूकान भी है शायद डिग्री दार का रुपया भी देदिया होगा।

पाठकों का अधिक समय दिवालिये के दावे में नहीं खोना चाहते केवल दिवालिया का बयान मय जिरह प्रकाशित करते हैं जिस से हमारा दोषी होना या निर्दोष होना पाठकों को विदित हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकल बयान ।

नकल बयान मुकदमा नं० २७२ सन् १९१४ ई० लाल दम्मामल बनाम सोती जगदीशदत्त वल्द सोती शङ्करलाल शर्म्मा कौम ब्राह्मण साकिन बिजनौर पेशा अडीटरी अखबार अबलाहितकारक मुलज़िम जुर्म दफा ५०० ताजीरात हिन्द थाना मैनपुरी इजलास जनाब बाबू त्रिवेनी सहाय साहेब वहादुर मजिस्ट्रेट दर्जा १ जिला मैनपुरी फैसला ता० ९-११-१९१४ ई०

अदालत बाबू त्रिवेनी सहाय साहब डिप्टीकलक्टर दर्जे अव्वल जिला मैनपुरी मुकदमा नं० २७२ मलिक मुअज़म कैसरे हिन्द बनाम जगदीशदत्त बयान मुस्तगीस जो अजरुय हलफ जिसको याकूबअली हेड कानिस्टबिल. ने दिया तारीख ७ नवम्बर सन् १९१४ ई० लिखा गया—

मेरा नाम दम्मामल बाप का नाम गनेशराम मेरी जात बनिया अग्रवाल उमर ५० साल पेशा आढ़त नाज मेरा घर मुकाम मैनपुरी थाना मैनपुरी जिला मैनपुरी है । मैं बमुकाम मैनपुरी मुहल्ला गाड़ियान में रहता हूं । मेरा दूसरा नाम दम्मीलाल भी है मुझको दम्मीलाल भी कहते हैं । और यहही नाम; मेरा कागज़ात में लिखा जाता है और मुझको लोग दम्मामल कहते हैं मेरी बिरादरी में और कोई दम्मीलाल या दम्मामल इस शहर मैनपुरी में नहीं है। अबला हितकारक मैंने सिर्फ डेढ़ माह हुआ तब देखा था : मुझको पहिले पहिल गुरसहाय ने यह अखबार दिखलाया था। इन्हों ने मुझसे पूछा था कि तुमने कोई नोटिस लड़के की शादी की बाबत छपवाया है या नहीं मैंने जवाब दिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। अखबार जिसमें यह नोटिस छपा है मैंने दाखिल किया है सफा १२४ पर नोटिस हस्बजैल है । मैनपुरी निवासी लाला दम्मामल को अपने पुत्र के लिये एक अग्रवाल विधवा कन्या की आवश्यकता है । कन्या की आयू १४ साल से २० साल तक होनी चाहिये और बन्सल गोत्र न होना चाहिये लड़का भी नाज की आढ़त का काम करता है । जिससे मासिक आमदनी ३०) है । पत्र व्यवहार लाला दम्मामल मैनपुरी इस पते से होना चाहिये जब इस नोटिस की शोहरत मेरी बिरादरी में हुई तो मेरे बिरादरी वालों ने मुझसे कहा कि तुमने ऐसा नोटिस अखबार में छपाया है मैंने कहा कि नहीं। जैलाल, पान्नलाल, चुन्नालाल गुलाफ़ीदास, दाऊदमल, गुरसहायमल, ने मुझसे कहा कि हम तुम से व्यवहार छोड़ देंगे तुमने ऐसा नोटिस दिया बुरा किया। मेरी बिरादरी के आदमी भीतरी तौर से अब मुझसे नफ़रत करते हैं गो जाहिरा नहीं जाहिर मुझको लोगों ने अपने हुक्के मुझे दूरसे देख कर हटाए और मुझको अपने गिलास में पानी देने से इन्कार किया । इस नोटिस के छपने से ही मेरी तौहीन हुई और लड़के की शादी होने को थी वह रुक गई यानी लड़के की यानी मेरे भतीजे की श्रीदयालकी शादी की बातचीत होती थी । वह लोग शादी की बात चीत से रुक गए मेरे कोई लड़का नहींहै मेरे दो भतीजे श्रीदयाल और सूरजभान हैं । यह दोनों मेरे सगे भाई के लड़के हैं । और मेरे साथ रहते हैं । इन दोनों के बाप मर गये और उनके बाप के मरने के बाद से मैंने इन दोनों को मिस्ल लड़केके पाला व सवाल वकील मुलज़िम बयान किया कि मेरा मशहूर नाम दम्मोलाल है छुटपन से लोग मुझको दम्मामल भी कहते हैं मैं हाउस टैक्स और हैसियत टैक्स भी देता हूं मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस साल का टैक्स अदा कर दिया है और रसीद मुझको मिल गई है मुझे ख्याल नहीं है कि रसीद में मेरा नाम दम्मामल है या दम्मीलाल है मैं अदालत जज्जी से दीवलिया क़रार पाया हूं दीवालिया होने का जो सवाल मैंने जज्जी में दिया था उसमें मैंने अपना नाम दम्मीलाल लिखा है अदालत में जो दावा और वकालतनामा मैंने दाखिल किया है। उस में दम्मीलाल नाम लिखा है मेरा गोत्र गोयल है मैंने अपने किसी भतीजे को गोद नहीं लिया है श्रीदयाल मेरे भतीजेकी उमर १८ सालकी है श्रीदयाल कहीं पढ़ता नहीं है वह मेरी हीं दुकान पर बैठता है। आढ़त का काम मेरे नाम से दूकान मेरे नाम से है मेरे भतीजे के नाम से दूकान नहीं है यह दुकान पर बैठता है और काम करता है उसकी परवरिश करता हूं उसकी अलग कोई आमदनी नहीं है अखबार प्यारेलाल के यहां आता है नोटिस मुझ को गुरसहायमल ने पढ़कर सुनाया था वह अखबार अषाढ़ के महिने का है कोई तहरीर मुलजिम को नहीं भेजी। गुरसायमल ने मुझ से कहा था कि हम उसकी तसदीक करेंगे जब गुरसहायमल को जवाब नहीं मिला तब मैंने वकील साहब बाबू राधेलाल से तार दिलाया था। अडीटर को तार दिलवाया जो जवाब अडीटर का वकील के पास तार का आया वह मिसल में दाखिल है दावा दायर करने के बाद मुलजिम का एक खत मेरे पास रजिस्टरी किया हुआ आया था वह भी दाखिल करता हूं इस लिफाफे पर अदालत ने (ऐ १) और (ऐ २) खत पर लगाया मैं मुलजिम को पहिले से नहीं जानता हूं मुझ को नहीं मालूम है कि मुलजिम मुझको पहले से जानता है या नहीं बिरादरी के आदमियों ने मुझ से कहा कि हम तुम को बिरादरी से निकाल देंगे। दाऊदमल और जैमल, ने मुझे इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर हुक्का हटाया था यह लोग अपनी दूकान पर बैठे हुये थे मैंने खुद किसी से पानी नहीं मांगा मुझे देखकर लोटा और गिलास हटा दिया था मेरी शादी एक हुई है दूसरी शादी एक जगह और हुई थी उसमें कुछ ठगी निकली थी जिसको १५ साल हुए। मेरी बिरादरी के लोगोंने कहा था कि अगर तुम इसको रक्खोगे तो हम तुम को बिरादरी से खारिज कर देंगे उस लड़की में कुछ नुक्स था इस लिये मैंने उसको लड़की वाले को वापस कर दिया था एस साल तक मुझको बिरादरी के लोगोंने इस शादी की वजह से खारिज रक्खा एक साल बाद बिरादरी ने लिया मुझे याद नहीं है कि मैंने किसी कागज में अपना नाम दम्मामल लिखा है या नहीं। मैं इस समय बिरादरी से खारिज नहीं हूं। रङ्गीलाल की मारफत मेरे भतीजे की शादी की बात चीत हो रही है। मैं नहीं जानता कि यह कहां शादी ठहराते हैं बन्दल गोत्र में श्रीदयाल की शादी नहीं हो सकती क्योंकि उसका ननहाल बन्दल गोत्र में है यह सवाल वकील मुलजिम बयान किया कि दस बारह साल हुए जब दीवालिया होने की अर्जी दी थी। मेरे पास सावन का अबला-हितकारक नहीं आया मैंने मेखा कि चिट्ठी (ए२) में लिखा है कि सावन का अबला हितकारक भेजा जावेगा सुनकर तस्दीक़ किया।

दस्तखतहाकिम अङ्गरेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिवारिक दृश्य

(लेखिका श्रीमती शकुन्तला देवी)

करुणा—बहिन कल्याणी जी क्या मंगा रही हो

कल्याणी—कुछ नहीं मिठाई मंगाती हूं।

करुणा—ऐसी क्या आवश्यकता है जो उधार मंगाती हो जब पास रुपया नहीं तब न मंगाओ क्योंकि उधार मंगाने से बड़ी हानि होती है।

कल्याणी—हानि की क्या बात है मूल्य तब भी दिया जाता है और नक़द में भी दिया जाता है। केवल इतना भेद है उधार से समय पर काम रुकता नहीं और प्रत्येक समय पास रुपया नहीं रहता।

करुणा—बहिन तुम नहीं जानती कि उधार खरीदना बड़ा अपव्यय(फ़ज़ूल खर्ची)है उधार केवल विवशता के समय ठीक होता है बरन् इस से बढ़कर अपव्यय और मानहानि के कारण कम हैं।

कल्याणी—कृपा करके समझाईये तो सही उधार लेना किस प्रकार से अपव्यय और मान हानि का कारण है।

करुणा—ध्यान से सुनो—तुम यह तो जानती हो कि उधार लेने में कुछ अधिक मूल्य देना पड़ता है क्योंकि ज्यादा हुज्जत दूकान्दार से नहीं कर सकते जैसा माल उसके यहां होगा प्रायः वही लेना पड़ेगा अधिकतर उस की इच्छानुसारही मूल्य देना पड़ता है और वह कह देता है जैसा है आप के आगे है इच्छा हो लो और इच्छा हो न लो। यदि नकद लोगे तब इच्छानुसार बाजार में दस जगह देख कर उत्तम वस्तु खरीदोगे। प्रायः यह देखा जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि दूकानदार यह भी कहदेते हैं कि रुपए पीछे एक आना या आध आना उधार में बट्टा देना पड़ेगा।

कल्याणी—नहीं हमारा हलवाई और बज़ाज तो नहीं कहता कि वट्टा देना पड़ेगा।

करुणा—वह साफ नहीं कहता तो भाव में ज्यादा दाम या तौल में कमी कर लेता होगा और सूद तो अधिक दिन बाद लगाता ही होगा।

कल्याणी—सूद तो कभी २ लगा ही लेता है।

करुणा—अच्छा हिसाब लगाओ कि फी रुपया कितनी हानि उठानी पड़ती है। उस दिन तुमने हरी साड़ी १२)रु० में मंगाई थी और उसी साथ की साड़ी चन्द्रवाला देवीने १०)रु० में मंगाई थी इस प्रकार के हिसाब से यह स्पष्ट है कि उधार मंगाने में कम से कम दो आना रुपया अर्थात् अष्ठमांश अवश्य ज्यादा देना पड़ता है इसी प्रकार १००)रु०की वस्तु उधार लेने में १२।।)कीहीहानि नहीं प्रत्युत एक आना जो दस्तूरी मिलती वह नहीं मिलेगी ६।)की यह भी हानि उठानीपड़ेगी अर्थात् १००)रु० पीछे १८।।।) की कमी होगी।

कल्याणी हां बहिन जी ठीक है उधार लेने से बड़ी हानि होती है। इस हिसाब से देखा जाय तो जिन्दगी में हजारों रुपया यूंही बरबाद होजाता है।

करुणा—तुम्हीं बिचारो यदि यह रुपया किसी विद्यालय को दान दिया जाय तब कितना यश और पुण्य हो अथवा सन्तान के लिये संचित किया जाय तब सन्तान का जीवन और अपना जीवन आनन्द मय होसकता है।

कल्याणी—ठीक है वहिन जी किन्तु कृपाकर के यह बताइये कि मान हानि किस प्रकार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुणा—सुनो नकद खरीदने वालों को प्रत्येक सौदागर मान दृष्टि से देखता है किन्तु उधार सौदा खरीदनें वालों को एक दूकानदार का पाबन्द होना पड़ता है क्योंकि यदि वह अन्य दूकान से सौदा खरीदेगा तब उधार देने वाला बिगड़ कर अपने रुपए का तक़ाज़ा या नालिश करेगा इस से सिद्ध है कि स्वतंत्रता में बाधा और सम्मान में कमी होती है।

इसके सिवाय देखा जाता है कि नकद और उधार सौदा लेनें वाले दो व्यक्ति जब दूकान पर जाते हैं तब सौदागर नकद लेनें वाले से ही प्रथम बात करते हैं और प्रसन्नता से उस की इच्छानुसार वस्तुएं दिखाते हैं तथा उधार लेनेंवाले को उस प्रसन्नता से नहीं दिखाते जो माल कम बिकता है वह उधार लेने वालो के ही प्रायः सिर मढ़ा जाता है। इत्यादि बातों से स्पष्ट है धन और मान दोनों का नाश करना ही उधार लेना है।

कल्याणी—बहिन जी मैं आप अनेक धन्यवाद करतीहूं जो आप ने मुझे महा अपव्यय से बचा कर सुख का मार्ग बताया मैं प्रतिज्ञा करती हूं अब कभी उधार चीज़ नहीं, मांगने की।

करुणा—बहिन केवल उधार लेने की ही प्रतिज्ञा से जीवन आनन्दमय नहीं होता। प्रत्युतः धन संचिय करने की प्रतिज्ञा करो क्योंकि ऐसा न करने से आपत्ति समय में रुपया पास न होने से अत्यन्त कष्ट उठाने पड़ते हैं और यदि उधार लिया जाय तब समय पर आवश्यकता पड़ने के कारण सौकार को उसका मन माना सूद देना पड़ता है।

कल्याणी—अच्छा बहिन जी यह तो बताइये संचय किस प्रकार करने की आदत हो क्योंकि संचय करने से लोग कंजूस कह कर निन्दा करेंगे। (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बियोगनी

स्वर्गस्थ बा० बालाराम राजाराम जौहरी के स्मरणार्थ

प्रथम निःश्वास।

बाल विवाह

शास्त्राद्बुद्धिर्बलीयसी

पं० अमृतलाल चौबे कानपुर के एक प्रसिद्ध सद् ग्रहस्थ हैं इनकी पूर्व दशा बहुत अच्छी थी, पहिले यह दो तीन गांव के ज़मींदार थे परन्तु सर्वदा सद्धर्म्म प्रियता तथा अनाचारादि अधर्म्म से प्रथकता के कारण ये अपनी साम्पत्यस्थिति को नहीं सुधार सके आज इनके उपार्जितबारह सहस्र मुद्रा कोष (बंक) में जमा हैं। इनका कुटुम्ब अधिकहोनेसे उपरोक्त मुद्रा के सूद-व्याज-मात्र ही से यह ज्यों त्यों अपने घर का खर्च चलाते हैं। इस समय इनकी आयु ५० वर्ष कीहै, परन्तु अनेक प्रकार की सांसारिक चिन्ताओं से शरीर क्षीण होजाने के कारण ६० वर्ष के विदित होते हैं।

अमृतलाल की स्त्री का नाम सरस्वती है। सरस्वती की उमर इस समय लग भग ३४ वर्ष की होगी। ४३ वर्ष के पति तथा २७ वर्ड की अवस्था पत्नी की होजाने पर भी इन्हें सन्तान सुख की प्राप्त नहीं हुई। इस कारण दम्पति सदैव उद्विग्न रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते थे, किन्तु यह सन्तान सुख की लालसा से देवानुष्ठान इत्यादि कृत्य सदैव किया करते थे, जिससे अल्प काल में देवानुष्ठान बल से कहो किम्बा अन्य प्रकार से कहो—इन्हें एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई। ज्योतिष शास्त्रानुसार माता पिता ने पुत्रवत् प्रिय पुत्री का नामाभिधान "विमला" रक्खा वन्ध्या (बांझ) को यदि पुत्रि ही प्रसूत हो, तो भी वह उन्हें कितनी प्रिय होजाती है, ये वार्ता सर्व महाशयों पर भली प्रकार विदित ही है। इस लिये बिमला अपने माता पिता को कितनी और किस प्रकार प्रिय थी; इसका उल्लेख करना बाहुल्यता मात्र ही कहा जा सकता है। संक्षिप्त में ही यदि कहा जाय तो अमृतलाल तथा सरस्वती को अपनी एक मात्र प्रिय पुत्री का क्षण भर का वियोग भी असह्य हो जाता था।

अपनी अत्यन्त श्रम से प्राप्त हुई कन्या को देख देख कर अमृतलाल तथा सरस्वती अपनी आयु के दिन आनन्द सहित व्यतीत करने लगे। उनके सर्व सुख शुभाशा तथा, आनन्द का समस्त आधार केवल बिमला पर ही अवलम्बित था। अमृतलाल तथा सरस्वती एक मात्र बिमला को उपलक्ष कर अनेक प्रकार की मानसिक आशाएं—अनेक प्रकार के मानसिक सुख तथा अनेक प्रकार के आनन्दानुभव करने लगे, जिसका सम्पूर्ण वर्णन अशक्य है, कारण कि इस कार्य की सिद्धि के लिये तो उनके हृदय ही में प्रवेश करना चाहिये, तथा इस प्रकार का होना भी तो कठिन है, इसी प्रकार सब आशा, सुख तथा आनन्द की दिन प्रति दिन वृद्धि होती जाती थी। इस समय बिमला की अवस्था सात वर्ष की है, तथा वह दिन दिन अपने माता पिता के आनन्द में वृद्धि कर स्वतः भी शुक्ल पक्षी चन्द्रमा की तरह ब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढ़ती जाती थी। सरस्वती को विमला के विवाह की प्रबल इच्छा हुई, इस कारण यह नित्य प्रति पति को कोसने लगी, अड़ोसी पड़ोसियों के द्वारा भी अमृतलाल को बहुत उसकाया। निदान पत्नी के दुराग्रह तथा पड़ोसियों के वचन बाणों से पराजित हो कर अन्त में अमृतलाल ने अल्पकाल में ही पुत्री का विवाह करना निश्चय किया।

अमृतलाल का घर चौराहे के एक प्रसिद्ध मार्ग पर बना था, तथा वह एक पुराने ढांचे का था। तो भी वह मज़बूत और विशाल होने से विवाह आदि कार्य्य के लिये अत्यन्त उपयोगी था? इस कारण उन्हें विवाह प्रसंग में दूसरे घर की आगत्यादि का किसी प्रकार कष्ट नहीं सहना पड़ा। योग्य सार सर्वसामग्री प्रस्तुत कर तथा शुभ क्षण और शुभमहूर्त देख कर यथा शक्ति समारोह से अपने पड़ोसी धनाढ्य गृहस्थ पं० केशव लाल त्रिवेदी के एकलौते पुत्र हरिप्रसाद के साथ विमला का विवाह सम्बन्ध कर दिया।

हरिप्रसाद की उमर उस समय आठ वर्ष की थी। उसका सौंदर्य अवर्णनीय होने से यही कहते बनता है कि सोना और सुगन्ध क्या यह अल्पानन्द का समय कहा जाता है? विमला के माता पिता के आनन्द की सीमा न रही! परन्तु विमला को केवल सतवर्षीया बालिका होने से यह आनन्द अच्छा नहीं लगा। उसने मन में विचारा कि "ये क्या स्वांग है, इस से तो मैं अपनी सखियों के साथ ही खेलती तो अच्छा था" इच्छा न होने पर भी दूसरे दिन विमला सुसराल को विदा की गई। अमृतलाल तथा सरस्वती पुत्री वियोग से रोने लगे विमला ने भी करुणोत्पादक रुदन आरम्भ किया। विमला डोली में माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता को छोड़ कर कहीं नहीं जाउंगी' पड़ोसी उसे समझाने लगे परन्तु उस अज्ञात बालिका को यह सब बातें समझने का ज्ञान कहां ? बिमला ने कहा "मुझे ये बाजे गाजे अच्छे नहीं लगते, मेरा विवाह रोक इन्हें (बारात वालों को) विदा करा दो" एक पड़ोसिन ने उसे धमका कर कहा 'चुप पगली, क्या कभी विवाह रोका तथा बन्द किया जाता है'। बिमला ने उत्तर दिया "रुक क्यों नहीं सकता ? मैं ने तो अपनी सखियों के साथ कई बार गुड्डा गुड्डियों का विवाह किया है, उसी प्रकार तुम भी क्यों नहीं करते।"

बिमला का अष्टमवर्षीय पति वहीं खड़ा था। उसे एक स्त्री ने कहा 'देखता है क्या ? लेचल इसे हाथ पकड़ कर।' हरिप्रसाद भी तो बालक ही था, इस प्रकार स्त्रियों की ठट्ठा मसखरी को वह क्या समझे ? उसने बिमला को सम्बोधन करके कहा "चल ना क्यों खड़ी है ?" स्त्रियां हँसने लगीं बिमला ने पुनः रोना आरम्भ किया। स्त्रियों ने विचारी रोती हुई निर्दोष बालिका को बलात्कार पालकी में बैठा दिया। बिमला ने पालकी में भी अपना रोना जारी ही रक्खा। अमृतलाल की जाति की एक वृद्धा स्त्री भी उसे (बिमला को) समझाने के लिये पालकी में बैठी, किन्तु बिमला रोते रोते ही ससुराल पहुंची। इधर प्रिय पुत्री के वियोग से सरस्वती भी रोने में प्रवृत हुई। अमृतलाल भी असह्य पुत्री वियोग को सहन नहीं कर सके।

पुत्रि प्राप्ति के आनन्द में अन्य आनन्द की वृद्धि करने के लिये ही अमृतलाल तथा सरस्वती ने बिमला का विवाह किया, फिर रोना किस लिये ? यह आनन्दाश्रु तो नहीं ? नहीं ये भी नहीं ? तो फिर क्या ? बिमला अब तक हमारी थी, तथा अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे की हुई। स्यात् यही कारण होगा। रुदन का यह कारण भी सम्भावित है किन्तु पहिले तो इतनी अल्प अवस्था बालिका के विवाह करने का साहस अमृतलाल तथा सरस्वती ने किया ही क्यों ? मनुष्य विचारता है कुछ, और उससे हो कुछ जाता यही संसार की विचित्र लीला है।

द्वितीय निःश्वास।

बाल विधवा।

ईश्वरानुग्रह से बिमला का विवाह कार्य निर्विघ्न समाप्त हुआ। जो बिमला बाल्यावस्थासे जनक जननी के प्रेम के अतिरिक्त अन्य प्रेम को नहीं जानती थी, उसे आज दैवानुग्रह वा प्रजापति की प्रसन्नता से सास श्वसुरादि का प्रेम भी अनुभवित हुआ। अब बिमला विवाहिता हो स्वामी के छत्राश्रय हुई। किन्तु "स्वामी" शब्द का क्या अर्थ होता है' यह जानने को वह अशक्त है। यदि परमेश्वर की कृपा होगी तो बिमला बल्लभाविलास से सुखिनी होगी।

इस प्रकार से बिमला के माता पिता मन ही मन चिन्ता किया करते थे' परन्तु विमला को इस प्रकार की चिन्ताओं में निमग्न होने का समय ही नहीं था। विमला को विवाह आनन्द का रञ्चमात्र भी सुखानुभव नहीं हुआ। वह केवल यही समझती कि' 'प्रथम सिन्दूरादि शृंगार नही करती सो अब करने लगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार देखते २ एक दिन, दो दिन, मास, दो मास, वर्ष, दो वर्ष बीत गए हरिप्रसाद की अवस्था दश वर्ष की हुई। इस दो वर्ष के समय में सरस्वती सदा पुत्रि तथा जायाता को अपने घर बुला कर उन्हें खिला पिला, नूतन नूतन वस्त्राभूषण पहिना, अपनी गोद में बिठा कर अवर्णनीय स्वर्ग सुख का अनुभव लिया करती थी। सरस्वती को विमला के विवाह का सुख उपरोक्त क्रिया द्वारा ही प्राप्त होता था। बहुधा विमला पितृ ग्रह ही में रहा करती थी। इस समय विमला की अवस्था नव वर्ष की थी। वह ग्राम पाठशाला में पढ़ने जाती थी, उसकी बुद्धि इतनी चपल थी कि जो पाठ अन्य बालिका यें सात दिन में याद करती थीं विमला वह पाठ एक ही दिन में याद कर लेती थी। अज्ञात मनुष्य भी देखते ही विमला को प्रीति करने लगते थे यह साधारण नियम था। एक तो विमला सुन्दर बालिका थी उसमें विशेष लज्जा, नम्रता, सौजन्य, दया, माया तथा प्रेम उत्तम गुणों के वास होने से वह प्रत्येक व्यक्ति की तत्काल प्रेम भाजन बनजाती थी।

एक दिन विमला सन्ध्या समय पाठशाला से घर आ रही थी, इतने में अपने घर से निकलती हुईने रोदन सुना। विमला घबराई और दौड़ती २ घर में आई। वहां आकर क्या देखती है कि उसकी माता धरती पर पड़ी हुई आर्तनाद कर रही है सरस्वती के साथ वहां पर दो एक दूसरी स्त्रिया भी बैठी उसके रोने में योग देती थीं ये सब अद्भुत घटना देख विमला भी गाडर प्रवाह न्यायवत् विना कारण जाने ही रोने लगी विमला को रोते देख अन्य स्त्रियों ने पहिले से विशेष रोना आरम्भ किया। कुछ समय पश्चात् विमला का मन इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण रुदन से उक्ता गया ।

विमला रोते २ स्वमाता के समीप बैठ एक एक उस मुह निहारने लगी' तदुपरान्त पश्चात् माता के निकट बैठ कर उसकी छाती पर अपना मस्तक धर पुनः रोने में प्रवृत्त हुई । अनुमान एक घड़ी पश्चात् विमला के रोने का अन्त आया । उसे अस्वभाविक रुदन प्रिय नहीं था' कारण कि उस रोने के कारण की ही खबर न थी । किन्तु अब भी विमला की माता' "अरे ? आज हमारी दुग्धवत् निर्मल पुत्री विधवा होगईरे ? ,, ऐसे शब्दोचारण कर रोती ही थी । इन शब्दों से विमला इतनी तो समझ गई कि' "मैं विधवा होगई हूं । " परन्तु वैधव्य में क्या हानि समाई हुई है; इस की कल्पना उसकी अल्प बुद्धि में नहीं आसकी । अन्त में उकता कर वो वहां से बाहर निकल गई ।

बाहर बैठक में भी अमृतलाल सरस्वती के समान रोते हुए विमला की दृष्टिगत हुए । कन्या को अपने पास बिठाल कर अमृतलाल ने कहा, "हाय ! बेटा तेरे भाग्य में विधाता का यह दुःख भी लिखा हुआ था । " इतना कह कर वह सिसक २ कर रोने लगे ।

अपने पिता के कहने का भावार्थ विमला नहीं समझ सकी उसने अज्ञात दशा ही में पूंछा, "बापू ! क्यों रोते हो ?

पुत्री की इस प्रकार भोली भाली बात सुन कर अमृतलाल का हृदय और भी भर आया, वह और भी ज़ोर ज़ोर से रोने लगे । अमृतलाल बोले, "बेटा ! हम किस लिये रोते हैं, सो तू नहीं जानती इस लिये सुखी है । हम तेरे माता पिता दुर्भाग्यवश आज जिस असह्य दुःख का अनुभव कर रहे हैं । यदि इस दारुण दुःख का कारण तुझे भी मालूम होता तो, तू हम से भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक दुखी होती ! " बिमला स्तब्ध होकर बैठ गई ।

तृतीय निःश्वास ॥

बाल विवाह का फल

रजनीनाथ सुधाकर के लोप (अस्त) होते ही जिस प्रकार निशा निस्तेज होजाती है—ठीक उसी प्रकार हरिप्रसाद के स्वर्गवास से बिमला आज विधवा के नित्य नाम से पुकारी जाने लगी । सरस्वती की एक मात्रप्रिय पुत्री आज बाल विधवा होगई ? हे दैव ? तुझे इस प्रकार सदा उलटे बर्ताव की इच्छा क्यों हुआ करती है ? विमला के माता पिता को अपनी एकमात्र कन्या का बाल्यावस्था में विवाह करने का कारण यही था कि वो सुखिनी हो; परन्तु ये तो उस के विरुद्ध पक्ष दुःखिनी हो गई। इस विषयमें बहुधा लोगों को यह कहते सुना है कि, " तो दैव गति है, मनुष्य क्या कर सकता है । " उनका यह कहना सर्वथा अयोग्य है, कारण कि, "दैव" ये तो अपने पूर्व जन्म के उद्योग का दूसरा नाम है ।जिससे यह भली प्रकार सिद्ध है, कि इस विषय में दैव किसी प्रकार भी दोष नहीं हो सकता। कारण अपने इस जन्म के उद्योग पुनर्जन्म में दैव के रूप में अपने को फलदायक होंगे। प्रकृति के नियमों का यथावत् अनुसरण करने पर भी यदि प्रयत्न सुफल न हो तो पश्चात् दैव मान्य है । परन्तु प्रथम जहां उद्योग ही उल्टा हुआ तो वहां दैव का प्रश्न ही कहां रहा ? इसी कारण बहुधा तत्वज्ञ विद्वानों ने उद्योग को प्रधान और दैव को गौण माना है, यथाः— (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के नामी डाक्टर एस, के, बर्म्मन की बनाई

मोल फी शीशी १।) **स्त्रीरोग की दवा** डाक महसूल छ आना

स्त्री रोगों में विशेष गुण कारी माकीन देश की प्रसिद्ध दवा भाईवामन आदिक वैद्यक प्राचीन काल की प्रसिद्ध दवाएं आशिक और कई एक चीज़ों के संयोग से यह दवा बनीं है ! और यथा रीति इस की परीक्षा भी होती आई है ।

यह सब प्रकार के स्त्री रोग की दवा है दुर्बल गर्भाशय को शुद्ध वा पुष्ट करती है इस लिये गर्भस्थान के सब रोगों में काम देती है । मासिक धर्म वा ऋतु के विकार से अधिक वा कम दिनों में महीना होना कमर पेड़ू जाँघ में दर्द होना सिर दर्द जी मिचलाना आदि मिटते हैं ।

प्रदर रोग जिस से सफेद वा लाल पानी (मवाद) जाता है खून पतला वा जमा हुआ ज्यादा या कम जाना दर्द आदिक क्लेश होना इस दवा से मिटते हैं ।

गर्भ के शिथिल पड़ जाने से गर्भ अकाल में नष्ट हो जाता है हमल तीसरे चौथे महीने गिर जाता है इस हाल में इस दवा के कुछ दिन सेवन से गर्भ पुष्ट होकर ठहर जाता है । यह दवा गर्भ के दोषों को मिटा के दुर्बल शरीर को पुष्ट करती हैं ।

विशेष हाल प्रशंसा पत्रों की पूरी पुस्तक विना मूल्य मंगा कर पढ़िये ।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत

अमृत इस नाम की एक पुस्तक उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गुरमुखी, गुजराती, या मराहटी जिस भाषा की चाहें मुफ्त भेजी जावेगी इस में सर्व रोगघ्न औषध

अमृतधारा का

पूरा २ वर्णन है। अमृतधारा श्री पं० ठाकुरदत्त शर्मा की जगत भर में एक नई ईजाद है क्योंकि यह एक ही औषधि प्रायः सर्व रोगों को हितकारक है कीमत बड़ो शीशी अमृतधारा २॥) आधी शीशो १।) और नमूना की शीशी औषधि का ॥) है।

पुरुषों के विशेष रोग

आज कल लोगों में व्यसन बहुत बढ़जाने से विशेष रोग बहुत बढ़गए हैं इस पुस्तक के अन्दर उन रोगों के कारण लक्षण तथा चिकित्सा भली प्रकार से वर्णन की है जिस को पढ़ कर फिर से आरोग्य तथा बलवान हो सकते हैं यह पुस्तक भी मुफ्त भेजी जाती हैं। हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती में मिल सकती हैं।

"हिन्दी देशोपकारक,,

अपनी किस्म का भारत वर्ष में पहिला पाक्षिक वैद्यक पत्र है। जो एक बार देखता है यदि उस को जरा भी आयुर्वेद से हित हो इस पर मोहित होजाता है। नमूना मुफ्त मिलता है।

पत्र तथा तार का पता—अमृतधारा (ब्रांच) लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिकपत्र

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल
सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सब से सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची।

विषय	पृष्ठ	लेखक
स्त्रियां	३३	मैथलीशरणगुप्त
सम्पादकीय वक्तव्य	३५	
अपूर्व सम्मेलन	३८	दर्शक
रोग क्या है	४३	प्रकृति
विधवाश्रम की अवश्यकता और उपाय	४६	श्री० पूर्णा देवी
विधवोद्वाह निषेध खण्डन	५२	सम्पादक
वियोगिनी	५७	चम्पालाल जोहरी
विधवा विवाह सभा	६५	मन्त्री
आवश्यकता	६५	मैनेजर
विराट् उपहार	६६	

Printed and Published by Soti jagdish Datt at
Dinbandhu Press Bijnor

वार्षिक मूल्य १।) स्त्रियों से ।।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गर्मी के मौसिममें यह तीन दवाइयां
आपके दुःख दर्दके सच्चे दोस्त हैं।

पिपरमैण्ट का सत्त [फूल]।

यह प्राय: सब कोई जानते हैं कि पेट के साधारण दर्द के लिये पिपरमिण्ट का सत्त व्यवहार होता है, परन्तु बज़ारू पिपरमिन्ट के सत्त में प्राय: दूसरी चीज़ों की मिलावट रहती है, यही कारण है कि उससे उतना गुण नहीं होता।

ग्राहकोंको असली चीज़की चाहना देखकर डा० वर्मन ने जापान के एक नामी कारखाने से असल चीज़ बनवाकर मंगाई है।

मूल्य।=) छः आने शीशी डा० म० ।-) पांच आने

डाक्टर एस० के० बर्म्मन का क्लोरोडिन

यही अङ्गरेजों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। बाई दर्द व शूल चाहे किसी कारण से हो इस दवाके एक दो बार के सेवन से सेहत होती। दस्त, आंवके दस्त, पेचिश मरोड़ पेट के दर्द वो ऐंठन के लिये क्लोरोडिनके अत्यन्त गुणकारी है। डाक्टर वर्म्मन ने इङ्गलैण्ड के एक नामी औषधालय से यह क्लोरोडिन बनवाई है। जो कि पेटेंट व अधिक मूल्य के क्लोरोडिनके सम्पूर्ण समान है। और दाम में सस्ती है। अत: प्रार्थना है, कि व्यर्थ अधिक मूल्य में "पेटेंट" क्लोरोडिन न लेकर ग्राहक लोग इसे खरीदें। मूल्य १ शीशी ।=) छ: आने, दरजन ४) रुपया। डाक व्यय अलग।

शिर दर्द व बाई की दवा।

दर्द पलमें पहाड हो जाता है यह उसको पानी कर देती है। चमक, लहर अंगमें किसी प्रकार का दर्द हो मिट जावेगा आधे या सारे शिर में कैसा दर्द होता हो इस दवा के सेवन से तत्काल ही सेहत पावेंगे। १२ टिकिया एक शीशी का मूल्य ।=) छः आने। डा० म० १ से ६ शीशी तक ।-) पांच आने।

डा० एस० के० बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करें साहब लोग कहते हैं कि विधवा विवाह करदो। मेरी इज़्ज़त जाती रही।

और लाला साहब किसमत क्यों ठोक रहे हो?

अजी मेरे ताऊ के चाचा की नानी की चाची की धेवती तो विधवा है।

क्यों घबराते हो आपके यहां तो कोई विधवा नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९]

ऐसी उपेक्षा नारियों की जब स्वयं हम कर रहे,
अपना किया अपराध उनके शीश पर हैं धर रहे।
भागें न क्यों हम से भला फिर दूस सारी सिद्धियाँ,
पाती स्त्रियाँ आदर जहाँ रहती वहीं सब ऋद्धियाँ।

[१०]

हम डूबते हैं आप तो अघ के अँधेरे कूप में—
हैं किन्तु रखना चाहते उनको सती के रूप में।
निज दक्षिणाङ्ग पुरीष से रखते सदा हम लिप्त हैं,
बामाङ्ग में चन्दन चढ़ाना चाहते, विक्षित हैं !

[११]

क्या कर नहीं सकती भला यदि शिक्षिता हों नारियाँ?
रण-रङ्ग, राज्य सु-धर्म्म-रक्षा, कर चुकीं सुकुमारियाँ।
लक्ष्मी, अहिल्या, बायजाबाई, भवानी, पद्मिनी–
ऐसी अनेकों देवियाँ हैं आज जा सकतीं गिनी॥

[१२]

सोचो, नरों से नारियाँ किस बात में हैं कम हुईं?
मध्यस्थ वे शास्त्रार्थ में हैं भारती के सम हुईं।
हैं धन्य थेरी-तुल्य गाथा-कात्रियाँ वे सर्वथा,
कवि हो चुकी हैं विज्जका, विजया मधुरवाणी यथा॥

[१३]

निज नारियों के साथ यदि कर्तव्य अपना पालते,
अज्ञान के गहरे गढ़े में जो न उन को डालते।
तो आज नर यों मूर्ख हो कर पतित क्यों होते यहाँ?
होती जहाँ जैसी स्त्रियाँ वैसे पुरुष होते वहाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१४]

पाले हुए पशु-पक्षियों का ध्यान तो रखते सभी,
पर नारियों की दुर्दशा क्या देखते हैं हम कभी ?
हम ने स्वयं पशु-वृत्ति का साधन बना डाला उन्हें,
सन्तान जनने मात्र को वसनान्न दे पाला उन्हें ॥

[भारतभारती से उद्धृत]

सम्पादकीय वक्तव्य

अबकी बार श्रीमान् सम्राट् के जन्म दिन की उपाधियों में दो बातें विशेष ध्यान देने योग्य हुई हैं। एक तो भारतवर्ष में किसी ब्राह्मण पण्डित को महामहोपाध्याय और किसी वैद्यको वैद्यरत्न की उपाधि नहीं मिली और दूसरे हमारे मारवाड़ी भाइयों में किसी को राय साहबी भी नसीब न हुई ! यदि महामहोपाध्याय के उपयुक्त पण्डित न हों, तो उपाधि न देना ही अच्छा है, अयोग्य व्यक्तियों को उपाधियां देने से उपाधियोंका महत्त्व नहीं रहता। जो हो, इस वर्ष बड़ी उपाधियों में ८ सज्जनों को के०सी०एस० आई०, १२को सी० एस०आई०२४को जी०सी० एस०आई०९को के०सी०आई०इ०और २४को सी०आई०ई० ८ को सर की उपाधि मिली है। बड़े लाट की कौन्सिल के शिल्प-वाणिज्य सदस्य मि० क्लार्क को बहुत दिनों बाद और सबके पीछे के० सी० एस० आई० की उपाधि मिली है। अर्थ सद-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थ सर विलियम मेयर के० सी० आई० ई० ने ही, पर अब उन्हें के० सी एस० आई० उपाधि भी मिल गयी है। हैदराबाद के रेज़िगेंट कर्नल पिनहे, मद्रास शासन सभा के सदस्य श्रीयुक्त शिवस्वामी ऐयर, और बिहार की शासन सभा के सदस्य मि० गेट इण्डिया कौन्सिल मेम्बर और बंगाल शासन सभा के भूतपूर्व सदस्य सर विलियम ड्यूक, सिरमौर के राजा साहब और मलेरकोटले के नवाब इस उपाधि से विभूपित किये गये हैं। बिहार के लाट सर चार्ल्स बेली और दर्भंगा महाराज को जे० सी आई० ई० की उपधि मिली है। समथर के महाराज, बम्बई शासनसभा के सदस्य मि० पट्टनी, कासिमबाजार के राजा और मैसोर के दीवान को के०सी०आई०ई० की उपाधि मिली है डा० रास विहारीघोष और डा० रवीन्द्र नाथ ठाकुरको साल भर कीप्रतीक्षा के उपरांत नाइटहुड अर्थात् सरकी उपाधि मिली है।

यह सुन कर हर्ष हुआ कि कर्मवीर गान्धी को इस बार "कैसरे हिन्द,, स्वर्ण पदक दिया गया है। कुछ लोग समझते हैं कि, दक्षिण अफ्रिका में भारत वासियों और बोरों का निपटारा कराने के कारण उन्हें यह पदक मिला है। कुछ लोगों की समझ है कि, सरकार ने नीति बदल दी और क० गान्धी का सम्मान कर रही है। पर दो में कोई बात नहीं है। कैसरे हिन्द पदक मनुष्य सेवा के लिए दिया जाता है, पर हम जिसे लोक सेवा कहते और समझते हैं उस कार्य्य के लिए नहीं। घायलों की सेवा करना प्लेग आदि से लोगों की रक्षा करना डूबतों को उबारना आदि कामों के लिए यह पदक है। क० गान्धी ने लण्डन में भारतीय विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों का एक एम्बुलेन्स कोर बनाया था जो महायुद्ध में घायलों और मुर्दों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता और कभी कभी उन की प्रारम्भिक चिकित्सा करता है। इसी लिए क० गान्धी को पदक देना निश्चय किया गया है।

सच्चे देश हितैषी या दूसरे शब्दों में यह कहो राजा और प्रजा दोनों की भलाई और सेवा करने वाले का संसार में राजा प्रजा दोनों ही सम्मान करते हैं। गवर्नरमेंन्ट की इस उदारता को देख कर हम राजनैतिक नहीं है कह कर गवर्नरमैन्ट के कृपा पात्र बनने की इच्छा करने वाले इस से शिक्षा ग्रहण करे।

———

यह पढ़कर हमें हर्ष हुआ कि पंजाब हिन्दू सभा में जो दो दल होगए थे उन में फिर मेल होगया। इस सभा के गत अधिवेशनमें जो फीरोज़पुर में हुआ था, आपस के मत भेद के कारण दो दल होगए थे। सभा की संगठनप्रणाली ही इस का कारण थी। उस समय कान फ्रेन्स के प्रति निधियों की एक नई सभा बनाई गई थी और इस का प्रधान कार्य्यालय फीरोज़पुर में ही हुआ। इस से आशंका की जाती थी कि सदा के लिए सभा के दो भाग हो जायंगे। परन्तु हर्ष का विषय है कि विगत रविवार को फीरोज़पुर में सभा कर हिन्दू नेताओंने अपने मत भेद मिटा लिए। अब नवीन नियमावली बनाने के लिए इस महीने के अन्त में लाहोर में हिन्दू सभा का विशेष अधिवेशन होगा। परमात्मा करे आर्य्य समाज की कालिज पार्टी और महात्मा पार्टी का भी वैमनस्य इसी प्रकार दूर हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपूर्व सम्मेलन।

जिस समय लार्ड मैकडनेल लार्ड सभा में युक्त प्रदेश को शासन सभा देने का विरोध किया उस समय उन को इस बात का ध्यान भी न होगा कि हम बड़े भारी आन्दोलन की नींव डाल रहे हैं। लार्ड कर्जन ने बङ्ग भङ्ग कर के जैसे पूर्व और पश्चिम बङ्ग वासियों की एकता में सहायता पहुंचायी थी वैसे ही लार्ड मैकडनेल आदि कई लार्डों ने युक्त प्रदेश के हिन्दू मुसलमानों के मेले की नींव डाली। यदि शासन सभा मिल गई होती तो प्रयाग के म्यो हाल में हिन्दु मुसलनानों के सम्मिलन का वह अपूर्व दृश्य न दिखाई देता जो मई के अन्त में देख पड़ा था। हम तो यह कहेंगे कि लार्डमैकेडनेलने अपने अविवेक पूर्ण कार्य्य से युक्त प्रदेश का नहीं बल्कि समस्त भारत वर्ष का उपकार ही किया है क्योंकि हिन्दू मुसलमानों के मेल का जो सूत्रपात युक्त प्रदेश की स्पेशल कानफ्रेंस में हुआ है वह भारत के भविष्य का शुभ लक्षण है।

यद्यपि कितने ही अफसरों ने यह चेष्टा की और लोगों को समझाया कि, तुम इस कानफरेन्स में न जाओ तथापि इस में ६१० प्रतिनिधि उपस्थित थे। जेठ की कड़ी धूप में घर का सुख छोड़, अल्मोड़े और नैनीताल वालों के सुख का तो कहना ही क्या है—प्रायः ४६० सज्जनों का कोई ६ घंटे के काम के लिए दूर २ से आना यह बता रहा है कि' लार्ड सभा को उस की अविवेकता प्रत्यक्ष कर दिखाने के लिए युक्त प्रदेश वासी कमर कसे तैय्यार हैं। क्या प्रति निधियों की दृष्टि से और क्या वक्तृताओं के विचार से इस कान्फरेन्स ने यह सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया है, कि उन्नति का मार्ग किसी के रोके नहीं रुक सकता। कानफरेन्स के अध्यक्ष भी ऐसे महानुभाव चुने गए थे जिन के निर्वाचन में किसी को किसी प्रकार की आपत्ति न थी। महमूदाबाद के राजा सर अली मुहम्मद खां मुसलमान होने पर भी हिन्दू मुसलमान में भेद नहीं मानते। इस के सिवा अवध के ताल्लुकदार शासनसभा के विरोधी बताए गए थे और राजा सहाव भी ताल्लुकेदार हैं। यही नहीं उन्हें लार्ड सभा के इस कार्य्य से बहुत दुःख हुआ है और उन्हों ने अपने व्याख्यान में यह कहा भी है। लार्ड सभा के वे लार्ड जिन्हों ने यह कार्य्य किया है। इस कानफरेन्स का वर्णन पढ़ कर घबरागए और कहेंगे कि, हम तो नमाज़ छुड़ाने गए थे पर अब तो रोजे गले पड़े। कहां हम शासन सभा ही नही देना चाहते, कहां युक्त प्रदेश वासी गवनर सहित शासन सभा मांगने लगे।

कानफरेन्स में कितनी वक्तृताएं हुईं, उनमें एक भीं आवेश पूर्ण न थी, सबमें युक्तियों और तर्कों से काम लिया गया था। युक्तप्रदेश को गवर्नर सहित शासन सभाकी क्या आश्यकता है इसका उत्तर "लीडर"—सम्पादक मि० चिन्ता मणि ने बड़ी योग्यता से दिया है। आपने प्रमाण देकर यह सिद्ध कर दिया है कि, लेफटेनेंट गवर्नर के शासनाधीन होने से हमारी उन्नति नहीं अवनति हो रही है। शिक्षा में युक्तप्रदेश, सीमान्तप्रदेश और आसाम से भी पिछड़ा हुआ है। भारत सरकार हमारे प्रदेश की शिक्षा का व्यय भी प्रतिवर्ष घटाती जाती है। स्वास्थ्य की यह दशा है कि, अन्य प्रदेशों की अपेक्षा अधिक मनुष्य मरते हैं। १९११ की गणना से पता लगता है कि, जनसंख्या घटी है। प्रेसिडेन्सियों में स्वास्थ के लिये जितना द्रव्य व्यय किया जाता है उतना यहां नहीं होता और न यथेष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्पताल आदि ही यहां है। मानों गवर्नमेंट अपना कर्त्तव्य पालन कर चुकी, इस लिये वह प्रतिवर्ष कहती है कि-हमारे ही ऊपर निर्भर न रहो। जिन कार्यों में अधिक व्यय करना चाहिये उनमें तो कंजूसी की जाती है, पर पुलिस विभाग में शाहखर्ची का ठिकाना नहीं है। बंगाल, बम्बई या मद्रास से यहां अधिक पुलिस रखी जाती है, पर अपराधों की संख्या इसकी आवश्यक्ता नहीं बताती। इसपर भी तुर्रा यह कि-पुलिस जैसी योग्य होनी चाहिये वैसी नहीं है। यह सर जान हिवेटने भी स्वीकार किया है कि-दो खून हो जाते हैं तो एक खूनी का पता नहीं लगता और डाकुओंका दमन नहीं होता। मद्रास के गवर्नर और कौंसिल के पहाड़ पर जाने का खर्च ४८०००) है तो युक्त प्रदेशके लेफ्टनेंट गवर्नर का ६००००) है! मि० चिन्तामणि ने और भी बहुत सी बातें कही हैं, पर हम समझते हैं, कि-युक्तप्रदेशके लेफ्टनेंट गवर्नर के शासन की यथेष्ठ निन्दा इन्हीं से हो जाती है।

बहुत लोगों का कहना है कि—यह समय इस प्रकार के आंदोलन के लिये उपयुक्त नहीं है, क्यों कि बृटिश सरकार समर में लिप्त है। पं० मोतीलाल नेहरूने इसका बहुत ही अच्छा उत्तर दिया है। आपने कहा कि, हमारी यह सभा ही राजभक्ति प्रकट कर रही है, क्योंकि ऐसे समय में जब जय पराजय अनिश्चित है, हम लोग शासन सुधार चाहते हैं, इससे सिद्ध है कि, हमें ब्रिटिश विजयका पूर्ण निश्चय है और उसकी विजयके लिये हम कुछ उठा न रखेंगे। बड़े लाटका कौंसिल के जिस तिगुटने शासन सभा का विरोध किया था, उसका प्रधान तर्क यही था कि, हिन्दू मुसलमानों में शत्रुता है, इस लिये यह सुधार न होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये । कानफरेन्सके अध्यक्ष राजा साहब ने इस विषय में कहा है कि, दुर्भाग्यवश अकेले युक्त प्रदेश के मूर्खों में ही समय समय पर भेद नहीं उत्पन्न होते. कौंसिल होने के पहले बंगाल बिहार और उड़ीसा उनसे खाली न थे । मद्रास के मोपलों और हिन्दुओं में दंगे हो ही जाते हैं, पर यह कभी नहीं सुना गया कि–मद्रास सरकार शासन सभा या उस में भारत सदस्य के पुछल्ले के कारण योग्य नहीं है । जौनपुर के नवाब अब्दुलमजी ने इस सम्बन्ध में कहा कि, क्या बंगाल बम्बई मद्रास और बिहार में हिन्दू मुसलमान नहीं रहते ? क्या वहां एक ही एक जाति रहती है ? हिन्दू मुसलमानों में मत भेद भले ही हो, पर एक विषय पर हम सब सहमत हैं और वह यह है कि, हम अपने समान स्वार्थों का त्याग न करेंगे । वह दिन भी दूर नहीं है जब हिन्दू मुसलमानों के छोटे २ मत भेद भी न रहेंगे । डा० तेज बहादुर सप्रूने कहा कि हिन्दू मुसलमानों के मत भेद के कारण अफसरों को अच्छी तरह मालूम है । मि० सैय्यद वजीर हसनने को कहा कि, कौन्सिल गवर्नमेंट के सम्बन्ध में हिन्दू मुसलमानों में पूर्ण मतैक्य है । देखे त्रिगुट वा उस के पिट्ठू मैकडेनल कर्जन सिडेनहम एण्ड को० इस पर क्या कहते हैं ।

लार्ड मैकडनेल ने कहा था कि भारतवासियो के सब युक्ति सङ्गत उच्चाभिलाष पूर्ण किए जा चुके हैं । इस पर डा० सप्रू कहते हैं कि अपने देश में हमारे उच्चाभिलाषों की सीमा नहीं है । जब तक हमें औपनिवेशिक स्वराज्य नहीं मिलता, तबतक हमारे उच्चाभिलाष पूर्ण नहीं हो सकते । मि० वज़ीरहसन ने इस विषय में आपका समर्थन किया । युक्तप्रदेश के फी सैकड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो आदमी शासनसभा चाहते हैं और ९८ उसके विरोधी हैं इसका उत्तर कई सज्जनों ने दिया है। अध्यक्ष राजा साहब ने कहा कि लार्ड मैकडनेल यहां आकर लोगों का मतसंग्रह करें तो उन्हें आश्चर्य होगा। नवाब अब्दुलमजीद ने कहा कि यदि यही बात है, तो लोगों में उत्तेजना क्यों है? हर जिले हर शहर में प्रतिनिधि चुनने को सभायें क्यों हुई और क्यों लोग इस कानफरेन्स में आए? एक आपत्ति लार्ड मैकडनेल ने यह भी की थी कि यह वादग्रस्त विषय है। इसका उत्तर पं० राधाकृष्ण दास ने दिया है। आप कहते हैं कि वादग्रस्त तो नहीं था पर अब बना दिया गया है जब सर जेम्स मेस्टन भारत सरकार और भारत सचिव तथा प्रजा सब शासन सभा की आवश्यकता स्वीकार करते हैं तब यह वादग्रस्त कैसे था?

अन्त में इस कानफरेन्स की सफलता के लिए हम माननीय मालवीय जी को बधाई देते हैं। गवनर सहित कौन्सिल पाने के लिए जो लीग बनाई गई है, वह बराबर अन्दोलन जारी रखेंगे यह सन्तोष का विषय है। दूसरी आशाजनक बात यह है कि, हिन्दू मुसलमानों की यह पहली राजनैतिक संस्था है और जान पड़ता है कि, भविष्य में ऐसी ही अखिल भारत की राजनैतिक सभा होगी। मुस्लिमलीग के सेक्रेटरी मि० वजीरहसन ने मालवीय जी को इस लिए बधाई दी कि, उन के उद्योग से हिन्दू मुसलमानों के मेल की नींव पड़ी आप ने कहा कि, यदि अब भी मत भेद के कुछ कारण हों, तो तो हम आपस में उन्हें तय कर लेगें, लार्ड कर्ज़न की आवश्यकता न पड़ेगी। हम कहते हैं, "तथास्तु?"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग क्या है ?

इस समय संसार में विज्ञान नें जो उन्नति की है शायद वह पूर्व समय में कदापि नहीं की होगी। वैज्ञानिकों ने उन वातों को कर दिखलाया जिनको आजतक संसार असंभव समझ रहा था। रेल को अधिक दिन व्यतीत होनें न पाए थे कि तार (टेलीग्राफ) का आविष्कार हुआ। यह पुराना भी होनें न पाया कि टेलीफून का आश्चर्य जनक आविष्कार हुआ और यह आश्चर्य कम न हुआ था कि वायर लेस टेलीग्रफी (विना ता के तारबरकी) के आविष्कार नें संसार को चकित कर दिया। कौन जानता था कि विना तार के सैकड़ो कोसों बैठे हुए बात किया करेंगे, और डूबते जहाज़ अपने साथियों को आपत्ति के समय कोसो दूर से बुलाकर हजारों मनुष्य और करोड़ों रुपए की रक्षा कर लिया करेंगे। विज्ञानोन्नति की यहां तक ही सीमा नहीं हुई प्रत्युत: प्रत्येक विभाग में नित्य नवीन२ आविष्कार हो रहे हैं। शारीरिक विज्ञान की तरफ जरा दृष्टि-पात कीजिये सहस्रों औज़ार नित्य चीरने (अप्रेशन) के नवीन २ और रोग निश्चित करने की मशीनें जैसे नड़ी रेखा मशीन (इसमें एक स्याही का कागज रखने और मशीन का नाड़ी से सम्बन्ध करनें पर कागज पर रेखायें होजाती है इनसे आन्तरिक रोग मालूम होजाते हैं) अन्त दर्शक दर्पण (अन्दर हड्डियों के टूटने टेढ़े होनें और सड़नें का हाल मालूम होता है] सूक्ष्म दर्शक यन्त्र [खुर्दबीन] थर्मामेटर, और हौमोपैथी, ऐलोपैथिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[वर्तमान डाक्टरी] में तत्क्षण लाभ दिखानें वाली औषधी और इंजेक्शन आदि चिकित्साओं का आविष्कार होरहा है। किन्तु दुर्भाग्य का अवसर हैं और विचारणीय एवं पश्चाताप का विषय है कि इतने पर भी नित्य रोग बढ़ रहे है जो मनुष्य जाति का विध्वंस कर रहे हैं। या यह कहो प्रकृति के विरुद्ध जितनें आविष्कार हो रहे हैं रोग भी उतने ही बढ़ रहे हैं जो अनेक नामों से पुकारे जाते हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि औषधी चिकित्सा [यूनानी आदि] ऐलोथिक् द्वारा इंजक्शन आदि का आविष्कार हुआ है यह प्राकृतिक शारीरिक विज्ञान के सर्वतोभाव से विरुद्ध है जो प्रकृति के कोप का प्रधान कारण और रोगों का मूल है। प्रश्न होता है जब उक्त चिकित्सायें रोगों की चिकित्सा ठीक २ नहीं करतीं तब इन चिकित्साओं से प्लेग निमोनिया, नेत्र रोग कण रोग घाव आदि को लाभ क्यों कर होता है इसके उत्तर में इतना कहना पर्य्याप्त होगाकि उक्त चिकित्साओं से रोग दब जाता है या उसका रूपान्तार होजाता है जैसा आपको आगे विदित होगा इस रोगी की दशाको विचारिये—

एक आठ वर्ष के बालक को ईजिप्शन आई डिज़ीज था। माता पितानें उसकी जर्मन के प्रसिद्ध २ नेत्र चिकित्सालयों में चिकित्सा चार वर्ष कराई किन्तु उसको आराम न हुआ अन्त में डाक्टरोंनें असाध्य कह कर इलाज छोड़ दिया निदान वह जर्म्मन के नवीन डाक्टर लूई कूहनें [जो कि औषधियों द्वारा चिकित्सा नहीं करते प्रत्युतः चार स्नानों द्वारा ही कुल रोगों की चिकित्सा करते हैं] की चिकित्सा कराई। उन्होंनें नेत्रों की कोई स्थानिक चिकित्सा नहीं की। कुछ दिन बाद लड़के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्कार्लेट फीवर [रक्त ज्वर लाल बुखार] हुआ जो कि उसको चार वर्ष की आयु में हुआ था। जिसका औषधियों द्वारा रूपान्तर होगया था" और शनैः २ उन्हीं स्नानों द्वारा आराम होगया साथ ही आंखों को भी आराम होगया। लड़का भली भांति देखनें लगा।

लेखक ने इस प्रकार से कई रोगी देखे जिनकी वर्तमान रोगों की चिकित्सा करते करते वर्षों पहिले के रोग उत्पन्न हुए और उन्हीं पुराने रोगों के साथ वर्तमान रोगों को भी आराम होगया। जिनका वर्णन क्रमशः प्राकृतिक चिकित्सा शीर्षक में इसी पत्र में प्रकाशित होगा।

यह सर्व समस्त सिद्धान्त है कि—

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मलाः।

अथात् सब रागों का निदान मल का कुपित होना है याने शरीर में मल का एकत्रित होना और उसका सड़ना, फूलना, या उबलना ही रोग है। जो मनुष्य की आकृति से जाना जाता है।

प्रथम हमको वह चिह्न देखने चाहियें जो आरोग्य पुरुष में नहीं हैं और रोगी में हैं। तदन्तर वह चिह्न देखने चाहियें जो प्रत्येक रोगी में पाए जाते हैं। यह चिह्न और इनकी उत्पति ही हमको रोग की वास्तविकता बताने में सहायता करेगी।

परीक्षा से जाना गया है कि जब हम अपने को स्वस्थ समझते हैं तब यदि शरीर में कुछ रोग होता है जिसको वर्तमान निदान द्वारा कोई नहीं जान सकता तब सूक्ष्म दृष्टि से गर्दन व मुख पर रोग के वह चिह्न दृष्टिगत होते हैं जो वर्षों पश्चात् होने वाले रोगों को बताते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य का शरीर रबड़ की थैली के समान फूलता और सिकुड़ता है। जब एक थैली जोकि किसी वस्तु से साधारणतः भरी हो चाहे उसको जिधर मोड़ सकते हैं किन्तु वह यदि अच्छी तरह ठोस कर भरी जाय तब इतनी तन जायगी कि बिना फटे नहीं मुड़ सकेगी। इसी प्रकार मनुष्य का शरीर एक सीमा तक विकृत पदार्थ के भरने पर फैल सकता है सीमा से अधिक विकृत पदार्थ उत्पन्न होने पर मल का मांस के रेशों में तनाव हो जाता है जो रोगी को गर्दन व सिर के घुमाने से मालूम होता है। पेडू की खाल में विकृत पदार्थ के छोटे छोटे टुकड़े प्रायः छूने से मालूम होते हैं। यह डलियां गर्दन में जबतक मालूम नहीं होतीं जबतक कि पेडू में न हों। क्योंकि जब पाचन क्रिया के ठीक न होने पर आमाशय से मल त्याग भली भांति नहीं होता। वह मल जो कि पाचन क्रिया के बिगड़ने पर अन्तड़ियों से नहीं निकला था और न पेडू ही साफ हुआ पेडू में सड़ने, उबलने या फूलने लगता है। और वहां से शरीर के अनेक भागों में प्रवेश करता है किन्तु प्रथम मुख और गर्दन पर ही इस का प्रभाव होता है।

एक घड़ा जिस में गन्ने का रस या अन्य सड़ने या उबलने वाली वस्तु भरी हो और वह वस्तु गर्मी सर्दी के न्यूनाधिक होने पर जिस प्रकार उबल कर बाहर होने लगती है और शेष में कीड़े आदि पड़ जाते हैं। आपने देखा होगा कि उसमें एक प्रकार की ऐसी तीव्र गन्ध उत्पन्न होजाती है यदि उसको कुछ समय सूंघा जाय तब सिर में चक्कर आने लगते हैं या वमन (कै) हो जाती है। इसी प्रकार पेडू में सड़ते, फूलते, उबलते वह अनेक रूप धारण करता है जो अनेक रोगों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामों से पुकारा जाता है । विकृत पदार्थ में अर्थात् मल में सड़ २ कर कीड़े पड़ जाते हैं और वह कीड़े रक्त में मिलने पर कुष्ट, खुजली आदि चर्मरोग उत्पन्न करते हैं यदि उस समय शरीरमें किसी महामारी के कीड़े चले जायं तब वह ही रोग उत्पन्न होजाता है । कभी सडते २ तीव्र विष उत्पन्न होजाता है। जो कि निर्मल नेत्र में पहुंच कर नेत्र का नाश करदेता है। पूर्वोक्त घड़े में सड़ती हुई वस्तु के समान पेडू में सड़ते हुए पदार्थ की गन्ध या यह कहो कि दूसरे रूप विकृत पदार्थ शिर में पहुंचता है तब असह्य शिरोवेदना होने लगती है। ऐसे ही मुख पट्ठे और गर्दन आदि में एकत्रित होने पर उक्तस्थान फूल जाते हैं । और जब यह उपद्रवी द्रव्य उडता हुआ कोमल फेफड़ों और कानके पर्दों पर पहुंचता है तब फेफड़ों और कानों के रोग उत्पन्न होजाते हैं । देखा जाता है जिनकी पाचन क्रिया ठीक नहीं होती उनके दांत पीले रहते हैं और मुख से दुर्गन्ध आने लगती है ।

जिस प्रकार गर्मी पाकर बर्फ पानी होजाता है और फिर सर्दी पाकर बर्फ होजाता है । इसी प्रकार ऋतु परिवर्त्तन और रोगों के कृमि मिलने पर शरीरस्थ विकृत पदार्थ अनेक रूप धारण करता है । जिन मनुष्यों के शरीरमें विकृत पदार्थ नहीं है अर्थात् निर्मल है उन पर संक्रामक रोगों का प्रभाव नहीं होता। जैसे कि जिस स्थान पर कूड़ा करकट नहीं है वहां पर यदि कोई कीड़े लाकर छोड़दे तब स्वयं ही नष्ट होजायंगे या हवा के साथ उड जायंगे ।

कभी २ ऐसा भी होता है कि शरीस्थ विकृत पदार्थ बरसों तक मालूल नहीं होता और किसी २ मनुष्य को आजन्म भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई हानि नहीं होतीं और निरापाध बच्चों पर असर होता है।

हम दो चित्र देते हैं जिनसे आपको पूर्णतः विदित होजायगा कि विकृत पदार्थ के मुख पर या गर्दन पर पहुंचने पर मुख की आकृति कैसी होजाती है। क, ख, चित्रों को ध्यान पूर्वक देखिये और किसी स्वस्थ मनुष्य की आकृति से मिलाइये।

उपरोक्त लेख से पाठकों को पूर्णतः विदित होगया होगा कि-शरीरस्थ विकृत पदार्थ में उपद्रव का उत्पन्न होना ही रोग है। और रुपानन्तर होने पर कुष्ट, खुजली, बुखार, हैजा, प्लेग, गठिया प्रमेह, चेचक, नेत्र व कर्ण रोग, शिर शूल, क्षयी, कंठमाला आदि रोगों के नाम से नाभाङ्कित होते हैं।

किन्तु प्रश्न होता है उक्त चित्रों में क्या प्रमाण है कि यह विकृत पदार्थ ही से इनकी ऐसी आकृति है। संभव है यह स्वस्थ हों और इनकी शारीरिक बनावट ही ऐसी हो।

इसके उत्तर में अग्रिम अङ्क में दो चित्र देंगे जिससे संशय स्वयं दूर होजायगा। क्योंकि एक विकृत पदार्थ से फूले शरीर का चित्र है और द्वितीय में पूर्वोक्त डाक्टर लुईकूहने की निर्माण प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा मल दूर होने पर उसी सज्जन का चित्र है।

(प्रकृति)

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

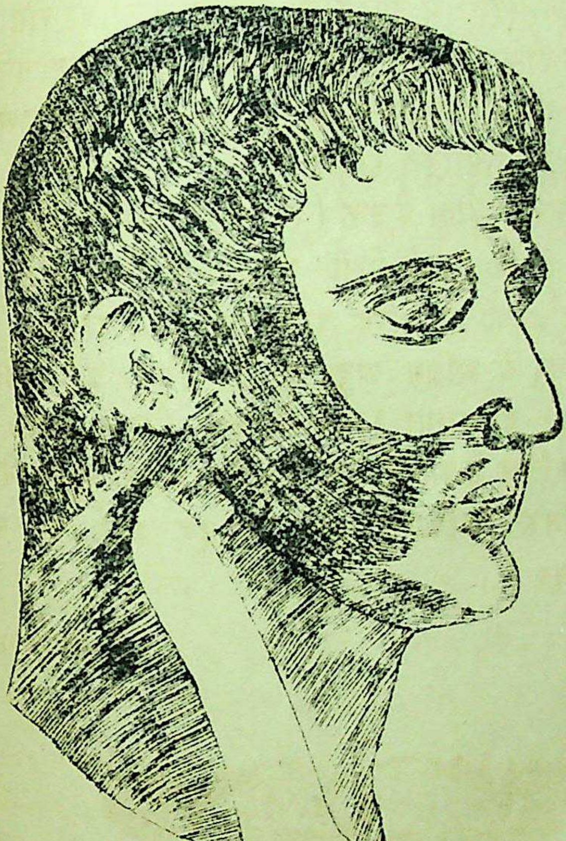

पिछले भाग पर विकृत पदार्थ का भार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल अग्र भाग पर विकृत पदार्थ का भार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवाश्रम की आवश्यकता और उपाय।

(श्रोत्रिया पूर्णा देवी)

कालचक्र में पिसते पिसते यद्यपि हिन्दू जाति स्वतंत्रता, कला, कौशल, उत्साह, सहनशीलता, आदि समस्त गुणों को खोकर भी संसार में कुछ सम्मान दृष्टि से देखी जाती है तो केवल स्त्रियों के पातिव्रत और विधवाओं के ब्रह्मचर्य्य व्रत के ही कारण देखी जाती है। प्राकृतिक काम विकार को संसार की सब जातियों में नहीं नहीं प्राणीमात्र में हिन्दू विधवाओं ने ही जीता है। और अपने कोमल अङ्गों को पतियों के ऊपर निछावर करते हुए प्रज्वलित अग्नि में लकड़ी के समान निःसंकोच भस्म कर अनूपम आत्म समर्पण किया। इस आत्म समर्पण और पातिव्रत का ही फल है जो लाखों वर्ष व्यतीत होने पर भी आज हिन्दू जाति जीवित है जबकि इसके सामने उत्पन्न हुई हज़ारों जातियां कालचक्र में पिसकर नाश को प्राप्त हुई जिनका कि आज नामोनिशान भी शेष नहीं है।

शोक एवं पश्चाताप का विशय है कि पुरुष हमारे इस आत्मसमर्पण तथा प्रेम के कुछ भी कृतज्ञ न हुए प्रत्युतः हमारे ऊपर अनेक अत्याचार और अनुचित व्यवहार करने लगे और हमारा (स्त्री जाति का) विश्वास तक छोड़ दिया। यथा बात बात में कहने लगे "स्त्री चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः" अर्थात् स्त्री चरित्र और मनुष्य के भाग्य को देवता भी नहीं जानते मनुष्य तो क्या जान सकते हैं।

पुरुषों की इस कृतघ्नता का ही फल है जो हिन्दू जाति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति दिन ह्रास और हमारे ब्रह्मचर्य्य और पातिव्रत का ह्रास होता जाता है। क्योंकि आपने देखा होगा कि घड़े में यदि कोई वस्तु ज्यादा दबा कर भरी जाती है तब घड़ा फूट जाता है। और वस्तु का भी नाश होजाता है। ठीक इस ही प्रकार हमारे ऊपर अनुचित व्यवहार का परिणाम ऐसा ही हुआ और होगा। जिससे आज हम में से वह युवतियां जिनकी पूर्वज पद्मिनी आदियों ने मुसल्मानों तथा ईसाईयों का स्पर्श तक न किया और अपने सुकोमल अङ्गों को धधकती हुई अग्नि में क्षणमात्र में पति के होते ही भस्म कर दिया। वह काम से दुःखित होकर और आश्रय न पाकर सहष मुसल्मान और ईसाईयों की भोग्या बन रही हैं। हिन्दू समाज के कठोर अत्याचारों को सहन न कर सकने पर विवश विधर्मी होना पड़ता है क्योंकि हिन्दू समाज में एक सत्तर वर्ष का बूढ़ा पत्नी और सन्तान के रहते भी अनेक विवाह कर सकता हैं और उसको हिन्दू समाज उच्च दृष्टि से ही देखती है किन्तु एक विधवा जो कि सामाजिक कुरीतियों के कारण ५—६ वर्ष की आयु में ही विधवा हो गई वह आजन्म विवाह क्या अन्य पुरुष का नाम भी न ले सके तथा ससुराल में दौरानी जिठानी के अनेक कठोर वाग्वाण सहन करती रहें। और किसी किसी गृहस्थ में मार खाकर रात दिन पशु के समान काम करती हुई कठिनता से अपना पेट भरती हैं। और पिता के घर भावज आदि के वागवाण और बच्चों की सेवा तथा चौका बर्तन आदि करके अपना जीवन व्यतीत करती हैं। इधर कामदेव मन को व्यथित करता है। इत्यादि असह्य कष्टों को सहन न करके विधर्मी हो जाती हैं।

इनके विधर्मी होने से हिन्दू जाति न केवल कलंकित ही नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होरही है। प्रत्युतः निर्मूल होती जाती है। इनके विधर्मी होने का केवल एक मात्र कारण पुरुषों के अत्याचार और इनको आश्रय का न मिलना ही है।

कैसे शोक का स्थान है कि जो विधवायें हिन्दू जाति में भार समझी जाती हैं। और अपने वैधव्य दुःख से अपने धर्म का पालन भी कठिनता से कर सकती हैं तथा जीवन को सुख से नहीं बिता सकतीं। वही ईसाई जाति की बृद्धि के लिये आत्मा रूप हैं। अर्थात् कोई अध्यापिका बन कर जाति की भविष्यत नीव को पक्का कर रही हैं। कोई डाक्टर बन कर दुःखियों की सेवा कर जाति की बृद्धि कर रही हैं और जाति के जीवन को सुखमय बना रही हैं। कोई प्रचारिका बन प्रतिदिन सहस्रों की संख्या में ईसाई जाति की बृद्धि कर कर रही हैं। इसका प्रधान कारण यह ही है कि ईसाई यह जानते हैं कि परमेश्वर के यहां स्त्री पुरुषों के एक अधिकार हैं न्यायकारी पिता ने दोनों को एक जैसी शक्तियां दी हैं। फिर क्यों न ईश्वरीय शक्तियों का सदुपयोग कर लाभ उठाया जाय। यह ही समझ कर उन्होंने विधवा आश्रम, ट्रेनिङ्ग स्कूल, मेडिकल (चिकित्सा) स्कूल आदि संस्था स्थपित कर उनको अपनी जाति का एक विशेष लाभदायक भाग बना लिया है।

खेद है कि हिन्दू ही नहीं भारतीय मुसल्मान भी स्त्रियों को सन्तान पैदा करने की सामग्री मात्र समझ बैठे हैं। इस में अत्यन्त पश्चाताप का विषय केवल हिन्दुओं के वास्ते है क्योंकि विधवा विवाह न होने के कारण हिन्दू विधवाएं रो रो कर या विधर्मी होकर अपना जीवन व्यतीत करती हैं। आश्चर्य्य का विषय है कि भारतवर्ष में लगभग तीस करोड़ जन संख्या होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए भी कोई भी जातीय प्रबन्ध विधवाओं के सदाचार, के लिये धार्मिक, वैद्यक आदि का विद्यालय या आश्रम नहीं जिस में रह कर अपने तथा अन्य बहिनों के जीवन को लाभ पहुंचासकें।

यदि तीस करोड़ मनुष्य प्रति सप्ताह दो पैसे भी दें तब एक वर्ष में नौ अरब और बीस करोड़ पैसे अर्थात् सवाग्यारह करोड़ रुपए होते हैं। यदि इनकी गिन्नी बनाई जांए तब पचत्तर लाख गिन्नी होती हैं। जोकि सौ मील तक बिछाई जा सकती हैं। और जिनके द्वारा लाखों विधवा देश और जाति को अपूर्व लाभ पहुंचा सकती है तथा अपने जीवन को आनन्दमय एवं पुण्यमय बना सकती हैं जिससे धन और धर्म दोनों की बृद्धि हो सकती है।

ऐ देश हितैषी ! सज्जनों ! अब सोने का समय नहीं यदि हिन्दू जाति की सत्ता संसार में रखना चाहिते हो तब सब से पहिले अपनी विधवा बहिनों के दुःख को दूर करने में तत्पर हो जाओ। क्योंकि जिस देश में स्त्री दुःखी होती हैं वह देश कभी उन्नति नहीं कर सकता।

विधवोद्वाह निषेध खण्डन।

उक्त पुस्तक के टाईटिल पर ही पण्डित ब्रह्म देव जी लिखते हैं कि अब यह बात निर्विवाद सिद्ध होगई है कि विधवा विवाह की बराबर देश का अधोगति में डालने लायक दूसरा कोई कर्तब्य नहीं।

मालूम नहीं यह बात कब और किन बिद्वानों द्वारा तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन युक्तियों से निर्विवाद सिद्ध हुई है कि देश को अधोगति में डालने * लायक दूसरा कोइ कर्तव्य नहीं, अहा ? क्या ही हास्यास्पद विषय है कि द्विजाति की बाल विधवा कन्या अपना विवाह न करके मुसलमान और ईसाईयों के साथ धर्म भ्रष्ट करें वा भ्रूणहत्या करें तब देश की अधोगति नहीं होती और शास्त्रानुकूल विवाह करने से इसकी बराबर अधोगति का दूसरा कर्तव्य नहीं ! वाह क्या ही बुद्धिमत्ता है कि जिन स्त्रियों के गर्भ से वेदों के वक्ता सनातनधर्म के सेवक और गौरक्षक उत्पन्न होते उन्हीं के गर्भ से वेदों के श्रवण मात्र के अनधिकारी सनातनधर्म के शत्रु और गोभक्षक उत्पन्न होनें से देशकी अधोगति नहीं होती है ऐसी ही बुद्धिमत्ता के प्रभाव से प्रति दिन हिन्दू जाति की संख्या घट रही है १९११ की मनुष्य गणना (मर्दुमशुमारी) में भी लगभग १६ लाख हिन्दू घटे क्या इसका कारण हिन्दूओं में विधवा विवाह का न होना नहीं क्योंकि हिन्दूओं में २४ वर्ष के अन्दर आयुवाली १०३४१५३ विधवा हैं यदि दस वर्ष के अन्दर प्रत्येक के एक २ सन्तान पैदा होती तब १०३४१५३ की न्यूनता सहज ही पूर्ण होजाती।

पुस्तक के आरंभ में ही पण्डित जी लिखते हैं कि प्रथम विधवा विवाह का प्रचार बंगाल में पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने किया और विधवा विवाह विषयक पुस्तक लिखीं जिसका खण्डन तत्कालीन पण्डितोंने किया था। क्या उन खण्डन पुस्तकों का खण्डन फिर नहीं किया गया पण्डित विष्णु राम

---

* ईश्वर जाने लायक शब्द से यहां पण्डित जी का योग्य या बराबर क्या अभिप्राय है और कैसे यह शब्द यहां संगति खाता है किन्तु हम बराबर अर्थ समझ कर लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्री ने बड़ी योग्यता और विद्वत्ता से विधवोद्वाह विवेक नामक पुस्तक लिख संस्कृत भाषा में खंडन किया। जिसका खंडन आजतक ४० वर्ष के अन्दर किसी पण्डित से न हुआ।

आगे चलकर पण्डितजी वैकुण्ठवासी श्रीमान् श्रोत्रिय शङ्कर लाल जी रईस प्रधान बाल विधवा विवाह प्रचारिणी सभा तथा माननीय गोस्वामी राधाचरण जी आनरेरी मजिस्ट्रेट बृन्दाबन व रायबहादुर नानकचन्द सी० आई० ई० को कपोल कल्पित सनातनधर्मी लिखते हैं।

हमारी समझ में नहीं आता कि पण्डितजी ने उक्त महानुभावों का कौन काय्य समाजीपन का देखा। जो मनमाना लिख दिया कि कुछ लोग कहते हैं कि उपरोक्त महाशय सनातनधमी हैं। पर यह उनकी कपोलकल्पना हैं। बिना प्रमाण यह लिखना सर्वथा सभ्यता के विरुद्ध है क्योंकि जब वे श्रुति स्मृति पुराण आदि सनातनधर्म मान्य धमग्रन्थों से अपने पक्षको सिद्ध करते हैं तब किस प्रकार इनका सनातनधर्मी होना कपोलकल्पना मात्र है।

क्या श्रुति स्मृति इतिहास पुराणों से भी सनातनधर्म के ग्रन्थ पथक् हैं जिनको न मानकर अपने पक्षको सिद्ध करते हैं। क्या सत्य बात जो आर्यसमाजी भी मानते हों उसका मानना या उसका प्रचार करना भी आर्य्यसमाजी होना है तब तो निःसंदेह उक्त सज्जन और उनके अनुमायी आर्य समाजी हैं।

आगे पण्डितजी श्रोत्रिय शङ्कर लाल जी के प्रमाणों का खंडन लिखते हुए लिखते हैं उदीष्व नार्यभि आदि श्रुति का अर्थ दयानन्द और उनके सदृश विधवा विवाह के पक्षपाती इस प्रकार करते हैं—हे नारी ! तू इस मरे हुए पति के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेट रही है।

उठ और जीते हुए मनुष्यों की भीड़ के सन्मुख आ और विधवा का हाथ पकड़ने वाले और पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पतिकी पत्नी हो।

इस श्रुति के अथ के विषय में अधिक न लिखकर सनातनधर्म मान्य सायण भाष्य का अक्षर २ उद्धृत करते हैं जिससे पाठकों को पण्डित जी का पक्षपात मय अर्थ स्वयं विदित हो जायगा।

यजुर्वेद तैत्तरीय आरण्यक प्रपाठक ६ अनुवाक १ मंत्र १४

उदीर्ष्व नार्यभि जीव--लोकं।
इतासु मेतं उपशेष एहि ॥
हस्तग्राभस्य दिधिषोः त्वं एतत्।
पत्युर्जनित्वं अभिसंवभव ॥

सायणभाष्यम्--हे 'नारि' त्वं 'इतांसु' 'गतप्राणं' एतं 'पति' "उपशेषे" उपेत्य शमनं करोषि "उदीर्ष्व" अस्मात् पति समीपा दुत्तिष्ठ जीवलोकभाभि जीवंतं प्राणिसमूहं अभिलक्ष्य एहि आगच्छ। त्वं हस्तग्राभस्य पाणिग्राहवतः 'दिधिषोः' पुनर्विवाहेच्छोः पत्युः (एतत) (जनित्वं) जायात्वं (अभिसंवभूव) आभिमुख्येन सम्यक् प्राप्नुहि।

भाषार्थ— हे!नारि! तू इस मृतक पति के समीप सोती है सो उठ और इस जीवलोक के आगे आ! पुनर्विवाह की इच्छा करने वाले पाणीग्राही पति के इस पत्नीत्व को प्राप्त हो पण्डित ब्रह्म देव जी उक्त मत्रं का अर्थ इस प्रकार कहते हैं हे नारी! अपने सन्तानों का खयाल करके तुम यहां से उठों जो कि तुम इस मृतक पति के समीप लेटी हो वहां तुम आओ जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से विवाह के समय जिन ने मँत्रपढ़ के तुम्हारा हाथ पकड़ा था उन गर्भाधान करने वाले पतिके सम्बन्ध से आये तुम्हारे इस पत्नीपन को देख कर पति के मर जाने का निश्चय तुमने किया है उस से उठो।

पण्डित जी का पक्षपात उन के कपोलकल्पित अर्थ सेपाठकों को स्वयं मालूम होगया होगा क्योंकि पण्डित जी के और सनातनधर्म मान्य पूज्यपाद श्री १०८ सायनचार्य्य जी (जिनका भाष्य समस्त सनातन धर्मानुयायी मानते हैं और जिन के अनुसार यज्ञ मे बलिदान दिया जाता है) के अर्थ में पृथिवी और आकाश का भेद है।

वाह पण्डित जी खब अच्छा अर्थ किया जो सायनाचार्यजी के अर्थ को भी मिट्टी कर दिया। कृपा कर के यह लिखियेकि आप ने किस भाष्य के अनुकूल यह अर्थ किया है या स्वयं वेदों के आचार्य बन कर सीधे सनातनी भाईयों को धोके में डालते हुए मन माने अर्थ कर के स्वर्गवासी श्रोत्रिय शंकरलाल जी से विजय पाने का प्रयत्न किया है

स्मरण रहे उक्त श्रोत्रिय जी के बार २ काशी में ललकारने पर भी महाहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शास्त्री आदि किसी काशीस्थ विद्वान की शास्त्रार्थ के लिये हिम्मत न हुई।

इस लिये पण्डित जी का उत्साह सराहनीय है किन्तु यदि पण्डित जी कुछ योग्यता से पक्षपात रहित होकर खँडन करते तब अच्छा था।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियोगनी ।

गताङ्क से आगे

उद्योगिनं पुरुषसिंह मुपैति लक्ष्मी
दैवेन देयमिति का पुरुषावदान्ति
दैवँ बिहाय करु पौरुष मात्मशक्त्या
यत्नेकृते यदि न सिध्यति को ऽत्र दोषः

अमृतलाल तथा सरस्वती ने इन नैसर्गिक नियमों का अनादर कर अविचार में पदार्पण करने से उनके मृगतृष्णा-वत् बहुत यत्न से प्रति पालित आशा विटप (वृक्ष) प्रबल काल रूपी वायु वेग से छिन्न भिन्न होगया । विमला के हृदय में तो आशा तथा निराश का अभाव तक न था जिस से वह हुलास पूर्वक पहिले के समान अपने बाल रमण ही में सदा प्रवृत रहा करती थी ।

आज विमला की प्रिय सखी कपिला के विवाह का दिन है। विमला के आनन्द की सीमा नहीं है । कपिला के विवाह में जाने के निमित्त सरस्वती ने विमला की चोटी गूंथ नूतन वस्त्राभूषण से उसे सज्जित की है विमला दर्पण में स्वमूखालोकन करती बोली "मां ! एक टीकी तो लगादे ।"

सरस्वती ने पूत्री को दुःखित न करने के उद्देश से उसे टीकी भी लगादी । विमला पुनः बोली "मां ! मुझे सिन्दूर क्यों नहीं भरती ? तू पहिले तो कहती थी कि सिन्दूर लगाने से तेरा मुख बहुत सुन्दर दीखता है ?"

कुछ भी उत्तर न देकर सरस्वती ने एक दीर्घ निःश्वास लिया पश्चात् विमला को छाती से लगा कर रोने लगी। विमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता के रोंने का कारण नहीं समझ सकी जिस से उसने आश्चर्य्य भरे स्वर से पुछा "मां रोती है क्यों ? "

कुछ समय पश्चात् विमला कपिला के विवाह में गई। वहां पर उसे बहुत आनन्द हुआ विमला कभी पान खाती कभी बालकों के साथ क्रिड़ा करती क्षण में इधर क्षण में उधर आती जाती थी। इतने में बारात आई। दूलहा घोड़े पर चढ़कर मण्डप में आया। सुहागन आरती सजा कर आरते को आई। उन्हें देख कर विमला ने भी वर कन्या को आरते का यत्न किया परन्तु कपिला की माता ने उसे बरज कर कहा कि विमला यह सुहागिन का काम है इस लिए तू मत कर। विमला को बहुत बुरा लगा उस ने शर्मा करपूछा" मौसी मैं किस लिए नहीं परछूं सब स्त्रियां तो परछ रहीं हैं ? अड़ोस पड़ोस के समस्त नरनारी कपिला की माता को मौसी कर के सम्बोधन करते हैं कपिला की माता ने उत्तर दिया यह काम सुहागन ही करती हैं तू विधवा है इस लिए नहीं कर सकती'।

विमला के मन में असह्य दुःखाघात हुआ, वह एक ओर उस खेद से स्तब्ध होकर खड़ी रही। उस के नेत्रों में पानी भर आया। अश्रुओं का कारण स्वामि मरण नहीं, किन्तु अपनी सखी कपिला को परछने नहीं देना था। कारण कि अभी लों 'स्वामी' (पति) क्या वस्तु हैं। उसे इस का पूर्ण ज्ञान नहीं था।

विमला उदासीनता सहित घर लौट आई। माता ने पूछा, 'विमला ? इतनी जल्दी क्यों चली आई ?' 'विमला ने रोते २ उत्तर दिया, "मौसी ने मझे परछने नहीं दिया।" सरस्वती निर्दोष बालिका की इस करुणोत्पादक वार्त्ता सुन कर अपने नेत्रों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहती हुई अश्रुधारा नहीं रोक सकी, उस का हृदय विध गया। वह विमला के मन को समाधान करने के हेतु से,बोली,'रात बहुत बीती है,चल सो जावें।

"तो क्या मैं कपिला के यहां नहीं जाऊं?" विमला ने कहा।

"ना, बेटा" सरस्वती ने दीन स्वर से उत्तर दिया।

विमला दीर्घोष्ण श्वास लेती माता के पास निद्रावश सोगई। सरस्वती सारी रात निद्रा के बदले रोने में प्रवृत्त रही। विमला एक बेर जागी तो उसने माता को रोते पाया। विमलाने पूछा, "मां! रोती हो क्यों? सरस्वती ने कहा, "नहीं तो बेटा? मैं तो नहीं रोती, तू सो जा।

विमला को निद्रा देवी ने पुनः अपने वक्षस्थल में विश्राम दिया वह गाढ़ निद्रा में सुख दुःखोत्पादक स्वप्न का अनुभव कर अन्य लोक में विचरने लगी।

एक दिन सरस्वती ने विमला की चोटी गूंथ सिन्दूर लगाया। विमला ने कपिला की मां के पास जा कर उससे कहा, "देखो मौसी! मैं जिस समय सिन्दूर लगाने को मां से कहती हूं उस समय मेरी मां रोती क्यों है? तुम तो ऐसा नहीं करती, देखो तुम कपिला की कितनी खुसी से मांग भरती हो!" ये निर्दोष किन्तु मार्मिक वाक्य सुनकर कपिला की मां को बहुतही क्रोध आया विमला इस क्रोध का मर्म नहीं समझ सकी। परन्तु उसके चित्त में अत्यन्त खेद हुआ विमला ने घर आकर यह बात भी अपनी माता से कही, सरस्वती का हृदय फटने लगा, वह प्रभु की प्रार्थना कर मन ही मन कहने लगी:—

"हे भगवन! क्या तुम्हारी यही इच्छा थी? करुणानिधि! हम पति पत्नी इस समय अत्यन्त कष्टाधीन हैं, हमें अब यह संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःसार लगता है। इस लिये अपने चरण कमलों की सेवा के लिए हमें सत्वर अपने पास बुलालो—इस असह्य दुःख से हमारा छुटकारा करो ! ! प्रभो ! बहुत विनय कर के सन्तान प्राप्ति को तुमने हमारी प्रार्थना सुनकर कृपा पूर्वक कन्या दी। इस लिए उसे और हमें सुखी करने के बदले दुःखी क्यों किया ? हे अन्तर्यामी प्रभो ! यह तुम को पहिले ही विदित था कि इस से हम सुखी नहीं होंगे, फिर कन्या दी ही किस लिए ? जब तुमने हमारे सब सुखों का नाश ही किया है, तो अब तुरन्त मृत्यु को भेजने की कृपा क्यों नहीं करते ! ! !"

सरस्वती इस प्रकार मानसिक दुःख में लीन होते ही मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

धिक्कार है, बाल विवाह के कर्ताओं तुमको सहस्र बार धिक्कार है ! ! ! विवाहिता स्त्रियों तथा अपनी सहेलियों का विवाहित अवस्था में अपने पतियों के साथ नैसर्गिक सुखानुभव करते देख विधवा कुमारियों के हृदय में स्वामी सुख रूपी अग्नि प्रज्ज्वलित हो उन्हें कितनी पीड़ा देती होगी ! अपनी कोमल कुमारियों को विधवा भेस में पीड़ित देख कर कौन ऐसा वज्र हृदय मनुष्य होगा जिसे पराकाष्ठा का खेद न हो। उन को इस दुःख से दुःखी करने तथा देखने की अपेक्षा उन्हें पुनः सुखी कर अपने पतियों के साथ नैसर्गिक सुख भोगते देखना सहस्रधा उत्तम है। हे ईश्वर। हमारे अन्ध जाति बन्धनों के कारण बाल विवाह से सहस्रों निर्दोषी बालिकाओं के सुख की वृथा तथा निष्कारण नाश करने की निन्दनीय प्रथा को शीघ्र दूर करिए, तथा हमारे भारत-वासी भाईयों के हृदय में सत्य शास्त्र नियमों के स्थान में जो रूढ़ी रूपी प्रबल नाशकारक प्रथा समाई हुई है उसका नाश करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ निःश्वास

विधवा विमला और साधवी कपिला।

(सखी सम्भाषण)

शिखरिणी:—

दीवारम्भे जैसे अरुण प्रगटे नासत निशा।
बिते बाल्यवस्था, तब विलसता यौवन दशा॥
निधीकी होवें ज्यौं शशी उदय से मन्द लहरें।
नवांनगे तैसी तब नित प्रती वृत्तिबिहरें॥

अन्तरोमिं

एकार से जिस प्रकार कोई भी प्रति ।पादिक का आरम्भ नहीं होता, ठीक उसी प्रकार बाल विवाह से भीसुखका होना असम्भव है। अथवा यों कहिये कि जहां अमुक घटना का आरम्भ ही नहीं, तो वहां भला उसका अन्त भी कहां से होगा ?

इस समय विमला की उमर १४ वर्ष की है। वह सदा सर्वदा उदास रहा करती है। उसके हास्यहीन मुखाविलोकन से विदित होता है कि हास्य का तो मानो किसी ने उसके मुख से हरण ही कर लिया हो। विशाल नेत्र सङ्कुचित होगये हैं, तथा श्वर्ण लावण्य छटा में श्यामता का आविर्भाव प्रत्यत्त भास होता है। परन्तु ईश्वर की लीला विचित्र है, यौवन काल भी एक अद्भुत समय है। विमला के विषाद कानन में भी यौवन रूपी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प खिल निकला, यौबनावस्था हृदय यातना की अपेक्षा न कर बिमला के शरीर क्षेत्र में निर्भयता से स्वराज्य का यथेच्छ विस्तार करने लगा अङ्ग के जो जो भाग क्षीण तथा अपुष्ट थे, वह सरस तथा पुष्ट होने लगे सौन्दर्य विभाग में मदन के रङ्ग, रूप, राज्य की बिजय पताका फर्राने लगी। बिमला जो कि स्वतः किसी भी प्रकार का यत्न नहीं करती थी, फिर भी स्वाभाविक रीत से उसकी यौबन बाटिका के वपु [शरीर] वृक्ष में हाव भाव रूपी नूतन पुष्पों का नित प्रति उद्भव होता जाता था।

एक दिन संध्या समय बिमला अपनी प्रिय सखी कपिला के साथ निकट के एक सरोवर में स्नान करने गई। दोनों सखियां कुछ समय तक जल क्रीड़ा कर तत्पश्चात् शरीर का अर्ध भाग जल में रख मुंह बाहर कर बिबिधि वार्त्तालाप में प्रवृत हुईं। कपिला ने वार्ता का आरम्भ करके कहा:—"सखी यह सुन्दर सुवर्ण प्रतिमा ईश्वर ने किस लिये निर्माण की?

"जलने के लिये!" बिमला ने नैराश्ययुक्त उत्तर दिया

कपिला ने कहा, "प्रिय सखी बिमला! तुझे ऐसे अनुपम यौबन उपबन में बिहरते देख मेरा हृदय फटा जाता है। हाय! तेरा विवाह ही न होता तो आज तू विधवा न होती! तेरा जीवन ही वृथा गया तुझे कुछ भी सुख नहीं मिला! विवाह स्वप्नवत् हुआ। यह विवाह मनुष्य का नहीं, किन्तु गुड्डा गुड्डी के ख्याल के समान हुआ। पुष्प प्रफुलित तो हुआ, किन्तु भ्रमर कहीं उड़ गया।"

बिमला उदासीनता से बोली, 'बहिन कपिला! मैं ने सुना है कि, प्रभुदामयहै, परन्तु स्वयं मुझे उसके प्रतिकूल अनुभव हुआ मेरे लिये तो वह क्रूर से भी क्रूर निकला! पुस्तकों में पढ़ा है कि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पति प्रेम यह एक अवर्णनीय वस्तु है' 'इस लिये पति प्रेम को जानने तथा अनुभव लेने की बात तो दूर रही, परन्तु पति के मुखाविलोकन मात्र का भी मुझे इस समय स्मरण नहीं है। सत्यानाश इस बाल विवाह के प्रति पादकों का हो जिस से मेरे समान अनेकों अबला बालिकाओं के सौभाग्य का बिना अपराध तथा बिना कारण विनाश होता है !!!'

कपिला अपनी सखी के यह प्रकट दुःख दर्शक वाक्यों को सुनकर शोक सागर में निमग्न होगई। परन्तु विमला के प्रज्वलित हृदय को शान्त करने के हेतु से धैर्य्य धारण कर के बोली "यदि तेरा विवाह उस समय न हो, आज उपेन्द्र भैया के साथ होता तो सचमुच तू बहुत सुखी होती, किन्तु भावी के आगे किस का चारा है ?"

उपेन्द्र का नाम सुनते ही विमला के गाल तथा ओष्ठों पर लालिमा फैल गई। प्रिय वाचक वृन्द ! उपेन्द्र कौन है ? उपेन्द्र के विषय में हम फिर लिखेंगे।

विमला के अधरोष्ठ प्रफुल्ल होते देख कपिला ने अपनी मनोंगम वार्ता को विशेष व्यक्त करते कहा, "प्रिय विमला ! मेरे सामने भी तू अपने मन की बात छिपाती है मुझ से शर्म्माने का कारण क्या ? क्या तू उपेन्द्र को नहीं चाहती? उपेन्द्र के देखने के लिये तू बारम्बार आतुर क्यों हो जाती है ? तथा उसे देखते ही तेरे प्रज्वलित हृदय में कुछ सन्तोषिता आजाती है। क्या मैं इस विषय से अनभिज्ञ हूं।

विमला शर्मा गई, तथा स्त्रियों के प्रेम गुप्त रखने के स्वाभाविक नियम का अनुसरण कर अपने बचाव का यत्न करती हुई बोली, उपेन्द्र के माता पिता उसकी [उपेन्द्र] की बाल्यावस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही में मर जाने से वह हमारे ही यहां छोटे से बड़ा हुआ है। इस लिये रात दिन के सहवास से मेरा उस पर एक प्रकार का नैसर्गिक प्रेम बँध गया है। परन्तु बहिन ! तेरी कल्पना झूठी है।,

झूठी, तो झूठी ही सही, परन्तु बहिन सत्य कहना, यदि तेरा विवाह उपेन्द्र के साथ हो तो तू सुखी हो या नहीं ?" धूर्त कपिला ने अपना भाषण चालू ही रक्खा।

"मैं सुखी होऊँ या न होऊँ, यह अभी कैसे कहा जाय?" विमला ने कपिला के प्रश्न को उड़ाने का उत्तर दिया।

परन्तु कपिला क्या ऐसे उत्तरसेसन्तोष धारणकर चुप होनेवाली स्त्री थोड़ी ही थी ? वह फिर भी कहने लगी, "आज कल अनेक जातियों में विधवा की चर्चा अधिकता से चल रही है, इस लिए ऐसे समय में यदि तेरा पिता तेरा पुनर्विवाह उपेन्द्र के साथ करदेतो बहुत ही अच्छा हो, दूसरे इस उदाहरण से एक के बदले अनेकों को लाभ पहुंचेग।

विमला मानों यह सलाह सुनती ही नहीं, ये दिखाने के वास्ते वस्त्रादि सँभालने लगी। उसे चुप देख पुनः कपिला ने कहा, "क्यों विमला उत्तर क्यों नहीं देती बहिन ?"

विमला उत्तरोत्तर के प्रश्नों के उत्तर देने से असमर्थ हो दिग्मूढ़ बनगई; अन्तमें उसनेपुनःबात उड़ाने का यन्त करते हुए कहा, "चलो २ अब बाहर निकलें, पानी में ज्यादा देर रहने से सर्दी हो जायगी"

(शेष फिर)

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवा विवाह सभा ।

इस समय हमारे पास बहुत सी विधवा लड़की क़रीब ३ सब विरादरी की हैं । इसी प्रकार 'वर' भी सब विरादरियों के हैं किन्तु आयु आदि ठीक न होने के कारण सम्बन्ध नहीं हो सकते । हमें शोक है कि बहुत से पुरुष जिनकी आयु अधिक है कम आयु और मन मानी आमदनी लिख कर सभा को धोका देते हैं । अतःएव हमने निश्चित किया है कि विधवा विवाह करने वाले प्रार्थनापत्र का फार्म दो पैसे का टिकट भेज कर मंगावें । जिस पर दो भद्र पुरुषों की साक्षी करा कर भेजने पर उनका विज्ञापन पत्र में छापा जायगा । और सभा भी तभी विवाह के लिये प्रयत्न करेगी । जो प्रार्थनापत्र मौजूद हैं उनके लिये भी यही निवेदन है कि दो पैसे का टिकिट भेज कर फार्म आने पर सभा प्रयत्न करेगी । क्योंकि नवम्बर में मन्त्रीजी पर एक ऐसा ही मुक़दमा दम्मामल दीवालिया ने चलाया था ।

मंत्री—

बा० वि० वि० प्र० सभा
विजनौर

मेरे एक मित्र जिनकी आयु २५ वर्ष की है सनाढ्य ब्राह्मण कुलोत्पन्न जो इस समय तहसीली स्कूल उझियानी में मास्टर हैं अपना विवाह ऐसी ब्राह्मणी बालविधवा से जो चाहे गौड़ हो या सनाढ्य आयु २० वर्ष के लगभग हो सदाचारणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गृह कार्य्य में दक्ष हो करना चाहते हैं। विशेष हाल इस पते से पूछना चाहिये।

ब्रजकिशोर शर्म्मा मास्टर तहसीली स्कूल
मु० उझियानी ज़ि० बदांयू

विराट् उपहार

हिन्दी संसार में अपूर्वभेंट

हिन्दी संसार में इतना बड़ा उपहार किसी ने आज तक नहीं दिया; जो 'अबलाहितकारक' सैकड़ों की हानि उठा कर भी देने को तैय्यार है आगे छपी कुल मशीनों पर अग्रिम १।) वार्षिक देने वाले सज्जनों को १०) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा अर्थात् एक मशीन खरीद कर कई वर्ष तक अबला-हितकारक को पढ़ सकोगे।

विशेष द्रष्टव्य।

यह माल जर्मन से आया था किन्तु अब जर्मन से और कुछ माल न आसकेगा इस लिये जर्मन के माल के दुगने और चौगुने दाम होगए हैं किन्तु 'अबलाहितकारक' की उन्नति के लिये हम अपना स्टाक खाली करदेंगे। इतने पर भी १० सैकड़ा कमीशन देंगे। यह अवसर हाथ न आयगा पीछे पछताना ही पड़ेगा।

निवेदक—मैनेजर
इण्डिया इम्पोर्ट आफिस
बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Family & Teilor machine

नँ० १

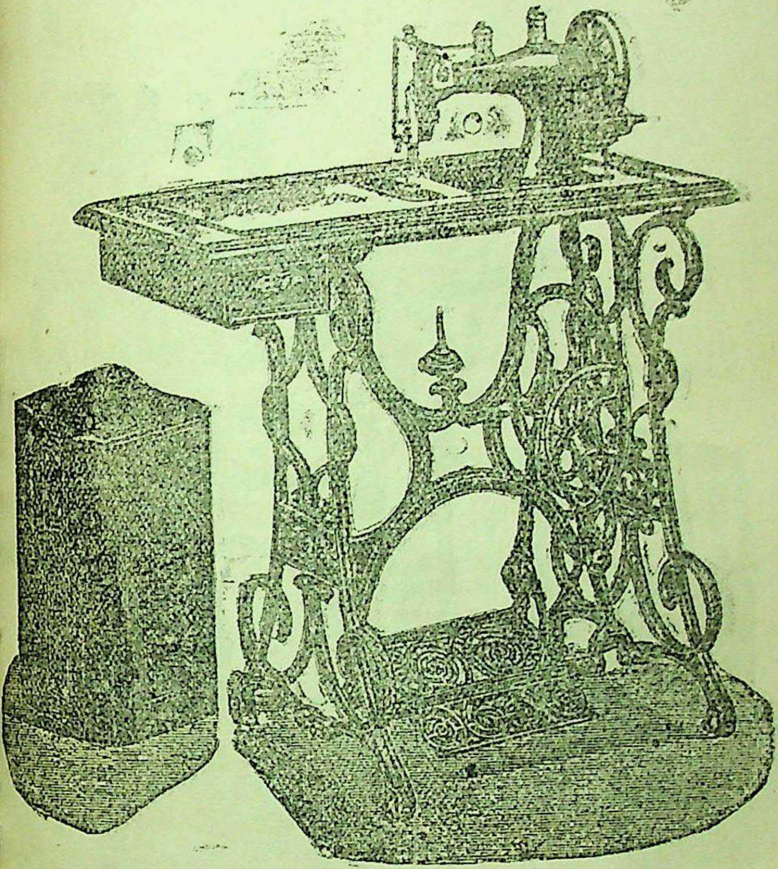

यह मशीन बहुत मज़बूत और खूबसूरत है इस का सटल धनुष (तीर कमान) के आकार का है। काम बहुत शीघ्र और साफ करती है इस पर काम करना बहुत सरल है। झालर आदि के पुर्जे तैल की कूपी और रिंच मुफ्त दिया जाता है मूल्य ७०) और ७५) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Famliy & Tailor machine
नं० २

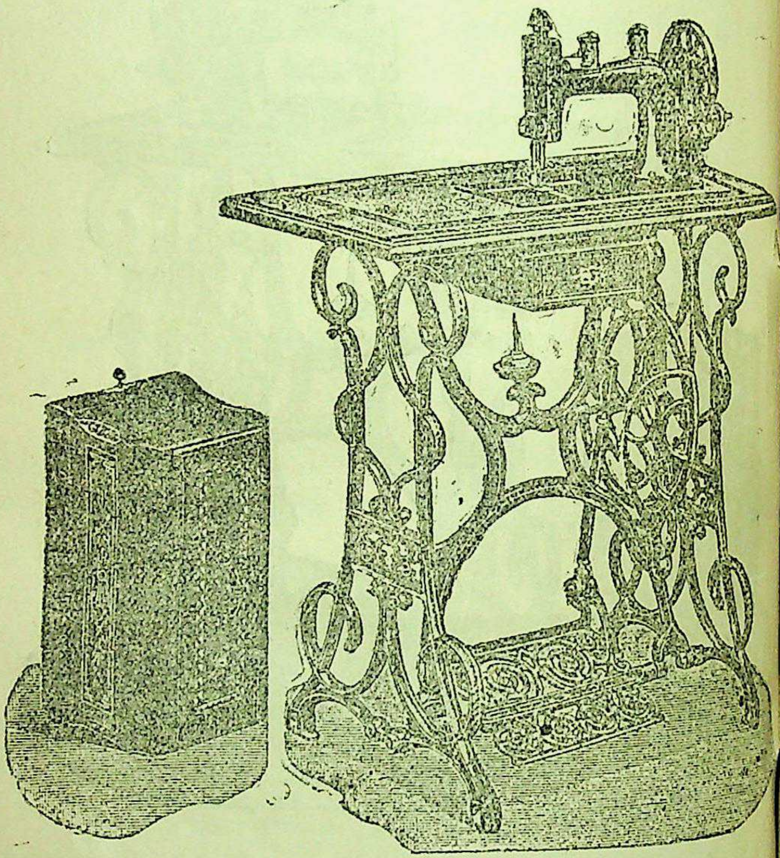

यह पैरों की गृहस्थी के काम की बहुत सस्ती और मज़बूत मशीन है। इस पर काम करना बहुत सरल है। काम जैसा सुन्दर होता है देखने पर ही मालूम होगा। इस की मज़बूती की प्रसंशा आप की सन्तान करेगी। मूल्य ६०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Family & Tailor machine

नं० ३

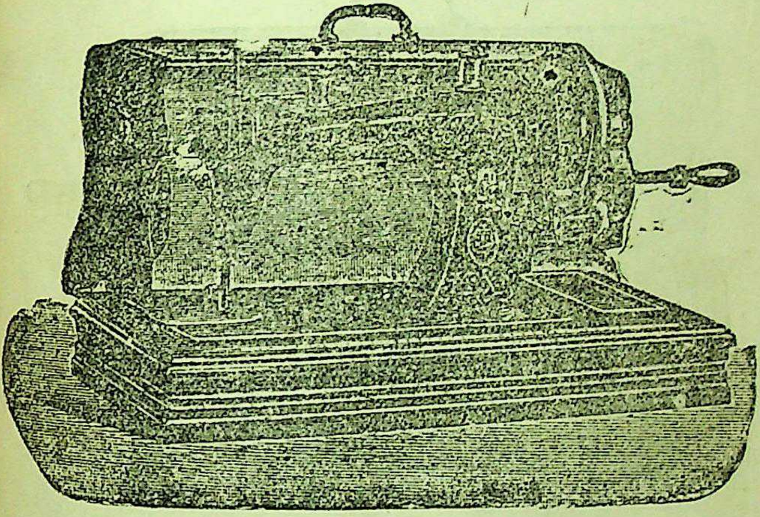

यह मशीन दर्ज़ियों के काम की है प्रायः दर्ज़ी इसको बहुत पसन्द करते हैं।

सटल गोल है झालर आदि के पुर्ज़े इसके भी साथ हैं। क़ीमत ५५) और ६०) हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Family & Tailor machine

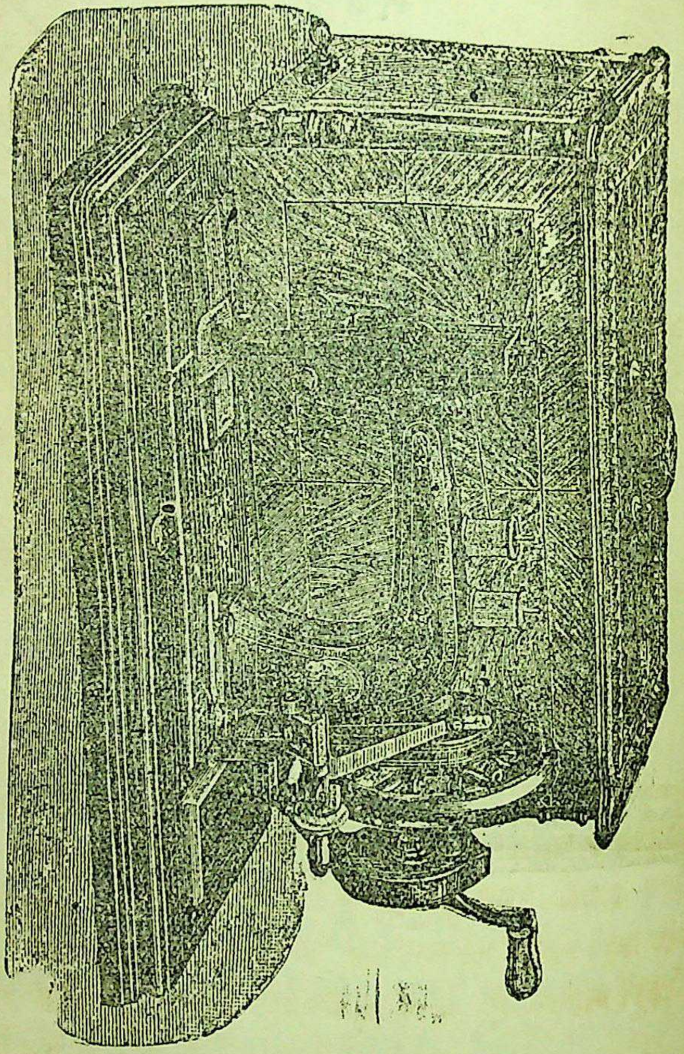

यह मशीन बहुत ही सुन्दर डबल पहिये की है। झालर आदि के पुर्जे मुफ्त दिये जाते हैं। यह मशीन कमरे की सोभा की खास वस्तु है। इसकी मशीन ६०) वाली पैर की मशीन के समान है। कीमत ३५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

हमारे यहां गोल और आड़े दोनों प्रकार के शटल वाली मशीन की सूई बहुत सस्ते दामों पर मिलती हैं।

गोल शटल की सूई ।=) दर्जन आड़े शटल की सूई ।) दर्जन तैल मशीन बढ़िया ।।।] पौंड

नियम

शकर सिलाई की मशीन

ऐजेन्सी

हमारे दो प्रकार के ऐजेन्ट हैं —(१)कमीशन ऐजेन्ट और (२)आडर सप्लार

प्रथम कमीशन ऐजेन्टों के नियम लिखते हैं। कमीशन ऐजेन्ट दो प्रकार के हैं।

(१) हर आदमी २५०)रु० की नकद जमानत देनें पर हमारा कमीशन ऐजेन्ट हो सकता है नक़द ज़मानत देने वाले ऐजेन्ट को १५)रु० सैकड़ा कमीशन दिया जाता है और अपने पास ऐजेन्ट ४००)रु० का माल भी रख सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल न बिकनें पर ६ मास तक वापिस भी कर सकता है॥ किन्तु माल बिलकुल बिड़ना न चाहिये। बापसी के समय माल देखने जो आदमी जायगा उसका किराया एजेन्ट के जिस्मे होगा और माल की आमद रफ़्त के खर्च का ज़िम्मदार वापिस करनें की हालत में ऐजेन्ट होगा।

कमीशन ऐजेन्ट जिसनें कि नक़द जमानत दी है ५००) रु० तक का माल उधार भी देसकता है। किन्तु वसूल करानें ज़िम्मा ऐजेन्ट का होगा। यदि किसी से रुपया वसुल न हो जो कि ऐजेंन्ट की मार्फ़त बिका है उसका जिम्मेदार ऐजेन्ट ही होगा। उधार माल का रुपया वसूल होनें पर ही ऐजेन्ट को कमीन दिया जायगा।

हर एक कागज़ जो कि उधार माल विकेगा ऐजेन्ट को हमारे पास भेजना होगा।

उधार वेचनें की शरह आगे देखो॥

आडर सप्लायर

हमारा आडर सप्लायर प्रत्येक वह पुरुष होसकता है जो कि एक मशीन ख़रीद कर औरों से आर्डर लेकर भेजे।

अडर सप्लालर को १० रु० सैकड़ा नक़द कमीन दिया जायगा। और यदि वह चाहें तब जिस साथ की ६ मशीन विकानें पर एक़ मशीन मुफ़्त ले सकता है।

किन्तु आर्डर सप्लायर वहां नहीं होसकते जहां पर कोई ऐजेन्ट हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐजेन्ट नम्बर २

(क) नकद जमानत न देने पर भी हमारा ऐजेन्ट हो सकता है किन्तु उसे अपने मकान या किसी ऐसी जायदाद की जमानत देनी चाहिये जो कि खालिश उसके हिस्से की हो । और ४००) की मालियय हो ।

(ख) यदि ऐजेन्ट ऐसी जायदाद न रखता हो जो कि खालिश उस के ही हिस्से की हो तब किसी दूसरे की भी ज़मानत दिला सकता है ।

(ग) कमीशन मालियत की ज़मातन देनें वाले ऐजेन्ट को भी १५) रु० सैकड़ा कमीशन दिया जायगा ।

शेष सब नियम नम्बर एक के कमीशन ऐजेन्ट वालें हैं ।

ऐजेन्टों के लाभ की वातें ।

१ जिस ज़िले में हमारा ऐजेन्ट है वहां पर किसी के माल माँगने पर भी हम नहीं देगें । और यदि माल भेजा जायगा तब ऐजेन्ट को कमीशन दिया जायगा ।

एजन्ट और आर्डर सप्लायर को सूचीपत्र पोस्टर और विज्ञापन मुफ्त में भेजे जायेंगें किन्तु आर्डर सप्लायर का नाम विज्ञापन वगैरा पर न होगा । और ऐजेन्ट का नाम और पता होगा ।

प्रत्येक ऐजेन्ट और आर्डर सप्लायर को ही प्रथम हमारे यहां की पुस्तक वगैरा की ऐजन्सी का अधिकार होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य पढ़िये

संसार में कोई भी अपनी वस्तु को खराब नहीं बताता। विशेष कर व्यापारी तो कभी अपनी वस्तू की बुराई नहीं करते कहावत भी है "कूँजड़ी अपने बेर को खट्टा नहीं बताती" इस लिये अपने माल की तारीफ करना हमारे लिये स्वाभाविक बात है। किन्तु ग्राहकों को चाहिये माल खूब देख भाल कर खरीदें चाहे दाम अधिक लगें। शंकर मशीनों की तारीफ में हम केवल इतना कहेंगे कि इन की उत्तमता पर अम्रिका आदि की प्रदर्शिनियों में स्वर्ण पदक मिल चुके हैं। पसन्द न आनें पर मशीन वापिस भी लीजाती हैं। इस सेअधिक और क्या अच्छाई का प्रमाण (सबूत)हो सकता है!
इन मशीनों से केवल आप का समय और रु० ही नहीं बचेगा आप के घर की शोभा भी बैढेगी।

शुभचिन्तक

मैनेजर---इण्डिया इम्पोर्टआफिस

बिजनौर

उधार के नियम

हमारी प्रत्येक मशीन किश्त वन्दी पर बेची जाती है। जिसके निम्न लिखित नियम हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) जो मशीन ५० रु० से कम कीमत की हैं उनपर ५) रु० बढ़ाए जांयगे ! और जो मशीन ५०)रु० से ९०)) रु० तक की हैं उन पर १०)रु० फी मशीन असल कीमत पर बतौर सूद बढ़ाए जाते हैं ।

(२) कीमत की कुल रकम का चौथाई या तिहाई हिस्सा खरीदार को मशीन के साथ देना होगा । शेष रुपया एक वर्ष में १२ या ६ किस्तो में अदा करना होगा ।

(३) कागज जेनरल स्टाम्पपर लिखा जायगा । कागज इण्डिया इम्पोर्ट आफिस बिजनौर में रहेंगे इस लिये प्रत्येक किस्त की एजेन्ट या आफिस से (जहां से मशीन बेची गई है) छपी रसीद मिलेगी ।

(४) प्रत्येक ग्राहक को जो कि मशीन खरीदेगा अपनी खरीदी हुई मशीन किफ़ालत करनी होगी ।

(५) जो किस्त महीने के पहिले हफ्ते में अदा न होगी तब अगले महीने की किस्त का दो पैसे रु० का सूद देना होगा और अगर उस महीने में किस्त न दी गई तब एकदम कुल रुपया लिया जायगा ।

(६) अगर खरीदार रुपया न देगा तब किफालत की हुई मशीन वापिस की जायगी । और अदा किया हुआ रु० जप्त किया जायगा ।

वापिसी के नियम ।

(१) बेची हुई मशीन वापिस सिर्फ एक हफ्ते तक की जायगी इसके बाद अगर छ महीनें के अन्दर वापिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगा तब पचास से कम की मशीन पर दो रु० और ९०) तक की मशीन पर ३) रु० महीनें के हिसाब से किराया देना होगा और बदले में एक मशीन खरीदनी होंगी जो खरीदी हुई मशीन से कीमत में कम न होगी ।

(२) जो महाशय बाहर मशीन मंगाएगें और उनको पसन्द न होगी तब आमद रफ्त का खर्च देनें पर मशीन वापिस लीजायगी अगर चाहें तब बदल भी दी जायगी किन्तु माल खराब न होना चाहिये ।

सुगम चिकित्सा

यह जर्म्मन के प्रसिद्ध डाक्टर "लूई कुईनें" की जलचिकित्सा के अधार पर लिखी गई है । इसमें केवल जल से स्नानों के द्वारा बिना औषधी के कुल बीमारियों की चिकित्सा का वर्णन है । थोड़ा भी पढ़ा पुरुष भली भांति बड़े २ रोगों की चिकित्सा कर सकता है । यह स्त्रियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है क्योंकि स्त्रियां लज्जा के कारण अपनें रोगों को किसी से नहीं कह सकतीं और कभी २ अनाड़ी वैद्य और डाक्टरों के द्वारा अत्यन्त हानि उठाती हैं । इस पुस्तकें द्वारा अपनी और बच्चों की पूर्णतः चिकित्सा करसकेंगी । क्योंकि सब रोगों का एक ही इलाज है इससे किसी प्रकार हानि की संभावना भी नहीं । मूल्य ॥)

भोजन

यह कौन नहीं जानता संसार की सारी बेमारियां मिथ्या आहार और विहार से होती हैं । इस में किस ऋतु में क्या भोजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये वैद्यक के अनुसार लिखा है। और सब्जी पूरी, कचौरी, चीले, अचार आदि के बनानें की विधि लिखी गई है। सब्जी और दूध के गुण वैद्यक के अनुसार भी लिखें हैं। यह पुस्तक गृहस्थ मात्र के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य ॥)

तैल

इस पुस्तक में आजकल के मिट्टी के तैल से बने तैलों की पहिचान तथा उनसे पैदा होनें वाले रोगों का वर्णन है।

और कितनें ही प्रकार के सुगन्धित और गुणकारक तैल बनानें की विधि लिखी है वैद्यक के अनुसार दन्तमंजन और दांतों की रक्षा की विधि लिखी है। यह पुस्तक जैसी उपयोगी है देखने पर ही मालूम होगा। मूल्य ≈)

स्वास्थ्य

ऋतु चर्य्या और दिन चर्य्या के ठीक होने पर रोग मनुष्य के पास नहीं आसकते। इस पुस्तक में प्रत्येक ऋतु के अनुसार दिन चर्य्या लिखी गई है। वर्त्तमान प्लेग आदि संक्रामक रोगों से बचनें का उपाय और व्यायाम भ्रमण तथा शुद्ध जलके गुण और जल शुद्ध करनें की विधि आदि अनेक स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें हैं। जिनके अनुसार चलनें से मनुष्य पूर्णतः स्वस्थ्य रह सकते हैं, इसमें राममूर्ति के व्यायाम और ठंडाई आदि लिखी है पुस्तक की उत्तमता और उपयोगिता देखनें पर ही मालूम होगी। मूल्य ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता पिता का कर्त्तव्य ।

यह यूरुप के प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर स्पेन्सर का लिखा हुआ है इस में सन्तान के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये । इसका बड़ी उत्तमता से वर्णन है । मूल्य ‑)

भारत के आदर्श बालक ।

इसमें धर्म प्राण हकीकत राय आदि उन बालकों के जीवन चरित्र और कविताएं हैं । जिन्हों ने धर्म के लिये क्षण भंगुर प्राणों को अर्पण किया है । यदि अपनी सन्तान को धर्मात्मा बनाना चाहते हो तब यह पुस्तक अवश्य मगांइये । मूल्य ।)

नीति सौंदर्य्य ।

यह पुस्तक मिस मेरी कुरैली की ब्यूटीज़ आफ़ ब्यूटीज़ का हिन्दी अनुवाद है नीति की जैसी उत्तम पुस्तक है देखने पर मालूम होगा । इसमें प्रत्येक विषय का पूर्णतः वर्णन है। मूल्य ॥)

लक्ष्मी उपन्यास ।

यह एक स्त्री का लिखा अत्यन्त शिक्षा प्रद उपन्यास है। इस में पतिव्रत धर्मका बड़ा मनोरंजक चित्र है । मूल्य ≡)
बाबा का बिवाह मूल्य ‑) कान्यकुब्ज अबला विलाप मूल्य)
बनिताबन्धु मूल्य)॥। अबलासुधार भजनबत्तीसी चारों भाग मूल्य ≡) विधवाविलाप मूल्य)। विधवा भजन वाटिका मूल्य)
विधवा विवाह विवरण मूल्य ।)

मैनेजर--दीनबन्धु प्रेस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल विधवा विवाह प्रचारक
श्रोत्रिय जी का स्मारक

श्रोत्रिय शंकर लाल जी ने जो स्त्री जाति की सेवा की वह किसी से छिपी नहीं है। जिस समय विधवा विवाह के नाम सुनने में भी लोग पाप समझते थे उस समय आपने अपना तन मन धन विधवाओं के हित के लिये अर्पण कर दिया और सबसे प्रथम स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का पत्र निकाला जब कि इसका ग्राहक होना तो एक तरफ रहा इसको मुफ्त भी कोई छूता तक नहीं था। उस भयंकर समय में साहसी एवं परमार्थी संस्थापक श्रोत्रिय शंकरलाल जी नें आजन्म अपना अमूल्य समय और सहस्रों रुपया अबलाओं के हित और अबला हितकारक की सेवा में व्यय किया। क्या ऐसे परोपकारी नेता के स्मारक स्वरूप अबला हितकारक वृक्ष के लिये ≡) की भी हानि (जो वास्तव में हानि नहीं है केवल पत्र के ठीक समय पर न निकलने का संशय मात्र है) नहीं उठासकते यदि अबलाहितकारक जोकि उनके मिशन और मातृभाषा की सेवा कर रहा है और जो श्रोत्रिय जी का स्मारक है बन्द होगया तो अत्यन्त लज्जा की बात है। प्रत्येक देशहितैषी स्त्री पुरुष का कर्तव्य तो यह था कि श्रोत्रिय जी के स्मारक में विधवाश्रम आदि स्थापित करते और उनके यश गान के साथ ही अपनी विधवा बहिनों का उपकार करते किन्तु यदि आपकी सहायता न मिलने पर उनका स्थापित पत्र भी बन्द होगया तो शोचनीय बात है। आपसे बारम्बार यह ही प्रार्थना करते हैं कि अबलाहितकारक के जीवन के लिये या अपने सच्चे नेता और अबला हितैषी के स्मारक के लिये अथवा दान के तौर पर ही ≡) देकर इस समय जबकि कागज स्याही आदि सभी युरोपीय युद्ध के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण बहुमूल्य है अबला पत्र की सहायता करके अनुगृहीत कीजिये । आशा है हमारी प्रार्थना को स्वीकार करोगे यदि किसी कारण आपको इस पत्र से प्रेम न रहा हो अथवा अबला हितैषी श्रोत्रिय शंकर लाल जी को भूल गए हों और अबला हि[illegible]क का वी० पी० स्वीकार न हो तो एक कार्ड द्वारा वी० पी० न भेजने की सूचना देकर कृतार्थ कीजिये।

अन्तिम निवेदन

इसका जीवन आपकी थोड़ी सी सहायता पर निर्भर है । आशा है अबला हितैषी श्रोत्रिय शंकर लाल जी के स्मारक वृक्ष को नहीं सूखनें दोगे । कितने ही सज्जनों को यह खयाल है कि आगे पत्र के ठीक समय पर निकलने की क्या आशा हो सकती है जब कि यह तीन वर्ष से ठीक समय पर नहीं निकला इसलिये ग्राहकों के विश्वास दिलाने के लिये हम ,केवल ६ मास के लिये वी०पी० करेंगे जिनमें चैत्र का अङ्क आप के पास पहुंच चुका है । बैशाख और जेठ के अङ्क में आप से प्रार्थना करते हैं और अषाढ़ का अङ्क शीघ्र ही आप की सेवा में डाक व्यय सहित ।।≈) वी०पी० द्वारा भेजा जायगा केवल आपका मूल्य २ मास के लिये पेशगी होगा । जहां हमने हजारों की हानि उठाई है। वहां यदि आगे बन्द ही होजाय तब ≈) की हानि उठालीजिए किन्तु हम आप को विश्वास दिलाते हैं यदि ग्राहक महाशयों ने ।।≈) का वी० पी० छुटाने की कृपा की तो अवश्य अबला हितकारक उन्नत दशा में आपकी सेवा करेगा । और यदि किसी कारण आगे बन्द होगया तो हम आप को ≈) भेजदेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिकपत्र

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल

सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सब से सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची।

विषय	पृष्ठ	लेखक
परमात्मा	६७	तरंगिणी से
सम्पादकीय वक्तव्य	६८	
मुक़दमेबाज़ी के दोष	७१	टहलराम गंगाराम ज़मीदार
जोधपुर में विधवा विवाह	७३	सम्वाददाता
कन्या पुकार	७४	जगदीश नारायण गहलोत
जहां तक हो बच्चों को बुद्धि की उन्नति करने देना चाहिये।	७५	डाक्टर स्पेन्सर (शिक्षा से)
"	"	"
रोग क्या है	७७	प्रकृति
समालोचना	७९	"
महायुद्ध में इटाली	८१	ऐतिहासिक भ्रमर
वियोगिनी	९१	चम्पालाल जौहरी

Printed and Published by Soti jagdish Datt at
Dinbandhu Press Bijnor

वार्षिक मूल्य १।)

स्त्रियों से ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गर्मी के मौसिममें यह तीन दवाइयां
आपके दुःख दर्दके सच्चे दोस्त हैं।

पिपरमैण्ट का सत्त [फूल]।

यह प्रायः सब कोई जानते हैं कि पेट के साधारण दर्द के लिये पिपरमिण्ट का सत्त व्यवहार होता है, परन्तु बजारू पिपरमिन्ट के सत्त में प्रायः दूसरी चीजों की मिलावट रहती है, यही कारण है कि उससे उतना गुण नहीं होता।

ग्राहकोंको असली चीज़की चाहना देखकर डा० बर्म्मन ने जापान के एक नामी कारखाने से असल चीज बनवाकर मंगाई है। मूल्य।=) छः आने शीशी डा० म० ।-) पांच आने

डाक्टर एस० के० बर्म्मन का क्लोरोडिन

यही अङ्गरेजों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। बाइ दर्द व शूल चाहे किसी कारण से हो इस दवाके एक दो बार के सेवन से सेहत होती। दस्त, आंवके दस्त, पेचिश मरोड़ पेट के दर्द की ऐंठन के लिये क्लोरोडिन अत्यन्त गुणकारी है। डाक्टर बर्म्मन ने इङ्गलैण्ड के एक नामी औषधालय से यह क्लोरोडिन बनवाई है। जो कि पेटेंट व अधिक मूल्य के क्लोरोडिनके सम्पूर्ण समान है। और दाम में सस्ती है। अतः प्रार्थना है. कि व्यर्थ अधिक मूल्य में "पेटेंट" क्लोरोडिन न लेकर ग्राहक लोग इसे खरीदें। मूल्य १ शीशी ।=) छः आने, दरजन ४) रुपया। डाक व्यय अलग।

शिर दर्द व बाई की दवा।

दर्द पलमें पहाड हो जाता है यह उसको पानी कर देती है। चमक, लहर अंगमें किसी प्रकार का दर्द हो मिट जावेगा आधा या सारे शिर में कैसा दर्द होता हो इस दवा के सेवन से तत्काल ही सेहत पावेंगे। १२ टिकिया एक शीशी का मूल्य ।=) छः आने। डा० म० १ से ६ शीशी तक ।-) पांच आने

डा: एस, के बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् नमः शिवाय: ।

अबलाहितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचयन्ति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष | ज्येष्ठ सम्वत् १९ ७२ | अङ्क ३

परमात्मा ।

[१]

देखो नेत्र खोल कर प्रभुका कैसा रूप दिखाता है ।
गुणमय, छविमय विविध रूपमें प्रकट और छिपजाता है ॥
नीर समान नीर में मिलकर लहरों में लहराता है ।
वायुवेग में मिश्रत होकर वन पतझार कराता है ।

[२]

नभका है आधार आप ही विद्युत को लपकाता है ।
घेर घेर नभ में जलदों को कैसा उन्हें लड़ाता है ॥
घन गर्जन में गर्ज २ कर जल बूंदें बर्षाता है ।
उन बूंदों के संग संग ही आप बूंद बन जाता है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३]

भूमें लिपट चिपट कर कैसे विविध वस्तु उपजाता है।
वृक्ष लताओं के भीतर वह नीर—अनिल पहुंचाता है
नीर—पङ्क से नाल प्रकट कर कोमल कमल खिलाता है॥
सौरभयुत मकरन्द आप ही आपहि भँवर लुभाता है॥

[४]

देखो २ अग्निज्वाल में रमा हुआ इठलाता है।
रवि में तेज, चन्द्र में शीतल, हो सबके मन भाता है॥
तारा भी उसके बिन नभ से पृथ्वी पर गिर जाता है।
पर गिरते तारे के संग में वही खिलाड़ी आता है॥

[५]

चींटी में चींटी सा गज में गज के सदृश लखाता है।
अद्भुत् शक्तिमान की महिमा क्यों कोई लख पाता॥
कभी सुदर्शन चक्र लिए वह मूर्त्तिमान् बन जाता है।
गज का कर उद्धार ग्राह की ग्रीवा काट गिराता॥

[६]

कच्छप के समान बनकर वह कभी सिन्धु मथवाता है।
कभी बराह—मूर्त्ति धारण कर रद से भूमि उठाता है।
कभी नृसिंह रूप धारण कर निज जन को अपनाता है।
चीररूप बन कभी जनों की लज्जा तुर्त बचाता है॥

[७]

कभी भिखारी बामन बन कर नभ में पैर बढ़ाता है।
कभी अनेकों ब्रह्माडों को फल समान चख जाता है॥
कभी समर में तान शरासन दैत्य समूह नसाता है,
उनके तन से निकल निकल अपने में आप समाता है॥

(तरङ्गिणी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय वक्तव्य

पश्चाताप का विषय है कि नित्य हिन्दू जाति की अवनति होती हुई भी हिन्दू जाति अब तक सुख की नींद सो रही है। परमेश्वर जाने अभी किस २ आपत्ति का सामना करना पड़ेगा आज एक नवी न हृदय विदारक समाचार पाठकों को सुनाते हैं जिसको पढ़कर प्रत्येक समाज हितैषी व देशहितैषी हिन्दू के चित्त में असह्य व्यथा होगी हमारे पास एक कायस्थ विधवाविवाह के लिए आए और कहने लगे लड़की मैंने स्वयं तलाश करली है सभा के द्वारा विवाह करा दीजिए। जब लड़की के पिता और निवासस्थान को पूछा तो मालूम हुआ कि लड़की के पिता धामपुर जिला विजनौर के ब्राह्मण हैं और यह लड़की को भगा कर ले आए हैं। हाय माता के समान ब्राह्मण कुमारी को एक कायस्थ के घर में देखकर किस को दुःख न होगा। हमें शोक है विजनौर के कायस्थों ने उसको पतित नहीं किया। यदि इस बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह होजाता तब यह कलंक दोनों जातियों को कदापि न लगता। यह नौ वर्ष की आयु में विधवा होगई थी इस समय २०—२२ वर्ष आयु है विधवा विवाह के विरोधी सनातनधर्म पताका जी बतावें क्या यह शास्त्र विरुद्ध काम नहीं जिसके लिए आपने कुछ भी नहीं लिखा।

हमने विगत वर्ष अवला हितकारक में लिखा था कि काशीस्थ वैकुण्ठ वासी पूज्य महोपाध्याय पं० राम मिश्र शास्त्री जी की धर्मपत्नी इलाहावाद में किसी बोर्डिङ्ग में रोटी वनाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनके सुयोग्य पुत्र पण्डित केशव देव जी शर्म्मा राम पुर में ७५) मासिक के नौकर हैं। इसका उनके हिमायती श्रीवेंकटेश्वर आदि ने कुछ उत्तर नहीं दिया। हम काशी महाराज का इस ओर विशेष ध्यान दिलाते हैं कि अपने एक प्रतिष्ट विद्वान की धर्मपत्नी की वृद्धावस्था में सहायता करें। और नवाब रामपुर से प्रार्थना है वह पण्डित केशव देव जी की तनख्वाह से कुछ मासिक उनकी माता को दिया करें।

शोक है सहयोगी सद्धर्म प्रचारक ने सदा के लिये देश व समाज सेवा से विदा मांगली। सद्धर्म प्रचारक प्राचीन और प्रतिष्ठित हिन्दी पत्र था। इस के बन्द होने का कारण ग्राहकों की न्यूनता से आर्थिक दशा ठीक न होगा कहा जाता है। हमें आश्चर्य है जो आर्य्य समाज संसार को वैदिक धर्मी बनाने का दावा रखती है वह मातृ भाषा में अपनी समाज के मुख पत्र को जीवित नहीं रख सकी। जब तक लाला मुन्शी राम सम्पादक रहे तब तक तो यह चलता ही रहा किन्तु जब से गुरु कुल (जो कि संसार की संस्थाओं से अच्छा कहा जाता है) के सर्व श्रेष्ठ स्नातकों के हाथ में गया प्रति दिन अवनत ही होतागया! कुछ दिन पहिले जहां तहां सुनने में आता था गुरुकुल का ब्रह्मचारी खलबल मचा रहा है, पश्चाताप का विषय है निर्धन भारत वासियों का लाखों रु० व्यय करके वह गुरुकुल साधारण सम्पादक भी नहीं निकाल सका इसका कारण स्नातकों की अयोग्यता ही नहीं समझनी चाहिए। प्रत्युत: गुरुकुल की विशेष न्यूनता इस का कारण अर्थात् अर्ध आयु पर्य्यन्त जंगल में निवास करना और अपने माता पिता से भी सम्ब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न न रखने के कारण अनुभव नहीं होता ! इस समय जब कि अन्य देश प्रति दिन उन्नति पथ पर दौड़ रहे हैं भारतवासी जंगल में रहकर कूपमडूंक हुए कादापि उनका मुकाबला नहीं कर सकते। अब भारत को नागरिकों की आवश्यकता है। हम को एक महाशय मिले जिन का पुत्र १० वर्ष गुरुकुल में पढ़ चुका है वह कहने लगे १० वर्ष गुरुकुल रह कर हमारा पुत्र ऐसा सीधा है बाज़ार से शाक तक नहीं खरीद सकता। इस से स्पष्ट है कि २२ वर्ष का युवक इङ्गलैण्ड से क्रूस्टर होकर आता है। अफ्रिका के चौदह २ वर्ष के लड़के संसार की सैर को जाते हैं इसी प्रकार जर्म्मनी से आकर २०–२२ वर्ष के युवक भारत से लाखों रुपया व्यापार द्वारा अपने देश को ले जाते हैं। तब किस प्रकार गुरुकुल आदि ऐसी संस्थाओं के विद्यार्थी जहां सांसारिक कुछ भी नहीं होता किस प्रकार देशोन्नति कर सकते हैं।

मुक़द्दमे बाज़ी के दोष।

(ले० टहलराम गंगाराम ज़मीदार)

भारत वासियों की आज कल की निर्धनता और दरिद्रता का एक कारण हद से ज्यादा मुक़दमे बाज़ी भी है। जिन लोगों को ऐतिहासिक ग्रंथों के पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है वे जानते हैं कि प्राचीन समय में भारतवासी इस दोषसे कितने रहित थे। एक चीनी तीर्थ यात्री ने सातवीं शताब्दी में भारत वर्ष की यात्रा करके जब लौट कर अपने देश में गया, तब वह भारत वासियों के विषय में ऐसा कहता था कि "भारतवासी झूठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलना महापाप समझते हैं इस लिये वे बिलकुल झूठ नहीं बोलते। इस बातको उसने स्वचरित एक पुस्तक में भी लिख दिया है। प्रोफेसर मेक्समूलर साहब ने (जो यूरोप में बड़े भारी संस्कृत के विद्वान और भारत वर्ष के सच्चे हितैषी थे) अपनी पुस्तक "भारत से हम क्या सीख सकते हैं" में लिखा है कि प्राचीन आर्यगण सत्य बोलने के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। परन्तु शोक है कि आज कल हम उसी भारत के निवासी और उसी प्रशंसित आर्य्य जाति की सन्तान इतने बदनाम हो गये हैं कि यूरोप अमरीका और अन्य सभ्य देश के लोग हमारे नाम से घृणा करते हैं विदेशी लोग हमको झूठे, कपटी, छली और दगा-बाज़ के नाम से पुकारते हैं। जिन लोगों को आज कल कचहरियों, अदालतों की कार्रवाई का ज्ञान है, वे भली भाँति जानते हैं कितने लोग दीवानी फौजदारी अदालत में कैसा झूठ बोलते हैं। और कदाचित उतना झूठ वे कचहरी के बाहर कभी नहीं बोलते होंगे। अनेक जन चार २ आने के लिये पवित्र से पवित्र नामों की शपथें खाते हैं, जिसका परिणाम यह हुआ कि आज कल हमारी जाति असत्य, छल, कपट के लिये बहुत बदनाम हो गई है। यहां तक कि परस्पर मित्रों और रिश्तेदारों में भी एक दूसरे पर विश्वास नहीं रहा। और इसीलिये भारतवासी वाणिज्य, तिजारत में भली भांति उन्नति नहीं कर सक्ते। इस मुकद्दमेबाज़ी से भारतबासियों को जो हानि पहुंचती हैं वह बुद्धिमानों से छिपी नहीं। असल रकम से पांच गुणा अधिक मुकद्दमा पर खर्च होजाता है और उभय पक्ष (फरीकेन] मुकद्दमेबाजी से बरबाद हो जाते हैं। इस कारण हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चायत करनी चाहिये ।

आपका शुभचिन्तक—

टहलराम गंगाराम जमींदार

॥ श्रीः ॥

जोधपुर में विधवा विवाह ।

—:⌣:*:⌣:—

मौहल्ले जुनी बागर निवासी गजदर श्री कनीराम जी माली की भतीजी श्री नारायणी बाई उर्फ मक्खानी उमर १६ वर्ष का विधवा विवाह बड़ी धूम धाम से हाल में हुआ है । यह माली जाति में पहिला विधवा विवाह है जो सनातनधर्मानुसार हुआ है। विवाह देखने को मौहल्ले के तथा जाति भाई बहुत आये थे। दूसरी जाति के लोग भी यह विवाह देखने को बहुत आये थे। कनीरामजी माली पक्के सनातनी व मूपूर्तिजक हैं । आप बम्बई में पत्थर के काम के ठेकों पर गजदराहन करते हैं। जाति के बहुत से लोगों ने पहिले रोका कि तुम सनातनी रीति से बालविधवा का विवाह मत करो परन्तु धन्य है कि गजदर जी एक वचन पर रहे और कहा विवाह तो सनातनी रीति से करूँगा बहुतों ने कहा कि आर्य्य समाजिक रीति से करलो परंतु आपने एक न सुनी और विवाह सनातनी रीति से कर डाला। सांझ को सब जाति भाइयों व मित्रों को भोजन कराया पण्डितों को भी अच्छी दक्षिणा दी, पुरोहित पुराने ढंग के थे।

शान्तिः ।

एक सन्वाददाता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या पुकार

"तर्ज़,, मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले।

—०—

रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवे त्यों जाय।
लाखों का धन पाय के मरे न कफ़न पाय॥

—०—०—

कन्या कर रही हाहा कार सुनलो दाम चुकाने वाले॥ टेक॥
क्यों तुम कर रहे पाप अपार आखिर नहीं है इस में सार।
मरती पृथ्वी इस के भार ऐसा पाप कमाने वाले॥ कन्या०॥
कहते मात पिता अरु भाई जिनको शर्म ज़रा नहीं आई।
बनगए सब के सभी कसाई जीवित मांस बेचने वाले॥
लंगड़ा लूला अति बेहाल बूढे बालक का नहीं ख्याल।
होना चाहिये माला माल कन्या नाश कराने वाले॥
कन्या जब विधवा हो जाय उठती तन में कैसी लाय।
बनती जब है कैसी हाय हिय में आग लगाने वाले॥

॥ भजन॥

कन्या किस से करे पुकार रह २ लगे करलेजे घाव।
इस से बेहतर डालो मार लोभी मत मुफ्त रूलाने वाले।
टिकता पैसा यह नहीं पास करलो मन झूठा विश्वास।
आखिर होय नरक का बास सत्यानाश कराने वाले।
यह गहलोत करे अभिलाष जिस का देश जोधपुर बास।
काटो दुहिता की गल फांस मोटे नाम धराने वाले॥कन्या०॥

जगदीश नारायण गहलोत

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक सम्भव हो बच्चों को अपनी बुद्धि की उन्नति आपही करने के लिए उत्साहित करना चाहिये

जिस प्रधान सिद्धान्त का वर्णन ऊपर हुआ उससे जो एक और बात भी ध्यान में आती है वह इतने महत्व की है कि उसकी आवश्यकता चाहे जितनी दृढ़ता से दिखलाई जाय कम है। यदि कोई यह आग्रह करे कि वह बात अवश्य करनी ,ही चाहिये तो भी अनुचित नहीं। वह बात यह है कि विद्याभ्यास करते समय जहां तक होसके अपनी बुद्धि को खुदही बढ़ाने के लिए बच्चे उत्साहित किए जायँ। बच्चों से खुदही अनुसन्धान कराया जाय—खुदही खोज कराई जाय—और तर्क वितर्क द्वारा खुदही नतीजे निकल वाये जांय। जहां तक सम्भव हो उनको बहुत कम बाते बताई जायं जहां तक हो सके उनकी आदत सब बातें आपही आप जानने की डाली जाय। मनुष्य जाति का सुधार सिर्फ अपनी ही शिक्षा से हुआ है मनुष्यों ने अपनी शिक्षा की आपही उन्नति की है। अपनी ही बुद्धि के बल से प्रसिद्धि पाने वाले—अपने ही प्रयत्न से नामवर होने वाले—आदमियों के जो उदाहरण हम प्रति दिन देखते हैं उन से यही सिद्ध होता है कि यदि किसी की इच्छा सब से उत्तम फल-प्राप्ति कीहो तो उसे इन्हीं लोगों की तरह अपने मन को शिक्षित करना चाहिए। जिन लोगों ने मदरसे की मामूली कवायद के अनुसार शिक्षा पाई है, और मदरसे ही से यह ख़याल अपने साथ लेते गए हैं कि यदि किसी को शिक्षा मिल सकती है तो उस पुराने ढर्रे पर चलने से मिल सकती है, उन्हें बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपना अध्यापक आप ही बनने में ज़रूर निराशा देख पड़ेगी परन्तु वे इस बात का विचार करेंगे कि बचपन में अपने आस पास की सारी चीजों का जो सब से अधिक महत्त्व-पूर्ण ज्ञान बच्चे प्राप्त कराते हैं उसे वे आप ही आप, बिना किसी की मदद के, प्राप्त करते हैं; यदि वे इस बात का स्मरण रक्खेंगे कि बच्चे अपनी मातृ-भाषा आप ही आप सीख लेते हैं, यदि वे इस बात को सोचेंगे कि व्यवहारिक बातों के जिस ज्ञान और जिस तजरिबे का मदरसे से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है उसे हर एक बच्चा अपने ही आप कितना प्राप्त करता है; जिसकी पूछ पांछ करने वाला कोई नहीं है ऐसे लंदन के किसी आवारह लड़के के विषय में यदि वह विचार करेंगे कि जिस बात पर वह उतारू हो जाता है उस में उसकी बुद्धि कितनी उत्तमता से काम देती है, और यदि वे, इसी तरह, इस बात पर भी विचार करेंगे कि कितने आदमियों ने हम लोगों की इस बुरी शिक्षा पद्धति के बखेड़ों ही से नहीं किन्तु और सैकड़ों विघ्न-बाधाओं से बिना किसी की मदद के सिर्फ अपने बाहु–बल से, छुटकारा पाया है, तो वे समझ जायेंगे कि किसी साधारण बुद्धि के विद्यार्थी को भी एक दफें यह बतला देने से कि अमुक विषय अमुक क्रम और अमुक रीति से सीखना चाहिये, वह उसे बहुत ही थोड़ी मदद से सारी कठिनाइयों को पार करके सीख लेगा ऐसा करने से उनके ध्यान में यह बात ज़रूर आजायगी कि इस तरह की आशा रखना —इस तरह का अनुमान करना-कोई ऐसी बात नहीं जिसे बुद्धि न स्वीकार करे। (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग क्या है ?

(गतांक से आगे ।)

हमने वैशाख के अङ्क में लिखा था कि विकृत पदार्थ से फूले हुए एक मनुष्य का चित्र देते हैं। जिस से पाठकों को स्पष्ट विदित हो जायगा कि विकृत पदार्थ के दूर होने पर किस प्रकार सूरत बदल गई । किन्तु वह ब्लाक तैयार न होसका इसलिए अब एक लड़के का चित्र देते हैं ।

ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि जिस स्थान पर विकृत पदार्थ का भार होता है वह स्थान फूल जाता है अर्थात् तनावट आ जाती है और अङ्ग बदसूरत होजाते हैं । यह लड़का १२ वर्ष की आयु में बेमार हुआ, रीढ़ के टेढ़े होजाने से बिना दोलकड़ी टेके नहीं चल सकता था जैसा कि 'क' चित्र में मालूमहोता है ।

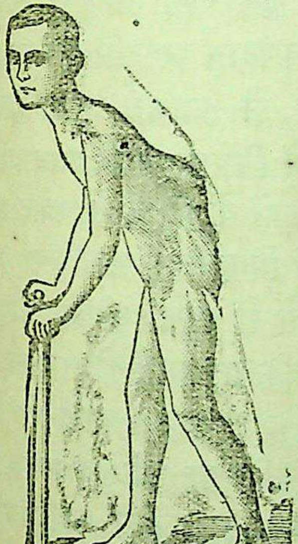

चित्र (क)

चित्र (ख)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकृत मल का भार इसकी कमर में अधिक था अर्थात् मल उड़ता उड़ता कमर में एकत्रित होगया इस से कमर फूल आई रीढ़ की हड्डी भार के अधिक होने से मुड़ गई। डाक्टरों ने कई बार उसको चीरा और घटने बढ़ने वाले पलंग पर लोहे की तख्तियों और न हिलने वाले यन्त्रों से जकड़ दिया किन्तु इस कष्टदायक बहु मूल्य चिकित्सा से कुछ सफलता प्राप्त न हुई क्योंकि इस चिकित्सा ने स्थानीय मल को हटा दिया कुछ समय पश्चात् फिर मल एकत्रित होगया। अन्त में इसकी निराश माता ने प्राकृतिक चिकित्सा प्रारम्भ की अर्थात् मल को दूर करने वाले तीन 'मेहन स्नान' देने प्रारम्भ किये। प्रति स्नान आधे घण्टे तक लिया गया, सात्विक भोजन खाया गया और इस बात पर बड़ा जोर दियागया कि बच्चे को जितना हो सके नगर के बाहर सुन्दर शुद्ध खुली वायु में रखें, इस छोटी अवस्था के शरीर में विकृत पदार्थ अपरमित शीघ्रता के साथ लौटने लगा अतः फल अति ही आश्चर्य जनक हुआ। एक सप्ताह के पीछे बच्चे को गाड़ी में फिराने की आवश्यकता न हुई। वरन् वह अपनी दो लकड़ियों के सहारे से अकेला चल फिर सकता था। दो सप्ताह पीछे ये पिछली (लकड़ियां) भी अनावश्यक होगई और शरीर पहिले से बहुत सीधा होगया, उसके और दो सप्ताह पीछे तक चिकित्सा करने से वह लड़का फिर पाठशाला जा सका, जहां कि वह बहुत काल से नहीं जा सका था। उस बच्चे ने इस चिकित्सा को छ मास तक किया और ऐसा आरोग्य होगया था कि वह फिर अपना शरीर सर्वथा सीधा रखने लगा जैसा कि चित्र (ख) से विदित होताहै। मेहन आदि स्नानों का वर्णन आगे होगा। अपूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना ।

तरङ्गिणी—हर्ष का विषय है हिन्दी साहित्य सागर में अब उच्च कोटि के पत्र और पत्रिकाओं का प्रादुर्भाव होने लगा कुछ समय पहिले तक केवल उच्च कोटि की हिन्दी में साहित्य पत्रिका सरस्वती ही थी किन्तु परमेश्वर की दया से चित्रमय जगत् व मर्य्यादा ने जन्म धारण कर हिन्दी साहित्य सागर को रत्नाकर बनाया । हिन्दी साहित्य सेवियों के लिये हर्ष का विषय हैं जून में वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में गंगा की बाढ़ के साथ हिन्दी साहित्य सागर की तरंग में श्री काशी जी में तरङ्गणी नामक उच्च कोटि की साहित्य पत्रिका का जन्म हुआ । इस में ११ उत्तम कविताएं, और छः चित्र हैं एक चित्र रंगीन गंगा लहरी के आधार पर बना अत्यन्त मनोरंजक है । इसकी चित्र चातुरी अत्यन्त प्रशंसनीय है। जगत् में मनुष्य का जन्म का भाव पूर्ण चित्र है। चित्र चित्रकार के उच्च भाव का बोध कराता है और इस चित्र के आधार पर पारशाथ द्विवेदी की कविता भी प्रसंशनीय है।साहित्यसेवियोंसे प्रार्थना करते हैं कि वह इसे अपना कर संपादक वसंतराम व्यास के उत्साह को बढ़ावें युरोपके भिन्न २ देशोंकी रानियों के पहानवे के आठ चित्र हैं इस में सम्पादक जी को रानियों के चित्र के साथ देश का परिचय देना आवश्यक था जिस से यह जानने में बाधा न होती कि किस देश की कौनसी रानी है।लेखोद्यान के माली श्याम विहारी मिश्र एम. ए. शुक देव मिश्र बी. ए. आदि विद्वानों के लेख दार्शनिक दृष्टि बहुत उत्तम है । छपाई भी उत्तम है । परमात्मा करे यह पत्रिका नित्य प्रति उन्नति करे । इसका वार्षिक मूल्य ३) है । मैनेजर तरंगिणी बनारस से प्राप्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य समाचार----यह डाक्टर कार्तिकचन्द्र वसु एम० बी० द्वारा पुस्तकाकार कलकत्ते नं० ४५ एमःहर्स्ट स्ट्रीट से प्रकाशित होता है। इस में स्वास्थ्य विज्ञान सम्बन्धी विद्वान डा० एवं वैद्यों के लेख होते हैं। भारतवर्ष जब कि नाना रोगों से ग्रसित है प्रत्येक पुरुष को स्वास्थ्य विज्ञान जानने कि आवश्यकता है। ऐसे समय में ऐसे पत्रों का होना अत्यन्त आवश्यक है वसु महाशय ने बंगाली होते हुए यह पत्र निकाल कर हिन्दी भाषा का अत्यन्त उपकार किया। हिन्दी हितैषियों को इसका आदर करना चाहिये। वार्षिक मूल्य २) रु० है। सम्पादक जी से प्रार्थना है इसमें कागज उत्तम लगाकर इसकी शोभा को बढ़ावें।

शिशु----जिस प्रकार बिना बालकों के गृहस्थ की पूर्ण शोभा नहीं होती ठीक इसी प्रकार बालोपयोगी पुस्तकों के बिना साहित्य पूर्ण उन्नत और शोभावान नहीं होता अंग्रेजी में चिल्ड्रन आदि कई पत्र बालोपयोगी है। किन्तु हिन्दी में ऐसा कोई पत्र न था। हर्ष का विषय है पण्डित भगवत्प्रसाद भारद्वाज ने इस कमी को पूरा करने के लिये शिशु को जन्म दिया। शिशु ग्रंथमाला द्वितीय पुष्प इस समय हमारे सामने है इसका टाईटिल पर पांच रंग में चित्र शकुन्तला के पुत्र भरत का है वीर बालक बगल में शेर के बच्चे को दबाए शेरनी को मार रहा है। दूसरा रंगीन चित्र विद्यावती और उसके पुत्र का है। विद्यावती अपने प्यारे पुत्रको गोद में लिये दूध पिला रही है। चित्र प्रेम भाव पूर्ण है। तीसरा राम धनुर्विद्या शिक्षण का है। कविबर रूप नारायण पांडेय की सरल मनोरञ्जन कवितासे भूषितपत्र है इसकी भाषा बच्चों के लिये किसी क़दर क्लिष्ट हैं। सम्पादक जी को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये। शिशु बालकों का उपयोगी उत्तम पत्र है। खेल के साथ २ शिक्षा भी मिलतीहै। इसके प्रत्येक अङ्क का मूल्य ≡) मात्र है मैनेजर शिशु ग्रंथमाला मुरादाबाद से प्राप्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महायुद्ध में इटाली ।

इटाली भी महायुद्ध के मैदान में उतर आयी, इसमें अब कुछ सन्देह नहीं । मालूम होगया कि इटाली ने नियमित रूप से युद्ध घोषणा कर दी । महायुद्ध आरम्भ होने के प्रायः १० महीने बाद इटाली ने तलवार खैंचना मुनासिब समझा है, इससे कुछ लोग यह कह सकते हैं, कि जब मित्रदल की जीत निश्चित देख ली, तब इटली नें युद्धस्थल में आने की हिम्मत की । कुछ लोग उस पर यह भी दोषारोपण कर सकते हैं कि उसने जर्म्मनी और अस्ट्रिया, अपने दोनों पुराने मित्रोंसे विश्वासघात किया और केवल स्वार्थ सिद्धि करने के लिये उन्हीं पुराने मित्रों पर अब उसने तलवार खैंची है । जो लोग इटाली पर ऐसे दोषारोपण करते हों वे बड़ी भूल में पड़े हैं । इटाली ने न विश्वासघात किया और न वह मित्रोंकी जीत निश्चि होने की राह देखकर युद्ध में शरीक हुई । बल्कि यदि सब बातों पर विचार किया जाये तो मालूम होगा; कि उसने आरम्भ से अन्त तक बड़ी सज्जनता और न्याय के साथ सब काम किये । कारण तो ऐसे आ उपस्थित हुए थे, कि यदि कोई उतवाला राज्य होता, तो शुरू से ही जर्म्मनी और अस्ट्रिया के विरुद्ध तलवार खैंच लेता परन्तु शाबाश कहिये इटालीको उसने एक दो दिन नहीं, पूरे ९-१० महीने अपने पुराने मित्रोंको मामला समझ लेने के लिये दिये और मित्रोंने जो बेईमानी करके इटालीसे विश्वासघात किया था उसका उसने कुछ खयाल न किया उसकी बराबर यही चेष्टा रही कि यदि अस्ट्रिया किसी तरह भी राजी होकर मामला समझ ले तो हम तटस्थ बने बैठे रहें और इङ्गलैण्ड फ्रांस आदि मित्र दलका साथ न दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु अस्ट्रिया ने एक भी न सुनी। इटाली सरकार ने अपने और अस्ट्रिया के झगडे की रिपोर्ट में कहा है, कि जर्म्मनी के बहुत ज़ोर देने पर भी अस्ट्रिया इटाली की इच्छानुसार मामला समझने में टालमटूल करती रही यहाँ तक कि वह मुद्दत बीत गयी, जो इटाली ने इस समझौते के लिये नियत कर रखी थी। तब लाचार इटाली को अपने मित्रों के विश्वासघात के कारण 'तीन पक्षवाले मेल' से जुदा होकर उन मित्रों को त्यागना पड़ा और अन्त में अपनी चिरकालीन अभिलाषाएँ पूर्ण करने के लिये तलवार पर हाथ रखना पड़ा। मित्रों ने कैसे विश्वासघात किया, इस पर भी इटाली अस्ट्रिया से क्या मामला समझना चाहती थी और क्यों समझौता नहीं हुआ ये सब बातें "तीनपक्षवाले मेल" पर तनिक विचार करने से मालूम हो जांयगी।

बहुत समय से यूरोपीय राज्य युरोप में 'बैलेंस आव पावर' अर्थात् बलका पलड़ा बराबर रखने की कसर—ब्योंत में लगे हुए हैं। जबतक पलड़ा बराबर रहता है तबतक तो सबके सब एक दूसरे पर दाँत पीसते हुए भी चुपचाप बैठे रहते है परन्तु ज्यों ही पलडा एक ओर झुक पड़ता है, त्यों ही अस्तबल में दुलत्तियां चलने लगती हैं और अन्त में दो चार का सिर फोडकर फिर पलडा बराबर कर दिया जाता है। फ्रांस-जर्म्मन-युद्ध के बाद पलडा यों बराबर किया गया कि एक ओर रूस और फ्रांसका दुगड्डम मेल और उसके जवाब में दूसरी ओर जर्म्मनी—अस्ट्रिया—इटालीका तिगड्डम मेल क़ायम हुआ। युरोपके प्रधान बल की तराजू के यह दोनों पलड़े तब से बराबरी पर कायम थे। इंगलेण्ड एक बहुत भारी पसंगे की तरह इन दोनों पलडों से सदा अलग रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पलड़े में वह पड़ जाय, वह कदापि झुके बिना रह नहीं सकता था बहुत समय तक इंगलैण्ड अलग रहा, परन्तु जब यह साबित होगया कि जर्मनी सारे युरोप पर प्रभुत्व जमाने के लिये बड़ी २ तैय्यारियां कर रही हैं इंगलैण्ड ने अपनी सहानुभूति दोपक्ष वाले मेल अर्थात् फ्रांस और रूस की तरफ प्रगट और मेल करने में भेद यही था कि मेलवाले मित्र युद्ध के समय एक दूसरे की सहायता करने के लिये वचनबद्ध थे और सहानुभूति रखनेवाला इंगलैण्ड इसके लिये बाध्य नहीं था। युद्धके समय फ्रांस और रूस की सहायता करना उसकी मर्ज़ी पर निर्भर था।

परन्तु इतने ही से बलका पलड़ा फ़ास और रूस की तरफ़ झुक गया, जिससे जर्मनी को चिन्ता हुई। उसने अपने तीन पक्षवाले मेलके मित्रों अर्थात् अस्ट्रिया और इटालीका सम्बन्ध अपने साथ और भी दृढ़ कर लिया परन्तु इस संगठन में इटाली की दो खास शर्तें थीं जिन्हें जर्मनी और अस्ट्रिया शपथ करके मान चुकी थी, एक शर्त यह थी, कि तीनों मित्र एक दूसरे को पहले से सूचना दिये बिना किसी से युद्ध न छेड़ें और दूसरी यह कि अस्ट्रिया इटाली को सूचित किये बिना सर्विया बलगारिया आदि बलकान प्रांतीय राज्योंके मामले में हस्तक्षेप न करे। परन्तु जर्म्मनी और अस्ट्रियाने इटाली का कुछ खयाल न करके इन दोनों शर्तों को बड़ी बे शर्मी से तोड़ डाला। गत वर्ष जुलाई मास में सर्विया का सत्यानाश करना विचार कर जर्मनीकी राय से और इटाली को सूचित किये बिना अस्ट्रिया ने सर्विया से युद्ध छेड़कर उस पर चढ़ाई कर दी। बस इससे दोनों शर्तें टूट गयीं। इटाली ऐसे विश्वासघात से सन्न रह गयी। यदि वह उसी समय तीन पक्षवाले मेल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुदा होकर दो पक्षवाले मेल के मित्रों से जा मिलती तो कोई उसको दोष न देसकता। परंतु फिर इटाली ने सोचा, कि अस्ट्रिया इस विश्वासघात के प्रतीकार रूप यदि हमारी चिरकालकी अभिलाषा पूरी कर दे, तो हम तटस्थ बने रहें और अपने विश्वासघातक मित्रों पर तलवार न उठायें। यह चिरकालीन अभिलाषा इटाली की उस भूमि के सम्बन्ध में थी जिसे अस्ट्रिया सन् १८६६ से दबाये बैठी है।

इटाली के उत्तरीय भाग की पश्चिमी सीमा पर भी फ्रांस उत्तरी सीमा पर स्वीज़र्लैंड और पूर्वीय सीमा पर अस्ट्रिया है। सन् १८६६ के युद्ध के बाद इटाली को अपनी पूर्वीय सीमा का वेनीशिया प्रान्त तो वापिस मिल गया परन्तु उस के उत्तर का ट्रेएटनो और पूर्वका इस्ट्रेया प्रान्त नहीं मिला। उसे इस्ट्रिया ने दबा लिया। ट्रेएटनों और इस्ट्रेया दोनों प्रान्त इटाली के टुकड़े हैं। इन के बिना पूर्वीय इटाली सिरकटी मालूम होती है। दोनों प्रान्तों के अधिकांश निवासी इटालियन हैं जिन पर अस्ट्रिया बड़े २ अत्यचार कर चुकी हैं। इन्हें अस्ट्रिया के पञ्जे से मुक्त कराने की अभिलाषा चिरकाल से इटलियनों की हो रही है। इस महायुद्ध से बढ़कर उसे पूर्ण करने का मौका और कब मिल सकता था इसी लिए सब लोगों का विश्वास था कि इटाली भी अवश्य इस युद्ध में शरीक होगी। इटाली ने अस्ट्रिया को समझा बुझा कर अपने उक्त दोनों प्रान्त और डाल्मशियाका समुद्रतट वर्त्ती प्रान्त भी मांगा। सम्भव है कि ट्रेंटिनों और इस्ट्रिया प्रान्त अस्ट्रिया दे भी देती परन्तु डाल्माशिया दे देने से समुद्र से बिल्कुल दूर होजाती। शायद इसी लिए उस का और इटाली का मामला न पटा और अन्त में इटाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलवार के जोर से उन प्रान्तों को ले लेने पर तैय्यार होगई है।

इटाली और अस्ट्रिया का युद्धस्थल उसी पूर्वीय सीमा पर है। ट्रेण्टिनों दुर्गम पहाड़ी प्रान्त हैं इस से उधर से एक दूसरे पर चढ़ाई न होकर उस के दक्षिण इस्ट्रिया के मैदान में ही युद्ध होगा। इटाली गत अगस्त मास से इस युद्ध के लिए तैय्यार हो रही है। यों तो उस की सैन्य संख्या ३३ लाख के लग भग है परन्तु प्रथम आक्रमण में ११ लाख चुने हुए सैनिक रण पर चढ़ सकते हैं। अस्ट्रिया की चुनी हुई सेना का बल गलेशिया रूसियों के हाथों बहुत कुछ टूट चुका है। अब केवल जर्म्मन की सहायता में वह रूसियों के सामने वहां डटी हुई है। कुछ सेना सर्विया की सीमा पर फंसी हुई है। उधर से या गेलिशिया से वह शायद कुछ सेना हटा कर इटाली के सामने नहीं ला सकती ट्रेण्टनों में पहलेसे जो सेना है। वह और जर्म्मनों से जो सहायता मिल जाए वह बस इसी पर सारा दार मदार है। इटालियनों को पहले इन्हीं का सामान करना पड़ेगा। फ्रांस आदि मित्रों को इटालियन सेना से अभी केवल यह सहायता मिलेगी। कि उस के कारण जर्म्मनी को पश्चिमी और पूर्वीय रणस्थलों से से अपनी कुछ सेना हटा लेनेके लिये लाचार होना पड़ेगा। अस्ट्रियनों का बल उधर टूट जाएगा तब इटालियन फ्रांसीसी युद्ध स्थल में भी जा सकेगें। अब देखना चाहिए कि अस्ट्रियनों का बल कब टूटता है और इस नए युद्ध स्थल में किस पर कैसी बीतती है। अंग्रेज़ों और उन के मित्रों को इटाली की सहायता की कोई खास ज़रूरत है। नहीं युद्ध में इस विचार से इटाली के शरीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनेकी कोई जरूरत नहीं। भले ही जर्मनीने २५—३० वर्ष की तैय्यारी से लाखों योद्धा तैय्यार कर लिए धन से खजाने भर रखे और युद्ध सामग्री के पहाड़ लगा दिए फिर भी यह मानी हुई बात है कि वह युद्धस्थलमें उतनी मुद्दत तक नहीं ठहर सकती, जितनी देरतक अंग्रेज़ और फ्रांसीस टिक सकते हैं।

कारण स्पष्ट है। जर्मनोंका जितना भी बल है, देशके अन्दर जमा है। अँग्रेजोंने जर्मनीके सब रास्ते बन्द कर रखे हैं। इसलिये वह सञ्चित बल बाहरके किसी मनुष्य या पदार्थसे अब बढ़ नहीं सकता। फ्रांसी रूसी दोनों युद्ध स्थलोंमें वह नित्य जैसा खर्च किया जा रहा है, वह भी हम देख रहे हैं। ऐसी सूरतमें अपने समयके भी बहुत पहले उसके शेष होजानेमें सन्देह ही क्या है? मित्रदलके योद्धा जैसे अब अड़े खड़े हैं वैसेही चिरकाल तक खड़े रह सकेंगे। उनकी लोहेकी दीवारों से सिर टकराते २ एक न एक दिन भेजा चूर २ हो जायेगा और जर्म्मन भूमिपर लोटने लगेंगे। इससे स्पष्ट है, कि मित्रों को अपनी सफलता के लिये किस की मददकी जरूरत नहीं। यदि कुछ हो भी, तो वे अपने ही दलके योद्धा जापानसे पूरी मदद ले सकते हैं और वह सब तरह काफी हो सकती है।

परन्तु क्या सभ्य मानव संसार चुपचाप बैठा उस दिनकी राह देख सकता है, जिस दिन कि मित्र दलको मदद की जरूरत पड़े और वह अपने साथी जापान को भी युरोप के युद्धस्थल में बुला भेजे? नहीं, नहीं। उस दिन के लिए बैठे रहें तो न जाने कितने वर्षों तक इस महा अनर्थकारी रक्तपातका भीषण दृश्य देखना पड़ेगा। अनेकानेक प्रकारकी जो हानियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी वह अलग । ईश्वर की इस पवित्र पृथ्वी पर ऐसी अनन्त जीवहिंसा मनुष्य मात्र नहीं सहन कर सकते इसी से सारे सभ्य संसार की यह प्रबल इच्छा है कि युद्ध शीघ्र बन्द हो । परन्तु युद्ध शीघ्र बन्द हो सकता है, केवल जर्म्मनोंका बल शीघ्र नष्ट होने से, और ऐसा तभी हो सकता है जब कि जर्मनी का एक और प्रबल शत्रु उसका सिर तोड़ने को खड़ा हो । ऐसा प्रबल शत्रु उसका नहीं तो उसके मित्र अस्ट्रिया का, इटाली मौजूद है जैसा कारण जर्मनी और फ्रांस की शत्रुताका है वैसा ही इटाली और अस्ट्रिया की पुरानी शत्रुताका है । यों इटाली ने अपने मतलब के लिये युद्ध में अस्ट्रियन पक्ष के विरुद्ध शरीक होने का बहुत बड़ा कारण मौजूद था इसीलिए सभ्य संसार की निगाहें शुरु से ही इटाली पर लगी हुई थी और सब दिल से यही चाहते थे कि इटाली भी तलवार खेंचे जिससे जर्मनों का जल्द बल टूटे और शीघ्र युद्ध समाप्त हो ।

युद्ध में इटाली के शरीक होने की खबरें तो युद्ध के आरम्भ होने के कुछ ही दिन बाद सुनी जाने लगी । कई बार कहा गया कि बस अब कुछ देर नहीं अब इटाली रणस्थल में उतरा ही चाहती है पर हर दफे किसी न किसी तरह बात टल गयी इसका कारण यही था कि जर्मनी और अस्ट्रिया दोनों मिल कर इटाली को तटस्थ बनाये रखने का उद्योग कर रहे थे इटाली की जो भूमि अस्ट्रिया ने बहुत समय से दबा रखी है यदि अस्ट्रिया उसे लौटा दे और एड्रियाटिक समुद्र तथा बलकान-प्रान्त में इटाली की इच्छा पूर्ण कर दे तभी इटाली का तटस्थ रहना सम्भव है । इन्ही शर्तों पर बहसा बहसी हुई परन्तु अन्त में मामला तय नहीं हुआ, क्योंकि प्रायः तीन सप्ताह पहले सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके, थे कि तीनों में परस्पर बात चीत बन्द हो गयी और अष्ट्रियन दूत ने अपने कुटुम्ब को इटाली की राजधानी रोम से रवाना कर दिया । इस के बाद कई ऐसे समाचार मिले जिनसे मालूम हुआ कि इटालिय प्रधान मन्त्री सिनर सालण्ड्रा और उनके दलने इसलिए इस्तेफा दे दिया कि विदेशी मामलों की नीति में वे देशके कुछ राजनीतिक दलों से सहमत नहीं हैं । परन्तु इटाली नरेश ने प्रधान मन्त्री का इस्तेफा मनजूर नहीं किया। प्रधान मन्त्री सालाण्ड्र मित्र दल की ओर होकर युद्ध में शरीक होने के पूर्ण पक्षपाती हैं । उनके इस्तिफे के ना मन्जूर होनेसे स्पष्ट हो गया कि इटलिन में राजा प्रजा सब युद्ध में शरीक होना चाहते हैं । इसके बाद बड़े लाट के पास तार समाचार में यह खबर आयी कि इटाली समाचार पत्रों की टीका टिप्पणी से ऐसा मालूम होता है कि इटली ने सचमुच युद्ध की घोषणा कर दी ।

इटालीका सैन्यबल ।

इटालीकी जन संख्या है ३ करोड़ ६० लाख । लड़नेके योग्य प्रत्येक, पुरुष युद्धके समय सेनामें भरती होनेके लिये बाध्य हैं । ऐसे सब मर्द तीन भागों में विभक्त हैं। लड़ने योग्य मर्दोंकी एक तिहाई प्रथम भागमें है । ये सब पूर्ण शिक्षित हैं । दूसरे भाग वाले 'उनसे कम शिक्षित हैं और तीसरे भाग वाले केवल युद्धकेसमय शिक्षित बनाये जा सकते हैं ।

शान्तिके समय सेनामें २३६००० सिपाही और १३६०० अफसर होते हैं; परन्तु युद्ध के समय इटाली ११०००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्धशिक्षित सिपाहियों की सेना मैदानमें ला सकती है और काम पड़ने पर २२ लाख और तैयार कर सकती है यों सब मिलाकर वह प्रायः ३३ लाख योद्धा लड़ा सकती है। शिक्षित सेनामें यह हैं—

११६ पैदल पल्टने

२९ रिसाले

३०० मैदानी तोपखाने

२४ पहाड़ी तोपखाने

१३ अन्य तोपखाने

६ एजिनियरी पल्टने

१ उड़ाकों की पल्टन

इटालीका नवबल अस्ट्रियासे कहीं अधिक है। इटालीके जङ्गी जहाजों और उनकी तोपोंकी संख्या इस प्रकार है—

बड़े "ड्रेडनाट" जंगीजहाज।

नाम	तोप सं०
एड्रिया डोरिया	२९
फायो डिलियो	२९
कौंट डीकाबोर	३१
लियोनार्डो	३१
जिलियो सीजर	३१
युटी अलीगीरी	३२

बड़े जँगीजहाज।

नाम	तोपसंख्या
रोमा	१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपोली	१४
इमान्वेल	१४
एलीना	१४
मार्गेरिटा	८
वेनीडेट्टी	८
सेंट बान बानवारा	१२
फिलिवटों	१२
तीन पुराने जहाज ।	

क्रुजर जँगी जहाज

नाम	तोपसंख्या
सान मार्को	१६
सानमजाराजियो	१२
अमाल्फी	१२
पिसा	१२
फेरुजियो	१७
वारीस	१७
जेरीबाल्डी	१७
कार्लो अल्बर्टो	१८
वेटर पिसानी	१८
मार्को पोलो	१६

इसके अतिरिक्त १२ छोटे क्रुजर जहाज, ३३ ध्वंसक तैय्यार और १३ बनते हुए, २६ टार्पीडो बोटें और ४० बनती हुई और ३० या ४० जलमग्न नावें हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियोगनी।

गताङ्क से आगे।

(३)

कपिला ने विमलाके नेत्रों में अश्रु भरे देख, अपनी बातको अधिक विस्तृत न कर यहीं पर समाप्त की। दोनों सखियां धीरे २ सरोवर से बाहर निकलीं। वसन्त ऋतु के कारण दाक्षिण्य मलयानिल का बहना युवतियों के कामोद्दीपन का मुख्य कारण इस समय यहां प्रस्तुत था। एक बार वायु का झकोर ज़रा जोर से आया कि विमला का वपु (शरीर) वेपथु (कँप कपी) से व्याप्त होगया। निर्ज़न तड़ाग तट पर यह युगल तरुण रमणियां निर्भयता से अपने आर्द्र अंगों को वस्त्र से पोंछने लगी, तथा सायङ्कालीन मृदु दन्द वायु उन के सुकोमल शरीर राशि में संचार कर आलिंगनादि यथेच्छ क्रिड़ा करने लगी। भगवावान भुवन भास्कर के अस्त होते ही, रजनी नाथ अंशु माली शनैः २ सहास्य सुशीतल प्रकाश को प्रसरित करते हुए नभोमण्डल में अपना अधिकार जमाने लगे।

——०——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चम निःश्वास।

सुख स्वप्न।

—०—

स्त्रीणां भावानुरक्तं हि विरहासहनं मनः।

(कथा सरित सागरे)॥

ठगी कपिला क्या तू सदैव मुझे वचन बाणों से बीधा ही करेगी।

विमला ने कहा, कपिला निरुत्तर हुई।

विमला तथा कपिला ने गात्र मार्जन किया पश्चात् नवीन वस्त्र पहिन कर समीपस्थ कुसुम कानन में इतस्ततः (इधर, उधर) भ्रमण करने लगीं। उभय अबला एक ही अवस्था की तरुणी तथा सौंदर्य में समान हैं, जिस से उन्हें देखने वालों को प्रथम यही विचार पैदा होता है कि किस को पहिले देखें तथा किसको पश्चात्। कारण कि एक को पहिले देखने से दूसरी का अपमान होना सम्भव है। विमला का शरश्चन्द्रज्योतिस्नामय रूप का अवलोकन विशेष आनन्द दायक कपिला की ऋतुमेय श्याम वर्णी छटा अधिक मोहक इसका विचार कर्तव्य है। उभय नारियों के नेत्रों की समता को क्या मृग नेत्रों की उपमा दी जा सकती है। एक के नेत्रों में से दामिनी मानो मेघ को छोड़ कर चन्द्रमा में आ मिली हो। तथा दूसरे के नेत्रों में मानो मनोरम्य नव घन में सौदामिनी का वास हो। इस प्रकार प्रत्यक्ष भास होता है। विमला ने कपिला का शरीर पुष्पालङ्कार से सजाया पुष्प भूषण से स्वरूप को उज्ज्वलता प्राप्त हुई। विमला ने एक गुलाब का फूल तोड़कर कपिला के हाथ में देते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, 'बहिन' इस पुष्प से अपने पति के चरण कमलों की सेवा करना।

कपिला ने तब ओष्ठ दाँतों से दबा कर लटके से विमला को उस फूल का प्रहार किया।

विमला ने हँस कर कहा, 'क्यों बहन! मैंने तेरा क्या अपराध किया जिस से तू मुझे मारती है।'

तूने ऐसा क्यों कहा, कपिला ने पूछा।

मैंने इस में अनुचित क्या कहा, ? विमला ने उल्टा उसी से प्रश्न किया। कपिला शर्मा गई और लज्जा सहित बोली, 'क्या संपूर्ण स्त्रियां अपने पति के चरणों को पुष्प से ही पूजती हैं ?'

बिमला ने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और फूल का तोड़ कर भूमि पर फेंक दिया। कपिला ने आश्चर्य से देखकर उससे पूछा 'सखी! पुष्प फेंकने का क्या कारण ?' फूल जल गया. बिमला ने थोड़े ही में प्रभावजनक उत्तर दिया। 'जल गया, अर्थात्!' कपिला ने फिर पूछा।

'अर्थात् मेरी अङ्गाग्नि से भस्म हो गया है।

बिमला के हृदय की व्यथा को कपिला इस उत्तर से समझ गई, और इस से वह अपनी सखी को इस चिन्ता से मुक्त करनेका उपाय करने लगी। कुछ समय उपरान्त बिमला का चित्त स्थिर तो हुआ, परन्तु बिषाद का समूल अभाव नहीं हुआ। अर्थात् दुःखी रही।

कपिला ने कहा—बहिन चलो अब घर चलें।

मैं तो चांदनी रात में यहां बहुत देर तक बैठी रहती हूं क्यों बहिन, तू इतनी जल्दी क्यों करती है ? मैं तो अभी यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठहरूंगी। विमला ने न जा ने की अनिच्छा से कहा।

तो क्या मैं अकेली ही जाऊं! कपिला ने पूछा।

विमला ने कहा, यह तेरी इच्छा मैं भी तो चलने को कहती हूं, पर ज़रा देर हो जायगी तो क्या तेरा स्वामी अप्रसन्न होगा?।

कपिला हंसते २ बोली, जिसका नमक खाते हैं उसके आधीन रहना पड़ता है और उसके मन के अनुसार वर्ताव भी करना पड़ता है। इतना कह कर वहां से चलती हुई।

विमला अकेली ही उद्यान में फिरने लगी॰ फिरते फिरते वह एक गुलाब की लता के समीप जाकर खड़ी रही। लता में एक सुन्दर पुष्प खिल रहा था, उसे तोड़ कर वह सूंघने लगी क्षणैक में ही उसने उस फूल को तोड़ कर धरती पर फेंक दिया और आप ही आप कहने लगी, हे पुष्प! तुझे ग्रहण करने से मुझे क्या लाभ? जिसके कर कमल में यह पुष्प देने से इस हाथ की शोभा में वृद्धि होती है, उस पुरुष का तो पूर्ण अभाव ही है इतना कहके उसने एक दीर्घ निःश्वास लिया, और स्तब्ध रही, कुछ समय पश्चात् पुनः उसने स्वगत संभाषण किया हा! विधाता!! तेरी गति विचित्र है! तूने मुझे विधवा बनाने के साथ ही मेरी सांसारिक आकांक्षाओं का नाश क्यों नहीं कर दिया? क्या तेरे लिये ऐसा करना अशक्य था, यदि नहीं था तो श्रुति देकर श्रवण शक्ति देने में ही कृपणता किस कारण दिखाई? जहां तृषा वहां जल नहीं। परन्तु नहीं, नहीं. विधि! इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं! ऐसा मेरा भाग्य ही होगा! हे प्रियतम! तुमको देख कर मेरे हृदय में इतनी अधिक शान्ति क्यों होती है? मैं तुमको देख कर क्षणैक दुःख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मुक्ति क्यों होती हूं ?

विमला के नेत्र अश्रुओं से भर गये। यह अन्तिम वचन वह उपेन्द्र के उद्देश्य से बोली थी। वह फिर कहने लगी 'जगदीश्वर'? विधवा होते हुये भी मेरे मन में इस प्रकार विषय वाञ्छा क्यों होती है? क्या मेरे समान और विधवायें भी दुर्भाग्य वश काम पीड़ा से ऐसे ही पीड़ित होती होंगी? कल्पती क्यों न होंगी? वह भी तो मेरे समान स्त्रियां ही हैं। ऐसी दुर्लभ आशाओं का सञ्चार हमारे हृदय में क्यों होता है हे दीनबन्धू! दीनानाथ?! इन निर्दोष बालिकाओं के हृदय में ऐसे असह्य दुःख का अस्तित्व होना ०००००

अचानक उसी समय उपेन्द्र वहां आगया। उपेन्द्र विमला के कोई दूर के सगे का पुत्र था। उस के माता पिता के मरने के पश्चात् अमृतलाल उसे अपने यहां ले आया और उसका स्वपुत्रवत् पालन करने लगा। जिस समय उपेन्द्र अमृतलाल के यहां आया उस समय उसकी अवस्था केवल नव (नौ) वर्ष की थी। अमृतलाल के यहां वास करते उसे १६ सोलह वर्ष होगए हैं। इस से इस समय उस की उमर २५ वर्ष की है उस का पूर्ण यौवन काल है उस की देह का वर्ण उज्जवल और श्याम तथा आकृति मध्यम है। नासिका उन्नत मुख सुन्दर तथा शरीर बन्धन न अति स्थूल और न अति कृश मध्यम प्रकार का है।

उपेन्द्र को देखते ही विमला शर्मा गई। उस के चरणों के पास जो गुलाब का फूल विच्छिन्नावस्था में पड़ा था, उस को उठा कर विमला के हाथ में देते हुए उपेन्द्र ने कहा, विमला! फूल किस को देना चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न–हिं–हां–हां ?,, विमला ने अधोमुख करके स्पष्ट उत्तर दिया विमला का स्वर बन्द होगया। उपेन्द्र उस का हाथ पकड़ कर कहने लगा, विमला ! विमला कुछ बोलो तो सही। शर्माती क्यों हो।,

विमला रोने लगी, उपेन्द्र भी रोते स्वर से बोला, मैं स्वप्न देख रहा हूं या जाग्रत अवस्था में हूं ?"

उपेन्द्र ने स्तब्ध भाव से विमला के मृदु वदन को एक बार फिर अवलोकन किया' उस के नेत्रों मे अश्रु भर आए! उस ने अश्रुओं को रोकने की चेष्टा की परन्तु व्यर्थ गई! वह तत्क्षण ही विमला का हाथ छोड़ वहां से चला गया' विमला पाषाण प्रतिमावत् वहीं पर गति रहित होकर खडी रही।

प्रेम, तेरा प्रभाव प्रबल और अद्भुत है! स्त्री पुरुषों के विरह पीड़ित हृदय में शान्ति देने वाला तू ही है। उसी प्रकार कचित भ्रांति में भ्रमाने वाला भी तू ही है। तेरी लीला विचित्र है।

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ठम निःश्वास॥

आशा का आभास

कहीं लाखों निराशा में, अमर आशा छिपाई है ॥

रा० म० न०

प्रकृति अपने सम्राज्य का प्रसार योग्य समय में सम्पूर्ण स्त्री पुरुषों पर एक ही समान करती है। यह न समझना कि केवल बिमला से प्रति पक्षपात कर के उस पर अपना समस्त बल अज़माने से प्रकृति का कुछ भी कारण नहीं है विज्ञपाठकों यह सम्राज्य के प्रभाव से ही विधवा विमला और युवा उपेंद्र को परस्पर प्रेम लवलीन बने हुए आपने गतनिःश्वास में देखा है। उपेन्द्र के चले जाने के पश्चात् विमला वहां वहुत समय तक उदासीनावस्था में बैठी रही परन्तु अंधकार विशेष व्याप्त होने से उसने धीरे २ गृह प्रति प्रयाण किया घर में आते ही उसने अपनी माता को नाना प्रकार के सुन्दर मिष्ठ भोजन की सामग्री तैय्यार करने में लवलीन देखी।

सरस्वती ने पुत्री को देखते ही पूछा बेटी विमला कहां गई थी ?,, अपने उद्यान के समीप तलैया किनारे।' विमला ने उत्तर दिया।

सरस्वती ने देखा कि विमला के नेत्र सूझ कर रक्तवर्ण हो गए हैं। इस से उसने रुदन किया होगा ऐसा उसे स्पष्ट भास हुआ उस का चित्त अन्य मार्ग में प्रवृत्ति करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिप्राय से वह बोली, मैं अकेली यह सब काम पूरा नहीं कर सकूंगी—इस लिए तू भी स्नान करके मुझे सहायता दे तो यह काम तुरन्त ही पूरा हो जाय' बिमला माता की आज्ञानुसार भोजन गृह में उस की सहायका हुई। तदनन्तर वार्त्तालाप करते २ उसने सरस्वती से पूछा, 'मा ? आज कौन आया है ? किन के लिए आज बहुत उत्तम २ भोजन तैय्यार कर रही हो ?,

'तेरे पिता के एक मित्र मुरादाबाद जा रहे थे, स्टेशन पर हम सब उन्हें मिलने गए और अत्यन्त आग्रह कर उन्हें दो एक दिन के लिए यहां रोक लिया है। नौकरी के सम्बन्ध से हम और वे बहुत वर्ष लों साथ रहे थे। तू तो उस समय बहुत ही छोटी थी। ये स्वभाव के अत्यन्त दयालु हैं।' सरस्वती ने कहा।

मां ! वह कहां के रहने वाले हैं ?' बिमला ने पूछा

'गाज़ीपुर, उन्हों ने द्रव्य भी बहुत कमाया है मुरादाबाद तो किसी काम के लिए जाते हैं; किन्तु वे सुधारक मत के अनुयायी हैं। सरस्वती ने उत्तर दिया।

'मैं उन्हें देख आऊँ मां ?' बिमला ने जिज्ञासा पूर्वक आज्ञा मांगी।

'जा बेटी आनन्द पूर्वक देख आ।' सरस्वती ने अनुमोदन देते हुए कहा

माता की आज्ञा मिलते ही बिमला हँसती हुई पाकशाला से बाहर निकली जिस दिवानखाने में अमृतलाल और महिमान बैठे थे उत्तर की ओर एक दरवाज़ा था। अभी उस के किवाड़ बन्द थे। (शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी जगत में महान कमी की पूर्ति

सवा का माल आठ आने में

विराट् उपहार ।

आबाल वृद्ध स्त्री पुरुषों के परमोपयोगी

सती चरित्र

यह वह पुस्तक नहीं है एक बार पढ़कर रखदो इस से आप की सन्तान सदाचारी साहसी परिश्रमी बनेगी। यह पुस्तक स्त्रियों के विशेष उपयोगी है।

इस में क्या है

वीर बाला, प्रभा, वीर नारी चन्दा, वीर भद्रा, मरीची, दुर्गावती, कलावती, कर्मदेवी, चँचलकुमारी, रूपवती, हांडी, सुलोचना, संयुक्ता, विदुला, विमला, रानी हेमन्तकुमारी, शरद सुन्दरी देवी, धन लक्ष्मी, विजया, जया, प्रभावती, कमल, देवी सुलीवा पंडिता, सत्यवती, अंशुमती, लीलावती, ईला, मालती, मीराबाई, पद्मा, देवयानी, शकुन्तला, पद्मनी, गार्गी, तारा, इन्द्राणी, तुलसा, बृन्दा कैकेयी, अरुन्धती, अहिल्याबाई, लोपामुद्रा, गान्धारी, सुभद्रा, सुकन्या, नर्मदा, मंदलासा, देवहुती, अच्छन कुमारी, सत्य रुपा, रैणुका, रुक्मणी, स्वाहा, संज्ञा देवी, सरस्वती, जानकी, पार्वती लक्ष्मी, द्रोपदी, रेवती, सुलोचना, दमयन्ती, मंदोदरी, कौशिल्या' तारामती, सावित्री, अनुसूया। सारामार्टिन' मरियम, अमिया, पारेशिया आदि प्रातः स्मरणीया आदर्श देवियों के जीवन चरित्र अत्यन्त सरल और मनोरंजक भाषा में लिखे गए हैं। लग भग ४००० के पृष्ट संख्या मूल्य १) किन्तु अबला हित कारक के ग्राहकों को ।=) में दी जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के आदर्श बालक

यह पुस्तक आबाल वृद्ध स्त्री पुरुषों के लिये जैसी उपयोगी है उस की प्रसंसा करना व्यर्थ है। इस में गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का दीवार में चिना जाना और धर्म पथ पर दृढ़ रहना तारु सिंह का धार्मिक जीवन व आत्म समपर्ण शाहबाज़सिंह का पिता सहित प्राणदान, हकीकत राय का बाल्य अवस्था में धर्म यज्ञ में आत्म समपर्ण मनोरंजन और भाव पूर्ण भाषा में लिखा गया है यदि अपनी सन्तान को धर्मात्मा बनाना और मन को पवित्र करना चाहते हो तब यह पुस्तक मंगा कर पढ़ाईये पृष्ठ संख्या लगभग १०० है। मूल्य चार आने अबलाहित कारक के ग्राहकों को ≈)

और क्या चाहतेहो

अबलाहित कारक का छ मास का मूल्य देने पर ही प्रत्येक ग्राहक को सतीचरित्र और आदर्शबालक १।) की पुस्तक केवल ।।) में देगें। अर्थात् छ मास मास अबलाहित कारक मुफ्त पढ़ो। हज़ारों की हानि उठाकर भी इतनी रिआयत करते हैं। इस से ज्यादा और आप क्या चाहते हो।

उपहार किसे मिलेगा

जो सज्जन ।।≡) का छ मास के लिए अबलाहित कारक का वी० पी० डाक व्यय सहित छुड़ालेंगे। और फौरन उपहार भेजने की आज्ञा देंगे तब मिल सकेगा। क्योंकि पुस्तकें १००० छपी हैं विकने पर पछिताना पड़ेगा।

विशेष सूचना

शंकर सिलाई की मशीनों पर लड़ाई के कारण १०)रु० सैकड़ा कीमत बढ़ा दी गई हैं।

मैनेजर इण्डियाइम्पोर्ट आफिस बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिक पत्र

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल

सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सबसे सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ	लेखक
कृतघ्नता	९९	"तरङ्गिणी"
सम्पादकीय वक्तव्य	१०२	० ०
वर्षा ऋतु	१०८	नन्दपाल
रोग क्या है	११०	प्रकृति
जहां तक हो बच्चों को बुद्धि की उन्नति करने देना चाहिये	११२	डाक्टर स्पेन्सर शिक्षा से
क्या मैं जीवित रहूंगी	११५	पूर्णादेवी
कुलियों का विदेश गमन	११८	श्री वेंकटेश्वर
यजुर्वेद में विधवा विवाह	१२१	श्रो० पुरषोत्तमदत्त
वियोगनी	१२३	चम्पालाल चौधरी

Printed and Published by Soti Jagdish Datta at
Deenbandhu Press Bijnor.

वार्षिक मूल्य १।)　　　　स्त्रियों से ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गर्मी के मौसिममें यह तीन दवाइयाँ
आपके दुःख दर्दके सच्चे दोस्त हैं।

पिपरमैण्ट का सत्त [फूल]।

यह प्रायः सब कोइ जानते हैं कि पेट के साधारण दर्द के लिये पिपरमिण्ट का सत्त व्यवहार होता है, परन्तु बज़ारू पिपरमिन्ट के सत्त में प्रायः दूसरी चीज़ों की मिलावट रहती है, यही कारण है कि उससे उतना गुण नहीं होता।

ग्राहकोंको असली चीज़की चाहना देखकर डा० बर्म्मन ने जापान के एक नामी कारखाने से असल चीज बनवाकर मंगाई है। मूल्य ।≈) छः आने शीशी डा० म० ।−) पांच आने

डाक्टर एस० के० बर्म्मन का क्लोरोडिन

यही अङ्गरेजों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। बाइ दर्द व शूल चाहे किसी कारण से हो इस दवाके एक दो बार के सेवन से सेहत होती। दस्त, आंवके दस्त, पेचिश मरोड़ पेट के दर्द या ऐंठन के लिये क्लोरोडिन अत्यन्त गुणकारी है। डाक्टर बर्म्मन ने इङ्गलैण्ड के एक नामी औषधालय से यह क्लोरोडिन बनवाई है। जो कि पेटेंट व अधिक मूल्य के क्लोरोडिनके सम्पूर्ण समान है। और दाम में सस्ती है। अतः प्रार्थना है, कि व्यर्थ अधिक मूल्य में "पेटेंट" क्लोरोडिन न लेकर ग्राहक लोग इसे खरीदें। मूल्य १ शीशी ।≈) छः आने, दरजन ४) रुपया। डाक व्यय अलग।

शिर दर्द व बाई की दवा।

दर्द पलमें पहाड़ हो जाता है यह उसको पानी कर देती है। चमक, लहर अंगमें किसी प्रकार का दर्द हो मिट जावेगा आधे या सारे शिर में कैसा दर्द होता हो इस दवा के सेवन से तत्काल ही सेहत पावेंगे। १२ टिकिया एक शीशी का मूल्य ।≈) छः आने। डा० म० १ से ६ शीशी तक ।−) पांच आने।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् नमः शिवाः ।

अबलाहितकारक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रिया ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यात्यशु तत्कुलम् ।
न शोचयंति तु तत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष | आषाढ़ सम्वत् १९७२ | अङ्क ४

कृतज्ञता ।

(१)

प्रभो ! दीनबन्धो ! दयादान-कारिन् !
कहां सोरहे हो क्षमा के बिहारिन् ॥
दया शीलता की पढ़ी हैं कथायें ।
हरीं आप ने भक्त की व्यथायें ॥

(२)

अनाद्यन्त अव्यक्त दुर्बोध दाता ।
तुम्हीं नाथ ! कर्त्ता विहर्त्ता विधाता ॥
नहीं आपसे गुप्त है कर्म कोई ।
छिपा क्या सकेगा कभी मर्म कोई ? ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३)

सदा सर्व ब्रह्माण्ड की सृष्टिसारी।
जहां जा रही आप की दृष्टि न्यारी॥
जलों में थलों में घरों में वनों में।
जहां देखते हैं वहां हो मनों में॥

(४)

नरों पै बड़ी ही दया की गई है।
उन्हें शक्ति भारी भली दी गई है॥
चहें तो तुम्हें भी भले पा सकेंगे।
महामान्य स्वर्धाम को जा सकेंगे॥

(५)

नहीं भूलता आप की मैं भलाई।
भवाम्भोधि में देह नौका चलाई॥
चहें तो इसी से चले पार जावें।
चहें भोग के द्यूत में हार जावें॥

(६)

बना मत्त कैवर्त है चित्त मेरा।
नहीं मार्ग है ज्ञात जाना न फेरा॥
कुतृष्णादि की आँधियां घोर आतीं।
मुझे मध्य की धार में हैं डुबाती॥

(७)

बड़े ज़ोर का बेग भी "काम" का है।
भरोसा कहो कौनसा पार का है॥
बड़े ज़ोर हैं चोर जो साथ में हैं।
नहीं पासकि आज भी साथ में हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८)

खड़ा ब्यालसा काल है वक्र बाये ।
हमें देखता घात सी है लगाये ॥
जगज्जालमाला किसी काल में क्या ।
पचेगी नहीं काल के गाल में क्या ? ॥

(९)

इसी से यही एक सिद्धान्त भारी ।
तुम्हें भूलता जो; वही है अनारी ॥
तुम्हारी दया से कभी पार होंगे ।
छुटे बन्ध से जीव उद्धार होंगे ॥

(१०)

हमें बुद्धि जो शुद्ध है आपने दी ।
वही एक भारी कृपा आपने की ॥
उसी के सहारे तुम्हें जानते हैं ।
हमी में बसे हो इसे मानते हैं ।

(११)

करो प्रेरणा चित्त को स्थैर्य देके ।
बिपत्काल में भी हमें धैर्य्य देके ॥
करे चित्त चिन्ता तुम्हीं में बसा हो ।
बनाओ उसे दास जो आप चाहो ॥

(१२)

नहीं भूलता हूं तुम्हें ध्या रहा हूं ।
तुम्हारे गुणग्राम को गा रहा हूं ॥
हमें पूर्ण बिश्वास है नाथ ! सच्चा ।
नहीं आपके प्रेम का भाव कच्चा ।

"तरङ्गिणी"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय वक्तव्य

ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की शरण लेने से भारतवर्ष को जो जो लाभ हुए हैं उनका यदि वर्णन किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक बन जाय। जो उपकार ब्रिटिश गवर्नमेंट ने भारतीयप्रजा पर किये हैं। उन सब में बड़ा उपकार हम प्रेसदान का समझते हैं। प्रेस के होनें पर जो भारतवर्ष ने ब्रिटिश छत्र छाया में उन्नति की है वही चिरस्थायी उन्नति है किन्तु भारत के दुर्भाग्य से सन् १९१० ई० के प्रेस एक्ट के बाद प्रेस के मालिक विशेष कर पत्र सम्पादकों के कार्य्य में जो बाधा हुई वह अत्यन्त शोचनीय है। इस दुःखदाई ऐक्ट के पास होने पर 'अभ्युदय' आदि होनहार सुलहपसन्द पत्र ज़मानत के जंजाल में आकर बन्द होगये। इस ऐक्ट से केवल इतना लाभ अवश्य हुआ है कि राजद्रोही अखबार बन्द होने से कुछ शान्ति हुई कह सकते हैं। प्रेस ऐक्ट का पूर्ण लाभ जब कह सकते थे कि यदि इस ऐक्ट के पास होने पर बम आदि राजविद्रोही कार्य्य बन्द होजाते किन्तु वह पूर्ववत् जारी हैं। इस लिये हम ब्रिटिश गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं कि इस एक्ट को रद्द करके साहित्य सेवी और सच्चे देश हितैषियों के कार्य्य में सहायक बनें। क्यों कि इस ऐक्ट के होने पर प्रेसाध्यक्षों ने छपाई के रेट अधिक कर दिये जिस से निर्धन साहित्य सेवी पुस्तकें नहीं छपा सकते। और जिस अवधि के लिये उक्त ऐक्ट बना था वह भी समाप्त होगई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूना म्युनिस्पिल आयुर्वेदीय औषधालय वैद्य चिकित्सा करते हैं उसकी रजिस्ट्री 'डाक्टरी रजिस्टरी आइन' के अनुसार न होने के कारण बन्द कर देना होगा ऐसी विचित्र बात कलक्टर पूना के पत्र से मालूम होने पर अत्यन्त आश्चर्य हुआ माना कि आयुर्वेद औषधालय की रजिस्टरी 'डाक्टरी रजिस्ट्री आइन' के अनुसार नहीं हो सकती। ऐसी दशा में भी इसका बन्द करना हानिकारक है क्योंकि आयुर्वेदीय चिकित्सा को गवर्नमेंट चिकित्सा मानती है और जिसको देशकाल के अनुसार भारतवासियों के लिये सर्वोत्तम चिकित्सा कहना चाहिये। उसको बन्द करना अत्यन्त हानिकारक है क्योंकि बहुत से हिन्दू डाक्टरी औषधी न खाने के कारण और निर्धन होने पर औषधी न खरीद कर स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकेंगे। इस लिये हम गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं कि उक्त औषधालय को बन्द करने की आज्ञा रद्द करे।

किसी देश या जाति की उन्नति के लिये जाति की अधिक संख्या और देश का अधिक क्षेत्र फल कारण नहीं होता उदाहरणार्थ जर्मन से नष्ट किये बेलजियम की पूर्व दशा देखिये अब से ८०० वर्ष पहिले यह पराधीन देश था उस समय इस की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। जब बेलजियम को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ या यह कहो जब बेलजियम निवासियों के चित्त में देशोन्नति की पवित्र अग्नि प्रज्वलित हुई तब इसने आश्चर्य्यजनक उन्नति कि इसको पांच सौ करोड़ रुपए की आमदनी व्यायापार से वार्षिक थी। विद्योन्नति में इसकी दशा सुनिये इस छोटे से देश में जो कि केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार प्रान्त के बराबर है अर्थात् जिसकी कुल जन संख्या ७३ लाख है पांच विश्वविद्यालय थे और प्रारंभिक शिक्षा में बेलजियम सरकार समस्त आमदनी का दशांश व्यय करती थी धीरता बीरता में महाशक्तिशाली जर्मनी का अन्त तक सामना किया। प्रिय हिन्दू भाईयो तुम्हारी जन संख्या २४ करोड़ है फिर क्यों अपनी उन्नति से निराश होते हो। उन्नति के लिये केवल सच्चे प्रेम ही की आवश्यकता है।

हिन्दु पति महाराणा प्रतापसिंह विजय देवी की उपासना में भाई और अपने प्राण प्यारे सरदारों को भेंट कर चुके थे २५ वर्ष तक अनेक उपवास किये फलों से ही नहीं घास तक से पूर्वोक्त देवी की प्राप्ति के लिये पेट भरा जब वह सब तरफ़ से विजय से निराश हो अपने प्यारे देश को छोड़ कर जा रहे थे। उस समय भामा शाह ने अपना सर्वस्व अर्पण किया और भानुमती ने अपने भाई की दुष्टता का समाचार स्वयं आकर सुनाया कि मेरा पापी भाई मेरे पति के कैद करने के कारण आपको मारना चाहता है। तब महाराणा को पुनः उत्साह हुआ कि जब मेरे देशकी स्त्रियां तक मेरे लिये अपने सौभाग्य और प्यारे भाई की परवाह न करके मुझे खबर देने आईं तब अवश्य मुझे विजय होगी। ठीक यह ही दशा इस समय इंग्लैंड की स्त्रियों की है हाल में स्त्रियों का एक दल युद्धोपकरण मंत्री मि० लायड जार्ज के पास गया और प्रार्थना की कि हम से भी युद्ध सामग्री बनानें में काम लीजिये। मि० लायड जार्ज ने प्रसन्नता पूर्वक कहा कि जब तक स्त्रियां भी युद्ध में योग न देंगी तब तक युद्ध समाप्त न होगा। हम स्त्रियां को इस काम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने का विशेष प्रयत्न करेंगे। बहुत सी स्त्रियाँ पुरुषों के युद्ध में व्यग्र होने के कारण डाकियों का काम कर रही हैं। और हज़ारों देवियां तन, मन, धन, से घायलों की सेवा में संलग्न हैं। धन्य है वह देश जहाँ विलास प्रिय कोमलांगी स्त्रियां देश के लिये सब सुख को छोड़ रात दिन स्वतंत्रता देवी की उपसना में लग्न हैं। ऐसे पुण्यशाली या दैवी महाशक्तिशाली देश पर कदापि शत्रु विजय प्राप्त नहीं कर सकता।

—o—

भारतवर्ष के समान संसार में कोई देश दरिद्री इस समय नहीं है। इस बात को सब मानते हैं कि बिना उद्योग के द-रिद्रता कदापि दूर नहीं होसकती। किन्तु शोक है भारतवासियों को न जानें क्यों औद्योगिक शिक्षा से प्रेम नहीं, दरिद्रावस्था में जापान के युवक जहाजों में नौकरी करते २ अम्रिका आदि देशों में जाकर सड़क कूट २ कर भी औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करते थे। इन सच्चे देश हितैषी युवकों ने न केवल अपने देश से दरिद्रता का नाश ही किया है प्रत्युतः देश को कला कौशल और अनेक कारखानों से देश की दशा पलट दी। परन्तु हमारे भारतीय युवकों का प्रथम बाल विवाह तथा सामाजिक बन्धनों के कारण विदेश को जाना ही कठिन है यदि कदाचित् चले भी गए तो वरिस्टरी और डाक्टरी मात्र सीख कर आते हैं जिससे देश को कोई विशेष लाभ नहीं होता। मैसूर के दो युवक हाल में विलायत से आए हैं इन युवकों ने वहां पर कम्पोज़ीटरी से लेकर मास्टर और मिन्टरी तक सब काम पढ़कर कारखानों में अनुभव प्राप्त किया। लिथोग्राफ़ी तथा चित्र के ब्लाक बनाने की शिक्षा प्राप्त की है। परमात्मा हमारे देश के अन्य युवकों को इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार सुबुद्धि दे ।

—०—

पण्डित ब्रह्मदत्त जी की विधवोद्वाह निषेध पुस्तक का खं-डन छप रहा था किन्तु पुस्तक के खोए जाने के कारण इस बार नहीं छप सका आगे प्रकाशित होगा ।

पञ्जाब के लायलपुर जिले में शान्ति नामकी एक स्त्री कहीं गायब हो गई । पुलिस उसे ढूँढ रही थी, कि इतने हीमें एक स्त्रीकी सिर फटी लाश नहर में पड़ी पाई गई । समझा गया कि वह शान्ति की ही लाश है । पुलिस ने अनुसन्धान करके शान्ति के एक कुटुम्बी को पकड़ा । उसने कबूल किया कि हां मैंने शान्ति की हत्या की थी । मामला अदालत में पहुंचा और वहां विचार होने लगा । विचारका क्या फल होता यह ईश्वर ही जाने, पर इसी बीच में यह अद्भुत घटना घटी, कि शान्ति जो मुर्दा समझी जाती थी और जिस की हत्या एक आदमी क-बूल चुका था, जीती जागती अदालत में आ खड़ी हुई ! तब तो पुलिस और सभी दर्शक हक्के बक्के हो गये । ऐसा खयाल हो सकता था, कि शायद पुलिस ने कुछ कड़ाई की हो इसलिये लायलपुर के दो पुलिस अफसरों और एक जिलेदार से जवाब तलब किया गया और स्वयं जिला मजिस्ट्रेट मि० किचिन ने उनके मामले की जांच की । जांच का फल अब प्रगट हुआ । जिला मजिस्ट्रेट ने दोनों पुलिस अफसरों और जिलेदार को निर्दोष पाया । संसार की लीला बिचित्र है ।

हिन्दू विश्वविद्यालय के कानूनके मस्विदेकी यह धारा, कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-वि-जिटर अर्थात् युक्तप्रदेश के छोटे लाट विश्वविद्यालय या उसके अधीनस्थ किसी कालिजकी जिस कारवाई का चाहें रद कर सकते हैं, देशकी समस्त प्रधान सभा समजों को खटकी है। कलकत्ते के बृटिश इंडियन एसोसियेशनने इस विषयमें अपनी जो राय प्रगट की थी, उसका समर्थन सभीने किया है। हाल में पञ्जाब हिन्दू सभाने भी वैसी ही राय प्रगट की है। सभाकी सलाह यह है कि "यदि छोटे लाट (विजिटर) विश्वविद्यालय की कोई कारवाई अनुचित समझे तो उसे पुनः विचारार्थ विश्वविद्यालय की कोर्ट या सिनेट सभामें भेज दें। यदि पुनः विचार न किया जाय या विचारने के बाद ऐसा संशोधन किया जाय जो विजिटर को पसन्द न हो, तो विजिटर अर्थात् छोटे लाट उस प्रस्ताव को स्वयं रद न करें, बल्कि सकौंसिल गवर्नर जनरल की सेवा में भेज दें और उस कारवाई के सम्बन्ध में जो जाँच मुनासिब समझें करें।" हम पहले ही कह चुके हैं, कि सदा सिर पर रहने वाले विजिटर के हाथ में कारवाइयां रद करनेका अधिकार देना उचित नहीं जान पड़ता। निरीक्षण आदिका पूरा अधिकार उन्हें भले ही प्राप्त हो परन्तु टांग अड़ानेका अधिकार सकौंसिल गवनर जनरल के हाथ में रहना ही सबके लिये अच्छा होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा ऋतु ।

(१)

ऋतुओं में मस्त ऋतु, वर्षा यह कैसी हैगी ? ।
मखमल सी घास सब में, कैसी बिछी यह हैगी ?
उपवन व वन सारे, फूले फले हुए हैं ।
सूखे जो वृक्ष थे वह आज हरे हुए हैं ॥

(२)

ताल, नदी, नाले जो कल पड़े थे सूखे ।
वह आज बह रहे हैं कैसी बिकट गती से ? ॥
पीहा, चकोर, कोयल, सब द्वन्द कर रहे हैं ।
अपनी अपनी धुन में सब मस्त हो रहे हैं ॥

(३)

कोई हल व बैल लेकर खेतों को जारहा है ।
कोई गौं व भैसों को साथ जंगल में चरा रहा है ॥
बुन्दियों का पड़ना कैसा आनन्द दे रहा है ।
कोई झूल पै बैठा यह मल्हार कर रहा है ॥

(४)

मेघा कड़क कड़क कर यह कह रहे हैं वीरो !
दुःखिया है भारत तुम्हरा तुम इसको सुधारो ॥
क़लह व कायरता को जड़ से उखेड़ कर तुम ।
भक्ति व वीरता का अब बीज बोदो तुम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

वर्षा के बीतने पर अङ्कुर न उगेंगे ।
बीज तुम्हरे सारे बृथा ही गलेंगे ॥
कलह कायरता की जड़ और पुष्ट होगी ।
काटे से तुम्हरे फिर वह कभी न कटेगी ॥

(६)

तुम्हरा दुखड़ा फिर यहां कोई न सुनेगा ।
भारत का गौरव हाय ! फिर यूंही मिट चलेगा ॥
वर्षा ऋतु यह पापिन, फिर वैरी होगी वीरो ।
कुल्हाड़ी अपने हाथों पैरों पै न मारो ॥

(७)

समय यही हैगा जो बोना हो सो बोलो ।
उजड़ी हुई खेती को फिर हरा करलो ॥
भारत के उपवन में जो कौशल कला उगी थीं ।
फिर पौंद उनकी बोदो जैसे के जब लगी थीं ॥

(८)

भारत के दुःख की अग्नि वर्षा से बुझेगी नाहीं ।
जब लो घोर निद्रा से आंख खोलो नाहीं ॥
बादल की गर्ज़नायें यह कह रहीं हैं तुमको ।
योरुप की महा समर से ही लाभ कुछ उठालो ॥

(६)

जर्मन की हानि से जापान उभर रहा है ।
फिर क्यों स्वदेशी झन्डा नीचा हो रहा है ? ॥
सब एकता करके एक ज़ोर तो लगादो ।
वन्दे मातरम् करके सब वीरों को जगादो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०)

स्वदेशी वस्तुओं का जो यहां प्रचार होता।
तो आज दिन न जर्मन हमरा शत्रु होता॥
अन्तिम यह गर्जना है भारतके रहने वालो।
कौशल कला में अपना अग्र पग तुम बढ़ालो॥

(११)

वीराङ्गना है तुम्हरी यह भारत भूमि माता।
यह हाल तुम्हरा इस से अब देखा नहीं जाता।
हा! शोक!! 'वर्नल' लूभा कुछ कर नहीं सका।
बर्षा ऋतु का स्वागत अब हो नहीं सका॥

लक्ष्मण

रोग क्या है?

(गताङ्क से आगे)

शरीरस्थ मल में उपद्रव का उत्पन्न होना अर्थात् विकृत पदार्थका सड़ना, उबलना, फूलना ही रोगहै और रुपान्तर होनेपर अनेक रोगों के नामसे पुकारा जाता है। यह विजाति द्रव्य या तो जन्म से ही शरीर में रहता है या पश्चात् हानि कारक वस्तुओंके साथशरीर में पहुंचता है दयालू शरीर रोगों के मूल इसमल को यथा शक्ति बाहर निकालने का प्रयत्न करता है और जब शरीर इस कार्य्य के करने में अशक्त हो जाता है तब मल के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रित होने पर अनेक रोग उत्पन्न होते हैं ! अब इसकी अधिक व्याख्या न कर इतना कहना पर्य्याप्त है कि पूर्वोक्त घड़े में सड़ता हुआ सिरका (गन्ने का रस) तब तक ही उबल कर बाहर आसकता जब तक कि उसका मुख खुला हुआ है। मानलो यदि उसके मुख पर एक रबड़ की थैली बान्ध दीजाय जिस में अन्दर की वायु बाहर न निकल सके तब उबलते हुए द्रव्य को जितने स्थान की आवश्यकता है वह उतनी ही फूलती जायगी। ठीक इसी प्रकार शरीरस्थ मल जब अंतड़ियोंके फेफड़े गुर्दों से तथा त्वचा के द्वारा बाहर निकलना बंदहोजाता है तब जिन २ स्थानों पर वह एकत्रित विकृत पदार्थ अर्थात् शरीरस्थ मल का जब परस्पर संघर्षण होता है तब उस से जो गर्मी उत्पन्न होती है वही ज्वर के नाम से पुकारी जाती है जब यह गर्मी ऊपर नहीं आसकती और अन्दर ही रहती है ऐसी दशामें जीवन बड़ी सन्देहावस्था में होजाता है। इस ज्वर को हम निम्न भांति शान्त कर सकते हैं।

जब कि हम रोगी को पसीना लाने में सफलता प्राप्त कर लेवेंगे तो उसकी दशा भी बहुत अच्छी हो जावेगी और यदि ज्वर लौट आवे तो ठँडक पहुंचाने वाले 'फ्रिकशन हिप व सिटज़बाथ फिर देने चाहियें। जब कि सिर, आंख, या शरीर के किसी मुख्य भाग की ओर (ज्वर का) प्रभाव विशेष है, तो सब से प्रथम हमको उचित है कि एक स्थानीय स्टीम बाथ उस भाग में देकर जिस में कि विजातीय द्रव्य भरा है उसके प्रभाव को कम करें। ज्यूंही त्वचा को पसीना आना प्रारम्भ होगा, शरीर के उस भाग को चैन पड़ने लगेगा और उबलते हुये द्रव्य से किसी अवयव के नष्ट होने का भय दूर हो जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे एक भागी स्टीम बाथ लेने के पश्चात् प्रत्येक वार फ्रिक्शन हिप या सिट्ङ् बाथ शरीर को ठंडक पहुंचाने और उसको शान्ति देने के अर्थ अवश्य देना उचित है।

फ्रिक्शन हिप बाथ। यह स्नान निम्न लिखित रीति से लिया जाता है स्नान करने का एक टप जल से इतना भरा जाना चाहिये कि नाभी और जंघाओं तक पहुंचे। उसमें स्नान करने वाला मनुष्य कुछ बैठ कर और कुछ पीछे को सहारा लेकर पैर निकाल कर बिना ठहरे हुए और जल्दी २ कुल पेड़ू को नाभी से नीचे की ओर को, और एक कोख से दूसरी कोख तक किसी साधारण मोटी और भीगी तौलिया या दूसरे वस्त्र से मले (सन के वस्त्र से या दूसरे मोटे (३) कपड़े से) यह स्नान उस समय तक करना चाहिये जब तक कि शरीर भली भांति ठण्डा (४) न होजावे।

(क्रमशः)

जहां तक सम्भव हो बच्चों को अपनी बुद्धिकी उन्नति आपही करने के लिये उत्साहित करना चाहिये

(गताङ्क से आगे)

भला ऐसा कौन अदमी होगा जो बच्चों की अनेक बातों की देखभाल, खोज, अनुसन्धान और अनुमान करते अच्छी तरह देखे, या जो बातें उनके समझने लायक़ हैं उनके विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें बड़ी चतुरता से वार्तालाप करते अच्छी तरह सुने और इसे इस बात का विश्वास न हो जाय कि बच्चों की इन शक्तियों का उपयोग यदि उनसे उनके समझने लायक विषय सिखलाने में अच्छी तरह कराया जाय तो बिना किसी की मदद के वही विषय बच्चे जल्द सीख लेंगे ? बच्चे को हर एक बात बतलाने की प्रति दिन जो बार २ ज़रूरत पड़ती है उस का कारण बच्चे की मूर्खता नहीं, किन्तु हमारी मूर्खता है—हमारी नादानी है। जिन बातों में बच्चे का दिल लगता है और जिन को वह खुदही उत्साहपूर्वक सीखता है उनसे हम उसे हटा देते हैं—उन्हें हम उसे नहीं सीखने देते ! हम उसे ऐसी बातें सिखलाते हैं जिन्हें, कठिन होने के कारण वह सीखही नहीं सकता। इसीसे वे बातें उसे अच्छी नहीं लगती। वे उसे नीरस अतएव बुरी जान पड़ती हैं जब हम देखते हैं कि इस तरह की कठिन और नीरस बातें बच्चा खुशी से नहीं सीखता तब हम धमकी और मार पीट के ज़ोर से उन्हें जबरदस्ती उसके मग्ज़ में ठूसने लगते हैं। इस तरह जो बातें बच्चों को अच्छी लगती हैं उनसे उसे वञ्चित रख कर और जिनको वह हज़म नहीं कर सकता—जिनको वह सीख नहीं सकता— उन्हें ज़बरदस्ती उसके मग्ज़ में भर कर हम उसकी मानसिक शक्ति को क्षीण कर देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे के मन में विद्याभ्यास से घृणा होजाती है। कुछ तो हमारी ही मूर्खता से पैदा हुई जड़ता और आलसीपन के कारण, और कुछ विद्याभ्यास में अपनी अयोग्यता के कारण बच्चे की मानसिक शक्तियाँ ऐसी बिगड़ जाती हैं कि बिना समझाये वह कोई बात समझ ही नहीं सकता। उस समय वह एक महा आलसी तरह चुपचाप शिक्षक की बातें सुना करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका काम सुनना और शिक्षक का सुनाना हो जाता है। तब इससे हम यह नतीजा निकालते हैं कि बच्चों को इसी तरह शिक्षा देनी चाहिए। तब हम यह समझते हैं कि उनकी शिक्षा का यही एक मुनासिब तरीक़ा है। अपनी अनुचित शिक्षा-पद्धति से, इस तरह बच्चों को कुन्दज़ेहनी और लाचारी को हम अपनी शिक्षा-पद्धति का कारण मानते हैं। "हमारी शिक्षा-पद्धति ऐसी क्यों है इसलिए कि हमारे बच्चे आलस, कुन्दज़ेहन और क्षीण-बुद्धि हैं। तब हम इस तरह का कार्य-कारण-भाव बतलाते हैं। अतएव यह सिद्धि है कि जिस शिक्षा-प्रणाली के प्रचार की हम शिफारिश करते हैं उसके प्रतिकूल अनाड़ी अध्यापकों के तजरिबे सामने रखना मुनासिब नहीं। जो यह बात समझता है वह यह भी समझ लेगा कि आदि से लेकर अन्त तक हम अपनी शिक्षा-पद्धति सृष्टि के क्रमानुसार बेखटके निश्चित कर सकते हैं; जिस तरह बचपन में मानसिक शक्तियां आपही आप अपनी उन्नति कर लेती हैं उसी तरह यदि समझ बूझ कर प्रबन्ध किया जाय तो आगे भी वे अपने आपही उन्नति कर सकती हैं और यही एक तरीका ऐसा है जिसे स्वीकार करने से बच्चों की बुद्धि की सब से अधिक बाढ़ होकर उनमें सर्वोत्तम कार्य्यशक्ति और प्रवीणता आ सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मैं जीवित रहूँगी

हाय २ मृत्यु तेरा नाम बुरा है। तू बड़ी ही भयंकर है आज तक कोई ससांर में ऋषि, मुनि, महात्मा ऐसा नहीं हुआ जिसको दुष्टे तूने भक्षण नहीं किया। तू समय असमय कुछ भी नहीं देखती, सभ्य असभ्य की तेरे सामने कुछ गणना नहीं तू अत्यन्त निर्दयी है तेरे सामने छोटे २ बच्चे हाय मां २ करके चिल्लाते २ भले ही मूर्छित होजायें पर दुष्टे तुझे कुछ भी ख्याल नहीं। ओः संसार की विचित्र गति भी अवर्णनीय है यह सब जानते भी कि मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती फिर इससे इतना भय क्यों करते हैं। सुबोध अबोध बालक वृद्ध सबही इसके भय से थर्राते हैं नहीं २ इसका नाम सुनकर ही खून की गति मन्द होजाती है। हाय २ यह मृत्यु की जटिल समस्या मेरे सामने है यद्यपि आज मैं हजारों नहीं लाखों नहीं प्रत्युतः सृष्टि के आदि से अनेक महात्मा, वीर और बुद्धिमान् देशभक्त पुत्रों को पैदा करती और मारती भी जीवित हूं मेरे सामने उत्पन्न हुई अनेक जातियों का नामो निशान पृथ्वी से उठ गया किन्तु मैं हतभाग्या आज भी जीवित हूं किन्तु अब मृत्यु चण्डी से भयंकर युद्ध करते २ पांच हज़ार वर्ष बीत गए अङ्ग प्रत्यङ्ग यद्यपि निशक्त होगए किन्तु अब भी मृत्यु देवीके भय से रोमाच हो रहा है। हे दीनदयाल! परमेश्वर तू मेरे ऊपर कृपा कर राम, कृष्ण, शंकराचार्य्य, गोविन्द सिंह, प्रताप सिंह गोखले आदि माहत्मा पुत्रों के वियोग से अत्यन्त दुःखित मेरी मृत्यु से रक्षा कर। हे परमात्मा तुम सर्वशक्तिमान् हो जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ हिन्दू जाति को संसार में सर्वश्रेष्ठ धन धान्य विद्यादि गुणों से पूर्ण किया उस अपनी सच्ची दासी पर अब दया कीजिये। हे ! प्रभो ! आपने दैवी और सांसारिक समस्तशक्ति मुझे प्रदान की थीं जिन के द्वारा प्रचण्ड काल के अनेकों प्रहार होने पर यद्यपि मैं अब निःशक्त हो गई तथापि आपकी दया से जीवित हूं। किन्तु प्रभो ! मुझे जीवन की अब कोई आशा नहीं अब मेरी रक्षा करो प्रभो इस समय मेरा जीवन क्रूर मृत्यु से भी कष्ट तर है। हे देवाधिदेव मुझ से अब दुख नहीं सहा जाता मुझे भी अपनी शरण में लो हे देव ! हे द ालु ! तुम्हारी दया कहां चली गई मेरी ढाईकरोड़ विधवा पुत्रियां पतिके वियोगसे ही नहीं काम और क्षुधाके वश बिलख २ कर रोरही हैं। जबमैं कठोर हृदय अपनी प्यारी अबोध बालिकाओं को प्रचण्ड चिताओं में बांसोंसे धकेल २ कर जलती देख चुकी तब इस बिलखने को भी यथा शक्ति देखने का साहस करती किन्तु क्या करूं हाय २ मेरी पुत्री अन्य जातियों की शरण लेकर मुसल्मान और ईसाईयों की भोग्या बन रही है। न्यायकारी परमेश्वर यह वही पुत्रियां हैं जो यवनादिका स्पर्शतो एक तरफ रहा अन्य पुरषों का मुखतक देखना महा पाप समझती थीं। और यदि कोई बलात् पापेच्छा प्रकट भी करता था तो अपने या उस अधम के जीवन का नाश करदेती थीं। किन्तु आज मेरी वही पुत्रियां माता पिता भाई आदि को बिलखता छोड़कर मुसलमान और ईसाईयों के साथ भाग रही हैं। हाय २ कोलम हृदया विधवा अपने निरापराध पुत्रों को जीवित ही मारती तनिक संकोच नही करती। हे ! परमात्मन् ! क्या संसार में कोई ऐसा दुःख भी है जो इस समय मुझे नहो जिस तरफ दृष्टिपात करती हूं सर्वनाश ही सर्वनाश दिखाई देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतदात्री पूज्या गौओं को आज चारों तरफ मार कर खाया जा रहा है जिस से घी दूध न मिलने के कारण मेरे प्यारे दुलारे पुत्रों के मुखमँडल पर पूर्ववत् लालिमा का चिह्न भी दिखाई नहीं देता प्रत्युतः उनके मुख तपेदिक के रोगी के समान पीले २ हो रहे हैं और अल्पायु में ही संसार यात्रा को छोड़कर परलोक सिधारते हैं। जब मेरी दृष्टि आनन्द की इच्छा से अपने पुत्रों के विवाह की तरफ जाती है तो आनन्द की जगह गौभक्षक वेश्याओं का नाच मकान बेच कर भी अनेक अपव्यय देख कर हृदय विदीर्ण होता है हाय २ यह वही पुत्र हैं जिन के शुभ कार्य्य गन्ध, अक्षत, फूल से होते थे उनके शुभ कार्य्य आज घर बेच करके व आजन्म दुःख स्वीकार करने पर होते हैं नाना प्रकार के रिसवत आदि घृणित कार्य्य करते हैं। जो बालक ऋषि आश्रमों में वेद का गायन करते और ब्रह्मचर्य्य धारण करते हुए दोनों समय अग्निहोत्र करके विद्योपार्जन करते थे हाय २ आज वही बटुक 'मत तड़फ फिरा के बुत में दिले बेक़रार सोजा।' आदि का गायन करते और हस्तक्रिया आदि घृणित कार्य्य कर रहे हैं। जो मेरे पुत्र अपनी स्त्री के सिवाय और सब को माता और बहिन समझते थे आज वह एक स्त्री होते अनेक विवाह और अनेक प्रकार के व्यभिचार में लग्न हैं हाय २ शोक जो बालक माता पिता के प्रसन्नार्थ आजन्म अविवाहित रहना स्वीकार करते थे वह आज माता पिता को यहां तक कहते संकोच नहीं करते हैं कि "पैदा अपने आनन्द के लिये किया होगा हम क्या पालन करने को तुम्हारे आगे हाथ जोड़ने गए थे इत्यादि" और माता पिता के सन्मुख वेश्या गमन आदि दुष्कर्म करते लज्जित नहीं होते। जिस मेरी भूमि पर कारागार (जैल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नामों निशान भी न था वहां आज कारागार ही कारागार दिखाई देतेहैं। मेरे पुत्र तड़फ २ कर भूके मर रहें हैं किन्तु यहां का अन्न अन्य देशों में जाने से नहीं रुकता जो मेरे पुत्र देशों में धर्म, राजनीति, आदि का प्रचार करने जाते थे आज उन देशोंसे आकर पादरी धर्म सिखाते हैं हाय शोक न स्वतंत्रता रही न धर्म रहा न धन रहा न धान्य रहा अरे दुष्ट! काल यहां तक ही दुःखों की इति नहीं प्रत्युतः मेरा शरीर अनेक भागों में विभक्त होगया। जैसे बौद्ध, जैन, सनातन, आर्य्य, वैष्णव, राधास्वामी आदि। हे ईश्वर! अब मेरी रक्षा करो ऐसी दशा में क्या मैं जीवित रहूंगी।

श्रोत्रिया पूर्णा देवी

कुलियों का विदेश गमन।

विदेश गमनके सम्बन्ध में शर्त बन्ध कुलियों की दशा की आलोचना करते हुए मि० सी. एफ. एंड्रूस ने लाहौरके "सिविल एण्ड मिलीटरी गजट" को एक मर्म्मपूर्ण चिट्ठी लिखी है। आपने उसमें कहा है कि उक्त "गजट" में भारतीय कुलियोंकी यथार्थ दशा प्रकट करने की चेष्टा नहीं की गयी। इस सम्बन्ध में उसका अग्र लेख पढ़नेसे लोगों को पूरा भ्रम तथा उलटा खयाल हो सकता है। यह बात सच है कि शर्तबन्ध कुलियों की किसी २ बात में भलाई है जिसके लालच से वे भारत छोड़कर विदेश जाते हैं, पर सब बातोंके देखने से पता चलता है, कि यह उनके कष्टके सामने कुछ नहीं है। बृटिश उपनिवेश दक्षिण अफ्रीका के नेटाल में जिन २ अंग्रेज सज्जनों से मेरी भेंट हुई उन सब ने एक स्वर से कहा कि यह शर्तबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथा जितनी जल्द बन्द हो जाये, उतना ही अच्छा होगा। क्योंकि इस से भारतीय कुलियों को असीम कष्ट सहने पड़ते हैं।

दक्षिण अफ्रीका की पार्लिमेण्ट में शर्तबन्ध कुली की प्रथा उठा देने के लिये जो बिल पेश हुआ था उसके पक्षमें बहुमत थे। कितने ही ऐसे सज्जनों ने भी मत दिये थे जिनको ऐसा करने से क्षति उठानी पड़ी है, पर वे इस बात को नहीं देखते। हिन्दुस्थानियोंकी दशा देखकर उनके हृदय द्रवित हो गये हैं। उसी समय ज्ञात हो गया था कि बस, अब शर्तबन्ध कुली प्रथा उठ गयी। मैंने एक अनुभवी उच्च पदाधिकारी डाक्टर से पूछा कि शर्तबन्ध कुली प्रथाके विषय में आपकी क्या राय है उन्हों ने उत्तर दिया कि "इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि यह एक प्रकारकी गुलामी है"। नेटाल का 'एडवाइजर' पत्र बहुधा युरोपियन जमीन्दारों के पक्ष में रहता है। उससे भी इस विषय में कुछ लिखे बिना नहीं रहा गया। वह कहता है, "हम इस बात के कहने में हिचकिचाते नहीं कि यदि शर्तबन्ध कुली की प्रथा उसका कानून तोड़ कर कम न की जायगी तो इससे दक्षिण अफ्रीका में भी हिन्दुस्थानियों की वही दशा हो जायगी, और वे उसी प्रकारके गुलाम बन जायेंगे जिस प्रकार रैएड-वाले चीनी लोग थे और जिन्हें अंग्रेज सरकार ने पीछे गुलामी से मुक्त कर दिया।

मि० मैकनील और ला० चिम्मनलाल की रिपोर्ट से मालूम होता है कि अंग्रेजी उपनिवेश फ़ीजी द्वीप में भारतीयों की दशा और भी बुरी हो होरही है। यह स्थिति इस बात से प्रमाणित होती है कि फीजी में नेटाल की अपेक्षा आत्महत्या दूनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है । जब शर्तबन्ध कुली काम की कड़ाई और अत्याचार से ऊब जाते हैं तो घबराकर आत्महत्या कर डालते हैं। हजारों मील समुद्र पार ले जाकर ५ वर्ष तक शर्तबन्ध रखना और सैकड़ों पुरुष पीछे ४० स्त्रियों को ही ले जाना भारतीयों के लिये बहुत ही बुरी प्रथा हो गयी है। कुलियों की रक्षा के लिये सरकार ने जो नियम बनाये हैं उन्हें अज्ञानता के कारण कुली जानते नहीं। गोरे जमीन्दार अपना मन माना काम लेते हैं। नेटाल में एक इंस्पेकटिङ्ग अफसर ने मुझसे कहा, कि १८ वर्षमें मैं सिर्फ एक जमींदारको सजा दिला सका। उसने बहुत ही भयङ्कर रूप से सरकारी नियमों का उलंघन करके हिन्दुस्थानियोंको सताया था। मामला चलते समय उस का कोई भी कुली अदालतमें गवाही देने को राजी नहीं होता था क्योंकि उन्हें इस बात का डर बना था, कि पीछे फिर यह जमींदार मुझ पर अत्याचार करेगा।

शर्तबन्ध कुली की प्रथा कानून द्वारा उठा दी गयी, पर अभीतक भारतीयों और वहां के गोरे जमीन्दारों के बीच जो कुछ वैमनस्य शेष रह गया है वह भी उद्योग करके जड़मूल से उखाड़ देना चाहिये।

शर्तबन्ध कुलियों पर अत्याचार होते सुन कर भारत में प्रति वर्ष लोगोंका खून खौलने लगता है। जब ऐसी दशा है तो क्यों नहीं जड़मूल से इस गुलामी को उठा देना चाहिये? इसमें कौन सी भलाई है जो इसके लिये टांग अड़ायें ही रहना चाहिये?।

यदि कोई यह कहे कि "कुली प्रथा उठ जाने से भारत में मनुष्यों की ठेलमेल हो जायगी सब लोग कहां रहेंगे" तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी बात कहने वाले को हम विचार शून्य समझते हैं। भारत में अभी कितने ही ऐसे सुविशाल स्थान हैं जो आबादी बिना जङ्गल हो रहे हैं। दूसरे यह तो हम आंखों देख रहे हैं कि कारखानों को काम करने के लिये आदमी नहीं मिलते। फिर ऐसी अवस्था में अपने देश का काम छोड़ कर विदेश जाना और गुलामी करते हुए ठोकरें खाना ही इनकी बुद्धिमत्ता है।

यदि यह प्रश्न उठे कि कुली रुक जाने से उपनिवेशों की क्षति होगी तो यह खयाल करना भी गलत है अल्प संख्यक गोरे जमीन्दारों के लिये इतने हिन्दुस्थानियों को पीसना यह कहां का न्याय है। उपनिवेशों के जमीन्दार हर अपने आस पास से कुली मँगा सकते हैं। जबसे भारतसे कुलियोंका जाना बन्द हुआ तबसे आज तक मैंने कभी नहीं सुना कि नेटाल में किसी जमींदार के स्टेटमें आदमी विना काम होना बन्द होगया। यदि कोई कहे कि युद्ध समाप्ति तक इस विषय में कुछ नहीं करना चाहिये तो मैं इसके उत्तरमें यह कहता हूं कि इस युद्धकाल में इसके कारण हिन्दुस्थानियों के हृदय में जो दुःख हो रहा है उसे हटाकर हम मान्यवर सम्राट् महोदय के लिये भारी काम कर सकते हैं। (श्री वेंकटेश्वर)

यजुर्वेद में विधवा विवाह।

कृष्णयजुर्वेदः। ६ अष्टकं, ६ अध्यायः ४ प्रपाठकः ३ अनुवादकः।

यदे कस्मिन् यूपे द्वे रशने परिव्ययति
तस्मादेको द्वे जाये विन्दते।
यन्नैका रशना द्वयो यूपयोः परिव्ययति
तस्मान्नैका द्वौ पती विन्दते॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे एक यज्ञ के स्तंभ में दो रस्सियां बांधी जा सक्ती है इसी तरह से एक पुरुष दो स्त्रियों से विवाह कर सकता है, और जैसे एक रस्सी यज्ञ के दो स्तंभको नहीं बांध सकती इसी तरह से एक स्त्री के दो पति एक ही काल में नहीं हो सकते हैं—एक ही समय में दो पति नहीं करना, परंतु एक जाता रहे तो दूसरा करने में कोई हर्ज़ नहीं है।

कृष्णयजुर्वेदे तैत्तिरीयाऽऽरण्य के, ६ षष्ठमपाठके, १ प्रथमानुवाके "पितृमेधे"।

इयं नारी पति—लोकं वृणाना।
निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्॥
विश्वं पुराणं अनुपालयंती।
तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥ १३ ॥ मंत्रः॥

सायणभाष्यम्—हे। 'मर्त्य' मनुष्य, या 'नारी' मृतस्य तव भार्या, सा 'पतिलोकं' 'वृणाना' कामयमाना, 'प्रेतं' मृतं 'त्वा' 'उपनिपद्यते' समीपे नितरां प्राप्नोति। कीदृशी, 'पुराणं विश्वं' अनादिकालप्रवृत्तं कृत्स्नं स्त्री—धर्मं 'अनु' क्रमेण, पालयन्ती, पतिव्रतानां स्त्रीणां पत्या सहैव वासः परमो धर्मः। 'तस्यै' धर्मपत्न्यै, त्वं 'इह' लोके, निवासार्थं अनुज्ञां दत्वा 'प्रजां' पूर्वं विद्यमानां पुत्रादिकां, 'द्रविणं' धनं, 'च' 'धेहि' संपादय, अनुजानीहि॥ १३ ॥

हे मानव, यह तेरी स्त्री अनादि काल से धर्म का पालन करने वाली, तेरे अति निकट आई है, उसे यहां रहने की आज्ञा देकर, उसकी पहिली संतान और धन दौलत लेने के लिये अनुज्ञा दे॥ १३ ॥ (श्रो० पुरुषोत्तमदत्त)

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियोगनी ।

(गताङ्क से आगे)

घर अत्यन्त जीर्ण था । देशी पद्धत्यनुसार बना हुआ होने के कारण अनेक छिद्र होगए थे विमला आकर इन छिद्रों में से चुप चाप देखने लगी ।

आए हुए नवीन गृहस्थ अमृत लाल के पास गद्दी पर बैठे हुए थे उनकी आयु अनुमान ४० — ४२ वर्ष की होगी, उनकी प्रकृति शान्त तथा गम्भीर थी । शरीर आरोग्य होने के कारण सिर का एक बाल भी सफेद नहीं हुआ था । विमला जिस समय द्वार के छिद्रों से झांक रही थी, उस समय दोनों के बीच यह बात चीत हो रही थी ।

अतिथि ने कहा, 'आपकी विमला बाल विधवा होगई यह सुनकर अत्यन्त खेद हुआ ।'

'देखो विश्वम्भर भाई ! ईश्वरीय इच्छा आगे अपना कुछ भी उपाय नहीं चलता ।' अमृत लाल ने खेद से उत्तर दिया । पाठक ! आगन्तुक (आये हुए मित्र) का नाम विश्वम्भरदयाल है ।

मित्र वर ! आज कल जो विद्वानों ने वेदादि सत्य शास्त्रों की आज्ञानुसार विधवा विवाह की प्रथा प्रचलित की है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है । जन समाज प्रति उन्होंने महान् उपकार किया है । अपनी जाति में भी सम्प्रति (आज कल के) बाल विवाह की दुष्ट प्रथा से उद्भवित [पैदा हुये] बाल वैधव्य के बनाव देख कर मुझे तो यह रीति अत्युत्तम तथा अनुकरणीय लगती है ।' विश्वम्भर ने स्वमित्र को यह लाभकारक उपदेश अन्तः करण पूर्वक देते हुए कहा:—

'हां प्रथा प्रवृति होना आरम्भ हुई सही, किन्तु प्रचलित हो जावे जब न ? अमृत लाल ने कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या दूसरों के चलाने से ही यह प्रथा चलेगी' विश्वम्भर बोले।

'अभी लों तो कोई इस में प्रवृत्त होते नहीं दीखा। अमृतलाल ने कहा।

"दीखा क्यों नहीं, तुम भूलते हो, पेन्शन लेने के पश्चात् सृष्टि कैसे चलती है इसका भी तुम्हें ज्ञान नहीं है। बंगाल, पञ्जाब, बरार तथा पूना आदि प्रान्तों में तो प्रति दिन पुनर्विवाह हुआ ही करते हैं। इधर युक्त प्रदेश में पं० राधाचरण गोस्वामी, पं० शङ्कर लाल श्रोत्रिय, मुन्शी बख्तावरसिंह प्रभृति महाशयों के महान् प्रयास से कई विधवा विवाह हो गए हैं तथा कई महाशयों ने स्वयं अपनी विधवा कन्याओं का पुनर्विवाह कर दिया है और कई महाशयों ने अन्य विधवा कन्याओं से अपना संबन्ध कर संसार को उदाहरण दिखा दिये हैं। क्या यह सब तुम भूल गए हो देखो विवाह तो बहुत हुए हैं परंतु यहां दो एक विवाहों को ही बताता हूं जो तुम्हारी ही विरादरी तथा प्रतिष्ठित घरानों में हुए। पं० बूलचन्द जी दफ्तर वाइसरायकी विधवा कन्या का श्रोत्रिय शङ्करलाल जी से, पं० मङ्गलसैन रईस अमहटा जिला सहारनपुर की विधवा कन्या का पं० केशवराम स्वामी देहरा निवासी के साथ पं० जानकीप्रसाद दामाद पाठक जी के मुरादाबाद निवासी की विधवा कन्या का पं० सर्य्यूप्रसाद शास्त्री बैद्य भूषण साकिन दत्त्याना जिला मुज़फ़्फ़रनगर के साथ, विश्वम्भर ने अमृतलाल के हृदय को आंदोलित होते देख अपने उपदेश को दृष्टांतों द्वारा दृढ़ किया।

'अब क्या यह सब स्मरण रहता है ? तुम्हारे सुधारक कर्मों की स्मृति रखने से हमें क्या लाभ ? यह सब तुम्हीं को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंपा" अमृतलाल ने सुधारकों के प्रति कुछ एक धिक्कार दृष्टि से कहाः—

'भैया' ऐसा क्रोध न करो, मेरे स्वतन्त्र विचारानुसार तो अपनी विमला का पुनर्विवाह करना उचित है।' विश्वम्भर ने अपना आग्रह चालू (जारी) रख कर कहा।

'भैया' तुम्हारा कहना सर्वथा असत्य तो नहीं। विमला का वय, सौन्दर्य, तथा प्रेम देख कर तो मुझे भी दया आती है। परन्तु तुम्हारे कहे अनुसार एक दम कैसे कर सकते हैं ? ज्ञाति बान्धव तत्काल ही ज्ञाति से बहिष्कृत कर देवें, जिससे मेरी तथा बाप दादाओं की बनी बनाई प्रतिष्ठा धूल में मिल कर महान कलंक लगे।' अमृतलाल ने रूढ़ी के भय से स्वमनोभावानुसार वर्तने का कारण बताया।

'ज्ञाति क्या है ? अनेक व्यक्तियों के एकत्रित समूह को ही ज्ञाति कहते हैं। तुम्हारे समान एक २ व्यक्ति मिल अन्त में एक महान् समुदाय हो जाता है। बस इसी प्रकार बढ़ते बढ़ते यह भी एक लघुज्ञाति बन जायगी।' विश्वम्भर ने ज्ञाति की यथार्थ व्याख्या करते कहाः—

हमें इस कार्य की आवश्यकता नहीं।' अमृतलाल ने विस्मित हास्ययुत मुख से कहा।

'यह कैसा ?' विश्वंभर ने आश्चर्य से पूछा।

'ब्राह्मण तथा इस में भी उच्च कुल की पुत्रि को पुनर्विवाह करने की इच्छा ही कहां से हो ? अमृतलाल अन्ध परम्परानुसार बोलेः—

विश्वंभर ने किञ्चित् मैला मुख करके कहा, 'इतने वादानुवादका अन्तिम परिणाम क्या यह ही निकला ? इच्छा न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तुम क्या कह रहे हो ? अपनी अन्य सखियों को अपने पतियों के साथ क्रिड़ा करते तथा पति सुख का लाभ लेते देख अनंग सत्ता से उसे भी भला वैसे सुख की कांक्षा क्यों न होगी इस लिए माता पिता को समझ बूझ कर विधवा पुत्रियों का पुनर्विवाह कर ही देना चाहिये, नहीं तो स्वयं स्वेच्छाचार-ऋति तो अनाचार के मार्ग पर आरूढ होकर वह अपनी मनोवांछा पूर्ण करेंगी ही इसमें से क्या उनके माता पिता कलंक से बचजायेंगे मानलो कि तुम्हारे कहे अनुसार ही उनकी इच्छा पुनर्विवाह करने की नहीं होगी। जो ऐसा ही हो तो नित्यप्रति भ्रूण हत्या भी क्यों होती ?

"यह घटनाये हमारी ज्ञाति में नहीं होती, यह तो नीच ज्ञातियों में होती होंगी।" अमृत लाल ने तो तुम्हारी राम दुहाई एक हमारी हूं, के हिसाब से बोले।

ईश्वर न करे कि ऐसी घटनाये तुम्हारी ज्ञाति में भी घटित हों। परन्तु भैया ! नीच जाति में तो पुनर्विवाह की प्रथा प्रचलित ही है, फिर उस में ऐसी घटनाये क्यों होने लगी ? यह घटनायें तो उसी ज्ञाति में होती हैं जहां कि बाल विधवाओं का पुनर्विवाह नहीं होता। तुम इतने विद्वान, बुद्धिमान् तथा दीर्घ दर्शी होते हुए भी ऐसी अज्ञानता से भरी हुई वार्ता कैसे करते हो ?" विश्वम्भर ने सखेद कहा (दुःख से कहा)

"चलो, अपनी इन सब दलीलों को खड्डे में डालो, चलो जरा छत पर बठें, इतने में भोजन का समय भी होगा।" अमृतलाल ने सम्वाद रोकने की युक्ति की। विश्वंभर दयाल तो समझ गये, उन्हो ने एक दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा, "चलो भाई !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिमला यह सब सम्वाद द्वार के पीछे स्थिर चित्त से खड़ी अवलो सुनती रहीं अन्त में उस ने भी एक निःश्वास छोड़ा उस के नेत्रों द्वारा अश्रु स्राव होने लगा (आंसू बहने लगे) इसी समय उसे पीछे से किसी ने कहा, विमला ! यह सब सुन लिया ?'

विमला ने चकित होकर पीछे देखा तो उसका चित्त चोर उपेन्द्र खड़ा है उपेन्द्र विशेष कुछ नहीं बोला और विमला के मुख की ओर शोक सूचक दृष्टिपात करके चला गया। विमला के हृदय में सहसा आशा का भास हुआ, जिस से उसका मुख कमल एक प्रकार से प्रफुल्लित हो उठा।

——०——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तम निःश्वास।

स्वामी सुख विलास।

किम्वा।

कपिला और भोगेन्द्र।

She's adorneb
Amply that in her husbanbs
eye looks lovely
That truest mirror that as honest wife
Can seo her beauty in

रमणीय बसन्त ऋतु का समय है, शीतल मन्द सुगन्धदाक्षिण्य वायु प्रवाहित हो रही है। रात्रि के दश बजे का समय है, आकाश निरभ्र, पूर्ण चन्द्र की चन्द्रिका चतुर्दिक छिटक रही है। समस्त नगर निद्रा देवी की आराधना में निःस्तब्ध है। ऐसे सुन्दर तथा आनन्द दायक समय में कपिला अकेली भवन की एक सुन्दर मनोहारिणी कक्षा में बैठी है। कक्षा क्या? भोगीन्द्र का अंग अर्थात् उस समय वहां पर भोगीन्द्र भी विद्यमान् था।

भोगीन्द्र का जन्म प्रयाग के एक प्रसिद्ध तथा कुलीन ब्राह्मण कुल में हुआ है। उसके पिता आजकल लखनऊ जिले के न्याय विभाग में एक अच्छे पद परहैं। भोगीन्द्र का वय इस समय २५ बर्ष का होगा। वर्ण साधारण गौर तथा कान्ति सुन्दर है। यौवन चिन्ह रूप पिटिका प्रदर्शन मुख पर प्रत्यक्ष है। शरीर बन्धन कुछ कृश तथा कुछ मध्यम है अभी यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयाग के म्योर संट्रल कालेज में सीनियर बी० ए० क्लासमें अभ्यास करता है। मेटिरिक्यूलेशन प्रीवियस ईंटरमीजिडयट आदि परिक्षाओं में एक से अधिक वर्ष बीतने के कारण उस के पाठशाला का जीवन बहुत उत्तम प्रकार का तो नहीं कहा जाता, किन्तु उसकी साहित्य तथा लेखन शक्ति अत्यन्त प्रशंसनीय है। वह ऐसा मिलन सार है कि एक बार परिचय मात्र से ही मैत्री करने की इच्छा होजाती है। स्वभाव से दयालु तथा वर्ताव उच्च और अनुकरणीय हैं। भोगीन्द्र का स्व॰ भार्या कपिला के प्रति अत्यन्त प्रेम होने पर भी विवाह होने के पश्चात् तुरन्त ही प्रिय पत्नी का वियोग सह कर उसे अभ्यासार्थ परदेश गमन करना पड़ा था।

गर्मी की छुट्टियों में आज श्वसुर घर आये को उसे तीन दिन हुए हैं। दीर्घ काल पश्चात् आज परस्पर संगम होने से उभय पति पत्नि के आनन्द की सामा नहीं है। पूर्व वर्णित सुन्दर शांत रजनी के समय यही दम्पति निशा की निस्तब्धता को आनन्दालाप द्वारा भंग कर रहे हैं, पाठक! क्या आप उक्त दम्पत्ति का प्रेमालाप श्रवण करने को उत्सुख हैं? किन्तु सावधान, आप को एकांतस्थल में इनकी वार्ता सुनने का क्या अधिकार? क्या आप ऐसे क्षुद्र बिचारों पर आरूढ़ होने को पाप नहीं समझते? न जाने वे किस विषय की वार्तालाप करते हैं। परन्तु हां, यदि आप उनके द्वारा अनाथिनी विमला के सुखी होने की आशा कर विमला विषयक वार्ता सुनने के इच्छुक हैं, तो निर्भयता पूर्वक सुनिये। किन्तु स्मरण रहे कि विमला के सुख दुःख की विस्मृति कर पाप वासना की ओर न झुकजाना। कारण कि ऐसे स्थलों पर बड़े २ ऋषि महर्षियों की बुद्धि भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमित होजाती हैं ! जिस में तो आज कल कलियुगी कलुषित विचार मनुष्यों के क्षुद्र हृदय में नित प्रति निवास करते हैं। यदि हृदय की दृढ़ता आप में विद्यमान हो तो सुनिये नहीं तो व्यर्थ पाप के भागी न बनें हम सुनाने को प्रस्तुत हैं। किन्तु फिर कहे देते हैं, कि हृदय को दृढ़ रखिए। अच्छा तो सुनिये—

अर्द्ध निशा व्यतीत होने पर पूर्ण चन्द्र ज्योत्स्ना, बसन्त ऋतु का समय तथा मन्द वायु का चलना आदि पूर्व कथित उद्दीपन भाव इन प्रेमीयुग्म के आनन्द में प्रतिक्षण वृद्धि कर रहे थे। कपिला भोगेन्द्र के गले में बांह डाल कर पति आलिङ्गन सुख का स्वाद ले रही है। भोगेन्द्र ने हास्य पूर्वक कपिला का चुम्बन किया। कपिला चक्षु बन्द कर मन में विचार ने लगी "चुम्बन ! तेरा प्रभाव भी अलौकिक है। तुझ में इतनी श्रेष्ठता है कि सदैव तेरे ही आस्वादन द्वारा चुम्बन सुख का अनुभव किया करना, यही इच्छा प्रति क्षण हुआ करती है।"

"प्रिये! कपिला ! आज तेरी सखी विमला क्यों नहीं आई" भोगीन्द्र ने दीर्घ मौन्य को भङ्ग कर प्रिया के साथ सम्वादारम्भ करते हुए पूछा।

'विमला' शब्द की भनक कपिला के कान में पड़ते ही उसके हृदय पट पर बिमला की अपूर्व सौंदर्य प्रतिमा नवीन भाव से अङ्कित होगई वह मन ही मन ईश्वर की प्रार्थना करने लगी कि- 'हे भगवन् ! इस दासी को कभी भी पति सुखानन्द हीन मत करना ?' शनैः २ अपने सुख के साथ बिमला की दुःखद बात का स्मरण होते ही चिन्ता ग्रस्त हो उसके नेत्र द्वारा अश्रुधार बहनेलगी।

उसके नेत्रों में अश्रु देख भोगेन्द्र ने प्रश्न किया—प्रिये रोती हो ?

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी जगत में महान कमी की पूर्ति

सवा का माल आठ आने में

विराट् उपहार ।

आबाल वृद्ध स्त्री पुरुषों के परमोपयोगी

सती चरित्र

यह वह पुस्तक नहीं है एक बार पढ़कर रखदो इस में आप की सन्तान सदा चारी साहसी परिश्रमी बनेगी। यह पुस्तक स्त्रियों के विशेष उपयोगी है।

इस में क्या है

बीर बाला, प्रभा, वीर नारी चन्दा, वीर भद्रा, मरीची, [illegible]वती, कलावती कर्मदेवी चँचलकुमारी, रूपवती, हांदी, सुलो-[illegible]ना, संयुक्ता, विदुला, विमला, रानी हेमन्तकुमारी, शरद सुन्दरी [illegible], धन लक्ष्मी, विजया, जया, प्रभावती कमल, देवी सुलीवा [illegible]डिता, सत्यवती अंशुमती, लीलावती, ईला, मालती, मीराबाई [illegible]या, देवयानी, शकुन्तला, पद्मिनी, मार्गी तारा, इन्द्राणी, तुलसा [illegible] [illegible] मैत्रेयी, अरुन्धती, अहिल्याबाई, लोपामुद्रा, गान्धारी, सुभद्रा [illegible]न्या, नर्बदा, मंदलासा, देवहुती, अच्छन कुमारी, सत्य रूपा, [illegible]का, रुक्मणी, स्वाहा, संज्ञा देवी, सरस्वती, जानकी, पार्वती [illegible]मी, द्रोपदी, रेवती, सुलोचना, दमयन्ती, मंदोदरी कौशिल्या, [illegible]मती, सावित्री, अनुसूया। सारामार्टिन, मरियम, अमिया, [illegible]शिया आदि प्रातः स्मरणीया आदर्श देवियों के जीवन च-[illegible] अत्यन्त सरल और मनोरंजक भाषा में लिखे गए हैं। लग-[illegible] ४०० के पृष्ठ संख्या, मूल्य १) किन्तु जनता हित कारक ग्राहकों को ।≈) में दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन जीवन चरित्रों के अलावा भारतकी अनेक देवियों की बनाई अनेक मनोरंजक कवितायें भी हैं।

भारत के आदर्श बालक

यह पुस्तक आबाल वृद्ध स्त्री पुरुषो के लिये जैसी उपयोगी है उस की प्रसंसा करना व्यर्थ है। इस में गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का दीवार में चिना जाना और धर्म पथ पर दृढ़ रहना तारु सिंह का धर्मिक जीवन व आत्म समपर्ण शाहबाजसिंह का पिता सहित प्राणदान हकीकत राय का बाल्य अवस्था में धर्म पथ में आत्म समपर्ण मनोरंजक और भाव पूर्ण भाषा में लिखा गया है यदि अपनी सन्तान को धार्मात्मा बनाना और मन को पवित्र करना चाहते हो तब यह पुस्तक मंगाकर पढ़ाइये पृष्ठ संख्या लगभग १०० है मूल्य चारआने अबलाहित कारक के ग्राहकों से

और क्या चाहतेहो

अबलाहित कारक का छ मास का मूल्य देने पर ही प्रत्येक ग्राहक को सती चरित्र और आदर्शबालक ?।) की पुस्तक केवल ।।) में देंगे ; अर्थात् छ मासर अबलाहित कारक मुफ्त पढ़ें हजारों की हानि उठाकर भी इतनी रिआयत करते हैं। इस से ज्यादा और आप क्या चाहते हो

उपहार किसे मिलेगा

जो सज्जन ।।≈) का छ मास के लिए अबलाहितकारक का वी०पी० डाक व्यय सहित छुड़ालेंगे और। फौरन उपहार भेजने की आज्ञा देंगे तब मिल सकेगा। क्योंकि पुस्तकें १००० छपी हैं बिकने पर पछिताना पड़ेगा।

मैनेजर "अबला हितकारक" बिजनौर

भूल सँशोधन—जैष्ट मास के अंक में सतीचरित्र की पृष्ठ संख्या गलती से १००० छप गई है

मैनेजर

वास्तव में पृष्ठ संख्या १०० पृष्ट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिक पत्र

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल
सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सबसे सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ	लेखक
स्वदेशाष्टक	१३१	ऋषि
सम्पादकीय वक्तव्य	१३४	० ०
स्त्रियों की महिमा	१६७	'वेंकटेश्वर'
हम क्यों गिरे और कैसे उन्नति हो	१३६	कृपा
विधवा विवाह निषेध खंडन	१४३	सम्पादक
भारत भूमि से विनिय	१४६	'भास्कर'
योग क्या है	१५०	प्रकृति
...की ज़रूरत	१५२	
समालोचना	१५२	
...या विधवा विवाह	१५४	नानकचन्द खन्ना
वियोगिनी	१५५	चम्पालाल जौहरी

Printed and Published by Soti Jagdish Datta at
Deen bandhu Press Bijnor.

वार्षिक मूल्य १) स्त्रियों से ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना

हमको अत्यन्त शोक है कि अभीतक सतीसुचरित्र अपने ग्राहकों की सेवा में न भेज सके जिसका कारण यह है कि लड़ाई के सबब कागज कठिनता से मिलता है। कागज न मिलने के कारण सती सुचरित्र पूरा न छप सका अब कागज आगया है और सती सुचरित्र बराबर छप रहा है। आशा है शीघ्र ग्राहकों की सेवा में पहुंचेगा। और है ग्राहक देरीके लिये क्षमा करेंगे।

निवेदक—मैनेजर

अबला हितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रतिमास प्रकाशित होता है।

(२) डाक व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है। और स्त्रियों से ।।=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी विना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता साफ २ देवनागरी या अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा वटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर लेना चाहिये।

(६) पत्रका उत्तर जवाबी कार्ड या टिकट बिना नहीं दिया जावेगा

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहियें।

मैनेजर—अबलाहितकारक कार्य्यालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् नमः शिवाः ।

अबलाहितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वातस्त्राऽफलाः क्रिया ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यात्यशु तत्कुलम् ।
न शोचयंति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष | श्रावण सम्वत् १९७२ | अङ्क ५

स्वदेशाष्टक ।

(१)

जहां देश भक्त तहाँ लक्ष्मी निवास करै ।
जहां देश भक्त तहा ऋद्धि सिद्धि खानी है ॥
जहां देश भक्त तहां, सारे सन्मान होत ।
जहां देश भक्त तहां, वीरता बखानी है ॥
जहां देश भक्त तहां, ज्ञान बुद्धि साहस है ।
जहां देश भक्त तहां, मानों ज़िन्दगानी है ॥
जहां देश भक्त तहाँ, "ऋषि" दया, प्रेम, मीत ।
जहां देश भक्त तहां धर्म राजधानी है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

जाके मन देशभक्ति, सोई नर शूरवीर
जाके मन देशभक्ति, सोई नर ज्ञानी है ॥
जहां देश भक्त सोई, देश होत ईश मान ।
जहां देश भक्त तहां ऋद्धि सिद्धि आनी है ॥
देश भक्त देश को बनाय देत सुख रूप ।
देश भक्त देश पूज्य, बात जगत जानी है ॥
आठों सिद्धि नवों निद्धि, रहैं हाथ बांधे "ऋषी"
जहां देश भक्त तहाँ देश, वासी मन ठानी है ॥

(३)

ऋषि कुल दीपक, सपूत पूत भारत के ।
काहे नहीं जागत ये, कैसी मन ठानी है ॥
आलस बिसारो हाय कैसी नींद सोवत हो ।
खोवत हो मान कहाँ यही बुद्धिमानी है ॥
एक एक हाय सारी यंत्र कला नष्ट भई ।
ताहीं सों दारिद्र आयो आपत्ति महानी है ॥
मानों "ऋषी' बानी मति, करो और हानी बनों ।
देशभक्त ज्ञानी जो, ये प्यारी जिन्दगानी है ॥

(४)

देश के उद्धार को विचार यही जक्त मांहि ।
स्वदेशा प्रचार कीजे येही टेक ठानी है ॥
कहो वन्देमातरम् बनो देश भक्त मित्र ।
देश प्रेम कीजे हिन्द मात महारानी है ॥
लीजिये स्वदेशी वस्तु खाने पीने पहन्ने को ।
छुवो न विदेशी वस्तु, येही बुद्धिमानी है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहो रे अज्ञानी यह मान, 'ऋषि' बानी बिना।
देश प्रेम हानी महा हानी जग जानी है ॥

(५)

काहे नहीं जागत सपूत, पूत भारत के।
हाय ! भई ग़ारत तुम्हारी बुद्धिमानी है ॥
कायर, कपूत, कमज़ोर, कम ताक़त,
कमीने कहलाये यह बात जग जानी है।
भारत के वीर ! चेतो छोड़ के अटल नींद,
बनो देशभक्त यदि प्यारी ज़िन्दगानी है।
बिना देश प्रेम 'ऋषि' भई ये अधम गति,
रानी भई बांदी और बांदी भई रानी है।

(६)

लाज नहीं आवत पराये घर मांगत में।
मांगत हो भीख यह कौन बुद्धिमानी है ॥
बने मोहताज बात २ में विदेशिन के।
खान, पान, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र हू बिरानी है ॥
साहस बिहीन सारे, यन्त्र तंत्र नष्ट किये।
'ऋषि, मरदानी क़ौम विदित ज़नानी है ॥
करो पुरुषारथ संभालो निज यंत्र तंत्र।
जहां निज बाहु बल तहां ज़िन्दगानी है ॥

(७)

व्याह और शादी में विदेशिन के हाथ लाज।
कफ़न विदेशी यही नाश की निशानी है ॥
धन धाम खोयो शिल्प कौशल कलादि खोयो,
बाणिज ब्योपार में भी तुम हार मानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलस के बस खोय बैठे निज देश भक्त
जहां की स्वदेश भक्ति जगत में बखानी है।
चेतो २ वीर छोड़ो अब ये गम्भीर नींद,
करो पुरुषारथ स्वदेशी फैलानी है।

(८)

ऐ रे मन ! मगन हो अब मत सोच करै।
देश के उद्धार होन की यही निशानी है॥
बाल, बृद्ध, युवा सब नर और नारी मिल।
भई देशभक्त देशभक्ति मन आनी है॥
जान के आगामी लाभ करत प्रचार सब '
छोड़ जाति पाँति बनी क़ौम हिन्दुस्थानी है
देश प्रेम शान सब बने एक जान 'ऋषि,।
होने लगे मान जिमि सुभट जापानी है॥

"कर्मयोगी"

—०—

सम्पादकी वक्तव्य।

दीर्घ दृष्टि से यदि देखा जाय तो भारतवर्ष की परतंत्रता का एक मात्र कारण राजनैतिक का शिक्षा अभाव है यदि हमारे पूर्वराजा और प्रजा राजनीति में दक्ष होते तो कदापि भारतवर्ष यवनों के हाथ में पड़कर परतंत्र न होता। कुलकलंक जयचन्द जब महमूद गौरी से मिल गया यदि उस समय प्रजा राजनीति परायण होती तो कदापि दुष्ट राजा की आज्ञा का पालन न कर पृथिवीराज से न लड़ती और जब २ अन्य जातियों ने भारत पर चढ़ाई की तो कभी भी भारतीय राजाओं ने मिलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध नहीं किया यही कारण भारत की परतंत्रता का है। अब भी भारतवासियों की वही दशा है। जन साधारण की तो क्या कहें बड़े २ नेता और सम्पादक अपने व्याख्यानों के आदि में और पत्र के उद्देश्यों में यह कहते और लिखते हैं कि हमारे पत्र का वर्तमान राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं राजनैतिक लेख प्रकाशित नहीं किये जायेंगे। हमें शोक होता है कि अब भी जब कि सब तरह से भारत का सर्वस्व नाश होगया हमारा शिक्षित समुदाय राजनीति से ऐसा डरता है मानों राज नीति सिंह है, या प्रज्वलित अग्नि है जिस में भस्म हो हमारा नाश होजायगा। हम नहीं समझते कि जब हम दयालू ब्रिटिश की छत्रछाया में विद्या, धन, कलाकौशल की उन्नति कर रहे हैं तब क्यों न अपने कष्टों को तथा अपनी उन्नति के साधनों को हितैषी गवर्नमैन्ट से कहें? हमारी सम्मति में तो राजनैतिक कार्य्यों में राजा का हाथ बटाना राज की सहायता और प्रजा की उन्नति करना है। ऐसे पत्रों का तो देश में न होना ही अच्छा है जो प्रजा की प्रार्थना और राजाकी आज्ञा प्रजा तक पहुंचाना पाप समझते हैं। संसार में राजा और प्रजा सर्वज्ञ नहीं हैं इस लिये राजा जो प्रजा के हित का कार्य्य करे संभव है भ्रमवश वह प्रजा का हित समझा गया हो और वास्तव में हित न हो। इस लिये राजा से उसके संशोधनकी प्रार्थना करना या आन्दोलन करना पाप नहीं है। प्रत्युत: राजा और प्रजा दोनों के हित का प्रधान कार्य्य है। हमरी गवर्नमैन्ट भी ऐसे राजनैतिक पुरुषों से बहुत प्रसन्न है। उदाहरण के लिये गोखले और मिस्टर गान्धी को देखिये जिनको गुणग्राही गवर्नमैन्ट ने सी० आई० ई० और कैसरहिन्द कापदक देकर सुशोभित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। हम नहीं समझते ऐसे उत्तमकार्य्य से इतना भयक्यों है राज द्रोह करना वास्तव में पाप है। हमारी जो दुर्दशा न हो थोड़ी है जब राजनीति से इतना डररहे हैं यदि सच पूछिये तो जो राजनीति से दूर रहने वाले वह पक्के राजद्रोही हैं क्योंकि,राजाको अपना हितैषी न समझ प्रार्थना करना या संशोधन करानेकोआन्दोलन करना पाप समझने का स्पष्ट यह अर्थ है कि वह राजा को अपना नहीं समझते जो बालक अपने सुख दुःख को माता पिता से न कहे वह कदापि सुखी नहीं रह सकता बस इसी प्रकार राजनीति से पृथक रहने वाली जाति कदापि सुखी नहीं रहती और नित्य अवन्नत होती है।

हमारे देश की स्त्रीयें जहां चार मिलकर बैठती हैं। वहां जहां तक उनका परिचय है प्रत्येक स्त्री पुरुष के कार्य्यों की समालोचना करना प्रारम्भ कर देती हैं। इस समालोचना में किसी के गुण दर्शित नहीं किये जाते प्रत्युतः यथा शक्ति निन्दा ही की जाती है जिससे प्रत्येक से घृणा और ईर्षा की वृद्धि होने लगती है और संक्रामक रोगों के समान पुरुषों तक में परस्पर लड़ाई उत्पन्न करादेती हैं। यही कारण है हम में परस्पर प्रीति नहीं और लक्ष्मी रूप स्त्रियां कलह चण्डी हो रही हैं और नित्य नीच भावों की वृद्धि हो रही है। इसलिये प्रत्येक कुटुम्ब या मुहल्ले में स्त्री लायब्रेरी होनी चाहिये। जिसमें थोड़ी पुस्तकें व अखबार जो स्त्रियों के उपयोगी हों रहा करें और जो मुहल्ले में प्रत्येकके घर जाया करें और सब स्त्रियां वहां प्रेम पूर्वक मिलकर देशकी वास्तविक दशा और जाति के सच्चे इतिहास को जानकर लाभ उठावें। जिस से नीच भावों का नाश और प्रेम की वृद्धि हो।

ज्वालापुर जि० सहारन पुर में मेरी, कन्या आश्रम खुला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस में कन्याओं को मुफ्त शिक्षा दी जायगी। और एक शाखा विधवा आश्रम की भी है इसमें विधवाओं को उपदेशिका बनाया जायगा। लाला बलदेव सहाय जी रईस देहरादून ने उक्त आश्रम को अपना एक बाग और पंद्रह विधवाओं का खर्च अपने जिम्मे लिया है। जिसके लिये प्रत्येक स्त्री शिक्षा के प्रेमी और विधवों के हितैषियों को लाला साहब का कृतज्ञ होना चाहिये लाला साहब का दान प्रसंशनीय है।

—०—

स्त्रियों की महिमा।

स्त्रियां "अबला" अर्थात् बलहीना कहलाती हैं। कोमल, सुकुमारी हैं और इनकी प्रकृति पुरुषों से कमजोर मानी जाती है। सभी देशों में स्त्रियों को चञ्चला, विश्वास के अयोग्य इत्यादि कहा है। पुरुष का भाग्य और स्त्री का चरित्र मनुष्य तो क्या देवता भी जान नहीं सकते, ऐसा लिखा है। स्त्रियों से अपना भेद कहना भी वर्जित किया है, परन्तु इस निन्दा पर भी स्त्रियों ने अनेक स्थानों पर जो साहस, पराक्रम और उत्तम गुण दिखाये हैं उन्हें जानकर बोध होता है कि स्त्रियां भी इस संसार में ऐसी एसी हुई हैं और मौजूद हैं जिनका बल, बुद्धि और दृढ़ता देखकर पुरुष भी दांतों तले उङ्गली दबाते हैं।

पूर्व समय में भारतकी स्त्रियां सीता, पार्वती, तरा, अहिल्या, दमयन्ती, द्रौपदी, संयुक्ता, मीरा, सावित्री इत्यादि भक्तिभाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुन साहस और विद्या बुद्धि में जो नाम कर गयी हैं। वह आजतक पत्थर की लकीर है। वे देवी तुल्य बन गयी हैं जिन की यादगार आजतक स्थित है। भारत के उपरान्त युरोप देशकी स्त्रियों ने जो महिमा दिखायी है वह भी बखाननीय है। 'जोन आफ आर्क' फ्रांस देश की एक साहसी स्त्री थी, जो एक गड़रिये की पुत्री थी। उसने सन् १४२८ ई० में सेनापति का पद लिया और लायो नगरी पर चढ़ाई करके अंग्रेजों को पराजय दी और फ्रांस के राजा, सातवें चार्ल्स को राजगद्दी दिलाई।

सन् १८०८ ई० में नेपोलियन बोनापर्ट का बड़ी बीरताके साथ मुकाबिला करके जिसने स्पेन की रक्षा की, वह भी एक स्त्री ही थी। एक और वीर बाला ने जिसका नाम "हानडेल" था, पाण्डोचरी के समर में बारह जखम खाये, तो भी रणक्षेत्र से मुंह न मोड़ा। इसके कटक दलका नाम नील कम्पनी था। हाल में इटाली और तुर्की के साथ जो त्राबलीस का युद्ध हुआ था, उस में सलोम का रण स्त्रियों ही के पराक्रम से जीता गया था।

बनीगाजी की सेना को जिसने साहस दिलाकर उभारा और जिताया वह स्त्री ही थी। शतलजाके संग्राम में सब से आगे स्त्री ही दल था। ग्वालियर के समर में भी नारियों का पराक्रम सब से अधिक था। सक्रोत्री में चबल असवद की तोपें स्त्रियों ने ही छीन ली थीं।

जो लड़ाई आजकल जर्मनी के साथ हो रही है उस में सब से प्रथम सर्विया की औरतों ने एक सेनादल बनाया और लड़ाई के हुनर में प्रवीण होकर मरदाने लशकर से ऐसी लड़ी कि संसार में वाहवाह हो गयी। (क्रमशः)

—०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम क्यों गिरे और कैसे उन्नति हों

यह मानने में किसी को भी संकोच नहीं जो जाति या व्यक्ति अन्याय और अत्याचार तथा परस्पर ऐक्यता न रक्खे उसका शीघ्र ही नाश होजाता है। विशेषतः निरापराध और निर्बलो के ऊपर अत्याचार करना तो मानो अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारना है। किसी उर्द् कवि ने क्या ही ठीक कहा है "जुल्म की टहनी कभी बढ़ती नहीं नाव कागज की कभी चलती नहीं" इतिहास इसका साक्षी है संसार के बड़े २ राष्ट्र अन्याय और अनैक्य के कारण पृथिवीपर नष्ट भृष्ट होगए। औरंगजेब जैसा बुद्धिमान और पराक्रमी यदि धर्मान्ध होकर हिन्दू-जाति पर अत्याचार न करता तो मुसल्मान राष्ट्र का क्यों नाश होता ! अकबर ने अपने राज्य की जो बृद्धि की वह केवल न्याय और ऐक्यता से की। प्रकट में वह हिन्दूओं के साथ भ्रातृभाव रखता था और यथा शक्ति न्याय करता था। यह ही कारण था कि हिन्दू उसको कहा करते थे कि "दिल्लीश्वरो वा जदीश्वरो वा। जिस नीति से अकबर ने काम किया था यदि उसी नीति से उसके सब उत्तराधिकारी काम लेते तब मुसल्मानी राज्य भारत में सदैव के लिये दृढ़ होजाता। धर्मान्ध औरंगजेब के अत्याचार से उसकी प्रजा त्राहि २ करने लगी तब परमात्मा की दया से शिवाजी महाराज का जन्म हुआ जिन्होंने औरंगजेब को उसके कर्तव्यों का अच्छा फल चखाया हम विशेष इधर उधर की बात कहना उचित नहीं समझते क्यो न हिन्दू जाति के ही इतिहास पर दृष्टि गेरें कि संसार में सब से पुरानी हिन्दू जाति आजतक क्यों जीवित है और पूर्व समय में क्यों उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शिखर पर विराजमान थी तथा अब क्यों इस दुर्दशा को प्राप्त हुई। हम प्राचीन समय में केवल अपनी दया ऐक्यता के कारण ही संसार में चक्रवर्ती और सर्वमान्य थे। प्रत्येक हिन्दू चाहे खुद भूका किन्तु भूकों को इधर उधर देख कर पीछे भोजन करता और कीट पतंगादि तक के लिये आपोशान रुप में टुकड़े निकाल कर रखता था प्रत्येक प्राणी में एक आत्मा समझते और किसी का कष्ट क्षण मात्र भी नहीं देख सकते थे उसके कष्ट को अपना कष्ट समझते थे वही समय था कि हम सर्वमान्य थे। किन्तु आज जरा अपनी दशा को देखिये अन्य भूकों को भोजन कराकर खाना तो एक तरफ रहा कुटुम्ब में नहीं प्रत्युतः घर बेटी निर्धन और विधवा है अर्थात्: जिस से कोई विशेष स्वार्थ सिद्धि की आशा न हो वह भले ही भूके मरजाय किसी के कान पर जूं भी नहीं रेंगती औरों के कष्ट को कष्ट समझना एक तरफ रहा। बृद्ध पिता सन्तान होते हुए अपनी काम पूर्ति के लिये वेश्या गमन, परास्त्री गमन ही नहीं प्रत्युत: ऋण लेकर भी अपना दूसरा, तीसरा, चौथा, विबाह भी करें परन्तु युवति विधवा पुत्री घर में कामातुर क्षुधातुर भलेही प्राण देदे। भावज निर्जीव दासी समझ कर रात दिन सेवा लें अनेक कटु-वाक्य कहें तब सूखी रूखी रोटी दें। इन महान् कष्टों को न सह कर वेदों के वक्ता गौ-रक्षक हिन्दू सपूत उत्पन्न करने वाली विधवायें कामार्त, क्षुधार्त, अन्य जातियों की शरण लेकर दोनों कुलों को कलंक लगाती हैं और निर्दयी हिन्दू जाति के शत्रु अपने गर्भ से उत्पन्न करती हैं। त्रिकालज्ञ महर्षि मनु कहते हैं 'यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। यत्रास्तु न पूज्यन्ते सर्वा स्तत्रा फलाः क्रियाः॥ शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्। न शोचयन्ति यत्रैताः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धंते तद्धि सर्वदा ॥ अर्थात् जहां पर स्त्रियों का सत्कार होता है वहां देवता वास करते हैं और जहां स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां पर समस्त सुकार्य्य निस्फल जाते हैं। जिस कुल में स्त्रियों को दुःख होता है वह कुल शीघ्र ही नष्ट भ्रष्ट होजाता है और जिस वंश में स्त्रियों को सुख होता है वह नित्य वृद्धि को प्राप्त होता है।

मनु जी की इस पवित्र आज्ञा के पालन न करने का फल आज नित्य हिन्दू जाति की अवनति या दूसरे शब्दो में यह कहो कि नित्य हमारा नाश हो रहा है। जहां मनुष्य गणना में अन्य जातियां लाखों की संख्या में बढ़ रही हैं वहां हम लाखों की संख्या में घट रहे हैं। धन, बल आदि समस्त ऐश्वर्य्य प्रति दिन नष्ट हो रहे हैं। यही नहीं समझना चाहिये कि हम विधवाओं के ऊपर ही अन्याय और अत्याचार कर रहे हैं प्रत्युतः स्त्री जाति-मात्र पर ही अत्याचार कर रहे हैं। एक कन्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध निशक्त बृद्ध या बालक से विवाह देते हैं और यदि उसकी कामपूर्ति उस वृद्ध से न हो और वह कुछ अनुचित (यद्यपि मेरी सम्मति में वृद्ध या बालक से युवति का विवाह होने पर ऐसा होना अनुचित नहीं) करले तब क्या सनातनी क्या जैन क्या आर्य्य सभी उसे दुष्टा कुलटा बेशरम आदि कहने या कठोर से कठोर दंड देने में संकोच न करेंगे आर्य्य समाज जिसको स्त्रियों के उपकार का विशेष अभिमान है वह भी निरापराधिनी स्त्री जाति पर अपनी बहादुरी दिखाए बिना नहीं रहती मैं आर्य्य समाज के कितने ही नेताओं को जो कि समाज में विद्वान् और प्रतिष्ठित हैं जानती हूं। वह अपनी स्त्री और पुत्रियों के साथ पशु और हिंसक जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार करते हैं । स्त्रियों को आज तक पशुवत् बेच नें या देवताओं पर चढ़ानें का दोष प्रायः हिन्दुओं (सनातनियों) के ऊपर मढ़ा जाता है किन्तु आज आर्य्य समाज में भी यही बात देखी जाती है । कन्या की इच्छा विरुद्ध प्रतिष्ठार्थ पिता चाहे जिसको विवाह देता है अर्थात् जैसे सनातनी देवताओं को अर्पण करते हैं वैसे वह भी किसी पुरुष को अपनी इच्छानुसार अर्पण कर देते है । ऐसे उदाहरण कई प्रतिष्ठित आर्य्य समाजियों में देखे जाते हैं । यहां तक कन्या रुदन करती हैं किन्तु कोई नहीं पूछता तुम्हें अमुक पति पसन्द है या नहीं । कहां तक लिखें हिन्दू जाति की प्रत्येक शाखा अबलाओं जाति पर अपनी वीरता विद्वत्ता आदिसेदिल खोलकर कष्ट देरही है । वास्तव में आर्य्यवर्त्त हिन्दुस्थान होगया अर्थात् यहां के पुरुष दया आदि गुण न होने के कारण और निर्दयी तथा अत्याचारी होनें के कारण हिन्दु होगए ।

पाठक क्षमा करें मालूम होता है परमात्मा भी पुलिंग होने के कारण हमारी ओर विशेष दृष्टि नहीं देता ऐसी अत्याचारी जाति जो स्त्रियों को पशु नहीं वल्कि निर्जीव समझती है उसकी केवल दुर्दशा ही कर रक्खी है नाश करके क्यों हमारे दुःखो नहीं हरता । नहीं २ मैं भूलती थी एक बार मारनें से तफा २ कर मारना बहुत अच्छा है । किन्तु हे दयामय ! अब हम से कष्ट सहा नहीं जाता अब तू दया कर ।

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवोद्वाहनिषेधखंडन ।

वैसाख से आगे ।

पं० ब्रह्मदेव जी लिखते कि निम्न मंत्र में विधवा विवाह की गन्ध भी नहीं अतः एव वह मंत्र देकर उसका अर्थ लिखते हैं ।

या पूर्वं पतिं वित्वा अथान्यं विन्दते परम्
पँचौदनं च तावजँ ददातो न वियोषतः।
समान लोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः ॥
यो जँ पँचौदनँ दक्षिणा ज्योतिषँ ददाति ।

द्वितीय अनुवाद्क द्वितीय सुक्तत्रम्

अर्थ-पहिले पति को प्राप्त होकर जो दूसरे को स्वीकार करे वह परलोक में विछडे नहीं । पूनर्भू स्त्री को पति के समान लोक होता है यदि पंचौदन यज्ञ में सुवर्ण दक्षिणा देवे ।

पण्डित जी इसका आधा अर्थ लिखकर इस प्रकार नोट चढ़ाते हैं—जो कन्या पहिले भावी पति को जानकर दूसरे को प्राप्त हो वह पंचौदन यज्ञ न विछड़ने के लिये करे । दूसरे मंत्र का अर्थ यह है दूसरा पति भी पूनर्भू के साथ वाले लोक को प्राप्त होता है अर्थात् जैसा नरक दूसरा पति करने वाली स्त्री को मिलता है वैसाही उसके साथ विवाह करने वाले को मिलता है ।

पाठक जरा पण्डित जी के पक्षपात को देखिये प्रथम तो दूसरे श्लोक के दूसरे चतुर्थ पद का अर्थ ही उडा दिया जिसमें लिखा है कि पंचौदन यज्ञ में सुवर्ण दक्षिणा दे क्योंकि इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सिद्ध होता है कि पंचौदन में दक्षिणा देना जब वेद लिखता है तब किस प्रकार पण्डित जी का "अर्थात् जैसा नरक दूसरे पति करने वाली स्त्री को प्राप्त होता है,, वैसाही उसके साथ विवाह करने वाले को होता है' यह कल्पित वाक्य सिद्धि हो। हम नहीं कह सकते पण्डित जी नें किन शब्दों के अर्थ का अर्थात् लगाकर स्पष्ट किया है और क्यों दूसरे वें मंत्र के दूसरे पदके अर्थ को हज़म कर गए।

पाठक स्वयं विचार सकते हैं इससे कहां तक पक्षान्ध पंडित जी का खंडन सिद्ध हो सकता है। वास्तव में पण्डित जा यहां पर घ्राणेन्द्रिय से काम लेने से उक्त मंत्र से विधवा विवाह और कुछ मालूम न होगा। जरा बुद्धि से काम लीजिये और जरा विचारिये तब बिदित होजायगा मंत्र का अभिप्राय स्वर्ग लोक से है या नरक से। क्योंकि जब सुवर्ण दान लिखा है तब नरक कैसा।

सा चेदक्षतयोनिः स्यात् गत प्रत्यागता पिवा।
उत्पादयेत् पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते॥

मनु के इस श्लोक को लिख पण्डित जी नें कैसा सुन्दर नोट चढ़ाया है:—स्वामी दयानन्द और अनुयायी एवं सोती शंकर लाल भी इस श्लोक सेविधवा विवाह सिद्ध करने की चेष्ठा करते हैं इत्यादि।

और पण्डित जी ने इस श्लोक की और प्रथमश्लोक की संगति एक साथ लगती है ऐसा लिखा है इस लिये हम दोनों श्लोकों का एकत्र लिखकर उनका अर्थ लिखते हैं। क्योंकि इससे ता विधवा विवाह स्पष्ट सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ।
उत्पादयेत् पुनर्भूत्वा सा पौनर्भव उच्यते ॥
साचेदक्षत योनिः स्यात् गता प्रत्या गता पिवा ।
सौनर्भवेन भार्त्रासा पुनः संस्कार मर्हनिः ॥

अर्थ--जिसको पतिने छोड़ दी हो अथवा वह विधवा स्त्री हो अपनी इच्छा से फिर भार्या होकर पुत्र उत्पन्न करावे वह पौनर्भव कहाता है वह यदि अक्षत योनि हो । और पति के समीप गई आई भी हों तो पौनर्भव पति के साथ उसका फिर विवाह संस्कार हो सकता है । इसका अर्थ तो पंडित जी ने नहीं बदला किन्तु इतना कह कर पीछा छुड़ा लिया कि मनुस्मृति में पुनर्भू को पापिनी और पौनर्भव पुत्र को शास्त्र मर्य्यादा विरुद्ध ठहराया गया है। पण्डित जी ने कोई प्रमाण मनुस्मृति का ऐसा नहीं दिया जिस में पौन र्भव को शास्त्रमर्य्यादा विरुद्ध पुत्र और पुनर्भू को पापिनी बताया हो पूर्वोक्त पंचोदन यज्ञ में जहां सुवर्ण दान का वर्णन है । यदि पुनर्भ पापिनी है तब क्यों कर पतिलोक को प्राप्त हो । और पौनर्भव को यदि मनु जी मर्य्यादा व शास्त्रविरुद्ध पुत्र मानते हैं। तव क्यों मनु और याज्ञवल्क्य पिण्ड का अधिकारी और धन भागी का बताते हैं ।

औरसो धर्मपत्नीजस्तत्समः पुत्रिकासुतः ।
क्षेत्रजः क्षेत्रजातस्तु सगोत्रेणे तरेणवा ॥ १ ॥
गृहे प्रछन्न उत्पन्नो गूढ़जस्तु सुतः स्मृतः ।
कानीनः कन्यका जातो मातामह सुतः स्मृतः ॥ २ ॥
अक्षतायांक्षतायां वा जातः पौनर्भव स्तथा ।
दद्यान्माता पितावायं सपुत्रो दत्तको भवेत् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीतश्चताभ्यां विक्रीतः कृत्रिमः स्यात्स्वयं कृतः ।
दत्तान्मातुः स्वयं दत्तोगर्भविन्नः सहोढजः ॥ ४ ॥
उत्सृष्टोगृह्यते यस्तुसोपविद्धोभवेत्सुतः ।
पिण्डदोशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः परः ॥ ५ ॥

अर्थ—औरस पुत्र उसे कहते हैं जो अपनी विवाहता स्त्री से हो और पुत्री का लड़का भी उसके समान हैं। क्षेत्रज उसे कहने जो अपनी स्त्री में सगोत्र से अथवा भिन्नगोत्र वाले से हो ॥ १ ॥ यदि स्त्री गुप्त रीति से पुत्र उत्पन्न करावैं उसे गुढज पुत्र कहते हैं। कन्या से जो उत्पन्न हो उसे कानीन कहते हैं और वह नाना का कहा गया हैं अक्षत योनी याक्षत योनी, विधवा से जो पुत्र उत्पन्न हो उसे पुनर्भव कहते हैं। जिस को माता या पिता देवे वह दत्तक पुत्र होता है ॥ ३॥ जिसको माता पिता दोनों वेच देवे उसे क्रीत पुत्र कहते हैं और किसी अनाथ लड़के को जो अपना वनाले उसे कृत्रिम पुत्र कहते हैं। गर्भवती का जो विबाह हो और उस के पुत्र हो उसे सहोढ़ज कहते हैं ॥ ४ ॥ और जिसको माता पिताने छोड़ दिया उसको जो लेले उसे अपबिद्ध कहते हैं। यह सब पिण्ड के अधिकारी और धनके भागी होते हैं पहिले २ के अभाव में दूसरा २। और मनु जी ने भी द्वादश प्रकार के पुत्र कहे हैं ॥

स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धिपम् ।
तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥ १६६ ॥
यस्तल्पजः प्रमीतस्यक्लीवस्यव्याधितस्य वा ।
स्वधर्मेणनियुक्तायां सपत्रः क्षेत्रजः स्मृतः ॥ १६७ ॥
माता पितावा दद्यातांयमद्भिः पुत्रमापदि ।
सदृशं प्रीति संयुक्तं सज्ञेयोदत्त्रिमः सुतः ॥ १६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदृशं तु प्रकुर्याद्यं गुणदोषविचक्षणम् ।
पुत्रंपुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयश्च कृत्रिमः ॥ १६९ ॥
उत्पद्यते गृहेयस्य न च ज्ञायेत कस्यसः ।
सगृहेगूढउत्पन्नस्तस्यस्याद्यस्यतल्पजः ॥ १७० ॥
मातापितृभ्यामुत्सृष्टं तयोन्यतरेणवा ।
यं पुत्रं परिगृह्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ १७१ ॥
पितृवेश्मनि कन्यातुयं पुत्रं जनयेद्रहः ।
तं कानीनंवदेन्नाम्नावोढुः कन्यासमुद्भवम् ॥ १७२ ॥
यागर्भिणी संस्क्रियतेज्ञाता ज्ञाता पिवासती ।
वोढुः स गर्भो भवति सहोढ इति चोच्यते ॥ १७३ ॥
क्रिणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रोर्यमन्तिकात् ।
सक्रीतकः सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशोऽपिवा ॥ १७४ ॥
या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ।
उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा सपौनर्भव उच्यते ॥ १७५ ॥
माता पितृ विहीनोयस्त्यक्तो वा स्यादकारणात् ।
आत्मानंस्पर्शयेद्यस्मै स्वयंदत्तस्तुसस्मृतः ॥ १७६ ॥
यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम् ।
सपारयन्नेवशवस्तस्मात्पारशवः स्मृतः ॥ १७७ ॥
क्षेत्रजादीन्सुतानेतान्मेकादशयथोदितान् ।
पुत्र प्रति निधिनाहुः क्रिया लोपान्मनीषिणः ॥ १७८ ॥

अर्थः—विवाहादि संस्कार किये हुवे अपने क्षेत्र में आप जिसको उत्पन्न करे उसके पहिले कहा हुवा औरस पुत्र जाने ।१६६। जो मृतक की वा नपुंसक की वा प्रसव विरोधी व्याधि करके युक्त की स्त्री में नियोग विधि से उत्पन्न होवे वह क्षेत्रज है । १६७ । माता पिता वा आपस की सलाह से जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्रको आपत्काल में समान जाति वाले प्रीतियुक्त लेने वाले को संकल्प करके देवे वह दत्तक पुत्र ऐसा जानने योग्य है।१६८। जो समान जातिवाला और गुण दोष का जानने वाला तथा पुत्र के गुणों करके युक्त को पुत्र करें उसको कृत्रिमाख्य पुत्र कहना चाहिये ॥ १६९ ॥ जिस के घरमें उत्पन्न होवे और न जानाजाय वह किस का है वह घर में गुढा से उत्पन्न हुआ उसका है जिसकी वह स्त्री है । १७० । माता पिता करके छोडा हुआ पुत्र जो ग्रहण करे उसको अपविद्ध पुत्र कहते हैं ॥ १७१ ॥ पिता के घर में जो कन्या विना प्रगट किये पुत्रको जने उसको उस स्त्री का पति कानीन इस नाम करके कहा ॥ १७२ ॥ जो गर्भिणी ज्ञात हो वा अज्ञात हो परंतु जिस के साथ बिवाह किया जावे उसी का गर्भ होता है उसको ओढ पुत्र कहते हैं ॥ १७३ ॥ जो पुत्र के अर्थ माता पिता से मोल लेवे वह क्रीतक पुत्र है उसके समान हो वा असमान हो उसको क्रीतक पुत्र कहते हैं ॥ १७४ ॥ जो पति करके छोड़ी हुई वा विधवा अपनी इच्छा से दूसरे की फिर से भार्या होके पुत्र को जने उसको पौनर्भव पुत्र कहते हैं ॥ १७५ ॥ जो मरे. माता पिता वाला वा द्वेषादि करके विना अपराध निकाला हुआ अपने को जिसके अर्थ देता है वह स्वयंदत्त मुनियों करके कहा गया है ॥ १७७ ॥ जिसको ब्राह्मण शूद्रा में काम से उत्पन्न करे वह जीता हुवा भी शव के तुल्य है इस लिये उसका पाराशव ऐसा कहा है ॥ १७८ ॥ इन क्षेत्रजादि एकादश पुत्रों को श्राद्धादि क्रिया का लोप न हो इस लिये पुत्र के प्रति निधि इनको ऋषियों ने कहा है अर्थात् औरस पुत्र के न होने पर इन को भी श्राद्धादि करने का अधिकार है ॥ १७९ । और यह धन के भी भागी हैं ॥

[शेष फिर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भूमि से विनय ।

[लेखक श्री० रामकर्ण मिश्र सब्दलपुर]

[१]

हत-भाग्य भारत-भूमि तेरे पूर्व दर्शन हैं कहां,
बहु तत्वज्ञाता मनु पराशर श्रेष्ठ तव सुत हैं कहां ।
उन आर्य्य पुत्रों के बिना तुम पुत्र हीना होगई,
पूर्व कीरति थी अचल वह आज तेरी खो गई ॥

[२]

मूल यद्यपि शेष है पर पुष्प दल वैसा नहीं,
उत्तम सुक्षेत्र समान तुम पर पुत्र वैसा है नहीं ।
प्राची प्रभा के भोग से पावन पवन के योग से,
होगी कृण जब ईश की गूंजे गगन के योग से ॥

[३]

कौशल कला सिखलाइये अरु ज्ञान पाठ सुशास्त्र के,
वेद आर्य्यविधि सर्व मानस विज्ञान रणास्त्र के ।
गुरुकुल में भेजिये बालको या बालिका पर रीझिये,
बन को भी शिक्षित करि सदा जरा तू पसीजिये ॥

[४]

हे भाइयो ! निज पूर्वजों के कार्य्य को चित धार लो,
पठि वेद विद्या बहु विधि निज देश को भी सुधार लो ।
निज भ्रात भगिनी मित्र जो हैं अविद्या में फंसे,
उनकी दशा पर ध्यान दो जेहि भांति तुमसे हो सके ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५]

हे आर्य्य पुत्रो ! वीरवर ! मेरी विनय सुन लीजिये,
हत-भाग्य भारत भूमि की फिर से ज़रा सुधि लीजिये।
कीजे कृतार्थ उसको सभी विधि बोध की वरवृद्धि से,
करदो चमत्कृत कार्य्य से निज देश को समृद्धि से ॥

"भास्कर"

रोग क्या है ?

(गताङ्क से आगे)

फ्रिकशन हिप-बाथ (उदरस्नान) प्रति दिवस एक से तीन बार तक लिये जा सकते हैं, और समय का अन्दाज़ा और जल की गरमी, सरदी प्रति रोगी की दशा के अनुकूल होनी चाहिए। बहुधा दशाओं में इसके बदले फ्रिकशन सिट्ज़-बाथ (मेहनस्नान)लेना उचित है या दोनों प्रकार के स्नान किये जावें।

यह स्नान स्त्रियों के रोगों के लिये बड़ा लाभदायक होता है। और निम्न लिखित रीति से किया जाता है।

उस टब में जिसका कथन पीछे बतलाये हुये स्नान में किया गया है, एक स्टूल या लकड़ी की बैठक रक्खी जावे तब उस टब में जल डाला जावे परन्तु इतना हो कि स्टूल के तख़ते के किनारे तक पहुंचे और ऊपर से तख़ता सूखा रहे स्नान करने वाली स्त्री तत्पश्चात् उस तख़ते (*) पर बैठे और एक मोटे

(*) ऐसे बैठे कि पांव टब के बाहर रहें, और इस पर कपड़े निकाल कर बैठना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े [सन का कपड़ा अथवा मोटी तौलिया] को जल में डुबो २ कर बहुत ही मुलायमियतके साथ योनि(बच्चा पैदा होने के रास्ते के मुंह) को धोवे, कपड़े से जितना जल उठाया जासके उतना प्रति वार उठावे। यह अति आवश्कीय है कि योनि के बाहरी हों, न कि भीतरी हिस्से धोये जावें, और उनको भी सख़्ती के साथ न मला जावे, वरन् कोमलता के साथ उतने जल से जितना कि कपड़े में आ सके उसको धोवें। विदित हो कि इस स्नान में भी टांगें, पांव और शरीर के ऊपर का भाग सूखा रहता है परन्तु यदि नितंत्र भीग जावें तो उस स्नान के प्रभाव में इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता। स्त्रियों के मासिक धर्मके समय चिकित्सा करने वालेको यह स्नान बन्द कर देने चाहियें यदि रक्त का निकलना आरोग्यता की दशा से अधिक हो तो इन दिनों में भी यह स्नान किये जासकते हैं, परन्तु यह स्नान यदि ऐसी दशा में कराये जायें तो उसी प्रकार से जैसा कि प्रति रोगिणी दशा के अनुकूल आगे ख़ासकर लिखा जायगा। मासिकधर्म में दो या तीन दिवस से अधिक नहीं लगने चाहियें, ज्यादा से ज्यादा चार दिवस इस से अधिक समय तक रुधिर के जारी रहने से यह ज्ञात होता है कि साधारण दशा नहीं रही है और रोग की दशा प्राप्त होगई है।

यह स्नान दस मिनट से एक घन्टे तकका रोगीकी अवस्था और दशा का विचार करके लिया जा सकता है। विशेष कर शरद ऋतु में वह कमरा जिसमें बैठ कर यह स्नान किया जाय उतना गरम कर लेना चाहिये जितना कि अच्छा मालूम हो। इस मेहन स्नान [फ्रिकशन सिट्ज़ बाथ] में जितना अधिक ठंडा जल काममेंलाया जावेगा उतना ही फल भी अधिक होगा। परन्तु जल इतना ठंडा नहीं होना चाहिये जिसको कि स्नान करने वाले के हाथ सहन न कर सकें।

[शेष फिर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल विधवा के लिये वर की जरूरत

विधवा की उम्र १५ साल है जात खंडेलवाल वैश्य है।

विधवा के माता पिता अपनी इस बाल विधवा का पुनर्विवाह करना चाहते हैं खडेलवाल वैश्य बिरादरी के योग्य वर की जरूरत है—जो हालत मालूम करना हों निम्न पते पर पत्र भेजे—जवाब के लिये टिकट भेजें।

ऐम० पी० मार्फत नानक चन्द खन्ना मंत्री
डिसट्रिक्ट विधवा बिवाह सहायक सभा—झांसी

समालोचना।

आदर्शमाता—यह पुस्तक श्रीमती चौधरानी हेमन्तकुमारी प्रथमाध्यापिका विक्टोरिया कन्या विद्यालय पटियाला ने बनाई है। प्रत्येक विवाहिता स्त्री के लिये यह विशेष उपयोगी है। माता बन कर क्या २ करना चाहिए तथा माता कैसी होनी चाहिये यह बिदुषी लेखिका ने खूब अच्छी तरह दिखाया है। मूल्य ॥) लेखिका द्वारा पटियाला से प्राप्त।

नारी पुष्पावली—यह भी पूर्वोक्त चौधरानी जी की बनाई ८० पृष्ठ की पुस्तक है। इस में देशी और विदेशी २६ पतिब्रता, विदुषी और देश-हितैषी स्त्रियों के जीवन चरित्र हैं। प्रत्येक हिन्दी हितैषी को चौधरानी जी का कृतज्ञ होना चाहिये आपने बंगालिन होकर भावी राष्ट्र भाषा साहित्य भंडार को अपनी लेखनी द्वारा उपकृत किया। मूल्य ।) और भी पुस्तकें आपने समालोचनार्थ भेजी हैं यथावकाश समालोचना की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवा विपत्ति प्रकाश—लेखक मुन्शी द्वारका प्रसाद जी। इस में विधवाओं के दुःख पर मार्मिक कविता है और अनेक शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विधवा विवाह होना सिद्ध किया है। मूल्य =) पुस्तक डाक्टर श्यामलाल ऐस० ऐल० आदर्श वैदिक मेडीकल-हाल इटावा से मिलती है।

मैं आरोग्य हूँ या रोगी—विषय नाम से ही स्पष्ट है यह जर्मन के प्रसिद्ध डाक्टर जल चिकित्सा के आविष्कार लूई कूहिनी साहब की am I well or sick. पुस्तकका हिन्दी अनुवाद है। इसका अनुवाद पं० राम गोपाल शर्म्मा ने किया है। वास्तव में पुस्तक बहुत उत्तम है और प्रत्येक आरोग्यता की इच्छा करने वाले को यह पुस्तक पास रखनी चाहिये। इस में बिना औषधी आरोग्यता प्राप्त करने की विधि लिखी है। मूल्य ।) है। मिलने का पता पं० रामगोपाल शर्म्मा मुहल्ला किसरौला मुरादाबाद है।

'गौड़हितकारी;—यह हिन्दी भाषा का एक सुन्दर मासिक पत्र है जो प्रति मास मैनपुरी से श्रीमान् पण्डित नारायणप्रसाद जी गौड़ द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित होता है। इस में हर महीने बहुत उत्तम २ लेख गौड़ और अन्य विप्र महानुभाओं के जीवन चरित्र समस्त विप्र विशेष कर गौड़ जाति के सुधार के उपाय तथा इनको उन्नति के शिखर पहुचाने के लिये गद्य पद्य लेख श्रीमतीं गौड़ महा सभा के समाचार प्रकाशित होते हैं। सम्पादक पं० नारायणप्रसाद जी ने कई वर्ष ब्राह्मणसमाचार का सम्पादन किया है इस से पत्र का सम्पादन बहुत अच्छा होता है। आप विद्वान् और अनुभवी सम्पादक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया बिधवा विवाह

तारीख १४ जुलाई को लाला सुन्दरलाल जी वैश्य दुकान्दार झांसी ने अपनी बाल विधवा कन्या का पुनर्विवाह लाला किरोड़ीमल अग्रवाल दुकान्दार साकिन आकापुर टियाना जिला बुलन्दशहर के साथ वैदिक रीत्यनुसार किया यह विवाह आर्यसमाज हापुड के प्रबंध से हापुड में बहुत धूम धाम के साथ हुआ बारात बाजार में निकाली गई तीन भजन मंडलियां बाहर से बुलाई गई थीं संस्कार पं: मनूदत्त जी शर्मा उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा और पंडितों ने कराया लाला किडोडीमल जी की विरादरी और रिश्तेदार देहली मेरट गाजियाबाद वगैरा से आकर विवाह में शामिल हुये। कई सौ विरादरी और रिशतेदार दावत और विवाह में शामिल हुये—लाला जोतीप्रसाद जी सभासद आर्यसाज परीक्षितगढ़ लाला किडोडीमल जी के बड़े भाई हैं—आपने और आर्यसमज हापुड के योग्य समासदों के इंतजाम से यह विवाह संस्कार बड़े आनन्द के साथ हुआ —अग्रवाल विराहरी में यह पहला पुनर्विवाह हापुड में हुआ है—बहुत अच्छा प्रचार हुआ—श्रीमती गंगादेवी विधवा की उम्र करीब १८ साल और लाला किडोडीमल की उम्र २९ साल है—वहुत इज्जतदार खान्दान है—यह पुनर्विवाह विधवा विवाह सहायक सभा झासी की कोशिश से हुआ है ७५) सामाजिक संस्थाओं को दान में क्या दिया गया।

सेवक—

नानकचन्द खन्ना मंत्री
डिसट्रिक्ट विधवा बिबाह सहायक सभा झांसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियोगनी ।

(गताँक से आगे)

'हाँ प्राणनाथ!' कपिला ने सखेद उत्तर दिया।

क्यों? तुझे ऐसी कौनसी चिन्ता व्याप्त होगई है, जिस से तेरा हृदय विदीर्ण होगया? भोगीन्द्र ने फिर प्रश्न किया।

सखी संकट का स्मरण होने से चित्त व्याकुल होगया है।

प्यारे आप के होते हुए मुझे किस बात की चिन्ता है। विमला के कष्ट का भान होते ही सहसा हृदय द्रविभूत हो जाता है : जिस समय विमला अपने संकट का वर्णन करती है। उस समय मुझे अत्यन्त दुःख होता है। उस दिन उसके यहाँ उसके पिता के एक मित्र गाजीपुर से आए थे, उन्होंने विधवा विवाह को धर्म्मानुकूल बता कर अमृतलाल दद्दा से विमला का पुनर्विवाह करने का अनुरोध किया तथा अनेक दृष्टान्त और प्रमाणों द्वारा उनको बहुत समझाया किन्तु अन्त में उलटे घड़े पर पानी के सामान हुआ। जूने (पुराने) विचार के प्रवर्तक दद्दा के मन में इस का कुछ भी शुभाशुभ परिणाम नहीं सूझा उलटे उनपर क्रोध किया। अहा! लोक निन्दा को तिरस्कार कर यदि दद्दा विमला का विवाह उपेन्द्र के साथ करदें तो वह कितनी भाग्शाली होजावे। व्यर्थ लोक निन्दा का भय रख उन्हों ने अपनी कुसुम से भी सुकुमार पुत्री को जन्म पर्यन्त कामाग्नी में सुलगते रहने का कुछ भी विचार नहीं किया। लोक निन्दा केवल दो दिन की जिस का भय कर लोग प्रायः अपने हृदय के उत्कृष्ट विचार तथा शुभ कार्य्यों को हताश हो छोड़ बैठते हैं? हा! दद्दा जी ने कुछ भी विचार नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धिक्कार है तुम्हारे हिन्दू संसार के बन्धनों को ! आत्म प्रति पक्षपात कर अनाथ अबलाओं के मस्तक पर दुःख का पर्वत गिरा देते हो? इस लिए हे हिंदुओं तुम हिन्दू ही हो ? 'आर्य्य, बिशेषण के सर्वथा अयोग्य हो। पवित्र आर्य्य माता के पुत्र ही नहीं। निज स्वार्थता तुम्हारी नश २ में समाई हुई है। स्त्री की मृत्यु होते ही उसका शोक एक ओर रख पुरुष दूसरे दिन ही बिवाह करे। अरे! मृत्यु तो दूर रही स्त्री के जीते जी उसे मरण प्रायः समझ एक छोड़ अनेक स्त्रियों से पाणीग्रहण करे। यह अन्याय करने की संसार तुम्हें आज्ञा दे! परन्तु कदाचित् कोई विधवा पुनर्विवाह करे तो उसके मस्तक पर निन्दा तथा गाली प्रदान का बादल टूट पड़े। यह कितना अन्याय कितना पक्षपात कितनी कठोरता कितना प्रपञ्च। सहस्रशः धिक्कार है ऐसे नराधमों को जो कि निज स्वार्थ के लिए आकाश पाताल एक करें किन्तु बिचारी निर्दोष बालाओं के सुख के लिए यदि कोई कुछ कहे तो कानों पर हाथ धर कर साफ उत्तर देंगे कि अपने बाप दादा के कुल को बट्टा लगेगा। तथा लोग हँसेंगें। क्यों प्यारे! मेरा कहना सत्य है या नहीं! कपिला ने रुदन का कारण व्यक्त करते सखी के सङ्कट का वर्णन किया।

"भोगेन्द्र ने हास्य करते कहा, प्यारी ? यह सब अक्षराक्षर सत्य है। परन्तु मैं इतर मनुष्यों के समान स्वार्थी नहीं हूं मैं आज ही से कहे देता हूं कि मेरी मृत्यु के पश्चात् अवश्य पुनर्विवाह करना।

"तुम्हारे हाथ जोड़ती और प्रार्थना करती हूं कि ऐसी वार्ता फिर न कहना। मुझे ऐसी बात सुनते ही बहुत दुःख होता है।,, पतिके अमांगलिक वचनों से खेदित होकर कपिला ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दुःख होता है' कहकर आनन्द पूर्व्वक कपिला का चुम्बन कर भोगीन्द्र ने प्रश्न किया, "प्रिये ! विधवा विवाह क्या अच्छी प्रथा है ?,,

सम्पूर्ण तथा विशेपतः विमला सदृश विधवाओं का तो पुनर्विवाह अवश्य होना चाहिये ।" कपिला ने निष्कपटता से उत्तर दिया ।

भोगीन्द्र आनन्दित होकर बोला, 'प्रिये ! तेरे ऐसे उच्च विचार देखकर मेरा हृदय आनन्द से पुलकित होजाता है । क्या ईश्वरानुग्रह से ऐसा सुदिन भी देखने में आयगा कि, सम्पूर्ण भारत वर्ष में विधवा विवाह बलपूर्वक प्रवर्तक हो । परन्तु हाय ! आज कल की स्थिति देख कर इस कार्य में यद्यपि विलम्ब प्रतीत होता है । कारण आज कल के नव शिक्षक भी इस बात में बेफिकर दीखते हैं ।

हा ! ईश्वर तूने मेरी सखी को बहुत ही दुःख दिया ।, यह उद्गार करते ही कपिलाने एक उष्ण निःश्वास छोड़ा । भोगीन्द्र भी निःस्तब्धता से कुछ बिचारने लगा । निःस्तब्धता में इस प्रेमी युग्य की विमला विषयक चिन्ता जो निःस्तब्धता को भङ्ग कर रही थी, सो भी अब परस्पर के अधरामृत पान से निःस्तब्ध होगई, तथा उस घोर निःस्बधता ने पृथ्वी को अपने श्याम आवरण से ढांक लिया । दोनोंप्रेमी प्रेमामृत पान करने में लीन हुए । पाठक ! अब यहां रहना उचित नहीं, चलो हम भी खसक चलें ; इस नव दम्पति को भगवान् कन्दर्प की आराधना में प्रवृत होनेदो !

सुशिक्षित दम्पतिका जीवन कितना सुख मय तथा आह्लाद कारक है । ईश्वर इस सुशिक्षित जोड़ी को बनाए रक्खे । यही हमारा आशीर्वाद है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टम निःश्वास

अबला का अनुराग

—×❋×—

'O love O fire once he drew
with one long kess my whoe some through
my lips as sun light dri' nheth drew
Tenny son

शिशु अवस्था से ही उच्च संस्कार से भूषित, किन्तु लोकाचार के दास होकर माता पिता के किये हुए बाल विवाह के परिणाम से चिर दुःखिनी बिमला का उपेन्द्र के प्रति प्रेम दिन प्रति दिन बृद्धि पाता गया। प्रथम तो माता पिता का भय तथा लोक लाज इत्यादि विषय उस के मन में खटका करते थे। किन्तु समयानन्तर उसका भी लोप होने लगा। बिधवा हुए पश्चात् उस ने कपिला के सहबास में कालीदास, भवभूति, जयदेव प्रभृति प्राचीन संस्कृत कवि तथा अर्वाचीन प्रकृत कवियो के काव्य का अच्छा अभ्यास किया था। जिस से प्रेम का सत्य स्वरूप वह भली प्रकार समझ गई थी। इस कारण उपेन्द्र का प्रेम मात्र ही उस के जीवन का उद्देश होरहा था। उसी की चिन्ता उसी का ध्यान, उसी का ज्ञान उसी की कल्पना तथा जल्पना—बैठे, उठे सोते जागते, खान, पान आदि सबों में उपेन्द्र ही समाया हुआ था। वह सदैव अपने हृदय मन्दिर में उपेन्द्र की सुन्दर मूर्ति स्थापित कर उसी की आराधना किया करती है। यहां तक कि बिमला अपना मन, प्राण तथा स्वयं अपने को भी उपेन्द्र के समर्पण करचुकी थी ! तथापि स्वात्म समर्पण नही करसकी। यद्यपि उसने शुद्ध रह कर अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतित्व रक्षित किया, किन्तु भविष्य की घटना ईश्वराधीन है।

सन्ध्या समय विमला नित्य नियमानुसार आज भी नियत समय पर समीपस्थ सरोवर तट पर उपस्थित हुई। चतुर्दिक एक बार दृष्टिपात कर वह एक लता मण्डप के नीचे जा बैठी और अपनी अंगिया की जेबसे एक कविता की हस्त लिपि (लिखी) प्रति निकाल कर बांचने लगी:—

राग बिहाग।

प्यारी! आयो सरस बसन्त ॥ टेक ॥
धाम, ग्राम, वन, वीथिन, बागन, बनय चतुर दिगंत। विविध कुसुमकल कुसुमन लागे, मँजुल मौर लसन्त॥ ललित लवङ्ग लता मिलि मलयज, मारुत, त्रिविध वहन्त। पुलक प्रफुल्ल भईं तरुवल्लीं, झुकि २ तरुन मिलँत। कुञ्जन २ गुञ्जन लागे, मधुकर पुँज अनन्त। द्रुमन २ चाढ़ि मधुर मनोहर कोकिल कल किलकँत॥ पीत बसन तन साजि नवेली अङ्ग भरत निज कँत! ऐसे समय हाय! हो विरही काह करौं हा हन्त! इक ऋतुराज अधीर कर तन, तापै मदन दहन्त। हा! हा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण प्रिया अब तुम बिन धीर धरूँ किहि तंत ॥ गुरुजन लोक लाजकुल कानी, तजिके सवाँइ तुरन्त भुजभरि आय भेंटये प्यारी न तरु होत बस अंत ॥ चन्द्रानन लखि लालचि लोचन, कब ह्वै हैं सरसंत ॥ मृदुल मञ्जु मन हरण बनै कब, सुनि ह्वै हो हरसँत ॥ हा विधना कब वे दिन ऐहैं, प्यारी मोहि मिलन्त । विरहीदास सुधाकर की यह, आश पूर भगवँत ॥

विमला को यह कवितामय पत्र उपेन्द्र की टेबिल पर मिला था। प्रेम पूर्वक दो तीन बार आदि से अन्त पर्यंत बांचने के पश्चात् वह स्वागत [आप ही आप] बोली—उपेन्द्र ? मेरे प्राणाधार उपेन्द्र ! अरे, मैं क्या करूं ? जो विधाता की कृपा से स्वयं ही चिर दुःखिनी है वह दूसरे को किस प्रकार सुख देसकती है ? जिसके विरुद्ध ज्ञाति जन समाज अधिक क्या ईश्वर भी जिसके सानुकल नहीं वह दूसरे को किस प्रकार सुखी कर सकती है। मुझे आशा थी कि विधवा विवाह प्रचलित होने से पिता जी मेरा मेरी इच्छानुसार पुनर्विवाह कर देंगे। किन्तु सर्व आशाएं निष्फल निकलीं। हाय परमेश्वर ! हे करुणामय ! तू दयामय होकर भी अपनी असंख्य कन्याओं की ऐसी दुर्दशा क्यों देखरहा है मेरे समान अनेक पति हीन युवतियां रो रो कर रुद्धन कण्ठ होजाती हैं। कितनी एक आत्म हत्या करलेती हैं। कितनी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रूर माता पिता के दिए हुए विष का भोग होजाती हैं। कितनी एक उपाय नहीं सूझ पड़ने से नीचजाति के मनुष्यों के साथ निकल जाती हैं ! तथा अनेक भ्रूण हत्या भी नित प्रति होजाती हैं हे दयासिंधु ! अपनी दुहिताओं के अश्रुत नहीं पोंछेगा, तो और कौन पोंछेगा उपेन्द्र ! मैंने पहिले ही से तुम पर प्रेम क्यों रक्खा प्रेम ही सर्व दुःखों का मूल है। प्रारम्भ में ही,—

वसन्त तिलिका –

देखे न होत चखतें प्रथमै कदापि।
बोले न होत मुखतें पहिले तथापि॥
कीन्हीनहोति कबहूँ, चित सों जु प्रीति।
तो व्यर्थ काहे अबहूँ सहते अनीति॥

इस हृदय मन्दिर में तुम्हारी प्रेम प्रतिमा की प्रतिष्टा क्यों की ? आराध्य देवतावत् तुम्हारी पूजा क्यों करती हूं ? अदृष्ट दोष से कहो, किंवा माता पिता के दोष से कहो, मैं तो विरहाग्नि में जल ही रही परन्तु प्यारे ! तुम व्यर्थ किस लिए दुःखी होते हो ! मैं तुम्हें अन्तः करण से चहती हूं किन्तु केवल इतने ही से तुम्हारी आकांक्षा पूर्ण नहीं होसकती। कारण कि मैं पिता माता की आज्ञा बिना तुम से विवाह सम्बन्ध कर तुम्हारी अभिलषा पूरी नहीं कर सकती। उनके सरल हृदय को गरल करके मैं तुम्हारी होजाने को असक्त हूं।,

क्षणैक निःशब्द हो विमला कुछ विचार कर फिर कहने लगी। उपेन्द्र ! प्राणधिक उपेन्द्र ? इतना ज्ञान, इतनी दृढ़ता, तथा पूर्ण बोध होते हुए भी मेरे हृदय से तुम्हारा प्रेम क्यों नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यून होता ? तुम्हारा चन्द्रानन देखे बिना मन क्यों नहीं मानता हे परमात्मा इस दुःखिनी अवला को अभी और कितना! दुःख देना शेष है ? हे दयालु ! कृपासिंधु भगवन् ! तेरी घटना विचित्र तथा अकथनीय है ।'

नेत्ररूपी नदी से विमला के सुन्दर कपोल रूप भूमि भाग द्वारा अश्रुवारिका वहना आरम्भ हुआ । उसी क्षण उस के कान में एक पद्म ध्वनि का अपघात होते ही वह पीछे फिर कर देखने लगी । अपने पीछे अपने आराध्य देवता उपेन्द्र को मैला मुख देख विमला सहसा चकित होगई ।

—— ० ——

नवम निःश्वास

प्रणय प्रतिज्ञा

—⁘✻⁘—

उदयाति यदि भानुः पश्चिमे दिग्बिभागे ।
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायाम् ॥
प्रचलति मेरु यदि शीततां याति वन्हिः ।
न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित् ॥

वैरागिनी विमला के वदन राजिव को उपेन्द्र एकाग्रता से निरिक्षण करने लगा । विमला ने भी उसका चन्द्रानन देख अधो मुख कर लिया इस समय उसकी प्रवल अश्रुधाराओं का श्रोत पृथ्वी को चुम्बन करने लगा । विमला ने मनोविषाद को रोकने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु सब निष्फल हुआ । [शेष फिर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके दुःख दर्द की सच्चे दोस्त हैं।

पेपरमेण्ट का सत [फूल]

यह प्रायः सब कोई जानते हैं कि पेट के साधारण दर्द के लिये पेपरमिण्ट का सत्त व्यवहार होता है, परन्तु बाज़ारू पेपरमिण्ट के सत्त में प्रायः दूसरी चीजों की मिलावट रहती है, यही कारण है कि उस से उतना गुण नहीं होता।

ग्राहकों को असली चीज़की चाहना देख कर डा० वर्मन ने जापानके एक नामी कारखाने से असल चीज़ बनवाकर मंगाई है। मूल्य ।≤) फी शीशी डा० म० ।-)

डाक्टर एस० के० वर्म्मन का क्लोरोडिन

यही अङ्गरेज़ों की प्रसिद्ध घरेलू दवा है। बाई दर्द व शूल चाहे किसी कारण से हो इस दवाके एक दो बार के सेवन से सेहत होती है। दस्त, आंवके दस्त पेचिश मरोड़ पेटके दर्द को ऐंठन के लिये क्लोरोडिन अत्यन्त गुणकारी है। डाक्टर वर्म्मन ने इङ्गलैण्ड के एक नामी औषधालय से यह क्लोरोडिन बनवाई है। जो कि पेटेन्ट व अधिक मूल्यके क्लोरोडिनके सम्पूर्ण समान है। और दाम में सस्ती है। अतः प्रार्थना है कि व्यर्थ अधिक मूल्य में 'पेटेन्ट' क्लोरोडिन न लेकर ग्राहक लोग इसे खरीदें। मूल्य १ शीशी ।≤) दरजन भर ४) डाक व्यय अलग।

शिर दर्द व बाई की दवा

दर्द पलमें पहाड़ होजाता है यह उसको पानी करदेती है। चमक, लहर अङ्गमें किसी प्रकार का दर्द हो मिट जावेगा आधे या सारे सिर में कैसा दर्द होता हो इस दवा के सेवन से तत्काल ही सेहत पावेंगे। १२ टिकिया एक शीशी का मूल्य ।≤) डाक महसूल १ से ६ शीशी तक ।-)

डा० एस० के० वर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regstered No. A. 363.

दीनबन्धु पुस्तकालय बिजनौर की
अलभ्य पुस्तकें

स्वाधीन विचार ।) लाला हर दयाल एम० ए०
भारत के आदर्श बालक ।) पूर्णा देवी
अम्रिका का गृह प्रबन्ध -) मिसेस् सें: निहाल सिंह
शिशु शिक्षा -) नारायण प्रसाद अरोड़ा बी० ए०
मनुष्य के कर्तव्य का परिचय -)
नीति सौन्दर्य ≡) मैरी कुरैली के व्युटीज़ आफ़ट्यूटी का अनुवाद
लक्ष्मी उपन्यास =) श्रीमती प्रियम्वदा देवी,
बनिता बन्धु)।।। श्रीमती सरस्वती देवी
बाबा का विवाह -) वासुदेव नारायण सिंह
जगत् माया ।=) लाला हर स्वरूप गुप्त
क्या हनुमान जी बन्दर थे)।।। हरिश्चन्द्र गुप्त
महात्मा गोखले)।।
स्वामी नित्यानन्द =) पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
विधवा विवाह विवरण ।।) पं० राधाचरण गोस्वामी
जो सेफ मेज़नी -) पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
वीर हकीकत राय-)
व्यापार तत्व ।।)
हरिश्चन्द्र भजनोदय प्रथम व द्वितीय भाग -)।' हरिश्चन्द्र

यह पुस्तकें हमारे यहां तैयार हैं प्रत्येक पुस्तक अबलाहितकारक के ग्राहकों को चौथाई कीमत कमकरके दीजायेंगी।

पता-श्रोत्रिय पुरुषोत्तमदत्त
दीनबन्धु पुस्तकालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबलाहितकारक

मासिक पत्र

12-24

संस्थापक—श्रोत्रिय शङ्करलाल

सम्पादक—श्रोत्रिय जगदीशदत्त

स्त्रीशिक्षा और हिन्दी साहित्य का सबसे सस्ता मासिकपत्र

विषयसूची।

षय	पृष्ठ	लेखक
न्मभूमि	१६३	नर्मदाप्रसाद मिश्र
म्पादकीय वक्तव्य	१६५	० ०
धवा विवाह निषेध खंडन	१६८	सम्पादक
राश न करो	१७१	दुःखनी बाला
म क्यों गिरे और कैसे उन्नति हो	१७४	कृपा
त्रियों की महिमा	१८०	'वेंकटेश्वर'
या विधवा विवाह	१८३	०००
राज्य	१८५	श्रोत्रिय पुरुषोत्तम दत्त
योगिनी	१८७	चम्पालाल जौहरी

Printed and Published by Soti Jagdish Datta at Deen bandhu Press Bijnor.

वार्षिक मूल्य १।) स्त्रियों से ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना

हमको अत्यन्त शोक है कि अभीतक सतीसुचरित्र अपने ग्राहकों की सेवा में न भेज सके जिसका कारण यह है कि लड़ाई के सबब कागज कठिनता से मिलता है। कागज न मिलने के कारण सती सुचरित्र पूरा न छप सका अब कागज आगया है और सती सुचरित्र बराबर छप रहा है। आशा है कि शीघ्र ग्राहकों की सेवा मे पहुंचेगा। और है ग्राहक देरीके लिये क्षमा करेंगे।

निवेदक—मैनेजर

अबला हितकारक के नियम

(१) अबलाहितकारक प्रतिमास प्रकाशित होता है।

(२) डाक व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य १।) है और स्त्रियों से ॥=) मात्र है।

(३) नमूने की कापी विना मूल्य भेजी जाती है।

(४) ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता साफ २ देवनागरी या अंग्रेजी अक्षरों में लिखना चाहिये।

(५) विज्ञापन की छपाई तथा बटाई के नियम पत्र द्वारा तय कर लेना चाहिये।

(६) पत्रका उत्तर जवाबी कार्ड या टिकट बिना नहीं दिया जावेगा

(७) लेख परिवर्तन के पत्र समालोचना के लिये पुस्तकें आदि रुपया तथा सब प्रकार के अबलाहितकारक सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहियें।

मैनेजर—अबलाहितकारक कार्य्यालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् नमः शिवाः ।

अबलाहितकारक

यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रिया ॥ १ ॥
शोचयन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।
न शोचयंति तु यत्रैताः वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ २ ॥

द्वादश वर्ष | भाद्रपद सम्वत् १९७२ | अङ्क ६

5/1915

जन्म भूमि ।

जै जै जन्मभूमि, बलिहारी !
तेरी महिमा है अति न्यारी ।
नृप से लेकर रङ्क भिखारी ।
जड़ जीवों से ले नर नारी ॥
तू लगती सब को अति प्यारी ।
तुझे देख होता सुख भारी ।
तेरी सूरत की बलिहारी ।
तन, मन, धन सब करते वारी ॥
कोयल जो पक्षी कहलाती ।
तुझ पर सच्चा प्रेम दिखाती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लङ्का, जापान, अमरिका में ।
बरमा, चीन, अफ्रीका में ॥
दूर रहै चाहै जितनी वह ।
जा तुझ से प्रति वर्ष मिले वह ।
पाठक ! इससे शिक्षा लीजै ।
जननी का दारिद्र हर लीजै ॥
प्रेम अलौकिक रक्खो इस पर ।
तन, मन करो निछावर सादर ।
तभी सर्थक जन्म तुम्हारा ।
खाना, पीना, सोना सारा ॥
माता पैदा करती हम को ।
मरने पर तज देती सबको ।
पर तू सदा गोद में रख कर ।
प्रेम सहित मुख चूम चूम कर ॥
सब पर सच्ची दया दिखाती ।
जन्म आजन्म को ऋणी बनाती ।
यह ऋण कभी न उऋण होवैगा ॥
लाख बार यदि जन्म होवैगा ॥
तू है सब की सच्ची माता ।
तुझे देख सुख अति अधिकाता ।
हर्षित तेरा मुख दिख जाता ।
दुख न लेश मात्र रह जाता ॥
स्वारथ का सब जग है साथी ।
मातु, पिता, बनिता, सुत, नाती ।
पर बिन काम, कपट से रह कर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्लोभ शुद्ध चित्त को रख कर ॥
तू सब का है पालन करती ।
प्रेम सहित है लालन करती ।
मरने पर भी कभी न तजती ।
आठ पहर गोदी में रखती ॥
जो हम को देती नित मेवा ।
उसकी कभी न करते सेवा ।
रहते यों ही जन्म सब जाता ।
गया समय फिर हाथ ना आता ॥

नर्म्मदा प्रसाद मिश्र ।

सम्पादकीयवक्तव्य

महाविद्यालय जालन्धर से स्त्रियों को बहुत कुछ लाभ हुआ जिसके लिये स्त्री शिक्षा के प्रेमी लाला देवराज जी के अत्यन्त कृतज्ञ हैं । वास्तव में लाला जी का परिश्रम सराहनीय है । इस समय तक के अनुभव से मालूम होता है महाविद्यालय की शिक्षा में कुछ त्रुटियां भी हैं जिनके लिये हम विद्यालय के प्रेमी और विशेष कर लाला देव राज जी का ध्यान दिलाते हैं । विद्यालय की कन्याओं को सांसारिक अनुभव बहुत कम होता है जैसे सास, देवर आदि के साथ व्यवहार । यह भी देखा गया है विद्यालय की कन्याओं को अभिमान भी अधिक होता है। वह सास आदि को वे पढ़ी होने के कारण मान दृष्टि से नहीं दीखती । और शौकिनी की मात्रा अधिक देखी जाती है जो देश के लिये हानि कारक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँवर महेन्द्रप्रताप जी ने प्रेम महाविद्यालय स्थापित कर के देशी कला कौशल की जो उन्नति की है। प्रसंशनीय और धनवानो के लिये अनुकरणीय है। किन्तु हिन्दी भाषा के दुर्भाग्य से वहां पर भी इंजिनीयरी की शिक्षा इंग्लिश भाषा में दी जाती है। जो कालेज या स्कूल किसी के आधीन नहीं है। ईश्वर जाने क्यों देशी भाषाओं में शिक्षा नहीं देतीं कुँवर साहब और प्रबन्ध कारिणी कमेटी का ध्यान आकर्षित करते हैं कि वह इंजिनियरी की पुस्तकें हिन्दी में अनुवाद कराकर हिन्दी भाषा में शिक्षा देकर मातृ भाषा की सेवा का अक्ष पुण्य लें।

स्वर्गीय गोखले का स्मारक स्थापित करने के उद्देश्य से बम्बई प्रान्त में जो चन्दा खोला गया था उसमें ९०, २९७) जमा हो गये हैं। दाताओंकी पिछली नामावली में गुजराती गृहस्थों और बम्बई नगर के गुजराती व्यापरियों के नाम अधिक देखे जाते हैं। यह गोखले के लोकप्रिय होने का एक साधारण प्रमाण है।

अवाध्य स्त्री–शिक्षाके पक्षपती लन्दन में भारत–मन्त्री की सेवा में हाजिर हुए और कहने लगे कि भारत-सरकार एक कमेटी बिठाकर जांच कराये, कि भारत में स्त्री-शिक्षा के प्रचार का कैसे विस्तार हो सकता है। मन्त्री महाशय ने कहा, हम कमेटी वमेटी नहीं बिठायेंगे। हम अभी उसकी कोई आवश्यकता नहीं देखते। इसके सिवा यह काम भारत का है, भारत में शुरू होना चाहिये, न कि लन्दन में। टके सेर स्त्री-शिक्षाके पक्षपाती मुंह लटका कर चले गये। ये देखिये! ये हैं भारतके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपूत, जिनमें इतनी भी हिम्मत नहीं, कि आप अपनी स्त्रियों को अपने समाज के नियमानुसार पढ़ा सकें ! गये हैं सरकार के द्वार पर प्रार्थना करने कि "हें हें सरकार ! हमको तो पढ़ाया, अब हमारी बेटियों बहनों और बीबियों को भी पढ़ा दो !" कोई पूछे, तुम किस मर्ज की दवा हो ? अंग्रेजी वर्तमान शिक्षा का फल है जो स्त्रीयां आलसी और शोकिन बनकर देश को हानि पहुँचा रही हैं ।

मझगांव पुलिसकोट में रावबहादुर सी. एच. सेटलवादके सन्मुख इंस्पेक्टर जोन्सने मंजुलाबाई नाम की एक विधवा स्त्री पर अपने नवजात बालककी लाश घरमें चूल्हे के निकट गाड़ने का अभियोग लगाया । कहते हैं कि स्त्री गत तीन वर्षों से विधवा है और अपने देवर के साथ रहती थी । २१ सितम्बर को उसका एक बालक हुआ जिसकी लाश चूल्हे के निकट गड़ी मिली । लाशकी परीक्षा करने वाले पुलिस सर्जनने कहा कि बालक अधूरे गर्भ से हुआ था इस लिये यदि वह जीवित भी पैदा हुआ होगा तो जीवित नहीं रह सकता था । अदालत से विचार कर स्त्री को निर्दोष मुक्त कर दिया । यह विधवा विवाह न होने का परिणाम मालूम होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधवोद्वाहनिषेधखंडन।

(गताङ्क से आगे)

(३)

उक्त द्वादश पुत्रों की गणना से स्पष्ट है कि शास्त्रकारों ने पौनर्भव को भी पुत्र माना और मर्य्यादा और शास्त्रानुसार पुत्र ही है। आगे पण्डित जी पाराशर का निम्न श्लोक लिखकर अर्थ की खेंचातानी करते हैं। ज़रा बिचार करनें से पाठकों को विदित होजायगा कि पण्डित जी कहां तक पक्षपात से काम करते हैं।

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।
पंचस्वापत्सु नारीणां पति रन्यो विधीयते॥

अर्थः—देशान्तर चला गया हो और पता न मिलता हो, मरगया हो, सन्यासी होजाय, नपुंसक हो, और पतित होने पर इन पांच आपत्तियों में स्त्रियों के लिये दूसरे पति की इच्छा होनें पर अन्य पति की आज्ञा दी जाती है।

पं० ब्रह्मदेव जी लिखते हैं इस श्लोक में अपतौ पद पड़ा है व्याकरणानुसार समास में ही अपतौ पद बन सकता है समास के न करनें पर पति शब्द के सप्तम्येक बचन, में पत्यौ बनता है श्लोक में अपतौ का अर्थ है पति के सदृश और पति भिन्न जब तक कन्या का सांगोपांग विवाह न हुआ हो और सगाई होगई हो। जब तक वह भावी पति उस कन्या का पति सदृश भी है।

पाठकों के दिग्दर्शनार्थ और दो एक उदाहरण देते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो व्याकरणानुसार नहीं बन सकते किन्तु प्राचीन ग्रंथों में हैं। व्याकरणानुसार पतिशब्द की समास में ही घी संज्ञा होती है और घी संज्ञक इत् उत् को औत् होता। जैसा कि निम्न सूत्रोंसे सिद्ध होता है पतिः समास एव। १ । ४ ।८ पति शब्द की समास में ही घी संज्ञा होती है। अच्च घे: १ । ३ । ११६ । इत्, उत् उत्तर पूर्व ङे: को औत् और घी संज्ञक को अकार आदेश होता है। इस प्रकार समास भिन्न पति शब्द की घी संज्ञा न होनें के कारण 'पत्यौ' बनता है। और चतुर्थी के एक वचन में 'पत्ये' बनता है। परन्तु रामायणमें आता है 'सीतायाः पतये नमः' यहां पर समास न होनेके कारण पत्ये बनना चाहिये था। किन्तु आर्श होनें के कारण पतये से रामचन्द्र का ही ग्रहण है। और बाल्मीक में एक दूसरा प्रयोग आता हैं 'सखिना वा नरेन्द्रण' शेषोध्यः सखि १।४।७ के अनुसार सख्या शब्द की घी संज्ञा नहीं होती और घी संज्ञक को "आङो ना ऽस्त्रियाम्। ७ । ३ । १२० ।" इस सूत्र के अनुसार 'ना' न होकर सख्या शब्द बनता है किन्तु यहां पर साखिना व्याकरण के विरुद्ध है। अनेक उदाहरण आर्श ग्रंथों में व्याकरण के विरुद्ध आतेहैं परन्तु संगति वश तथा आर्श मान कर उनका अर्थ किया जाता है। माधवाचार्य्य नें पाराशर माधव में यह श्लोक देकर लिखा है। सोऽयं पुनरुद्वाह विषयः। यदि थोड़ी देर के लिये मान लिया जाय कि यहां अपतौ पद है। तब प्रश्न होता है नारीणां शब्द क्यों लिखा कन्या शब्द क्यों नहीं लिखा। माधवाचार्य्य ने इस से प्रथम कात्यायन स्मृति तथा शातातप के उक्त श्लोक दिये हैं।

वरश्चेत् कुलशीलाभ्यां न युज्येतकथश्चन।
नमन्त्राः कारणंतत्र नचकन्याऽनृतंभवेत्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाच्छिद्यतुतांकन्या बलादक्षतयोनिकाम् ।
पुनर्गुणवतेदद्यादितिशातातपोऽब्रवीत् ॥

अर्थ-(विवाह होने पश्चात् की बर्ता है) कथंचित् यदि वर कुल और स्वभावका दुष्टहो तो वहां मंत्र पढ़ेजाना कारण नहीं होगा और वह कन्याही बनी रहेगी ॥ १ ॥ यदि वह कन्या अक्षत योनी है तो जोरसे उसे छीन लाकर फिर गुणवान पुरुषको देदे यह शातातप कहते हैं ॥ २ ॥

हीनस्य कुलशीलाभ्यां हरन् कन्यां न दोषभाक् ।
न मंत्राः कारणं तत्र न च कन्याऽनृतं भवेत् ॥

कात्यायनोऽपि ।

स तु यद्यन्य जातीयः पतितः क्लीव एव वा ।
विकर्मस्थः सगोत्रो वा दासोदीर्घामयोऽपि वा ।
उढ़ाऽपि देया सा न्यस्मै स प्रावरण भूषणा ॥

अर्थात् कुलशील से हीन पुरुष से कन्या को हरण करने वाला दोषी नहीं और कन्यत्व कष्ट नहीं होता और मंत्र भी कारण नहीं अर्थात् विवाह संस्कार कारण नहीं । यदि वह अन्य जाति पतित, नपुन्सक, विकर्मस्थ, सगोत्र, और दीर्घदास है तब विवाहित कन्या भी दूसरे को जेवर सहित देदेनी चाहिये। कात्यायन आदि ऋषियों की आज्ञानुसार यहां पतौ ही शब्द है । सिद्धांत कौमुदी की प्रसिद्ध तत्वबोधनी नामक टीकाकार महामहोपाध्याय स्वामी श्री० ज्ञानेंद्र सरस्वती ने टीके में उक्त श्लोक देकर लिखते हैं 'पति समास एव' इत्यत्र न गृह्यते । लाक्षणिक त्वात् । यहां पर लाक्षणिक होने से 'पतिः समास एव' यह सूत्र ग्रहण नहीं किया जाता ।

पाठक स्वयं बिचार सकते हैं उक्त श्लोक से विधवा विवाह सिद्ध होता है और पण्डित जी का कहना सर्वथा असत्य और पक्षपातपूर्ण है ।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराश न करो ।

हे कृष्ण ! हाय हाय मुझे [अबला हिन्दू स्त्रीजाति] आज अन्य जाति [पुरुष] के आधीन हुए नहीं नहीं पैरों से कुचले जाते हजारों वर्ष बीत गए । मेरा अङ्ग २ चूर होगया किन्तु लज्जा और भय ने मुँह से आह तक न निकालने दी । और भक्त वत्सल दयालू समझ कर आपके ऊपर पूर्ण आशा किये बैठी रही किन्तु मेरी आशा आज तक पूरी न हुई । आप सर्वज्ञ हैं क्या आपको नहीं मालूम कि मेरे पति के न होने के कारण नहीं नहीं पति के रहते भी पतिदेव का अन्य नायका से अधिक प्रेम होने से मेरी पूछ न रही और सन्तान तक भूकों मर रही है । हे परम पिता परमात्मा ! आप तो न्याय कारी हैं फिर हमारे साथ न्याय क्यों नहीं करते । अन्य जाति [पुरुष] हमारा सर्वस्व [भूषणादि] हरण करके अन्य वेश्यादि को दे देते हैं और उल्टा मुझको सताते हैं । यहां तक की डंडे और जूते तक मारकर भी सन्तोष नहीं होता प्रत्युत: रक्त भी नित्य पिया जाता है अर्थात् कूटना पीसना करके जो जो दो चार पैसे लाती हूं वह भी मुझ अबला से छीन लिए जाते हैं और मैं तथा मेरे बच्चे भूक से त्राहि २ करते हैं । इतने पर भी मुझे बोलने और लिखने तक की स्वतन्त्रता नहीं । यदि अपना दु:ख किसी हितैषी जन से कहते पति देव या उनके मुसाहिब सुनलें फिर क्या था कुलटा, दुष्टा, पापिनी, आदि विशेषण देकर मेरा मान किया जाता है नहीं नहीं इस से भी बढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर अनेक दुःख देते हैं क़लम छीन लेते हैं और कहते हैं क्या स्त्रियां पढ़ा भी करती हैं पढ़कर क्या यारों को पत्र लिखोगी। और झूठे झूठे अगर सच्चे भी हों तो माता पिता आदि पब्लिक से कह कर घर को बदनाम करेगी डायन क्या तू नहीं जानती स्त्रियों के लिये स्वतन्त्रता नहीं है शास्त्र में लिखा है—पिता बाल्यावस्था में रक्षा करता है युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में सन्तान अर्थात् स्त्रीजाति को स्वतन्त्रता नहीं है। हे न्यायकारी परमेश्वर क्या इसी का नाम न्याय है। यदि इसको न्याय भी मान लिया जाय तब क्या मुझ अबला स्त्री जाति को को अपना दुःख भी कहनेका अधिकार नहीं। हे जगदीशप्रभो! अधिक से अधिक दण्ड प्राण दण्ड या जन्म कैद है किन्तु हमें तो इस से भी कहीं कड़ा दण्ड दिया जा रहा है। जो पीढ़ियों से घर (चारदीवारी कैद) में पड़ी हैं। जिस प्रकार कैदीको किसी से वार्तालाप करने की आज्ञा नहीं होती ठीक इसी प्रकार मैं (स्त्री जाति) किसी से वार्तालाप नहीं कर सकती। यदि कदाचित् ऐसा हो जाय तब फिर क्या था जैसे कैदियों के बेंत लगते हैं वैसी ही मार हमें दी जाती है और कैदियों से बढ़ कर मर्म भेदी गालियां दी जाती हैं। कैदियों की जेल की अवधि होती है परन्तु मेरे लिये कोई अवधि नहीं मेरी सन्तान अनेक पीढियों से परतन्त्रता की असह्य यातनायें भोगती २ आज इस दशा को पहुंच गई जो बोलने तक को परतन्त्रता है लिखने पढ़ने का अधिकार तक नहीं। अब कुछ दिनों से जो पढ़ाया जाता है वह मेरे लिए 'विष कहूं' या तीक्ष्ण बाण कहूं' इस से भी बढ़कर है क्योंकि कुछ पढ़ कर और अन्य जाति स्त्रियों की स्वतन्त्रता देख मेरा भी चित्त स्वतन्त्र बनने को चा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हता हैं । किन्तु स्वतन्त्रता मेरे भाग्य में कहां है यदि कदाचित मेरे मुख से स्वतन्त्रता का शब्द भी कोई हमारी जातीय स्त्री भी सुन ले फिर ठीक बम्पुलिस के समान अपने अवगुण आप बताकर पति देव से दण्ड दिलवाए। और दस स्त्रियां जहां बैठें वहीं निन्दा । अर्थात् जिस प्रकार बम्पुलिस से विष्टा की गन्ध उठ कर राह चलने वालों की दृष्टि नहीं नहीं नासिका तक से सुन्दर बम्पुलिस की इमारत घृणित होजाती है इसी प्रकार हमारी स्त्री जाति अपने अवगुण प्रकाशित करके पति आदि पुरुषों की दृष्टि से पतित कराती हैं । हे दीनदयाल ! जगन्नाथ ! पिता आपकी तो अबला स्त्री जाति पर विशेष कृपा रहती थी । आप तो बृज भूमि में गोपियों (गऊओं की रक्षा करने वाली स्त्री जाति) से बिनोद किया करते थे । हे कृष्ण ! मधुर मुर्ली गायन से स्त्री जाति का दुःख हरते थे । क्या हमें भूल गये आपने अपमानित होती हुई अबला द्रोपदी की लज्जा कौरवों की सभा के बीच में रक्खी थी । हाय हाय आप की वह दया कहां गई जो अबला हिन्दू स्त्री जाति का संसार में अपमान होते हुए नहीं नहीं सुधा और कामावश विधवा जो कि विशेष दया पात्र है विधर्मी होते भी आपको मुझ अबला पर दया नहीं आती क्या मेरी रक्षा करना आपका कर्त्तव्य नहीं क्या यह बचन हमारे लिये झूठा होजायगा—"अङ्गिकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति" अर्थात् अङ्गिकार किए हुए को सज्जन पालते हैं । जरा अपने इस बचन को स्मरण कीजिये—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।

जब धर्म से मनुष्यों को ग्लानि उत्पन्न होती है तब मैं धर्म की स्थापना और साधुओं की रक्षा तथा दुष्टों के नाश के लिये युग युग में जन्म लेता हूं। क्या अन्याय और अत्याचार से भी बड़ा कोई अधर्म है जो तुम्ह अबला स्त्री जाति के लिये भारत में इस प्रकार अन्याय और अत्याचार होते हुये जबकि स्वार्थी पुरुष जाति हमको अपने कष्ट तक न कहने दे हमारा घर भी हमारा न समझा जाय अर्थात् रहन सै का अधिकार न हो। तब भी आप जन्म नहीं लेते। अर्जुन को रण के लिये बचन देकर आप रण में लडे। गज ग्राह की लड़ाई में हाथी की प्रार्थना सुन कर आपने स्वर्ग छोड़ उसकी रक्षा की। कहां तक आपकी दया का वर्णन करूं। हे देव कितनी ही जन्माष्टमी और राम नवमियों से आप के दर्शन की प्रतीक्षा करती आई हूं। परन्तु सदैव निराश ही रही। अब दुःखित अबला जाति को निराश न करो। हे देव! यह समझ कर कि "सरमथ को नहीं दोष गुसाईं" अपने पूर्वोक्त वच को भूल कर मुझे निराश न करो।

दुःखनी बाला

हम कैसे गिरे और कैसे उन्नति हो

(गताङ्क से आगे)

(२)

स्त्रियो के भाग्य की खूबी है जिस आर्य्य समाज के जन्मदाता दयालू दयानन्द ने स्त्रियों की स्वतंत्रता (स्वतंत्रता शीर्षक में स्वतंत्राता की व्याख्या लिखी जायगी) की आज़ादी वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आर्य्य समाज भी हमारे ऊपर कुछ द । नहीं करता । हमारी हजारों और लाखों बहिनें आर्य्य परिवारों में अत्यन्त कष्ट और बैधव्य दुःख उठा रही हैं किन्तु प्रतिशत तीन विधवाओं का भी विवाह आर्य्य सज्जन नहीं करते । जिस प्रकार तानेज़नी हिन्दूओं के अन्य सम्प्रदाओं में विधवा स्त्रियों के लिये हैं वैसी ही तानेज़नी आर्य्य परिवारों में भी देखी जाती हैं । कहां तक लिखें यदि स्त्रियों के कष्टों का पूरा हाल लिखा जाय तो अंकिल टम्स (इस नाम की पुस्तक एक अम्रिकन महिला ने लिखी है जिस में दास प्रथा के समय की हृदय विदाकर घटाओं का औपन्यासिक रूप में वर्णन है) से भी बड़ी पुस्तक बन जाय । अधिक इस लिये नहीं लिखा जाता क्योंकि प्रत्येक निस्पक्ष सज्जन स्त्रियों के ऊपर किये अत्याचारों को भलीभांति जानता है । अबला जाति पर अत्याचार का ही फल है कि समस्त हिन्दू जाति भी दूसरे देश वालों के आधीन है । स्मरण रहे अत्याचारी को उसके पापों का फल परमेश्वर अवश्य देता है इतिहास इसका साक्षी है । किसी महात्मा का वचन है "अत्युत्कटैः पापपुण्यैः फलमिहाश्नुते" अर्थात् अत्यन्त पापों का फल इस लोक में ही मिलता है । इस वाक्य की सत्यता हिन्दू जाति की वर्तमान दशा से स्पष्ट है । चाहे लोग मुझे नास्तिक पापिनी कहें किन्तु मैं यहां तक कहनें को तैयार हूं हिन्दू शास्त्रों में भी हमारे लिये पक्षपात है (मैं नहीं कह सकती यह ख़याल मेरा शास्त्रों की अनभिज्ञता के कारण है या माध्यकालिक पुरुषों ने शास्त्रों में स्वार्थ वश भर दिया) क्योंकि जितना पातिव्रत के ऊपर ज़ोर हमारे शास्त्रकारोने स्त्रियों को दिया है उतना क्या उससे चतुर्थांश भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों को एक स्त्रीव्रती होने के लिये नहीं दिया गया। इतिहास और पुराणों में देखा जाता है जहां हज़ारों स्त्रियों के पतिव्रता होने का वर्णन है वहां दो चार पुरुषों के एक पत्नीव्रती होने का भी वर्णन शायद कठिनता से मिले। स्त्री पुरुष गृहस्थ रूप रथ को चलाने के लिये चक्र (पहिले) है यदि दोनों में से एक दुर्बल या टूटा होतो कदापि संसार यात्रा पूर्णतः नहीं हो सकती अर्थात् संसार की उन्नति बिना गृहस्थ के नहीं होसकी। हमारा गृहस्थाश्रम ठीक न होने से ही हमारी जाति (हिन्दू जाति) की यह दुर्दशा हुई। जाति की आत्मारूप स्त्रियों की अवनति या दुर्दशा के साथ हिन्दुजाति की भी अवनति का प्रारम्भ हुआ। यह तो स्त्रियोंके प्रति अत्याचारों की दशा अब जरा अछूत जातियों के प्रति हमारा व्यवहार देखिये कहां तक मनुष्यता की पराकाष्ठा की है। कैसी स्वार्थपरता है व कितना शोक और घृणा का विषय है मनुष्य के साथ अछूत शब्द अमृत पुत्रों को अछूत विशेषण से सम्बोधन करना कितना न्याय और दयालुता है यह अपने हृदय से पूछिये। जो जाति धर्म को छोड़ती है वह एक दिन अवश्य नष्ट हो जाती है किसी महात्मा का वचन है "धर्म एव हतो हान्ति धर्मो रक्षति रक्षित' हनन किया हुआ धर्म नाश कर देता है रक्षित धर्म रक्षा करता है। अर्थात् जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। कोई संसार में ऐसा धर्म नही है जिसमें न्याय और दया को ही सब से उत्तम धर्म न माना हो। विशेष कर हिन्दुओं का तो बच्चा २ इस बात से अनभिज्ञ नहीं है 'दया धर्म का मूल है पापमूल अभिमान' किन्तु शोक है यह बात हिन्दुओं के मुख से कहने मात्र ही है यदि दयालू भंगी मैला साफ न करें तो शीघ्रही बड़े २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर महामारियों के कारण नष्ट होजाँए और मुकबरे होजांय किन्तु इतने पर भी हमारी जाति उनके ऊपर महान् अत्याचार करती है जिन के स्मरण से भी रोमांच होगया है। यद्यपि ब्रिटिश छत्र छाया में शेर और बकरे एक एक घाट पानी पीते हैं और कोई किसी को नहीं सता सकता। किन्तु दुर्भाग्य भंगी और चमारों के लिये उनके यहां भी न्याय की कमी है क्योंकि जो निर्धन पुरुष वकील न करके धनवानों के सामने हारकर अत्याचारी पक्षपाती हिन्दुओं से दण्डित होते हैं। एक गौभक्षक अन्यधर्मी बलवान् और धनवान होने के कारण हिन्दुओं की बराबरी में बैठे हिन्दू उससे हाथ मिलाने में अपना सम्मान समझे किन्तु परमोपकारी सच्चे धर्मात्मा यदि इन्हें महात्मा कहा जाय तो अनुचित नहीं क्योंकि देखा जाता है इन जातियों में (जिन्हें अछूत कहा जाता) फकीर कम दिखाई देते हैं। ऐसे महात्माओं को अछूत समझा जाता है। जो कि महान् अत्याचारों को सहते हुए भी हिन्दुजाति नहीं २ मनुष्यमात्र के सच्चे सेवक हैं। और अन्य जातियों का सहसा आश्रय नहीं लेते। शूद्रों को मनुष्यजाति का पैर समझा जाता है किन्तु नहीं कहा जा-सकता अछूतों को हिन्दूजाति क्या समझती किन्तु है यहां शूद्रों में गणना की जाती हैं। स्मरण रहे जिस प्राणी के पैर में चोट लगजाय और वह टूट जाय उसका उदर पोषण भी कठिन होजाता है। जब हिन्दुओंने पैरों को त्याज्य समझा मुख पेट हाथ को ही सर्वस्व समझा और पैरों से घृणा की उसका प-रिणाम यह हुआ कि हिन्दूओं का मान पगूं पुरुष के समान जाता रहा तथा प्रतिदिन निर्धनता देवी कृपा से भूकों मरने के दिन आगए। जिस पुरुष के हाथ काम करते हैं और पैर काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते वह अपने पूर्ण पुरुषार्थ से कदापि लाभ नहीं उठा सकता। प्रत्युत: शरीर का भी नाश होजाता है। शुद्ध वायु न मिलने के कारण शरीर रोगी होकर अवनत होता २ एक दिन नष्ट होजाता है। एक चमार के विषय में सुना है वह हिन्दुओं के कुए पर चढ़ा। हिन्दुओं ने उसको चढ़ते देखकर बड़े क्रोध के साथ मारा और चढ़ने न दिया उसने चढ़ने के अपराध की क्षमा मांगी किन्तु उसकी किसीने न सुनी! निदान अपमानित चमार ने मुसल्मानों की शरण ली और कहा मैं मुसल्मान होने को तैयार हूं यदि आप मुझे अमुक कुए पर चढ़ादें। मुसल्मानों के लिये यह कठिन काम न था उन्होंने इस दुःखित हृदय की प्रार्थना स्वीकार कर फौरन मुसल्मान बनाकर हिन्दुओं के सामने कुए पर चढ़ादिया और हिन्दू चूं तक न कर सके।

हमारी अमानुषी घृणा का फल यह होरहा है कि हज़ारों की संख्या में हमारे भाई ईसाई और मुसल्मान हो रहे हैं।

इस प्रकार हिन्दू जाति के पैरों का नाश होरहा है। अब ज़रा पेट और हाथों की तरफ देखिये। जाति का उदर वैश्य हैं किस प्रकार उदर (पेट) पचाकर नश२ में रक्त पहुँचाता है इसी प्रकार वैश्य जाति का कर्तव्य व्यापार द्वारा जाति की आवश्यकताओं को पूर्ण करना था। सो भारत के व्यापारका प्रति दिन यूरोप के सामने ह्रास हो रहा है। कालचक्र या पुरुषार्थ हीनता ही इसका कारण है क्योंकि यहां के वैश्य युरोप का पक्का माल वेचते हैं और कला कौशल का नाश ब्रिटिश राज्य के आदि में होगया था।

इधर जैन मत के प्रचार होने से ब्राह्मणों में से वैश्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की श्रद्धा जाती रही अर्थात् उदर ने जाति के सुख को कुछ न समझा और द्वेष करना शुरू किया। मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि ब्राह्मणों ने जाति के प्रति सदैव अच्छा ही किया और वह दोषी नहीं है। परन्तु यहां ब्राह्मणों के विषय में कुछ न लिख कर आगे लिखा जायगा। फिर आर्य समाज का जन्म हुआ जिससे हिन्दू जाति की पूर्ण उन्नति की सब को आशा थी किन्तु दुर्भाग्या जाति का ऐसा सौभाग्य कहां था जो जाति का इस से कुछ लाभ होता। जिसब्राह्मण स्वामीदेयानन्दने आर्य्य समाज को जन्म दिया और जिस जाति के लाल स्वामी दर्शनानन्द, नित्यानन्द आदि ने आज तक स्वार्थ को त्याग अपनी समस्त शक्तियों द्वारा आर्य्य समाज की रक्षा की। देश के दुर्भाग्य से उसी आर्य्य समाज में बाबू पार्टी स्थापित हुई और उस ने उसी परोपकारिणी जाति के ऊपर कुठार उठाया जिसका परिणाम यह हुआ विद्वान् ब्राह्मण प्रति दिन आर्य्य समाज से पृथक् होकर यथाशक्ति धार्मिक प्रचार करने लगे। पंजाबमें गुरुकुल पार्टी और कालेजपार्टी दो विभागों में आर्य्य समाज विभक्त हुआ। दोनों में खूब द्वेष रहा गुरुकुल पार्टी ने श्रीमान लाला हंसराज जैसे महात्माओं का अपमान तक किया नित्य द्वेषाग्नि बढ़ रही है। और बाबू पार्टी की कृपा से भाई २ पृथक् होते जा रहे हैं। मूर्ति पूजा और श्राद्धादिका खंडन आर्य्य समाज ने किया इस की किसी को शिकायत नहीं किन्तु शोक है पत्थर का पूजन आदि कह कर अपने हिन्दू भाईयों का चित्त दुखाया। मनुष्य चाहे अन्य के इष्ट देव और नेताओं में में श्रद्धा न रक्खे किन्तु सभ्यता यह बताती है उन के लिये अपमान जनक शब्दों को कह कर किसी के चित्त को दुखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अधिकार किसी को नहीं। इस प्रकार आर्य्य समाज ने जाति की रही २ संग्रहीत शक्ति का नाश कर दिया।

(कृपा)

—— —o—— ——

स्त्रियों की महिमा।

(गताङ्क से आगे)

(२)

इङ्गलिस्तान की स्त्रियां जिसबहादुरी से आजकल संग्राम का काम कर रही हैं वह सब पर विदित है। २०,७२३ नारियां आजकल रणक्षेत्रमें विराजतीहैं। इनमें से कितनी ही शस्त्र बनाने वाली और कितनी ही मलहम पट्टी करने वाली युवतियां हैं। इनके उपरान्त कितनी आफिसों में और कितनी मोटर-गाड़ी चलाने पर नियत हैं।

जो स्त्रियां इङ्गलेण्ड में पुरुषों के अधिकार मांकर राजद्रोही मानी जाती थीं, वे यह साबित करने को कि हम राजद्रोही नहीं किन्तु राजभक्त हैं और पुरुषों के बराबर उद्योगिनी हैं, आज ऐसी वफादारी से काम कर रही हैं कि उनसे बुरा मानवाले अब उनके साहस पर दङ्ग हो गये हैं।

इन सबसे भी अधिक रूसी स्त्रियां हैं जो लगभग ४०० हैं और हथियार लेकर लड़ रही हैं। इन में से अक्सर औरतें साईबीरियन पल्टनों में हैं। कीकोट सेवा नामी रूसी नारी छठी रेजिमेण्ट में करनल है; यह स्त्री प्रुशिया में दो चार बार जख्मी हुई थी, और इस साहस के लिये उसको सेण्टजार्ज क्रासका तमगा और फौजी पेंशन का वचन दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह रूसके डान कज्जाक रजमट में अलक्जैण्ड्रा सेम्रीवर नामकी स्त्रीने वीरता दिखायी है। कहते हैं, कि जर्मनों ने उसके साथियों समेत उसको एक गिर्जा में बन्द कर दिया था। जब जर्मन उससे गाफिल हो गये, तो सब कैदी खिड़की तोड़कर भागे। अलेक्जैण्ड्राने एक सन्तरी को मार डाला और अपना घोड़ा जर्मनों से छीना। अठारह जर्मनों को गिरफ्तार किया और बहुत से सरकारी कागज़ पत्र भी अपने साथ ले लिये। रूसी सेना में जेज़ोलियर नामी स्त्री बड़ी वीर और रणकला निपुण है। इस औरतने मंचूरिया के युद्ध में जनरल बेकनीलिफ्टकी कमान में बहुत से हमले जीते और आजकल के समर भी बड़ा काम कर रही है।'पीलोमार्था' एक और स्त्री है जिस की सुन्दर कीर्ति उसके सुन्दर स्वरूपकी तरह दीप्यमान है। इस वीरनारीने "अकोची" की लड़ाई में जर्मनों से ध्वजा पताका छीन ली, और अपने भाले बरदार को मरता हुआ देखकर, आप झण्डा उठा लिया और सेना की सरदारी की और दो जर्मनों को तत्काल मार डाला।

फ्रांस देशकी स्त्रियां भी लड़ाई में बड़ा काम कर रही हैं। एक फ्रांसीसी नारी सेना में कारपोरल पद पर है और बड़ी प्रशंसा पा रही है। पेरिस में स्त्रियों की एक पल्टन बन रही है, जिसकी सरदार मैडम अरनाड है। कुछ दिनों की शिक्षाके बाद इस पल्टन के तीन भाग बनेंगे। एक भाग फौजी दफ्तरों में, दूसरा भाग मोटर साइकल चलाने पर और तीसरा चौकी पहरे के काम पर रहेगा।

जर्मनी की 'स्त्रियां भी वर्त्तमान रण में बड़ी बहादुरी दिखा रही हैं। कहते हैं कि इङ्गलिस्तान से इस समय केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन पुरुषों ही से युद्ध नहीं मचा है बल्कि जर्मन स्त्रियों की सेना भी इङ्गलेण्ड से लड़ रही है। यह नारियां अपने देश में आलू की रोटी का जोश फैला रही हैं। किफायत और परिश्रम से थोड़े खर्च में देशसेवा करने पर उद्यत हैं। इस रणमें औरतें केवल अपने ही बच्चों का नहीं, वल्कि उन निराधार बच्चोंका पालन भी कर रही हैं जिनके वली वारिस लड़ाई में लगे हैं अथवा मारे गये हैं। एक छोटे से जर्मन प्रान्त में स्त्रियों की १५० सभाएँ उपस्थित हैं। इन सभाओं में ५०००० औरतें शामिल हैं। ब्रानडनवर्ग में इन स्त्रियोंने १४ अस्पताल घायल सिपाहियों और अफसरोंके लिये खोले हैं जिनमें आठ हजार से ऊपर आदमियों के हरने के की जगह है। इनमें दो सौ से अधिक भोजनगृह हैं। राजधानी में रोज, ५०००० मनुष्योंको जिनके वली वारिस रणमें मारे गये हैं, भोजन मिलता है और कुछ रसोई का प्रबन्ध स्त्रियों ही के हाथ में है। जर्मन औरतें अब सिंगारखेल कूदकी चीजें नहीं लेती। वही पैसे बचाकर लड़ाई के फण्ड में देती हैं।

पुराने जमाने में अरब देश की बीरता का वृत्तान्त भी अद्भुत है। अरञ्जन की पुत्री खूला जब दमिश्ककी लड़ाई में कैद हुई, तब उसने नगर वासिनी नारियों को एकत्र करके ऐसा प्रभावशाली भाषण किया, कि स्त्रियों के लहू में जोश आगया और स्त्रियों ने दमिश्क पर धावा करके उसको जीता और अपने नाम को चमका दिया। कादसीयाकी लड़ाई में एक कवी स्त्री के चार पुत्र मारे गये तो उसने ईश्वर का धन्यवाद किया कि उसके पुत्र देश के काम आए। सन् १०६६ ई० की मक्के की लड़ाई में औरतों ने शत्रु के मरदाना लशकर का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामना किया और शत्रु को जीत लिया, जिस पर बुद्धिमानों ने कहा कि ऐसी वीर नारियां, बुद्धि हीना और अबला क्यों कर कही जा सकती हैं।

हिन्दुस्थान में सुलतान अलतमश की बेटी रजिया बेगम का वीरत्व प्रसिद्धि है। उसने अपने पिता को शेर के पञ्जे से छुड़ा दिया स्वयं राज्य किया और लाहौर तथा भटिन्डा के हाकिमों का सिर तोड़ा।

सुलतान अलाउद्दीन की दासी गुलबहिश्त ने एक राजा से लड़कर उसको पराजित किया। इसी तरह हमीदा बेगम, पूंजी खातून, चांद बीबी नूरजहां इत्यादि रानियां हुई हैं।

भारतवर्ष की राजपूत वीर नारियो ने समर में जैसी अपूर्व वीरता दिखाई है उसका विस्तार पूर्वक वर्णन इतिहासों में है परन्तु जब से गुण विद्या और स्त्री शिक्षा का रिवाज स्त्रियों से उठ गया भारती नारियां कायर और मूर्ख कही जाने लगीं कहा जाता है कि अब उन को लड़ने, ईर्षा करने और रो देने के सिवाय और कुछ नहीं आता। क्या वास्तव में यह सत्य है हमारा ऐसा विश्वास नहीं है। फिर भी यह मानी हुई बात है कि बहुत बड़े सुधार की जरूरत है। जिस दिन स्त्री शिक्षा के वर्तमान ढङ्ग का संशोधन होगा उसी दिन भारतीय नारियों का महत्व फिर संसार पर प्रकट हो जायगा। 'बेंकटेश्वर'

—o—

नया विधवा विवाह।

१७ सितम्बर सन् १५ ई० को अमरोहा जि० मुरादाबाद में जसपुर निवासी लाला छदम्मा लाल जी के पुत्र लाला राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप जी का पुनर्विवाह लाला रूप किशोर जी मुहल्ला गुलाम अली का कटरा की भांजी से बड़ी धूम धाम से हुआ। १७ तारीख को नगर कीर्तन बड़े समारोह के साथ हुआ और रात्रि में ११ बजे विवाह संस्कार हुआ। संस्कार में लाला रामस्वरूप जी ने ५०।=) निम्न भांति दान किया। ५) बालविधवा विवाह प्रचारणी सभा बिजनौर ५) वैश्य अनाथालय मेरठ, ५) महा विद्यालय जालन्धर, ५) गुरुकुल बृन्दाबन, ५) अनाथालय अजमेर, ५) अनाथालय आगरा, ५) वेद प्रचार, ४) कन्या पाठशाला अमरोहा, ५) समाज उपदेश फण्ड अमरोहा, ५) विधवा सहायक फण्ड अमरोहा, २) इम्पीरियल शाही एजेन्सी देहली १) अनाथ विधवा। इस विवाह का कुल खर्च कन्या पक्ष का कन्या के मामा ला० रूपकिशोर जी ने किया। इस विवाह में दोनों पक्ष के सम्बन्धी पुरुष सम्मिलित थे कन्या दान लड़की की माता ने किया था। हम लाला रामस्वरूप जी और विशेष कर लाला रूपकिशोर जी का धन्यवाद करते हैं। वर पक्ष की तरफ से ला० जमुना प्रसाद जसपुर निवासी और कन्या पक्ष की तरफ से ला० बृजभूषण लाल जी अमरोहा निवासी के प्रयत्न से यह विवाह हुआ जिस के लिये आप साहबों की सभा कृतज्ञ है। १८ तारीख को एक सभा श्रोत्रिय जगदीशदत्त के सभापतित्व में हुई। इस में शंका समाधानको समय दिया गया था परन्तु किसीने शंका नहीं की। पं० शिव शर्मा आदि पण्डितों के अनेक मनोहर व्याख्यान हुए। पं० राम स्वरूप जी पाठक ने विधवाओं के दुःख के अनेक भजन सुनाए। परमात्मा वर कन्या को चिरायु करे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य ।

संसार में पशु पक्षी भी स्वतंत्रता या स्वराज्य की इच्छा करते हैं तब मनुष्य को इस अनूपम और अद्वितीय वस्तु के लिये इच्छा होना स्वाभाविक है और जिस अधम को इस महा रत्न की इच्छा नहीं वह पशुओं से भी अधम है । किन्तु प्रश्न यह है यह अमूल्य वस्तु किस प्रकार प्राप्त हो और इसका वास्तविक स्वरूप क्या है । क्या स्वराज्य का यह अर्थ है कि अपने वर्तमान राजा का स्थान हम लेलें । नहीं कदापि नहीं इसको अराजकता कहना चाहिये और अराजकता महा पाप है इससे तो हम को सदैव दूर रहना चहिये और अराजक पुरुषों का मुख भो नहीं देखना नहीं चाहिये । स्वराज्य से हमारा अभिप्राय राजकार्य्यों का संशोधन तथा उच्च नौकरी प्राप्त कर ब्रिटिश गर्वनमैन्ट की सेवा करने का है । जिस गर्वनमैन्ट ने अत्याचारी मुसल्मानों के हाथ से छुटा कर हमें इस योग्य किया कि आज हम स्वराज्य की इच्छा करने लगे । एक समय था जब किसी मुसल्मान सरदार या इसलामधर्म के विरुद्ध शब्द निकालने पर विना पूछ कतल किया जाता था । एक समय आज है संसार के किसी भी धम को युक्ति का पूर्वक खंडन कीजिये । बड़े से बड़े अपसर के कार्य्यों की समालोचना आनन्द पूर्वक कीजिये । अपने सुख दुःख दयालू गवर्नमैन्ट से बिना रोक टोक कह सकते हो । किन्तु कोई कुछ नहीं कर सकता । यदि सत्य २ समालोचना की है । अब प्रश्न होता है पूर्वोक्त स्वराज्य हम को किस प्रकार प्राप्त हो हम लफटैन्ट गर्वनर बन कर देश व राजा की सेवा कर सच्चे स्वराज्य को प्राप्त हों । पहिले देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप में वह योग्यता है या नहीं जो एक अधिकारी में होनी चाहिये । जिस स्वराज्य को पाकर समस्त देश का शासन गर्वनमैन्ट की सहायता से करना चहाते हैं क्या अपने आधीन घर और जाति के आधीन पुरुषों को हमने कहां तक अधिकार दिये हैं । जरा शीशे मुह देखिये क्या आप अपनी बहिनो और स्त्रियो को घर की रक्षा या स्वतंत्र वायु सेवा का भी अधिकार देते हो । क्या अपने प्यारे दुलारे चमार और भंगियो को आपने इतने भी आधकार दिये जितने की साधारण मनुष्य को होने चाहिये । आप तो अपने देश के नहीं अपनी जाति के भाईयों को अछूत कहो और उनके साथ वह अमानुषिक अत्याचार करो जो सभ्य समाज के लिये अत्यन्त लज्जा और पश्चातापजनक है तुम जो अधिकार अपनी प्यारी पत्नी और पुत्री को भी न दो । उनसे कहीं बढ़कर देश भर के शासन का अधिकार विदेशी गवर्नमैन्ट से चाहते हो । नीति शास्त्र बताता है स्वाभाविक प्रेम विदेशियों को नहीं होता और विदेशी पुरुषों से किसी को लाभ नहीं होसकता । किन्तु हमारी दयालू गर्वनमैन्ट में यह बात नहीं । वह योग्यायोग्य का ख़याल करके अधिकार और छोटी बड़ी नौकरियां देती है मध्य काल में मुसल्मान बादशाह और हिन्दू राजा भी जाति और कुल का खयाल करके राज्यपद देते थे । किन्तु गुणग्रही सरकार सब को योग्यतानुसार राज्य पद देती है । यदि आप सत्य ही स्वराज्य चाहते हैं तब प्रथम अपनी आधीन स्त्री और अछूत जातियों को न्यायोचित अधिकार दीजिये । आपतो स्त्रियों को वेदविद्या तक का अधिकार नहीं देते ।

क्रमशः

श्रोत्रिय पुरुषोत्तमदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७१५४८

बियोगनी ।

(गतांक से आगे)

बहुत समयतक दोनों एक दूसरे की ओर देखते रहे। अन्त में उपेन्द्र ने कहा बिमला क्यों रोती है? प्रत्युत्तर न देकर वह रोती ही रही। विमला कुछ बोल तो सही उपेन्द्र ने फिर अधैर्यावस्था से कहा। मेरे रुदन का कारण जानकर तुम दुःखी होगे इसलिये सुनके तुम क्या करोगे विमला ने कहा, उपेन्द्र ने उत्तर दिया दुःखी तो नहीं होऊँगा किन्तु उसका उपाय करूंगा। नही नहीं तुम उसका उपाय नहीं कर सकते। बिमला नें कहा

'क्यों, नहीं करसकता ?, उपेन्द्र ने आश्चर्य युक्त प्रश्न किया। बिमला स्तब्ध रही उपेन्द्र ने फिर पूछा, प्रिये! अपने रोने का कारण न बता कर मुझे दुःखित क्यों करती हो कहो रोने का क्या कारण हैं व्यर्थ दिक्क करने से क्या होगा।

बिमला, फिर भी शान्त रही

'प्रिये तू ठीक क्यों नहीं बोलती तू यह तो कह कि अभी किस की लिखी हुई कविता बांच रही थी? उपेद्र ने कहा।'

'तुम्हारी, बिमला ने कुछ आनन्द सहित संक्षिप्त उत्तरदिया।

परन्तु उस में ऐसा कौन सा बिषय है कि जिसके पढ़ने से तू रुदन में प्रवृत्त हुई ? उपेन्द्र ने चर्चा को आगे बढ़ाने की इच्छा से पूछा।

'उस में जो है, सो सम्पूर्ण जगत के किसी भी स्थल पर नहीं है ?' बिमला ने गम्भीरता से मार्मिक उत्तर दिया

'फिर तू ने किस लिए कहा, कि तुम से इस का उपाय नहीं होसकेगा ? बिमला ! मेरा हृदय देख तथा मेरे हृदय के प्रत्येक स्थल देख, उस में तेरीसुमनोहारिणी मूर्ति के पवित्र प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिम्ब के सिवाय अन्य कोई भी पदार्थ दृष्टिगत नहीं होगा। मैं अहिर्निश (रातदिन) तेरेही लिए दुःख सहरहा हूं इस का ज्ञाता अन्तर्यामी परमात्मा है। केवल आशा आलोक का मन्द प्रकाश ही मेरे जीवन को धारण किये है मेरा मनोभाव तुझ से छिपा नही है उपेन्द्र ने प्रणय प्रार्थना करते कहा। किञ्चित् बिचार पश्चात् बिमला बोली, ।तुम भ्रम में पड़ेहो ?

'ऐसा क्यों ?' उपेन्द्र ने आश्चर्य सहित पूछा।

मैं तुम्हारी किस प्रकार हो सकती हूं ?, बिमला ने उल्टा प्रश्न किया।

'मैं उस सर्व व्यापक विश्वेश्वर को साक्षी करके कहता हूं कि चाहे जोहो तुझ से ही विवाह ग्रन्थि बांधूंगा और हिन्दू समाज की भृकुटि को चरण प्रहार से दलित कर तुझे हृदय मन्दिर में धारण कर प्रेम ज्वाला को शान्त करूंगा। अपने ज्ञात का तेरे सहवास में स्वच्छन्दता पूर्वक उप भोग करूंगा तथा कराऊंगा' प्रणयार्थी उपेन्द्र ने प्रेम भाव से यह वाक्य कहे।

बिमला यह वाक्य ध्यान पूर्व्वक श्रवण करके बोली, मुझे सुख की इच्छा नहीं, मैं आनन्द उपभोग के लिये उत्सुक नहीं हूं मैं तो केवल तुम्हारी उत्सुक तथा प्रेमाभिलाषिणी हूं। परन्तु मैं ने महान् अन्याय किया है कि तुम्हारे हृदय में अमृत सींचने के बदले बिष का सिञ्चन किया।

'यह विष का कारण क्या' ? उपेन्द्र ने पूछा।

'आशा की निष्फलता'। विमला ने कहा।

'अभी ! और आशा की निष्फलता' क्या ? उपेन्द्र बोला।

'आज ही नहीं' किंतु कितनेक दिनो से, बिमला बोली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अर्थात्' ? उपेन्द्र ने पूछा ।

'अर्थात् यह कि, पिता जी मेरा पुनर्विवाह नहीं करते ।' विमला ने आशा की निष्फलता का कारण जताया ।

उपेन्द्र ने दीर्घ निःश्वास लिया विमला फिर बोली उपेन्द्र पिता जी की आज्ञा उल्लंघन न कर मैं तुम्हारी किसी प्रकार नहीं होसकती। मेरी समस्त आशायें मन की मन ही में रहगईं मैं तुम से विनय पूर्वक कहती हूं कि मेरी मिथ्या आशा में अब अधिक समय तक तुम अपने सुखों का नाश मत करो । तुम विवाह करके सुखी होजाओ । ईश्वर कृपा से तुम्हें सन्तान होगी तो उसका लालन पालन कर मैं अपना सब दुःख भूल जाऊँगी। इसके सिवाय अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है । प्रिय उपेन्द्र ! मुझे क्षमा करो मेरे अपराधों की ओर दुर्लक्ष कर मुझे भूल जाओ । यह प्रार्थना करते २ विमला कण्ठ दग्ध हो उसके नेत्रों में अश्रु भर आए।

उपेन्द्र भी अब रोने लगा, उसके मस्तिष्क में भ्रम का भास होने से उसे पृथ्वी घूमती हुई दीखने लगी । उसके हृदय में भयङ्कर विचार उत्पन्न होने लगे । अन्त में वह चित्त स्थिर कर कहने लगा । विमला ! प्राणाधिक प्रिये विमले ! तेरी आशा को त्यागूं ? यह तो सर्वथा असम्भव है ? हाय ? इस देह के विद्यमान रहते मैं तुझे त्याग दूं ? विमला ! यदि तू मुझ से विवाह न करके सुख से रह सकेगी तो मैं भी अविवाहित अवस्था में रहकर सुखी रह सकूंगा । जो तेरी दशा सो मेरी दशा तू सुखी तो मैं भी सुखी तू इस प्रकार दु.ख सहन कर अपने दिन बितावे और मैं सुखी रहूं क्या तू ने मेरे प्रेम का यही मूल्य आंका। प्रिये ! क्या तू यह गत (बात) भूल गई कि:-

चन्द टरै सूरज टरै, टरै जगत को नेम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पै दृढ़ कबहूँ उपेन्द्र को, टरै न अविचल प्रेम।

प्रिय उपेन्द्र ! इस प्रकार अस्थिर तथा अधीर मत होजाओ। विचार करके देखो कि मैं कैसी स्थिति (दशा) में हूं ? इस संसार समुद्र में खोज करने से मुझ से विशेष सुन्दर स्त्री रत्न तुमको प्राप्त होजायेंगे। यदि तुम बिवाह कर लोगे तो कुछ दिन पश्चात मुझे भूल जाओगे। तुम को सुखी देख कर मैं भी सुखी होऊँगी। विमला ने उनेन्द्र को आश्वासन देते कहा।

उपेन्द्र विमला का हाथ पकड़ नभ मण्डल की ओर दृष्टि करके बोला, बिमला ! यह समस्त सृष्टि व्यापक आकाश को साक्षी भूत करके मै 'प्रतिज्ञा' करता हूं कि, यदि मैं विवाह करूंगा तुझसे ही नहीं तो अविवाहित रहकर जन्म व्यतीत करूंगा।

अचिन्त्य इसी क्षण बिमला की प्रिय सखी कपिला वहां आ पहुंची। वह अपने कोमल कर में एक प्रफुल्लित पुष्पलता उखाड़ कर विमला को बताने आरही थी परन्तु यहां प्रेमी युग्म को प्रेम सम्भाषण में लीन देख तथा उपेन्द्र की उपयुक्ति दृढ़ प्रतिज्ञा सुनकर पुष्पलता ने युगुल प्रेमियों के परस्पर ग्रहीतकर द्वय पर डालकर कहा, आकाशके साथ मैं भी साक्षी हूं। उपेन्द्र लज्जित होकर वहां से चला गया कपिला भी कुछ न कह कर शान्ति पूर्वक बिमला के बिलोकयीय बदन मण्डल को देखनेलगी बिमला के सरोज सदृश नेत्र युग रुदन के कारण रक्तवर्ण होगये हैं। चन्द्रानन मलीन हो उसे नैराश्य रूपी मेघ ने आच्छदित कर लिया है। बिमलाकी इस प्रकार शोचनीय दशा देख कपिला भी दुःखित हुई।

——०——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशम निःश्वास।

दुर्दशा।

—÷*×—

बसन्त तिलिका

धिक्कार तोहि हत भारत वर्ष देश!
धिक्कार सभ्य समुदायहु निर्विशेष॥
धिक्कार बुद्धि बल वैभव को हमेश।
पावैं जहां निबल नारि इतने कलेश॥

°महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रणय भी एक ऐसी वस्तु है कि एक ही स्थल में रात्रि दिवस साथ रहने से स्वाभाविक ही इस में प्रति दिन बृद्धि होती जाती है। उपेन्द्र तथा विमला की भी यही दशा है। उनका परस्पर प्रेम क्षणोक्षण बृद्धि गत होता गया। विमला हृदय से तो उपेन्द्र की होचुकी है, परन्तु अद्यापि उसने अपना शरीर उसे अर्पण नहीं किया सतीत्व रक्षण की उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली है। तथापि स्नेह का स्वतन्त्र स्वभाव ही ऐसा है कि परस्पर के दर्शन बिना चित्त को शान्ति नहीं होती। विमला रोज कुछ न कुछ बहाना करके उपेन्द्र के पास जाकर दिन में दो तीन बार उसे मिल आती थी। उपेन्द्र भी इसके दर्शन के लिये इसी प्रकार आतुर रहता था। विमला प्रथम तो उपेन्द्र के सन्मुख बार बार आती शर्माती भी थी, किन्तु अब तो सदैव उसके पास ही में रहने लगी। परन्तु आश्चर्य तो इस बात का था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे संयोग में भी वह अपने सतीत्व का भली प्रकार रक्षण करती रही। इस प्रकार अगाध प्रेम पूर्ण यौवन, एकान्तालाप इत्यादि साधनों के प्रस्तुत रहते भी उसका सतीत्व निष्कलंक रहा। इसका कारण विद्याभ्यास, उच्चशिक्षा, धार्मिक बृत्ति तथा स्नेह के सत्य स्वरूप का ज्ञान। विमला धन्य है तेरी आर्य बृत्ति को! तू ने सत्यतः अपने जन्म को सार्थक किया। बिमला सचमुच बिमला ही निकली।

परन्तु अन्य के दोष निकालने में आनन्द मनाने वाले प्रमादी लोगों को उसके शुद्ध सतीत्व में विश्वास नही आया। उन्हें इस प्रेमी युग्म के पवित्र प्रेम में सन्देह उत्पन्न होने लगा जिस से वह इनके शुद्ध चरित्रों पर नाना प्रकार से आक्षेप करने लगे। दुष्ट लोगों ने असत्यतर्क वितर्क के विवेचन से इस बात का गम्भीर स्वरूप प्रकट किया। अर्थात् समस्त ज्ञाति इस विषय की चर्चा होने लगी। सम्पूर्ण ज्ञाति वालों ने बिना विचारे विचारी विमला पर बज्रघात करना आरम्भ किया। यह वार्ता सरस्वती के भी कर्णगत हुई। कोपावेश में वह स्वपुत्री के स्वभाव तथा पवित्र चरित्र को एक दम भूल गई इधर मनुष्यों द्वारा निन्दा होते देख उसे भी दुहिता पर सन्देह उत्पन्न हुआ एक दिन उसने बिमला को अपने पास बुलाकर कहा, 'बेटा' तू अब नादान नहीं है, उसी प्रकार उपेन्द्र भी अब बालक नहीं है। इस कलिकाल में युवक युवति के एकान्त में सदा साथ रहने से लोग निन्दा करते हैं यह स्वाभाविक ही है अतएव आशा है कि भविष्य में तू ऐसी कोई बात नहीं करेगी जिस से कि लोगतेरी निन्दा करें।

विमला स्वमाता का मनो भाव समझ गई, जिस से उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने दो चार दिन तक उपेन्द्र के पास जाना छोड़ दिया। यद्यपि वह उपेन्द्र के निकट दो चार दिन नहीं गई, तथापि प्रेम का सामान्य स्रोत क्या रुक सकता है ? इस में आश्चर्य ही क्या कारण कि ऐसा होना सम्भव है। फिर विमला पूर्ववत् उपेन्द्र की सहवासिनी होगई।

सरस्वती ने विचारा कि 'यह अच्छा नहीं हुआ' किन्तु करना क्या ?' इस विषय में अपना कुछ उपाय न देख वह शान्त रही। सरस्वती ने यह वार्ता गुप्त रक्खी और कपिला भी छुपाती थी, किन्तु गांव की इतर स्त्रियों को ऐसा करने की क्या आवश्यकता ? उनके लिये तो एक यह तमाशा हो। मार्ग, नदी तट तथा अन्यत्र जहां देखो वहां इसी बात की चर्चा होने लगी। गृह कार्य्य से कुछ भी अवकाश मिलने पर हिन्दू नारियों को दूसरे के छिद्र निकाल कर लोगों की निन्दा करने के सिवाय दूसरा व्यवसाय ही क्या है। अतः जहाँ कहीं दो चार स्त्रियाँ इकट्ठी हुई कि लगीं विमला की बात करने। कदाचित् कोई स्त्री विमला के पक्ष में कुछ बोली कि—परन्त दूसरी स्त्री ने उसका खण्डन करना शुरू किया उधर तीसरी एक और स्त्री शास्त्र पुराणों में से सुनी सुनाई कथाओं द्वारा विमला का पाप सिद्ध करने में उद्यत होजाती। उसे देख चौथी स्त्री आप ही न्यायाधीश बन, 'विमला कितनी तथा कैसी शिक्षा की पात्र है' इस बिषय पर तत्काल अपना अभिप्राय प्रगट करदेती। उनके लिये कहां तक कहे विमला एक प्रकार से विश्राम का कारण होगई महा कवि शेक्सपियर ने बहुत ठीक कहा है कि—†"जहां मिलीं दो नारि वितण्डी, वहां की हवा हुई अति ठण्डी।"

† Tow women Placed together, meke cold weather.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शनैः २ ये वार्त्ता अमृतलाल तक भी जा पहुंची। उन्होंने उपेन्द्र को बुलाकर दूसरे प्रसंग की बातों पर बारंबार उसे अन्योक्ति द्वारा समझाया। परन्तु प्रणयाग्नि शान्त नहीं हुई। प्रणयाकांक्षी उन्मत्त समान हैं। उपेन्द्र के मन में अमृतलाल का उपदेश दो चार दिन तक तो टिका रहा परन्तु फिर प्रेम की प्रबलता से उसका लोप होगया। मनो विकार के सामने विद्या, ज्ञान, धर्म्म उपकार तथा तिरस्कारादि सब हार जाते हैं। अमृतलाल ने बिमला को भलीप्रकार समझाया तथा तथा उसे धमकाया भी, अन्त में भय भी दिखाया। विमला को इससे अत्यन्त खेद हुआ। रात्रि दिवश उसके चक्षुओं द्वारा अश्रु प्रवाह होने लगा। अन्त में बिमला ने उपेन्द्र का समागम कम किया। जिससे मनोव्यथा में वृद्धि हुई तथा हृदय क्लेश का नूतन आविर्भाव हुआ बिमला के अलौकिक सौन्दर्य में प्रति दिन न्यूनता होने लगी! इस संसार में वपु (शरीर) की समस्त व्याधियों की अपेक्षा मानसिक व्याधि अतीव प्रबल हैं, उसका उपचार भी अति दुर्लभ तथा कठिन है। विमला को इस असह्य मानोव्याधि के भोगने का अमांगलिक प्रसंग प्राप्त हुआ। उसके बदन राशि की धवलता का स्थान पाण्डुता ने छीन लिया और उसकी सखी शुष्कता ने पुष्टता को निकाल बाहर किया और उनके स्थान पर अपना आधिपत्य जमाया। जिससे आहार, निद्रा ने भी मारे भय के प्रयाण किया, केवल अश्रुप्रवाह ने ही बिमला के नेत्रों को व्यवसाय देने की कृपा की। विचारी अबला बिमला की ऐसी दुर्दशा देखकर ऐसा कौन कठोर हृदय होगा, जिसे अनुकम्पा न उत्पन्न हो?

(शेष फिर)

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिर दर्द वो बाई की दवा।

बाई का दर्द पल में पहाड़ हो जाता। यह दवाई उसको पल में पानी कर देती है।

बाई का दर्द जसे चीस, चमक, टपक, नसमें लहर सरन, कनकनी से जो कहीं छटपटाते हो, तो दवा के सेवन से तत्काल ही सेहत पावोगे, चाहे किस ही अंग में ऐसा दर्द हो इस से मिट जावेगा।

शिर दर्द—के लिये भी इसका ऐसा ही गुण है। आधे वा सारे शिर में किसी कारण से कैसा ही दर्द होता हो इस दवा से हट जायगा, केवल यही नहीं जो दर्द से शिर फटा जाता हो उड़ा जता हो तो झट अच्छा होजायगा।

१२ टिकियाकी एक शीशी दाम।ल्) छः आने डा: मा: १ से ६ शीशी तक।-) आने।

दमै की दवा।

बहुत दमेवालोके अच्छे न होनेका कारण यह है कि उनके चिकित्सक दमेकी कफका रोग समझते हैं और गरम दवाए दिया करते हैं। जिससे कुछ समयके लिये दमा दब भी जाता है; परन्तु रोगका जाना दूर रहा उसकी जड़ और भी जम जाती है। दमा वायुका रोग है "और डाक्तर बर्म्म कीबनाई "दमेकी दवा" बिगड़ी हुई वायुको फिर अपनी अच्छी हालत में लाती है

इस दवाके दो विशेष गुण देखने में आते हैं:—

१। दमा चाहे जैसे जोरसे उछलता हो इस दवाके दो एक मौताज पीने हीसे दब जाता है

२। कुछ दिन तक इस दवाके लगातार खानेसे बहुतोका दमा जड़से चला जाता है और जबतक दवा पी जाती है दमा जोर नही करता। जो दमेके रोगी सङ्खिया वा दूसरे रसादिक अफीमधहतुरा वा डाक्तरी दवाए ब्रोमाइड क्लोरेल आदिक खाकर निराश हुए हैं उनको चाहिये इस दवा की जांच करे।

मोल १।) डा० मा: व पै: १ से ३ शीशी तक।-) ६ शीशी।≡) अके।

डा: एस. के. बर्मन ५. ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0781487

Regstered No. A. 363.

दीनबन्धु पुस्तकालय बिजनौर की अलभ्य पुस्तकें

स्वाधीन बिचार ।) लाला हर दयाल एम० ए०
भारत के आदर्श बालक ।) पूर्णा देवी
अफ्रिका का गृह प्रबन्ध ~) मिसेस् सेंट निहाल सिंह
शिशु शिक्षा ~) नारायण प्रसाद अरोड़ा बी० ए०
मनुष्य के कर्तव्य का परिचय ~)
नीति सौन्दर्य =) मैरी कुरैली के ब्युटीज़ आफ्ट्यूटी का अनुवाद
लक्ष्मी उन्यास =) श्रीमती प्रियम्बदा देवी,
बनिता बन्धु)॥। श्रीमती सरस्वती देवी
बाबा का विवाह ~) वासुदेव नारायण सिंह
जगत् माया ।=) लाला हर स्वरूप गुप्त
क्या हनुमान जी बन्दर थे)॥। हरिश्चन्द्र गुप्त
महात्मा गोखले)॥
स्वामी नित्यानन्द =) पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
विधवा विवाह विवरण ।।) पं० राधाचरण गोस्वामी
जो सेफ मेज़नी ~) पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
वीर हकीकत राय ~)
व्यापार तत्व ।।)
हरिश्चन्द्र भजनोदय प्रथम व द्वितीय भाग ~)।' हरिश्चन्द्र

यह पुस्तकें हमारे यहां तैयार हैं प्रत्येक पुस्तक अबलाहितकारक के ग्राहकों को चौथाई कीमत कम करके दीजायगी।

पता—श्रोत्रिय पुरुषोत्तमदत्त
दीनबन्धु पुस्तकालय बिजनौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1939-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri